साहित्य अकादेमी

(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी

2022-2023

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

वार्षिकी
2022-2023

अध्यक्ष : श्री माधव कौशिक

उपाध्यक्ष : प्रो. कुमुद शर्मा

सचिव : डॉ. के. श्रीनिवासराव

अनुक्रम

साहित्य अकादेमी : संक्षिप्त परिचय 5

परियोजनाएँ एवं योजनाएँ 9

2022-2023 की प्रमुख गतिविधियाँ 13

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 16
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 20
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 24
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022 28
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 32

कार्यक्रम

उन्मेष 39
साहित्योत्सव 2023 43
अकादेमी प्रदर्शनी 2022 का उद्घाटन 44
संवत्सर व्याख्यान 45
साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण 46

पुरस्कार अर्पण

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह 49
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह 51
साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह 55
साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह 58
साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह 62
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह 66
साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता अर्पण समारोह 68
सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम 76
संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि 82
वर्ष 2022-2023 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची 145
वर्ष 2022-2023 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद्, वित्त समिति तथा क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें 174
पुस्तक प्रदर्शनियाँ/पुस्तक मेले 175
प्रकाशित पुस्तकें 182
वार्षिक लेखा 2022-2023 207

माधव कौशिक साहित्य अकादेमी के नए अध्यक्ष उपाध्यक्ष पद के लिए कुमुद शर्मा का चयन

साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की 11 मार्च 2023, शनिवार को हुई बैठक में नए अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष का चुनाव हुआ। इस बैठक में माधव कौशिक को अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के रूप में कुमुद शर्मा का चयन किया गया। रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में हुए इस चुनाव में अध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी के रूप में प्रख्यात कन्नड साहित्यकार मल्लपुरम वेंकटेश और प्रख्यात मराठी कथा साहित्यकार एवं समालोचक रंगनाथ पठारे के नाम भी थे।

उपाध्यक्ष पद के लिए प्रत्याशी के रूप में सी. राधाकृष्णन का नाम था। माधव कौशिक वरिष्ठ कन्नड साहित्यकार चंद्रशेखर कंबार का स्थान लेंगे। इससे पहले वे साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष थे। उनका यह चयन 2027 (पाँच साल) तक के लिए किया गया है।

माधव कौशिक हिंदी के प्रख्यात कवि और लेखक हैं। आपका जन्म 1 नवंबर 1954 को हरियाणा के भिवानी शहर में हुआ था। आपके दो दर्जन से अधिक ग़ज़ल-संग्रह, 2 खंडकाव्य, 4 नवगीत-संग्रह, 2 काव्य-संग्रह, 2 कहानी-संग्रह, 2 बाल साहित्य की पुस्तकों सहित 2 अनुवाद की पुस्तकें और 4 संपादित कृतियाँ प्रकाशित हैं। आपकी कुछ पुस्तकों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। आपने गीत और लघु फ़िल्मों के लिए पटकथा लेखन भी किया है तथा टी.वी. और रेडियो के अनेक कार्यक्रमों में सहभागिता की है। आपकी कुछ रचनाएँ पंजाब के विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। आपको अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत किया गया है, जिनमें प्रमुख है—हंस कविता सम्मान, राजभाषा रत्न सम्मान, हरियाणा साहित्य अकादमी का बाबू बालमुकुंद सम्मान, महाकवि सूरदास सम्मान, अखिल भारतीय बलराज साहनी सम्मान, रवींद्रनाथ वशिष्ठ सम्मान, शिरोमणि हिंदी साहित्यकार सम्मान, राष्ट्रीय हिंदी सेवी सहस्राब्दी सम्मान, अब सीमावी सम्मान आदि। आप चंडीगढ़ साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव एवं वर्तमान में अध्यक्ष और हरियाणा साहित्य अकादमी की शासकीय परिषद् के सदस्य रहे हैं।

कुमुद शर्मा लेखिका, समीक्षक, मीडिया विशेषज्ञ और स्त्री विमर्शकार हैं। आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं—अंबिका प्रसाद वाजपेयी (विनिबंध), भूमंडलीकरण और मीडिया, स्त्रीघोष, विज्ञापन की दुनिया, समाचार बाज़ार की नैतिकता, जनसंपर्क प्रबंधन, गाँव के मन से रूबरू, नई कविता में राष्ट्रीय चेतना, आधी दुनिया का सच, अमृतपुत्र, 1000 हिंदी साहित्य प्रश्नोत्तरी आदि। आप साहित्यिक मासिक *साहित्य अमृत* की पूर्व संयुक्त संपादक तथा प्रसार भारती बोर्ड के अंतर्गत 'लिटरेचर कोर कमेटी' की पूर्व सदस्य हैं। आप महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की शैक्षिक समिति तथा अटल बिहारी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल की कार्यकारी परिषद् की सदस्य भी हैं। स्त्री विमर्श और मीडिया पुस्तकों पर आपको भारतेंदु हरिश्चंद्र पुरस्कार, साहित्य श्री सम्मान, बालमुकुंद गुप्त साहित्य सम्मान तथा प्रेमचंद रचनात्मक सम्मान से विभूषित किया गया है। अभी आप दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत हैं।

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)

साहित्य अकादेमी भारत की एक प्रमुख साहित्यिक संस्था है, जो स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के साहित्य का संरक्षण एवं उन्हें प्रोत्साहन देती है। यह संस्था पूरे साल कार्यक्रमों का आयोजन भारतीय भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यताएँ प्रदान करती है तथा स्वयं द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं में पुस्तकें प्रकाशित करती है।

अकादेमी ने अपने छह दशकों से अधिक समय के गतिशील अस्तित्व द्वारा 24 भाषाओं में 7000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है। अकादेमी मूल कृतियों के प्रकाशन के साथ ही अनुवाद, जिनमें कथासाहित्य, कविता, नाटक तथा समालोचना भी शामिल हैं, के अलावा कालजयी, मध्यकालीन, पूर्व आधुनिक तथा समकालीन साहित्य का भी प्रकाशन करती है। अकादेमी उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने में भी संलिप्त है।

भारत में अकादेमी पुरस्कारों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। साहित्य अकादेमी पुरस्कार, अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट पुस्तक (कों) को प्रदान किया जाता है। भाषा सम्मान उन लेखकों/विद्वानों/संपादकों/संकलनकर्ताओं/कलाकारों/अनुवादकों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने उन भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं उन्हें समृद्ध करने के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो, जिन भाषाओं को साहित्य अकादेमी की औपचारिक मान्यता प्राप्त नहीं है तथा इसके अलावा जिन्होंने देश के कालजयी और मध्यकालीन साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो। अनुवाद पुरस्कार अकादेमी द्वारा मान्यताप्रदत्त 24 भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट अनुवादों को प्रदान किया जाता है, बाल साहित्य पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट बाल साहित्य को प्रदान किया जाता है तथा युवा पुरस्कार 24 भाषाओं के उत्कृष्ट युवा भारतीय लेखकों को प्रदान किया जाता है। ये सारे पुरस्कार अकादेमी द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रदान किए जाते हैं।

प्रत्येक वर्ष अकादेमी कम से कम 50 संगोष्ठियों एवं 100 से अधिक परिसंवादों का क्षेत्रीय, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करती है तथा इसके अतिरिक्त 400 से अधिक साहित्यिक कार्यक्रमों, कार्यशालाओं तथा संवाद कार्यक्रमों का आयोजन भी करती है। अकादेमी के कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम हैं—लेखक से भेंट (जिसमें कोई प्रख्यात लेखक अपने जीवन एवं कृतियों की चर्चा करता है), संवत्सर व्याख्यान (इसमें भारतीय साहित्य की गहन जानकारी रखनेवाला प्रख्यात लेखक सृजनात्मक विचारक व्याख्यान देता है), कवि अनुवादक (इस कार्यक्रम के अंतर्गत श्रोताओं को मूल एवं अनूदित दोनों कविताओं को एक साथ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), व्यक्ति एवं कृति (इसके अंतर्गत अंत: अनुशासनिक क्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियों को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया जाता है), कथासंधि (इस कार्यक्रम के अंतर्गत नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों का एकल पाठ होता है तथा उन पर चर्चा की जाती है), कविसंधि (इसमें काव्य-प्रेमियों को कवि/कवयित्री द्वारा एकल कविता-पाठ सुनने का अवसर प्राप्त होता है), लोक विविध स्वर (यह कार्यक्रम लोक-साहित्य पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है), नारी चेतना (यह कार्यक्रम भारतीय भाषाओं में लिखनेवाली महिला साहित्यकारों को एक मंच प्रदान करता है), युवा साहिती (इसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के युवा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाता है), पूर्वोत्तरी (इस शृंखला में पूर्वोत्तर के लेखकों साहित्यकारों को देश

के विभिन्न प्रांतों में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में रचना-पाठ हेतु आमंत्रित किया जाता है), ग्रामालोक (ग्रामीण अंचलों में साहित्यिक आयोजन) तथा अनुवाद कार्यशालाएँ (इसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों के अनुवादकों को एक साथ आमंत्रित किया जाता है)। अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। अकादेमी अपने नई दिल्ली स्थित जनजातीय और वाचिक साहित्य केंद्र तथा अगरतला में स्थित वाचिक पूर्वोत्तर साहित्य केंद्र द्वारा देश में जनजातीय और वाचिक साहित्य को प्रोत्साहित करती है।

अकादेमी भारतीय साहित्य की सेवा करनेवाले प्रख्यात भारतीय लेखकों तथा विदेशी विद्वानों को फेलोशिप भी प्रदान करती है। अकादेमी द्वारा आनंद कुमारस्वामी फेलोशिप उन एशियाई देशों के विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारत में अपनी पसंद की किसी साहित्यिक परियोजना पर कार्य करते हैं तथा प्रेमचंद फ़ेलोशिप सार्क (SAARC) देशों के उन सृजनात्मक लेखकों अथवा विद्वानों को प्रदान की जाती है, जो भारतीय साहित्य पर शोध करते हैं।

अकादेमी द्वारा भारतीय लेखकों पर विनिबंध, इनसाइक्लोपीडिया तथा संचयन जैसी प्रमुख परियोजनाओं का कार्य भी किया जाता है। हाल ही में संस्कृति मंत्रालय ने 'इंडियन लिटरेचर एब्रॉड' (ILA) नामक एक नई परियोजना अकादेमी को सौंपी है, जिसके अंतर्गत वैश्विक स्तर पर भारतीय साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए उसका विदेशी भाषाओं में अनुवाद कराया जाना है। इसके माध्यम से अकादेमी भारतीय साहित्यिक विरासत को प्रोत्साहित कर सकेगी तथा प्रमुख विदेशी भाषाओं में समकालीन भारतीय साहित्य का अनुवाद भी करा सकेगी। अकादेमी विभिन्न देशों के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का भी आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक वर्ष कई लेखकों के प्रतिनिधिमंडल एक-दूसरे देशों में आयोजित होने वाले साहित्यिक कार्यक्रमों, पुस्तक मेलों तथा सम्मिलनों में भाग लेते हैं।

अध्यक्ष

साहित्य अकादेमी के पहले अध्यक्ष पं. जवाहरलाल नेहरू थे। सन् 1963 में वह पुन: अध्यक्ष निर्वाचित हुए। मई 1964 में उनके निधन के बाद सामान्य परिषद् ने डॉ. एस. राधाकृष्णन् को अपना अध्यक्ष निर्वाचित किया। फ़रवरी 1968 में नवगठित परिषद् ने डॉ. ज़ाकिर हुसैन को साहित्य अकादेमी का अध्यक्ष निर्वाचित किया। मई 1969 में उनके निधन के पश्चात् परिषद् ने डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी को अध्यक्ष चुना। फ़रवरी 1973 में वह परिषद् द्वारा पुन: अध्यक्ष चुने गए। मई 1977 में उनकी मृत्यु के पश्चात् उपाध्यक्ष प्रो. के. आर. श्रीनिवास आयंगर साहित्य अकादेमी के कार्यवाहक अध्यक्ष बनाए गए। फ़रवरी 1978 में प्रो. उमाशंकर जोशी अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1983 में प्रो. वी.के. गोकाक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। फ़रवरी 1988 में डॉ. वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 1993 में प्रो. यू. आर. अनंतमूर्ति अध्यक्ष चुने गए। 1998 में श्री रमाकांत रथ अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2003 में प्रो. गोपीचंद नारंग अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2008 में श्री सुनील गंगोपाध्याय अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 2013 में प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी को अकादेमी का अध्यक्ष चुना गया। 2018 में डॉ. चंद्रशेखर कंबार अध्यक्ष निर्वाचित हुए। सामान्य परिषद को 2023-2028 के कार्यकाल के लिए पुनर्गठित किया गया तथा 2023 में श्री माधव कौशिक अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संविधान

साहित्य अकादेमी की स्थापना भारत सरकार के 15 दिसंबर 1952 के प्रस्ताव के अंतर्गत हुई, जिसमें अकादेमी का संविधान मूलत: अंतर्भुक्त था। अकादेमी एक स्वायत्त संस्था के रूप में कार्य करती है और अपने संविधान में आवश्यक संशोधन करने का अधिकार अकादेमी की सामान्य परिषद्

में न्यस्त है। समय-समय पर इस अधिकार का प्रयोग भी किया जाता रहा है।

मान्यता प्रदत्त भाषाएँ

भारत के संविधान में परिगणित 22 भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य अकादेमी अंग्रेज़ी और राजस्थानी को ऐसी भाषाओं के रूप में मान्यता प्रदान कर चुकी है, जिसमें उसका कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा सकता है। इन 24 भारतीय भाषाओं में साहित्यिक कार्यक्रम लागू करने के लिए परामर्श मंडल गठित किए गए हैं। साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ हैं— असमिया, बाङ्ला, बर', डोगरी, अंग्रेज़ी, गुजराती, हिंदी, कन्नड, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयाळम् मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िआ, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली, सिंधी, तमिऴ, तेलुगु और उर्दू।

संगठन

प्रधान कार्यालय : साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। यह भव्य भवन रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में सन् 1961 में निर्मित हुआ था। इसमें तीनों राष्ट्रीय अकादेमियाँ—संगीत नाटक अकादेमी, ललित कला अकादेमी और साहित्य अकादेमी स्थित हैं।

यह कार्यालय 11 भाषाओं यथा—डोगरी, अंग्रेज़ी हिंदी, कश्मीरी, मैथिली, नेपाली, पंजाबी, राजस्थानी, संस्कृत, संताली और उर्दू के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता : सन् 1956 में स्थापित और अब 4. डी.एल. खान रोड (एस.एस.के.एम. अस्पताल के निकट) कोलकाता-700025 में स्थित यह क्षेत्रीय कार्यालय असमिया, बाङ्ला, बोडो, मणिपुरी और ओड़िआ में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा इसके अलावा यह अन्य उत्तर-पूर्वी भाषाओं में भी कार्यक्रमों का संयोजन करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु : साहित्य अकादेमी के बेंगलुरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1990 में हुई। इस दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की मूलत: स्थापना 1959 में चेन्नै में हुई थी तथा बाद में इसे 1990 में सेंट्रल कॉलेज परिसर, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी बिल्डिंग, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु-560001 में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्षेत्रीय कार्यालय कन्नड, मलयाळम् तमिऴ और तेलुगु में अकादेमी के प्रकाशन और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

चेन्नै कार्यालय : दक्षिणी क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना 1959 में चेन्नै में की गई थी तथा 1990 में उसे उप कार्यालय के रूप में परिवर्तित कर क्षेत्रीय कार्यालय को बेंगळूरु में स्थानांतरित कर दिया गया। चेन्नै उप कार्यालय तमिऴ में अकादेमी के प्रकाशनों तथा कार्यक्रमों की देखरेख करता है तथा यह मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443 (304), अन्नासालई, तेनामपेट, चेन्न-600018 में स्थित है।

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई : सन् 1972 में स्थापित और 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई-400014 में स्थित यह कार्यालय गुजराती, कोंकणी, मराठी और सिंधी में अकादेमी के प्रकाशनों और कार्यक्रमों की देखरेख करता है। यहाँ पर एक पुस्तकालय भी है।

प्रकाशनों की बिक्री : साहित्य अकादेमी का बिक्री अनुभाग 'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के प्रकाशनों की बिक्री नई दिल्ली स्थित मुख्यालय और मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु और चेन्नै कार्यालयों तथा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन स्थित बिक्री केंद्रों से भी की जाती है। अकादेमी ने अपनी पुस्तकों का विक्रय अमेज़न (www.amazon.in) तथा साहित्य अकादेमी वेबसाइट (www.sahitya-akademi.gov.in) पर भी प्रारंभ कर दिया है।

पुस्तकालय : साहित्य अकादेमी का पुस्तकालय भारत के प्रमुख बहुभाषिक पुस्तकालयों में से एक है, यहाँ अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में विविध साहित्यिक और संबद्ध विषयों की पुस्तकें उपलब्ध हैं। क्षेत्रीय कार्यालयों के पुस्तकालयों को संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं के केंद्रों के रूप में स्थापित किया गया है और उन क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण भाषा पुस्तकालयों के लिए यह संपर्क संस्था के रूप में कार्य करता है।

साहित्य अकादेमी वेबसाइट : साहित्य अकादेमी की वेबसाइट http://www.sahitya-akademi.gov.in में इसकी स्थापना, उद्देश्यों, साहित्य अकादेमी की भूमिका एवं उसके इतिहास के विवरण उपलब्ध हैं। इसके अलावा अकादेमी की पुस्तकों की संपूर्ण सूची, जिसमें महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों का भाषानुसार विवरण उपलब्ध है, उसकी पत्रिकाओं, साहित्यिक गतिविधियों, विशेष परियोजनाओं के बारे में सूचनाएँ, अकादेमी पुरस्कार तथा महत्तर सदस्यता के विवरण, पुस्तकालय के बारे में सूचना तथा गत वर्षों में संस्था की उपलब्धियों का मूल्यांकन उपलब्ध है। अकादेमी वेबसाइट को नियमित रूप से द्विभाषी (हिंदी-अंग्रेज़ी) रूप में अद्यतन किया जाता है।

परियोजना एवं योजनाएँ

अभिलेखागार परियोजना

साहित्य के क्षेत्र में अभिलेखन के महत्त्व और उसकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए साहित्य अकादेमी ने मार्च 1997 में भारतीय साहित्य के अभिलेखागार की एक परियोजना प्रारंभ की। जब अभिलेखागार पूरी तरह से बन जाएगा तो यह लेखकों और साहित्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री एकत्र और संरक्षित करेगा, जैसे कि पांडुलिपियाँ, चित्र, ऑडियो रिकार्डिंग, वीडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिकृतियाँ (शबीह) आदि। पूरे भारतवर्ष में संस्थाओं और व्यक्तियों के पास उपलब्ध वीडियो फ़िल्म एवं लेखकों की लेखकों के मध्य हुए रोचक पत्राचार एवं साक्षात्कार और पाठ के उपलब्ध ऑडियो रिकॉर्डिंग को इकट्ठा कर यह भारतीय साहित्य के संग्रहालय के लिए एक ठोस आधार तैयार करेगा। अभिलेखागार में कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण चित्रों को सीडी-रोम्स पर स्कैन करने और संरक्षित करने का कार्य शुरू कर दिया गया है। लगभग एक सौ चित्रों का चयन कर उन्हें पोर्टफोलियो सीडी में संरक्षित किया गया है।

साहित्य अकादेमी ने फ़िल्मों, भारतीय लेखकों और उनके लेखन से संबंधित वीडियो रिकॉर्डिंग के अभिलेखागार की परियोजना पर कार्य प्रारंभ किया है। अकादेमी द्वारा महत्त्वपूर्ण लेखकों पर बनाई गई फ़िल्मों में उनके चित्रों, आवाज़ों, जीवन की महत्त्वपूर्ण प्रभावी घटनाओं, उनके विचारों और सृजनात्मक उपलब्धियों एवं समकालीन प्रतिक्रिया को अभिलेखित करने का प्रयास किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक किया गया है। वीडियो फ़िल्मों का यह अभिलेखागार भविष्य के अनूठे भारतीय साहित्यिक संग्रहालय का एक नमूना होगा, जो आम पाठकों के लिए रुचिकर होगा और साहित्यिक अनुसंधानकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए उपयोगी साबित होगा। ये फ़िल्में उन निर्देशकों द्वारा निर्मित की गई हैं, जो अपनी ही तरह के सृजनात्मक कलाकार हैं। अकादेमी द्वारा अब तक 154 लेखकों पर वीडियो फ़िल्में बनाई गई हैं। इनमें से कुछ फ़िल्मों की सीडी बिक्री के लिए भी उपलब्ध है।

अकादेमी से किए जाने वाले पत्राचार की समीक्षा की गई है तथा जवाहरलाल नेहरू, एस. राधाकृष्णन, कृष्ण कृपलानी, ज़ाकिर हुसैन, सी. राजगोपालाचारी एवं अन्य प्रख्यात व्यक्तियों के पत्रों को लेमिनेट कराकर संरक्षण हेतु पुस्तक रूप में तैयार किया गया है। समस्त मास्टर बीटा फ़िल्मों के डिजिटाइजेशन का कार्य पूर्ण हो चुका है। 2015 तक की ऑडियो टेप्स की प्रामाणिकता को जाँचने के उपरांत उनके क्रमांकन, शीर्षक एवं सूची बनाने का कार्य पूरा कर लिया गया है।

एक अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में अकादेमी ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ अपने अभिलेखागार के ऑडियो, वीडियो और अन्य सामग्रियों

के डिजिटाइजेशन के लिए एक करार किया है। तदनुसार कार्य प्रगति पर है।

अनुवाद केंद्र

चूँकि अनुवाद अकादेमी की गतिविधियों में से एक प्रमुख गतिविधि है, अकादेमी ने बेंगळूरु में तथा कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र अनुवाद केंद्र स्थापित किए हैं। ये केंद्र उन क्षेत्रों की भाषाओं से अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं में अनूदित पुस्तकों की विशेष शृंखला का प्रकाशन करेंगे।

इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

साहित्य अकादेमी की प्रमुख गतिविधियों में इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन लिटरेचर का निर्माण भी है। यह अपनी तरह की पहली योजना है, जिसमें भारत की बाईस भाषाओं को शामिल किया गया है। अंग्रेज़ी में प्रस्तुत इस विश्वकोश से भारतीय साहित्य की अभिवृद्धि और विकास की व्यापक रूपरेखा सामने आई है। लेखकों, पुस्तकों और सामान्य विषयों पर लिखित प्रविष्टियों को संबद्ध परामर्श मंडलों द्वारा सुव्यवस्थित किया गया और एक संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया है। देश भर के सैकड़ों लेखकों ने विभिन्न विषयों पर प्रविष्टियाँ भेजी हैं। यह विश्वकोश, जिसे छह खंडों की परियोजना के रूप में नियोजित किया गया, प्रकाशित है। डिमाई क्वार्टो आकार के प्रत्येक खंड में लगभग 1000 पृष्ठ हैं।

इनसाइक्लोपीडिया के संशोधन का कार्य प्रो. के. अय्यप्प पणिक्कर के संपादन में शुरू किया गया था। वर्तमान में प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी इस परियोजना के प्रधान संपादक के रूप में संबद्ध हैं। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खंडों के संशोधित संस्करण प्रकाशित किए जा चुके हैं। चतुर्थ खंड का कार्य साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता की देखरेख में हो रहा है।

हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन लिटरेचर

अकादेमी की इस परियोजना का उद्देश्य है— विभिन्न भाषाओं में और विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न कालों में भारत में साहित्यिक गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। प्रो. शिशिर कुमार दास द्वारा लिखित सन् 500 से 1300, सन् 1800 से 1910 और सन् 1911 से 1956 तक के कालखंड को समेटने वाले तीन खंडों का प्रकाशन हो चुका है।

द्विभाषी शब्दकोश परियोजना

सन् 2004 में साहित्य अकादेमी ने कई द्विभाषी शब्दकोशों का संकलन तैयार करने हेतु एक परियोजना का शुभारंभ किया। प्रथम चरण में बाङ्ला-असमिया, बाङ्ला-ओड़िआ बाङ्ला-मैथिली, बाङ्ला-मणिपुरी तथा बाङ्ला-संताली शब्दकोश लाने का निर्णय लिया गया। प्रत्येक शब्दकोश के लिए प्रख्यात विद्वानों, कोशकारों तथा विभिन्न भाषाओं के भाषा विशेषज्ञों का एक संपादक-मंडल तैयार किया गया है। पांडुलिपि तैयार करने एवं आगामी प्रकाशन संबंधी दिशा-निर्देश तथा उसकी निगरानी के लिए एक केंद्रीय संपादक मंडल का भी गठन किया गया।

यह पाया गया कि पूर्वोत्तर भारत की लगभग समस्त भाषाओं में अंग्रेज़ी के एकल तथा अंग्रेज़ी एवं अन्य भाषाओं के शब्दकोश तो कमोबेश उपलब्ध हैं, किंतु बाङ्ला-मणिपुरी अथवा मणिपुरी-असमिया आदि भाषाओं के शब्दकोश लगभग न के बराबर हैं। साहित्य अकादेमी पड़ोसी राज्यों के बीच आपसी संबंधों को और अधिक प्रगाढ़ करने के प्रयासों के चलते साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक भाषा से अन्य भाषाओं में करवा रही है। किंतु

समुचित मात्रा में शब्दकोशों की अनुपलब्धता एक बाधा बन गई है तथा अनुवादकों के पास अनुवाद कार्य हेतु प्रामाणिक शब्दकोश नहीं हैं। इस परिस्थिति में साहित्य अकादेमी ने शब्दकोश निर्माण की परियोजना को प्रारंभ किया।

ये शब्दकोश औसत आकार के होंगे, जिनमें 40000-45000 शब्दों तथा वाक्यांशों की प्रविष्टि होगी। विवरण के अंतर्गत आई.पी.ए. (इंटरनेशनल फोनेटिक ऐसोसिएशन) के अंतर्गत उच्चारण चिह्न संस्कृत, अरबी आदि भाषा संबंधी स्रोत: शब्द-भेद, विस्तृत अर्थ (एक से अधिक, यदि आवश्यक हो तो) उदाहरण, व्युत्पत्ति आदि दिया जाना प्रस्तावित है। इस संपूर्ण परियोजना को प्रख्यात कोशकार प्रो. अशोक मुखोपाध्याय के संपादकीय निर्देशन में तैयार किया जा रहा है।

परियोजना के प्रथम द्विभाषी बाङ्ला-मैथिली शब्दकोश का 1 मई 2012 को लोकार्पण किया गया। बाङ्ला-संताली द्विभाषी शब्दकोश को 14 अगस्त 2012 को लोकार्पित किया गया। डोगरी-हिंदी-राजस्थानी शब्दकोश 2012 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-मणिपुरी शब्दकोश 2014 में प्रकाशित हुआ तथा बाङ्ला-असमिया शब्दकोश 2018 में प्रकाशित हुआ। कन्नड-तेलुगु द्विभाषी शब्दकोश 2019 में प्रकाशित हुआ। बाङ्ला-नेपाली, संताली-ओड़िआ, मैथिली-ओड़िआ तथा मैथिली-असमिया द्विभाषी शब्दकोशों के संकलन का कार्य प्रगति पर है।

जनजातीय तथा वाचिक साहित्य केंद्र

भारत के व्यापक जनजातीय एवं वाचिक साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से साहित्य अकादेमी द्वारा दो केंद्रों की स्थापना की गई है, इंफ़ाल में उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र (NECOL) तथा नई दिल्ली में वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT)।

उत्तर-पूर्व वाचिक साहित्य केंद्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रकाशनों एवं रिकॉर्डिंग द्वारा पूर्वोत्तरी वाचिक भाषाओं के कार्यों एवं वहाँ के साहित्य को प्रोत्साहित करना है। यह केंद्र लोक उत्सव, आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ, साहित्य मंच, संगोष्ठी, परिसंवाद, कार्यशालाओं आदि का आयोजन करता रहता है। यह केंद्र पूर्वोत्तरी वाचिक साहित्य को अन्य मान्यता प्राप्त भारतीय भाषाओं में भी अनूदित करवाता है।

यह केंद्र पूर्वोत्तरी जनजातीय भाषाओं को अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं से निरंतर कार्यक्रमों के आयोजनों द्वारा मिलाने का कार्य भी करता है। यहाँ से लेपचा, कॅकबरॅक, मिसिंग, बोंगचेर, गारो तथा मोग भाषाओं से अंग्रेज़ी में कई अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। वाचिक एवं जनजातीय साहित्य केंद्र (COTLIT) देशभर के वाचिक एवं जनजातीय साहित्य को संकलित, संरक्षित और प्रोत्साहित करने का कार्य कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के माध्यम से करता है। यह केंद्र वाचिक साहित्य के डिजिटल अभिलेख मंच 'स्वर सदन' के सृजन में भी सक्रियता से संलग्न है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र की विभिन्न प्रदर्शनियों में भी सहभागिता करता है।

पुस्तकालय

साहित्य अकादेमी पुस्तकालय 24 भाषाओं की पुस्तकों में साहित्य, समालोचना, दर्शनशास्त्र, इतिहास तथा उससे संबंधित विषयों की पुस्तकों के समृद्ध संग्रह के साथ अपनी तरह का अनूठा पुस्तकालय है। अकादेमी पुस्तकालय सक्रिय एवं प्रशंसक पाठकों (कुल 13,179 पंजीकृत सदस्य) द्वारा दिल्ली में सर्वाधिक प्रयोग किया जाने वाला पुस्तकालय है। वर्ष 2022-2023 में पुस्तकालय के 247 नए सदस्य बने हैं तथा 1579 नई पुस्तकें पुस्तकालय हेतु खरीदी गईं। पुस्तकालय के प्रधान कार्यालय का कुल संग्रह 2.3 लाख से भी अधिक है तथा अकादेमी के समस्त क्षेत्रीय

कार्यालयों के पुस्तकालयों को मिलाकर कुल 3.09 लाख (लगभग) पुस्तकें हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए अकादेमी पुस्तकालय के वेब पेज को नया रूप दिया गया है। वेब ओपीएसी (WebOPAC) को अधिक यूजर फ्रेंडली बनाने के लिए अनुकूलित किया गया है। पुस्तकालय ने "सामग्री आधारित पूर्ण पाठ खोज प्रणाली" की एक नई सेवा भी शुरू की है, जो संदर्भ उद्देश्य के लिए बहुत उपयोगी है। पाठकों तथा स्टॉफ सदस्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए डिजिटल लाइब्रेरी (साहित्य सागर) का भी निर्माण किया गया है। अब 24 भाषाओं की पुस्तकों की कैटलॉगिंग को पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत किया जा चुका है तथा वेब ओपैक (WebOPAC) के माध्यम से अकादेमी की वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in पर ऑनलाइन ढूँढ़ा जा सकता है। समस्त भाषाओं की पुस्तकों की ऑन-लाइन कैटलॉगिंग का काम किया जा चुका है। इन खंडों के ऑटोमेशन होने के साथ पुस्तकालय कम समय में ग्रंथ सूची उपलब्ध करा सकता है। "हूज' हू ऑफ़ इंडियन राइटर्स" जैसी महत्त्वपूर्ण परियोजना का कार्य पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा संपन्न किया जा चुका है तथा हमारी वेबसाइट www.sahitya-akademi.gov.in/sahitya-akademi/SA Search System/sauser पर उपलब्ध है। 'क्रिटिकल इन्वेंट्री ऑफ़ नार्थ-ईस्टर्न ट्राइबल लिटरेचर' के द्वितीय खंड के संकलन का काम अभी चल रहा है, जिसे साहित्य अकादेमी द्वारा शीघ्र प्रकाशित किया जाएगा।

पुस्तकालय भारतीय साहित्य पर लिखित अंग्रेज़ी भाषा के आलेख, जो उसकी गृह पत्रिका में प्रकाशित हैं, के क्रमांकन का कार्य भी करता है। यह डाटाबेस पुस्तकालय के पाठकों के लिए भी उपलब्ध है।

पुस्तकालय ने पाठकों के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नई सेवा को जारी रखा है, जिसमें समाचार-पत्र की कतरनों, पुस्तक समीक्षाओं तथा ज्वलंत मुद्दों को प्रदर्शित किया जाता है।

क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से पुस्तकों की खरीद की जाती है। क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, बेंगळूरु तथा मुंबई पुस्तकालयों ने अपने संग्रहण के रेट्रोकन्वर्जन कंप्यूटरीकरण का कार्य शुरू कर दिया है। इन पुस्तकालयों के कैटलॉग सिंगल विंडो ओपेक (WebOPAC) के माध्यम से प्राप्य हैं, जो यूनियन कैटलॉग के रूप में पुस्तकों की स्थानानुसार उपलब्धता की सूचना प्रदान करते हैं।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की समिति

पी.ओ.एस.एच. अधिनियम के प्रावधानों के अंतर्गत कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न के मामलों को देखने के लिए गठित समिति की बैठक प्रधान कार्यालय, नई दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों मुंबई, कोलकाता तथा बेंगळूरु एवं उप-कार्यालय चेन्नई में भी हुई। संबंधित समिति की रिपोर्ट के अनुसार, इस संबंध में कोई शिकायत प्राप्त नहीं हुई।

2022-2023 की प्रमुख गतिविधियाँ

- साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2021 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान प्रदत्त।
- साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्याताएँ प्रदत्त।
- उन्मेष 2022 के अंतर्गत 65 कार्यक्रम आयोजित।
- साहित्योत्सव 2023 के अंतर्गत 45 कार्यक्रम आयोजित।
- देशभर में कुल 690 कार्यक्रमों का आयोजन।
  - 08 'अस्मिता', 01 'आविष्कार', 11 पुरस्कार/महत्तर सदस्यातएँ, 03 'बाल साहिती', 13 'पुस्तक परिचर्चा', 05 'सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम', 04 'दलित चेतना', 53 'वृत्तचित्र प्रदर्शन' (दर्पण), 'एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना' के अंतर्गत 41, 45 'साहित्योत्सव कार्यक्रम', 'ग्रामालोक' के अंतर्गत 44, 01 'कथाकार अनुवादक', 14 'कथासंधि', 'साहित्य मंच' शृंखला के अंतर्गत 99, 16 'लेखक से भेंट', 44 'विविध कार्यक्रम', 01 'भाषा सम्मेलन',04 'मुलाक़ात', 11 'बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन', 14 'नारी चेतना', 01 'व्यक्ति और कृति', 05 'कवि सम्मिलन', 04 'प्रवासी मंच', 04 'संवाद', 16 'संगोष्ठियाँ' (जन्मशतवार्षिकी), 28 'संगोष्ठियाँ', 13 'परिसंवाद' (जन्मशतवार्षिकी), 66 'परिसंवाद', 12 'मेरे झरोखे से', 13 'अनुवाद कार्याशालाएँ', 'उन्मेष' के अंतर्गत 65, 13 'लेखक सम्मिलन', 09 'युवा साहिती' आदि विभिन्न साहित्यिक कार्यक्रमों का समस्त भारत में आयोजन किया गया।
- वर्ष 2022-2023 में 124 पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों का आयोजन एवं सहभागिता।
- 406 नई एवं पुनर्मुद्रित पुस्तकें प्रकाशित।
- साहित्य अकादेमी ने 19.34 करोड़ लाख रुपए की पुस्तकों की बिक्री की।
- साहित्य अकादेमी पुस्तकालयों में 1579 और नई पुस्तकें जुड़ीं।
- प्रख्यात भारतीय लेखकों पर 7 वृत्तचित्रों का निर्माण। साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित वृत्तचित्रों की कुल संख्या बढ़कर अब 169 हो गई है।
- *इंडियन लिटरेचर* के 6 अंकों, *समकालीन भारतीय साहित्य* के 6 अंकों तथा *संस्कृत प्रतिभा* के 5 अंकों का प्रकाशन।

पुरस्कार

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022

22 दिसंबर 2022 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में वर्ष 2022 के साहित्य अकादेमी पुरस्कार के लिए 24 भाषाओं में 24 पुस्तकों का चयन, संबद्ध भाषाओं में त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2016 से 31 दिसंबर 2020 के मध्य) प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 से सम्मानित लेखक

असमिया : मनोज कुमार गोस्वामी, ***भुल सत्य*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : तपन बंद्योपाध्याय, ***बीरबल*** (उपन्यास)

बोडो : रश्मि चौधुरी, ***सानस्त्रिनि मदिरा*** (कविता-संग्रह)

डोगरी : वीणा गुप्ता, ***छे रूपक*** (नाटक-संग्रह)

अंग्रेज़ी : अनुराधा रॉय, ***ऑल द लाइव्स वी नेवर लिव्ड*** (उपन्यास)

गुजराती : गुलाममोहम्मद शेख, ***घेर जतां*** (आत्मकथात्मक निबंध-संग्रह)

हिंदी : बद्री नारायण, ***तुमड़ी के शब्द*** (कविता-संग्रह)

कन्नड : मुडनाकुडु चिन्नास्वामी, ***बहुत्वदा भारत मत्तु बौद्ध तातविकते*** (लेख-संग्रह)

कश्मीरी : फ़ारूक़ अहमद (फ़ारूक़ फ़याज़), ***ज़ायल डब*** (साहित्यिक समालोचना)

कोंकणी : माया अनिल खरंगटे, ***अमृतवेळ*** (उपन्यास)

मैथिली : अजित आजाद, ***पेन-ड्राइवमे पृथ्वी*** (कविता-संग्रह)

मलयाळम् : एम. थॉमस मैथ्यू, ***आशांटे सितायानम*** (साहित्यिक समालोचना)

मणिपुरी : कोइजम शांतिबाला देवी, ***लैरोन्नुङ*** (कविता-संग्रह)

मराठी : प्रवीण दशरथ बांदेकर, ***उजव्या सोंडेच्या बाहुल्या*** (उपन्यास)

नेपाली : के.बी.नेपाली (खड्ग बहादुर नेपाली), ***साइनो*** (नाटक)

ओडिआ : गायत्रीबाला पंडा, ***दयानदी*** (कविता-संग्रह)

पंजाबी : सुखजीत, ***मैं अयनघोष नहीं*** (कहानी-संग्रह)

राजस्थानी : कमल रंगा, ***अलेखूं अंबा*** (नाटक)

संस्कृत : जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि', ***दीपमाणिक्यम्*** (कविता-संग्रह)

संताली : जगन्नाथ सोरेन (कजली सोरेन), ***साबोरनाका बालीरे सोनाञ पाँजाय*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : कन्हैयालाल लेखवाणी, ***सिंधी साहित जो मुख़्तसर इतिहास*** (सिंधी साहित्य का इतिहास)

तमिळ : एम. राजेंद्रन, ***काला पानी*** (उपन्यास)

तेलुगु : मधुरांतकम नरेंद्र, ***मनोधर्मपरागम*** (उपन्यास)

उर्दू : सैयद अनीस अशफ़ाक़ आबिदी (अनीस अशफ़ाक़), ***ख़्वाब सराब*** (उपन्यास)

मनोज कुमार गोस्वामी

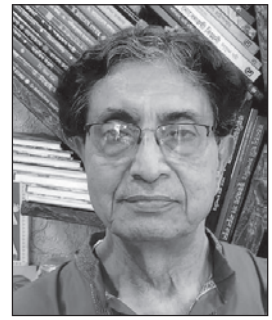

तपन बंद्योपाध्याय

रश्मि चौधुरी

वीणा गुप्ता

अनुराधा रॉय

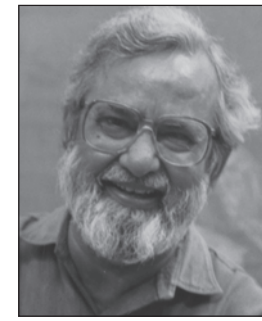

गुलाममोहम्मद शेख

बद्री नारायण

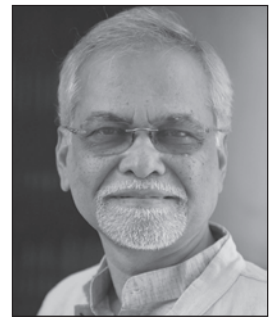

मुडनाकुडु चिन्नास्वामी

फ़ारूक़ अहमद (फ़ारूक़ फ़याज़)

माया अनिल खरंगटे

अजित आजाद

एम. थॉमस मैथ्यू

कोइजम शांतिबाला देवी

प्रवीण दशरथ बांदेकर

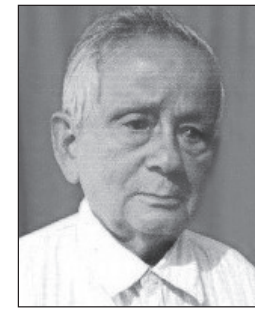

के.बी. नेपाली
(खड्ग बहादुर नेपाली)

गायत्रीबाला पंडा

सुखजीत

कमल रंगा

जनार्दन प्रसाद पाण्डेय 'मणि'

जगन्नाथ सोरेन
(कजली सोरेन)

कन्हैयालाल लेखवाणी

एम. राजेंद्रन

मधुरांतकम नरेंद्र

सैयद अनीस अशफ़ाक़ आबिदी
(अनीस अशफ़ाक़)

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- प्रो. ज्योत्सना राउत
- श्री कुल शइकिया
- प्रदीप ज्योति महंत

बाङ्ला
- श्री गौतम घोषदस्तीदार
- श्री समरेश मजूमदार
- श्री हिमवंत बंद्योपाध्याय

बोडो
- श्री बिरहाशगिरि बसुमतारी
- श्री लक्ष्मीनाथ ब्रह्म
- प्रो. रत्नेश्वर नार्जारी

डोगरी
- प्रो. अर्चना केसर
- श्री चमन अरोड़ा
- श्री राज राही (राजकुमार शर्मा)

अंग्रेज़ी
- सुश्री अर्शिया सत्तार
- प्रो. कपिल कपूर
- प्रो. मोहम्मद असदुद्दीन

गुजराती
- श्री रमेश दवे
- प्रो. सितांशु यशश्चंद्र
- श्री उदयन ठक्कर

हिंदी
- श्री अरुण कमल
- डॉ. चंद्र त्रिखा
- डॉ. नंद किशोर आचार्य

कन्नड
- प्रो. सी. नागन्ना
- डॉ. चंद्रशेखर वस्त्राड
- श्री पद्मराज दंडवती

कश्मीरी
- प्रो. मजरूह राशिद
- श्री मो. यूसुफ टैंग
- श्री ज़रीफ अहमद ज़रीफ

कोंकणी
- श्री देवीदास कदम
- श्री एन. शिवदास
- श्री परेश नरेंद्र कामत

मैथिली
- डॉ. देवकांत झा
- डॉ. मंत्रेश्वर झा
- डॉ. शेफालिका वर्मा

मलयाळम्
- श्री सी. राधाकृष्णन
- डॉ. एम.एम. बशीर
- श्री पॉल ज़कारिया

मणिपुरी
- श्री बी.एस. राजकुमार
- श्री कोंजेंगबम हेमचंद्र सिंह
- प्रो. राजेन तोइजंबा

मराठी
- श्री कुमार केतकर
- प्रो. भालचंद्र नेमाडे
- प्रो. नितिन रिंधे

नेपाली
- श्री भवानी अधिकारी
- डॉ. गोकुल सिन्हा
- डॉ. पुष्पा शर्मा

ओड़िआ
- डॉ. जयंती रथ
- श्री क्षीरोध परिदा
- डॉ. सुदर्शन अचार्य

पंजाबी
- प्रो. हरभजन सिंह भाटिया
- प्रो. सुनीता धीर
- सुश्री भूपिंद्र कौर प्रीत

राजस्थानी
- डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा
- डॉ. प्रकाश अमरावत
- डॉ. सत्यनारायण

संस्कृत
- डॉ. एच.वी. नागराज राव
- प्रो. मुरली मनोहर पाठक
- प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्र

संताली
- डॉ. जितेंद्र मुर्मू
- श्री महादेव हाँसदा
- श्री दशरथी सोरेन

सिंधी
- श्री मोहन गेहानी
- श्री नंद छुगानी
- श्री नंद जावेरी

तमिऴ
- श्रीमती जी. तिलकावती
- श्री कलाप्रिया (टी.के. सोमसुंदरम)
- श्री आर. वेंकटेश

तेलुगु
- डॉ. सी.एल.एल. जयाप्रदा
- डॉ. नंदिनी सिद्ध रेड्डी
- प्रो. पी. कुसुम कुमारी

उर्दू
- श्री जयंत परमार
- श्री निज़ाम सिद्दीकी
- सुश्री शबनम हामिद

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021

24 जून 2022 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2015 से 31 दिसंबर 2019 के मध्य) प्रकाशित कृतियों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 से सम्मानित लेखक

असमिया : पॅरी हिलोइदारी, ***दांति पारॅर मानुह*** (*द लीजेंड्स ऑफ़ पेनसम*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) ममंग दई

बाङ्ला : नीता सेन समर्थ, ***युगांत*** (*युगांत*—मराठी, नाटक) महेश एलकुंचवार

बोडो : इंदिरा बर', ***हिरिम्बा*** (*हिरिम्बा*—असमिया, उपन्यास) जयन्ती गगै

डोगरी : नीलम सरीन, ***पाकिस्तान दी हक़ीक़त कन्नै रू-ब-रू*** (*पाकिस्तान की हक़ीक़त से रू-ब-रू*—हिंदी, यात्रावृत्तांत) सतीश वर्मा

अंग्रेज़ी : शांता गोखले, ***स्मृतिचित्रे : द मेमोइर्स ऑफ़ अ स्पिरिटेड वाइफ़*** (*स्मृतिचित्रे*—मराठी, आत्मकथा) लक्ष्मीबाई तिलक

गुजराती : सोनल परीख, ***बा : महात्मानां अर्धांगिनी*** (*द फॉर्गाटेन वुमन*—अंग्रेज़ी, जीवनी) अरुण गाँधी एवं सुनंदा गाँधी

हिंदी : धरणेन्द्र कुरकुरी, ***ज्वालामुखी पर*** (*ज्वालामुखिय मेले*—कन्नड, उपन्यास) बसवराज कट्टीमनी

कन्नड : गुरुलिंग कापसे, ***ओंडु पुताडा कथे*** (*एका पनाचि कहानी*—मराठी, आत्मकथा) वी.एस. खांडेकर

कश्मीरी : प्यारे हताश, ***तवी अन्द्य पख्य*** (*डोगरी कहानियाँ*—डोगरी, कहानी) विभिन्न लेखक

कोंकणी : गीता शेनॉय, ***बहुजिह्वा भारतीक ऐक्यताच्या आरती*** (*विचार करांटिगे अह्वान*—कन्नड, निबंध-संग्रह) के.वी. पुटप्पा (कुवेंपु)

मैथिली : (स्व.) शिखा गोयल, ***स्मरणगाथा*** (*स्मरणगाथा*—मराठी, उपन्यास) गो.नी. दांडेकर

मलयाळम् : सुनील नालियथ, ***बशाइ टुडु*** (*ऑपरेशन बशाइ टुडु*—बाङ्ला, उपन्यास) महाश्वेता देवी

मणिपुरी : एम.एम. अहमद, ***उमराव जान अदा*** (*उमराव जान अदा*—उर्दू, उपन्यास) मिर्ज़ा मुहम्मद हादी रुसवा

मराठी : (स्व.) कुमार नवाथे, ***सी ऑफ़ पॉपीज*** (*सी ऑफ़ पॉपीज*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) अमिताव घोष

नेपाली : संजीव उपाध्याय, ***बाबु-छोरा*** (*पिता-पुत्र*—असमिया, उपन्यास) होमेन बरगोहाईं

ओड़िआ : गौरहरि दास, ***छेलि चारेइबारा दिना*** (*आदुजीविथम (गोट डेज़)*—मलयाळम्, उपन्यास) बेन्यामिन

पंजाबी : भजनबीर सिंह, ***प्रतिनिध कहाणियां*** (*प्रतिनिधि कहानियाँ*—हिंदी, कहानी-संग्रह) उदय प्रकाश

राजस्थानी : संजय पुरोहित, ***हेली रै मांय*** (*इंसाइड द हवेली*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) रमा मेहता

संस्कृत : शतावधानी रा. गणेश एवं बी.एन. शशि किरण, ***महाब्राह्मणः*** (*महाब्राह्मण*—कन्नड, उपन्यास) देवुडु नरसिंह शास्त्री

संताली : दमयंती बेसरा, ***श्रीगीतगोविंद*** (*श्रीगीतगोविंद*—संस्कृत, गौरवग्रंथ) जयदेव

सिंधी : मीनागोप रूपचंदाणी, ***अजु-सुबहाने-परहीन*** (*आज-कल-परसों*—हिंदी, कहानी-संग्रह) राजमोहन झा

तमिऴ : मालन (वी. नारायणन), ***अॅरु पिनान्थूक्कियिन वरलातरु कुरिप्पुगल*** (*क्रॉनिकल ऑफ़ ए कॉपर्स बेयरर*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) साइरस मिस्त्री

तेलुगु : काकरला सजय, ***अशुद्ध भारत*** (*अदृश्य भारत*—हिंदी, कथेतर कृति) भाषा सिंह

उर्दू : अर्जुमंद आरा, ***बेपनाह शादमानी की मम्लिकत*** (*द मिनिस्ट्री ऑफ़ अटमोस्ट हैप्पीनेस*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) अरुंधति रॉय

पॅरी हिलोइदारी

नीता सेन समर्थ

इंदिरा बर

नीलम सरीन

शांता गोखले

सोनल परीख

धरणेन्द्र कुरकुरी

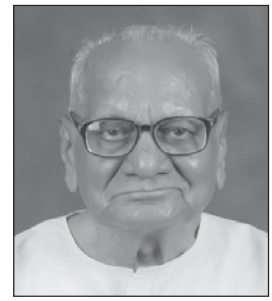

गुरुलिंग कापसे

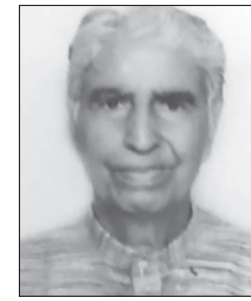

प्यारे हताश

गीता शेनॉय

(स्व.) शिखा गोयल

सुनील नालियथ

एम.एम. अहमद

(स्व.) कुमार नवाथे

संजीव उपाध्याय

गौरहरि दास

भजनबीर सिंह

संजय पुरोहित

शतावधानी रा. गणेश

बी.एन. शशिकिरण

दमयंती बेसरा

मीना गोप रूपचंदाणी

मालन (वी. नारायणन)

काकरला सजय

अर्जुमंद आरा

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- बालेंद्र कुमार दास
- श्री उत्पल दत्त
- डॉ. स्वाति किरण

बाङ्ला
- डॉ. ईशा डे
- प्रो. सोमदत्त मंडल
- श्री प्रतुल मुखोपाध्याय

बोडो
- सुश्री धनश्री स्वर्गियारी
- डॉ. भूपेन नार्ज़ारी
- डॉ. बिहुंग ब्रह्म

डोगरी
- श्री ज्ञान सिंह पगोच
- श्री मोहन सिंह
- श्री शिव डोबलिया

अंग्रेज़ी
- श्री अरुणव सिन्हा
- डॉ. रख्शंदा जलील
- प्रो. एम. श्रीधर

गुजराती
- आलोक कुमार गुप्त
- श्री प्रसाद ब्रह्मभट्ट
- डॉ. रंजना हरीश

हिंदी
- प्रो. ए. अच्युतन
- प्रो. चक्रधर त्रिपाठी
- प्रो. गोपेश्वर सिंह

कन्नड
- श्री बी.आर. लक्ष्मण राव
- डॉ. बसवराज कालगुडी
- श्री एच.के. सुब्बैयाह (सुब्बु होलेयार)

कश्मीरी
- श्री अवतार कृष्ण पंडित (अवतार हुगामी)
- श्री फ़ारुक़ नाज़की
- डॉ. आर.एल. तलाशी

कोंकणी
- डॉ. चंद्रशेखर शेनॉय
- श्री मुकेश थाली
- श्री रमेश जी. लाड

मैथिली
- डॉ. अमरनाथ चौधुरी
- प्रो. बासुकीनाथ झा
- डॉ. माधुरी झा

मलयाळम्
- प्रो. सी.जी. राजगोपाल
- प्रो. के. सच्चिदानंदन
- प्रो. वी.डी. कृष्णन नम्पियार

मणिपुरी
- श्री वाइखोम इबोतोम्बी ममंग
- श्री नांगोम इबोटॅन सिंह
- श्री क्षेत्रीमयुम राजेन सिंह (क्षेत्री राजेन)

मराठी
- श्री अविनाश सप्रे
- डॉ. मेघा पानसरे
- श्री मिलिंद चंपनेरकर

नेपाली
- सुश्री बीना हाङखिम
- श्री दुर्गा खाटिवाड़ा
- श्रीमती गरिमा राय

ओड़िआ
- डॉ. अजॅय कुमार पटनायक
- प्रो. संघमित्र मिश्र
- डॉ. तुहिनमसु रथ

पंजाबी
- प्रो. रवेल सिंह
- डॉ. मनजिंदर सिंह
- श्री गुरतेज कोहरवाला

राजस्थानी
- डॉ. अजय कुमार जोशी
- डॉ. धनंजय अमरावत
- डॉ. लक्ष्मीकांत व्यास

संस्कृत
- डॉ. टी.वी. सत्यनारायण
- प्रो. विंध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय'
- डॉ. सरोज कौशल

संताली
- श्री जदुमनी बेसरा
- श्री सदानंद हांसदा
- डॉ. नाकु हांसदा

सिंधी
- प्रो. हास्सो ददलाणी
- डॉ. कमला गोकलाणी
- डॉ. जगदीश लच्छाणी

तमिळ
- श्री पोन्नीलन
- श्री पवइ चंद्रन
- श्रीमती शिवशंकरी

तेलुगु
- प्रो. एस. शेषरत्नम्
- श्री वाई. मुकुंद रामाराव
- डॉ. गुम्मा सम्बाशिव राव

उर्दू
- डॉ. अब्दुस समद
- श्री रहमान अब्बास
- श्री शफ़ी सिरौंजी

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022

22 दिसंबर 2022 को नई दिल्ली में अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। अनुवाद पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा में चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। संबद्ध भाषाओं में पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के वर्ष से पहले के पाँच वर्षों में (अर्थात् 1 जनवरी 2016 से 31 दिसंबर 2020 के मध्य) प्रकाशित कृतियों पर दिया गया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 से सम्मानित लेखक

असमिया : जूरी दत्ता, ***कोचरथि : अरया नारी*** (*कोचरथि*—मलयाळम्, उपन्यास) नारायण

बाङ्ला : शौभिक दे सरकार, ***आमार बाबा बालाईया*** (*माई फ़ादर बालाईया*—अंग्रेज़ी, आत्मकथा) वाई.बी. सत्यनारायण

बोडो : देबजित ब्रह्म (राजा देबजित बसुमतारी), ***काबुलिवालानि बाङ्ली बिजि*** (*काबुलीवालार बंगाली बोउ*—बाङ्ला, उपन्यास) सुष्मिता बंद्योपाध्याय

डोगरी : निर्मल विनोद, ***देहरा च अज्ज बी उगदे न साढ़े बूहटे*** (*अवर ट्रीज़ स्टिल ग्रो इन देहरा*—अंग्रेज़ी, कहानी-संग्रह) रस्किन बॉन्ड

अंग्रेज़ी : एन. कल्याण रामन, ***पोनाची आर द स्टोरी ऑफ़ ए ब्लैक गोट*** (*पोनाची*—तमिळ, उपन्यास) पेरूमल मुरुगन

गुजराती : विजय पंड्या, ***वाल्मीकिरामायणे अयोध्याकाण्डम्*** (*वाल्मीकिरामायणे, अयोध्याकाण्डम्*—संस्कृत, महाकाव्य) वाल्मीकि

हिंदी : गौरीशंकर रैणा, ***कश्मीरी की प्रतिनिधि कहानियाँ*** (*कश्मीरी,* कहानी-संकलन) विभिन्न अनुवादक

कन्नड : पद्मराज दंडावती, ***सीता रामायणद सचित्र मरु कथन*** (*सीता : एन इल्स्ट्रेटेड रिटेलिंग ऑफ़ रामायण*—अंग्रेज़ी, कथा-साहित्य) देवदत्त पटनायक

कश्मीरी : शबनम तिलगामी, ***गीतांजलि*** (*गीतांजलि*—बाङ्ला, गीतिकाव्य-संग्रह) रवींद्रनाथ ठाकुर

कोंकणी : माणिकराव राम नायक गावणेकार, ***श्रीरामकृष्ण अमृतवाणी (खंड-I और II)*** (*श्री श्री रामकृष्ण कथामृत*—बाङ्ला, निबंध-संग्रह) महेंद्रनाथ गुप्त

मैथिली : रत्नेश्वर मिश्र, ***आजादी*** (*आजादी*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) चमन नाहल

मलयाळम् : चात्तनात्त् अच्युतन् उण्णी, ***वामनाचार्यंटे काव्यालंकारसूत्रवृत्ति*** (*काव्यालंकारसूत्रवृत्तिः*—संस्कृत, भारतीय काव्याशास्त्र) वामनाचार्य

मणिपुरी : सलाम तोंबा, ***अंगोउबा केई*** (*द व्हाइट टाइगर*—अंग्रेज़ी, उपन्यास) अरविंद अडिगा

मराठी : प्रमोद मुजुमदार, ***सलोख्याचे प्रदेश : शोध सहिष्णू भारताचा*** (*इन गुड फेथ*—अंग्रेज़ी, कथेतर साहित्य) सबा नक्वी

नेपाली : पूर्णकुमार शर्मा, ***शांतनुकुलनंदन*** (*शांतनुकुलनंदन*—असमिया, उपन्यास) पूरवी बरमुदै

ओड़िआ : कमला सतपथी, ***सुनेली बादल*** (*वेंडी मेघम*—तेलुगु, उपन्यास) सैयद सलीम

पंजाबी : भूपिंदर कौर प्रीत, ***नगारे वांग वजदे शब्द*** (*नगाड़े की तरह बजते शब्द*—हिंदी, कविता-संग्रह) निर्मला पुतुल

राजस्थानी : मदन गोपाल लढ़ा, ***अखूट तासळो*** (*अखेपातर*—गुजराती, उपन्यास) बिन्दु भट्ट

संस्कृत : गोपबन्धु मिश्र, ***अमृतफलम्*** (*अमृतफल*—ओड़िआ, उपन्यास) मनोज दास

संताली : लक्ष्मण किस्कू, ***मेरोम गुपी दिन*** (*आडु जीवितम*—मलयाळम्, उपन्यास) बेन्यामिन

सिंधी : भगवान अटलानी, ***किलियूनि ते टंगियल शख़्स*** (*खूँटियों पर टँगे लोग*—हिंदी, कविता-संग्रह) सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

तमिळ : के. नल्लतंबी, ***याद वशेम*** (*याद वशेम*—कन्नड, उपन्यास) नेमिचंद्र

तेलुगु : वाराला आनंद, ***अकुपच्छ कविथलु*** (*हरी कविताएँ*—हिंदी, कविता-संग्रह) गुलज़ार

उर्दू : रेनू बहल, ***सुनो राधिका*** (*सुनो राधिका*—हिंदी, कविता-संग्रह) माधव कौशिक

जूरी दत्ता

शैभिक दे सरकार

देबजित ब्रह्म

निर्मल विनोद

एन. कल्याण रामन

विजय पंड्या

गौरीशंकर रैणा

पद्मराज दंडावती

शबनम तिलगामी

माणिकराव राम नायक
गावणेकार

रत्नेश्वर मिश्र

चात्तनात्त् अच्युतन् उण्णी

सलाम तोंबा

प्रमोद मुजुमदार

पूर्णकुमार शर्मा

कमला सतपथी

भूपिंदर कौर प्रीत

मदन गोपाल लढ़ा

गोपबंधु मिश्र

लक्ष्मण किस्कू

भगवान अटलानी

के. नल्लतंबी

वाराला आनंद

रेनू बहल

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री सुरेश शर्मा
- श्री जीबन राय
- श्री मनोज कुमार गोस्वामी

बाङ्ला
- डॉ. चैताली ब्रह्म
- श्री भागीरथ मिश्र
- डॉ. देबब्रत चक्रवर्ती

बोडो
- डॉ. दइमालु ब्रह्म
- डॉ. अंजली दैमारी
- डॉ. सुरथ नार्ज़ारी

डोगरी
- श्री देश बंधु डोगरा नूतन
- श्री शिव देव सिंह सुशील
- डॉ. यश रैणा

अंग्रेज़ी
- सुश्री अमीना के. अंसारी
- प्रो. निलोफर भरूचा
- प्रो. जगदीश कुमार शर्मा

गुजराती
- श्री हर्ष ब्रह्मभट
- डॉ. यज्ञनेश दवे
- श्री परम पाठक

हिंदी
- प्रो. ए. अरविंदाक्षन
- श्री सुदर्शन वशिष्ठ
- प्रो. रेखा सेठी

कन्नड
- श्री जगदीश कोप्पा एन.
- डॉ. कमलाकर भट
- डॉ. ए. मोहना कुंतर

कश्मीरी
- श्री ब्रजनाथ बेताब
- श्री मुश्ताक अहमद तांत्रे
- डॉ. सतीश विमल

कोंकणी
- श्री रमेश बाबइ कोमारपंत
- डॉ. जी. संध्या नायक
- प्रो. (डॉ.) एस.एम. तडकोडकर

मैथिली
- डॉ. सबिता झा सोनी
- डॉ. मित्रनाथ झा
- श्रीमती नीरजा रेणु

मलयाळम्
- डॉ. के.सी. अजयकुमार
- श्री के.एस. वेंकटाचलम
- डॉ. सुनील पी. इलयदम

मणिपुरी
- डॉ. एम. प्रियोब्रत सिंह
- डॉ. के. नयनचंद सिंह
- श्री एल. उपेंद्रो शर्मा

मराठी
- सुश्री अपर्णा वेलंकर
- श्रीमती प्रभा गनोरकर
- सुश्री नीरजा

नेपाली
- श्री के.बी. नेपाली
- श्री नर बहादुर दहल
- श्री बीरभद्र कार्कीढोली

ओड़िआ
- श्री अमरेंद्र खटुआ
- श्री असित मोहंती
- श्रीमती सुष्मिता रथ

पंजाबी
- प्रो. अवतार सिंह
- डॉ. शिंदरपाल सिंह
- डॉ. अमिया कुँवर

राजस्थानी
- श्री दीन दयाल शर्मा
- श्री माधव नागदा
- श्री रामेश्वर शर्मा (रामू भैया)

संस्कृत
- डॉ. अर्चना ए. त्रिवेदी
- प्रो. ई. एम. राजन
- प्रो. मृदुला त्रिपाठी

संताली
- डॉ. गुमदा मार्डी
- श्री हाजम बास्की
- श्री लखाई बास्की

सिंधी
- श्रीमती रोमा प्रकाश जयसिंघानी
- डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदाणी
- प्रो. विशु बेल्लानी

तमिळ
- श्री आर. मानवलन
- प्रो. वी. जयदेवन
- डॉ. टी. विष्णु कुमारन

तेलुगु
- प्रो. अल्लाडि उमा
- डॉ. एल. आर. स्वामी
- श्री नालिमेला भास्कर

उर्दू
- श्री असद रज़ा
- श्री जानकी प्रसाद शर्मा
- श्री इकबाल मसूद

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022

24 अगस्त 2022 को नई दिल्ली में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में बाल साहित्य पुरसकार 2022 के लिए 23 लेखकों के चयन को अनुमोदित किया गया। यह अनुमोदन इस उद्देश्य के लिए गठित संबंधित भाषाओं की त्रि-सदस्यीय चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। प्रक्रिया के अनुसार, कार्यकारी मंडल ने पुरस्कारों की घोषणा निर्णायक मंडलों की सर्वसम्मत अथवा बहुमत संस्तुतियों के आधार पर की। ये पुरस्कार उक्त वर्ष से तत्काल पूर्व के पूर्ववर्ती पाँच वर्षों (अर्थात् 1 जनवरी 2016 से 31 दिसंबर 2020 के मध्य) में प्रकाशित पुस्तकों पर दिए गए। इस वर्ष पंजाबी भाषा में कोई पुरस्कार नहीं है।

बाल साहित्य पुरस्कार 2022 से सम्मानित लेखक

असमिया : दिगंत ओज़ा, ***डाङर मानुहर साधु*** (निबंध-संग्रह)

बाङ्ला : जया मित्र, ***चार पाँचजन बंधु*** (कहानी-संग्रह)

बोडो : देवबार रामसियारि, ***लांगोनानि बखालि गथ'*** (उपन्यास)

डोगरी : राजेश्वर सिंह 'राजू', ***सिक्ख-मत्त*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : अर्शिया सत्तार, ***महाभारत फ़ॉर चिल्ड्रन*** (कथा साहित्य, पौराणिक कथाएँ)

गुजराती : किरीट गोस्वामी, ***खिसकोली ने कंप्यूटर छे लेपुं*** (कविता-संग्रह)

हिंदी : क्षमा शर्मा, ***क्षमा शर्मा की चुनिंदा बाल कहानियाँ*** (कहानी-संग्रह)

कन्नड : तम्मण्ण बीगरा, ***बावलि गुहे*** (उपन्यास)

कश्मीरी : क़मर हमीदुल्लाह, ***दाड़एल*** (कविता-संग्रह)

कोंकणी : ज्योति कुंकळकार, ***मयुरी*** (उपन्यास)

मैथिली : वीरेंद्र झा, ***उड़न-छू*** (कहानी-संग्रह)

मलयाळम् : ए. सेतुमाधवन, ***चेक्कुट्टी*** (उपन्यास)

मणिपुरी : नाओरेम लोकेश्वर सिंह, ***तोम्थिन अमसुङ खुजी*** (कहानी-संग्रह)

मराठी : संगीता राजीव बर्वे, ***पियूची वही*** (उपन्यास)

नेपाली : मीना सुब्बा, ***कोपिलाका रङहरू*** (कविता-संग्रह)

ओड़िआ : नरेंद्र प्रसाद दास, ***कोलाहल ना हलाहल*** (कहानी-संग्रह)

राजस्थानी : विश्वामित्र दाधीच, ***माछळयां रा आंसू*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : कुलदीप शर्मा, ***सचित्रम् प्रहेलिकाशतकम् (अभिनवसंस्कृतप्रहेलिका:)*** (कविता-संग्रह)

संताली : गणेश मरांडी, ***हपन माई*** (कविता-संग्रह)

सिंधी : मनोहर निहलानी, ***अनोखियूं आखाणियूं*** (कहानी-संग्रह)

तमिळ : जि. मीनाक्षी, ***मल्लिगाविन वीड़*** (कहानी-संग्रह)

तेलुगु : पत्तिपाका मोहन, ***बालल ताता बापूजी*** (कविता-संग्रह)

उर्दू : ज़फ़र कमाली, ***हौसलों की उड़ान*** (कविता-संग्रह)

इस वर्ष पंजाबी में पुरस्कार घोषित नहीं किया गया।

दिगंत ओज़ा

जया मित्र

देवबार रामसियारि

राजेश्वर सिंह 'राजू'

अर्शिया सत्तार

किरीट गोस्वामी

क्षमा शर्मा

तम्मण्ण बीगार

क़मर हमीदुल्लाह

ज्योती कुंकळकार

वीरेन्द्र झा

ए. सेतुमाधवन

नाओरेम लोकेश्वर सिंह

संगीता राजीव बर्वे

मीना सुब्बा

नरेन्द्र प्रसाद दास

विश्वामित्र दाधीच

कुलदीप शर्मा

गणेश मरांडी

मनोहर निहलानी

जि. मीनाक्षी

पत्तिपाका मोहन

ज़फ़र कमाली

बाल साहित्य पुरस्कार 2022 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया

डॉ. पोराग कुमार ठाकुर
डॉ. प्रणय फूकन
डॉ. निरजन महंत बेज़बोराह

बाङ्ला

श्री सुनिर्मल चक्रवर्ती
डॉ. जीवनमय दत्ता
श्री सुकांता गंगोपाध्याय

बोडो

श्री गोबिंद नार्ज़ारी
डॉ. जोगेन बर'
श्री उथरिसर खुंगूर बसुमतारी

डोगरी

श्री नरसिंह दास
श्री तारा चंद कलंदरी
श्री विजय शर्मा

अंग्रेज़ी

डॉ. जी.एस. जयश्री
डॉ. उषा बांदे
डॉ. सी.एन. श्रीनाथ

गुजराती

श्री धीरेंद्र मेहता
श्री नटवर पटेल
श्री राजेंद्र पटेल

हिंदी

श्रीमती अनामिका
प्रो. हरि मोहन
श्रीमती ममता कालिया

कन्नड

डॉ. लोहित डी. नइकर
डॉ. के. शिवलिंगप्पा हंदिहल
डॉ. नागराजू एम.एच.

कश्मीरी

श्री अब्दुल खालिक़ शम्स
श्री ज़मीर अंसारी
श्री कंवल कृश्नि लिदहू

कोंकणी

श्री दत्ता दामोदर नाइक
डॉ. हरीशचंद्र नागवेंकर
सुश्री कोलमबकर शीला तुकाराम

मैथिली

श्री भैरव लाल दास
श्री दुखमोचन झा
श्री मुनींद्र कुमार झा

मलयाळम्

श्री अलनकोडे लीलाकृष्णन
डॉ. के. जयकुमार
श्री यू.के. कुमारन

मणिपुरी

श्री गोजेंद्र लामबम
प्रो. एच. नानीकुमार सिंघ
डॉ. थोकचोम इबोहानबी सिंघ

मराठी

श्री भारत सासने
प्रो. प्रवीण डी. बांदेकर
श्री प्रेमानंद गजवी

नेपाली

श्री चंद्रमणि अधिकारी
श्री ज्ञालपो लामा
श्री पेमपा तामंग

ओड़िआ

प्रो. आदिकंद साहू
डॉ. प्रफुल्ल कुमार मोहांती
सुश्री गायत्री सराफ

राजस्थानी

श्री बुलाकी शर्मा
श्री लक्ष्मणदान कविया
डॉ. सुमन बिस्सा

संस्कृत

प्रो. गंगाधर पांडा
डॉ. रामशंकर अवस्थी
प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी

संताली

श्री गंगाधर हांसदा
श्री रबीन्द्रनाथ मुर्मू
सुश्री स्वपना हेम्ब्रम

सिंधी

श्री अर्जुन चावला
डॉ. सुरेश बवलाणी
डॉ. दयाल के. धमेजा 'आशा'

तमिळ

श्री सेल्ला गणपति
डॉ. वेलु सरावनन
डॉ. वी. कट्टालीकैलाशम

तेलुगु

श्री बेलगाम भीमेश्वर राव
डॉ. एन. गोपी
श्री चोक्कापु वेंकटारमण

उर्दू

प्रो. शाफ़े किदवई
प्रो. सैय्यद शाह हसीन अहमद
डॉ. ज़ाकिर ख़ान ज़ाकिर

इस वर्ष पंजाबी में पुरस्कार घोषित नहीं किया गया।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022

24 अगस्त 2022 को नई दिल्ली में डॉ. चंद्रशेखर कंबार की अध्यक्षता में संपन्न कार्यकारी मंडल की बैठक में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 के लिए 24 पुस्तकों के चयन को अनुमोदित किया गया। युवा पुरस्कार के लिए पुस्तकों का चयन संबंधित भाषा चयन समितियों की अनुशंसाओं के आधार पर किया गया। नियमानुसार, कार्यकारी मंडल ने निर्णायक समिति के सर्वसम्मत अथवा बहुमत से की गई संस्तुतियों के आधार पर पुरस्कार घोषित किए। ये पुरस्कार उन लेखकों की पुस्तकों को दिए जाते हैं, जिनकी उम्र पुरस्कार वर्ष की 1 जनवरी को 35 वर्ष अथवा उससे कम हो।

युवा पुरस्कार 2022 से सम्मानित लेखक

असमिया : प्रद्युम्न कुमार गोगोई, ***चोकी अरु अन्यान्य गल्प*** (कहानी-संग्रह)

बाङ्ला : सुमन पातारी, ***लिखे किछु होय ना*** (कविता-संग्रह)

बोडो : अलंबार मुसाहारि, ***गां फुजानाय मासे दाउ*** (कहानी-संग्रह)

डोगरी : आशु शर्मा, ***कठपुतली*** (कहानी-संग्रह)

अंग्रेज़ी : मिहिर वत्स, ***टेल्स ऑफ़ हज़ारीबाग : एन इंटिमेट एक्सप्लोरेशन ऑफ़ छोटानागपुर प्लैटो*** (यात्रा-वृत्तांत)

गुजराती : भरत खेनी, ***राजा रवि वर्मा*** (जीवनी)

हिंदी : भगवंत अनमोल, ***प्रमेय*** (उपन्यास)

कन्नड : दादापीर जैमन, ***नीलकुरिंजी*** (कहानी-संग्रह)

कश्मीरी : शाइस्ता ख़ान, ***ब्रांद बरस पेठ*** (कहानी-संग्रह)

कोंकणी : फादर मायरन जेसन बार्रेटो, ***ताळो*** (निबंध-संग्रह)

मैथिली : नवकृष्ण ऐहिक, ***खुरचनभाइक कछमच्छी*** (व्यंग्य-संग्रह)

मलयाळम् : अनघा जे. कोलथ, ***मेरूकूतिरिकु स्वन्थं थीप्पेट्टि*** (कविता-संग्रह)

मणिपुरी : सोनिया खुन्द्राकपम, ***लोइयुम्बा*** (उपन्यास)

मराठी : पवन नालट, ***मी संदर्भ पोखरतोय*** (कविता-संग्रह)

नेपाली : रोशन राई 'चोट', ***देशको अनुहार*** (कविता-संग्रह)

ओड़िआ : दिलीप बेहरा, ***लण्ठन*** (कहानी-संग्रह)

पंजाबी : संधू गगन, ***पंजतीले*** (कविता-संग्रह)

राजस्थानी : आशीष पुरोहित, ***अैनांण*** (कविता-संग्रह)

संस्कृत : श्रुति कानिटकर, ***श्रीमतीचरित्रम्*** (महाकाव्य)

संताली : सालगे हाँसदा, ***जानम दिसोम उजाड़ोक् काना*** (उपन्यास)

सिंधी : हिना आसवाणी, ***सिंधियत जी सुरहाणि*** (कविता-संग्रह)

तमिळ : पी. कालीमुथु, ***थनिथिरुक्कुम अरलिकलिन मथियम*** (कविता-संग्रह)

तेलुगु : पल्लिपुट्टू नागराजू, ***यालई पूडसिंदी*** (कविता-संग्रह)

उर्दू : मक़सूद आफ़ाक़, ***गिरयाह*** (ग़ज़ल-संग्रह)

प्रद्युम्न कुमार गोगोई

सुमन पातारी

अलंबार मुसाहारि

आशु शर्मा

मिहिर वत्स

भरत खेनी

भगवंत अनमोल

दादापीर जैमन

शाइस्ता ख़ान

फादर मायरन जेसन बार्रेटो

नवकृष्ण ऐहिक

अनघा जे. कोलथ

सोनिया खुन्द्राकपम

पवन नालट

रोशन राई 'चोट'

दिलीप बेहरा

संधू गगन

आशीष पुरोहित

श्रुति कानिटकर

सालगे हाँसदा

हिना आसवाणी

पी. कालिमुथ्थु

पल्लिपुट्टू नागराजु

मक़सूद आफ़ाक़

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 के लिए चयन समिति के सदस्यों की सूची

असमिया
- श्री अनुभव तुलसी
- सुश्री अनुराधा शर्मा पुजारी
- डॉ. परमानंदा राजबोंग्शी

बाङ्ला
- श्री देवर्षि सरोगी
- प्रो. हिमाद्री लाहिरी
- श्री तपन बंद्योपाध्याय

बोडो
- डॉ. देवकांत रामचिआरी
- श्रीमती डी. ज्योति बसुमतारी
- डॉ. हेमंत मुसाहारी

डोगरी
1. श्री चुन्नी लाल शर्मा
2. श्री इन्द्रजीत केसर
3. श्रीमती उषा किरण 'किरण'

अंग्रेज़ी
1. प्रो. जी.जे.वी. प्रसाद
2. सुश्री मित्रा फुकन
3. प्रो. माला रंगनाथन

गुजराती
1. श्री बलवंत जानी
2. सुश्री बिंदु भट्ट
3. श्री सेजल शाह

हिंदी
1. प्रो. अवधेश प्रधान
2. प्रो. सूर्य प्रकाश दीक्षित
3. डॉ. सत्यकाम

कन्नड
1. प्रो. एन.सी. गुंडूर
2. श्री नगरागेरे रमेश
3. डॉ. सा. उषा

कश्मीरी
- श्री वली मोहम्मद असीर
- श्री अयूब साबीर
- श्रीमती रुख़साना जबीं

कोंकणी
- श्रीमती किरण महाम्ब्रे
- श्री एस.एम. कृष्णा राव
- श्री शैलेंद्र मेहता

मैथिली
- श्री केष्कर ठाकुर
- श्री राजन कुमार सिंह
- श्रीमती प्रेमलता मिश्रा 'प्रेम'

मलयाळम्
- डॉ. जॉय वाज्हयिल (डॉ. वी.पी. जॉय, आई.ए.एस.)
- डॉ. के. मुथुलक्ष्मी
- डॉ. के.एम. अनिल

मणिपुरी
- प्रो. थ. रतनकुमार सिंह
- डॉ. के. नयन चंद सिंघ
- डॉ. मोंग्सताबम तुलेश्वरी देवी

मराठी
- श्री दत्ता भगत
- श्री रमेश वरखेड़े
- श्री विट्ठल वाघ

नेपाली
- श्री चंद्र कुमार राइ
- श्रीमती मीना सुब्बा
- डॉ. इंदु प्रवा देवी

ओड़िआ
- श्री भगवान जयसिंह
- सुश्री गायत्रीबाला पांडा
- श्री देबब्रत मदनराय

पंजाबी
- श्री अमरजीत गरेवाल
- डॉ. गुनवंत कौर बरार
- प्रो. गुरप्रीत कौर गिल

राजस्थानी
- प्रो. कल्याण सिंह शेखावत
- श्री ओमप्रकाश तंवर
- श्री श्रीभगवान सैनी

संस्कृत
- प्रो. दयानंद भार्गव
- प्रो. के.पी. केसवन
- डॉ. कामदेव झा

संताली
- श्री बादल हेमब्रम
- श्री बिष्णु कुमार मुर्मू
- श्री ठाकुर चरण मरांडी

सिंधी
- श्री अरुण बबाणी
- डॉ. हुंदराज बलवाणी
- सुश्री संगीता खिलवाणी

तमिऴ
- डॉ. आर. राजेंद्रन
- डॉ. टी. पेरियासामी
- डॉ. एम. वानमति

तेलुगु
- प्रो. अनुमंडला भूमय्या
- प्रो. चल्लापल्ली स्वरूपरानी
- डॉ. पेन्ना शिवराम कृष्ण

उर्दू
- प्रो. अतीकुल्लाह
- श्री फ़े. सीन एजाज़
- श्री मोईन शादाब

कार्यक्रम

उन्मेष

अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव

16-18 जून 2022, शिमला

महोत्सव के उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य

आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर साहित्य अकादेमी तथा संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला में 16-18 जून 2022 को देश का सबसे बड़ा अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव "उन्मेष"—अभिव्यक्ति का महोत्सव, विषयक कार्यक्रम का आयोजन किया।

गेयटी हेरिटेज कॉम्प्लेक्स के प्रधान सभागार में अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव "उन्मेष" कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। भारत सरकार के माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल तथा हिमाचल प्रदेश सरकार के शिक्षा, भाषा तथा संस्कृति मंत्री श्री गोविंद सिंह इस समारोह के मुख्य अतिथि थे तथा जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव का उद्घाटन हिमाचल के लोक संगीत, पारंपरिक भारतीय ढोल और शंख ध्वनि के साथ किया गया था। माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर, हमने इस विशाल आयोजन के लिए शिमला को पहले चुना है जो हमारी भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। देश के अन्य स्थानों पर भी इसी प्रकार के उत्सव आयोजित करने की योजना है। हिमाचल प्रदेश के भाषा और संस्कृति मंत्री श्री गोविंद सिंह ने कहा कि शिमला 'देवभूमि' है और हमें यहाँ प्रथम अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव आयोजित करने में गर्व महसूस हो रहा है। हम देश-विदेश के समस्त अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं और आशा करते

हैं कि आप सभी हमारे आतिथ्य को हमेशा याद रखेंगे। जगद्गुरु रामानंदाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने साहित्य की विस्तार से व्याख्या करते हुए कहा कि साहित्य देश की संस्कृति के लिए उपजा है और समाज की साहित्यिक रचनाएँ समय और भूमि की संस्कृति तथा धर्म को दर्शाती हैं। हिमाचल प्रदेश की प्रथम महिला तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल माननीय श्री राम नाईक, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में संयुक्त सचिव श्रीमती उमा नंदूरी, प्रथम सचिव श्री आर. डी. नाज़िम, हिमाचल प्रदेश भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। महोत्सव में छह अलग-अलग स्थानों पर कुल 74 कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें "साहित्य और महिला सशक्तिकरण", "मेरे लिए साहित्य का क्या अर्थ है?", "एलजीबीटीक्यू लेखकों द्वारा सामना की जानेवाली चुनौतियाँ", "सिनेमा और साहित्य", "कविता का मेरे लिए क्या अर्थ है", "भारत में इकोक्रिटिसिज़्म", "भारतीय गौरवग्रंथ तथा विश्व साहित्य", बहुभाषी कविता / कहानी- पाठ, "पूर्वोत्तर का साहित्य", "जनजातीय लेखन में वर्तमान साहित्यिक रुझान", "गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं में वाचिक महाकाव्य", "साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन", "फ़िल्म गीतों में साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र की खोज", "भारतीय प्रवासी : साहित्यिक अभिव्यक्ति", "अनुवाद के माध्यम से संस्कृतियों को एकजुट करना", "विश्व और भारतीय लेखन के साहित्यिक गौरवग्रंथ", "मीडिया, साहित्य और स्वतंत्रता आंदोलन" आदि विषयों के अलावा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा प्रख्यात भारतीय लेखकों - भोलाबाई पटेल, खुशवंत सिंह और कुँवर नारायण पर वृत्तचित्र फ़िल्मों का प्रदर्शन भी किया गया।

इस महोत्सव में 24 भारतीय भाषाओं के लगभग 300 लेखकों के अलावा 32 एलजीबीटीक्यू लेखकों, जनजातीय भाषाओं के 40 लेखकों, देश के पूर्वोत्तर के 25 लेखकों, 09 प्रवासी भारतीय लेखकों तथा 09 विदेशी लेखकों ने भाग लिया।

आयोजित कार्यक्रमों की सूची

दिनांक	समय	कार्यक्रम
16 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	उद्घाटन सत्र
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	परिचर्चा : साहित्य और स्त्री सशक्तीकरण
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	परिचर्चा : 'सिनेमा और साहित्य'
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	पारिस्थितिकीय-विमर्श पर परिचर्चा
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	जुगलबंदी पंजाबी और हिंदी कवियों की
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022	मध्याह्न 12.00 बजे - अपराह्न 1.30 बजे	मेरे लिए साहित्य के मायने?
16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : मेरे लिए कविता के मायने? एवं रचना-पाठ
16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : भारतीय कालजयी कृतियाँ और विश्व साहित्य
16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : उगते सूरज की भूमि से पूर्वोत्तर का साहित्य
16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : आदिवासी साहित्य की वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियों पर परिचर्चा एवं रचना-पाठ

16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे सायं 4.00 बजे	दर्पण: वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
16 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	एलजीबीटीक्यू लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ पर परिचर्चा एवं रचना-पाठ
16 जून 2022	सायं 4.30 बजे 6.00 बजे	परिचर्चा : साहित्य और सिनेमा
16 जून 2022	सायं 4.30 बजे 6.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022	सायं 4.30 बजे 6.00 बजे	मातृभाषा का महत्त्व
16 जून 2022	सायं 4.30 बजे 6.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022	सायं 4.30 बजे 6.00 बजे	धरा गीत : आदिवासी भाषाओं से रचना-पाठ
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	परिचर्चा : आदिवासी लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ एवं रचना-पाठ
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	परिचर्चा : अनुवाद के माध्यम से संस्कृतियों का समन्वयीकरण
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	बहुभाषी कहानी-पाठ
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मध्याह्न 12.00 बजे	एलजीबीटीक्यू लेखकों द्वारा रचना-पाठ
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	गैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं में वाचिक महाकाव्य
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	अस्मिता लेखिका सम्मिलन
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	परिचर्चा : विश्व की कालजयी कृतियाँ एवं भारतीय लेखन
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	युवा भारत का उदय : युवा साहिती
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	हिमाचल प्रदेश के लोकगीत
17 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - 1.30 बजे	परछाई और हक़ीक़त : एक सेल्युलाइड यात्रा पर दीप्ति नवल के साथ रत्नोत्तमा सेनगुप्ता की बातचीत
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : एलजीबीटीक्यू : मेरा प्रथम लेखकीय अनुभव एवं रचना-पाठ
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	फ़िल्मी गीतों में साहित्यक सौंदर्य : गुलज़ार के साथ विशाल भारद्वाज की बातचीत
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	बहुभाषी कहानी-पाठ
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	आस्था का गायन : भारत में भक्ति साहित्य
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : विरासत का उत्सव : भारतीय लोकसाहित्य की गाथा
17 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	प्रवासी भारतीय : साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ

17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	परिचर्चा : मीडिया, साहित्य और स्वाधीनता आंदोलन
17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	परिचर्चा : भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका
17 जून 2022	सायं 4.30 बजे - 6.00 बजे	बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	परिचर्चा : कविता का भविष्य एवं रचना-पाठ
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	मेरे लिए स्वतंत्रता के मायने?
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	परिचर्चा : विश्वस्तरीय कालजयी कृतियाँ और भारतीय पाठक
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022	पूर्वाह्न 10.00 बजे - मयाह्न 12.00 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	युवा लेखकों द्वारा रचना-पाठ
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	परिचर्चा : भारतीय भाषाओं में महिला लेखन
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	परिचर्चा : भारत में काल्पनिक एवं विज्ञान कथा
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?
18 जून 2022	अपराह्न 12.30 बजे - मयाह्न 1.30 बजे	बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	मुलाक़ात : युवा लेखक सम्मिलन
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - 4.00 बजे	आस्था का गायन : भारत में भक्ति साहित्य
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : अनुवाद के माध्यम से सीमाओं का अतिक्रमण
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	परिचर्चा : मेरे लिए कविता के मायने? एवं रचना-पाठ
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी साहित्य में उभरते रुझान
18 जून 2022	अपराह्न 2.30 बजे - सायं 4.00 बजे	दर्पण : वृत्तचित्र प्रदर्शन
18 जून 2022	सायं 4.30 बजे - सायं 6.00 बजे	नई फसल : युवा साहिती
18 जून 2022	सायं 4.30 बजे - सायं 6.00 बजे	विदेशी भाषाओं में भारतीय साहित्य
18 जून 2022	सायं 4.30 बजे - सायं 6.00 बजे	बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022	सायं 4.30 बजे - सायं 6.00 बजे	परिचर्चा : भारतीय भाषाओं में प्रकाशन
18 जून 2022	सायं 4.30 बजे - सायं 6.00 बजे	धरा गीत : आदिवासी भाषाओं में रचना-पाठ

साहित्योत्सव 2023

11 मार्च 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी प्रत्येक वर्ष साहित्योत्सव का आयोजन करती है। इस वर्ष, अकादेमी ने दिल्ली और एनसीआर के साहित्य प्रेमियों के लिए अपने सबसे बड़े महोत्सव का आयोजन किया। महोत्सव में लगभग 40 कार्यक्रम तथा लगभग 60 भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले 400 से अधिक लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया। साहित्योत्सव का आरंभ साहित्य अकादेमी की गतिविधियों और उपलब्धियों की प्रदर्शनी 2022 के साथ हुआ। भारत सरकार के माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने 11 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 10:00 बजे प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन कमानी सभागार में सायं 5:30 बजे आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी लेखक एवं विद्वान उपमन्यु चटर्जी थे। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने 'संवत्सर व्याख्यान' दिया। अन्य कार्यक्रमों में 7 लेखक सम्मिलन, 15 साहित्यिक कार्यक्रम तथा 13 परिसंवादों के अलावा नारीचेतना, अस्मिता, कथासंधि, लेखक से भेंट, 'व्यक्ति और कृति' कार्यक्रम, बच्चों के लिए विशेष रूप से 'आओ कहानी बुनें' कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे - ब्रज की होली, कव्वाली, साहित्य एवं अभिनय : पाठ से प्रस्तुति आदि कार्यक्रम साहित्योत्सव के अंतर्गत आयोजित किए गए।

इस वर्ष का साहित्योत्सव 'भारतीय साहित्य और संस्कृतियों की एकता' पर आधारित था। पूर्वोत्तरी, आदिवासी लेखक सम्मिलन, युवा साहिती, आओ कहानी बुनें, एलजीबीटीक्यू लेखक सम्मिलन तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी जैसे कार्यक्रमों के अलावा, इस वर्ष जी20 थीम पर आधारित अखिल भारतीय कवि सम्मिलन : एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य, जैसे नए कार्यक्रम शामिल किए गए। इसके अलावा शिक्षा और सृजनात्मकता, कूटनीति और साहित्य तथा साहित्य और महिला सशक्तिकरण पर पैनल चर्चाएँ भी आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का विषय था - "महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण"। प्रख्यात हिंदी कवि, समालोचक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया, तथा प्रख्यात सामाजिक सिद्धांतकार और समालोचक आशीष नंदी ने बीज-वक्तव्य दिया। मातृभाषाओं के महत्त्व पर प्रकाश डालने हेतु 'मातृभाषा का महत्त्व' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसके अलावा भारत के आदिवासी समुदायों के महाकाव्य, संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति, अनुवाद कला : सांस्कृतिक संदर्भ में चुनौतियाँ, शब्द-संसार और मेरी कला, नाट्य लेखन, डिजिटल युग में प्रकाशन, सिनेमा और साहित्य, मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य पर परिचर्चाओं का आयोजन किया गया। कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में शामिल हैं – व्यक्ति और कृति कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात समाज सुधारक और नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश

सत्यार्थी की प्रख्यात उद्योगपति एवं लेखक सुनीलकांत मुंजाल के साथ बातचीत, कथासंधि कार्यक्रम में प्रख्यात उर्दू कथाकार अब्दुस समद ने अपनी रचनाओं का पाठ किया तथा प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी लेखिका उषाकिरण खान ने लेखक से भेंट कार्यक्रम में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं और दर्शकों के साथ बातचीत भी की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में - ब्रज की होली, कव्वाली तथा साहित्य एवं अभिनय शामिल थे। पूरे महोत्सव के दौरान कज़ाक लेखकों का प्रतिनिधिमंडल मौजूद था। इंडो-कज़ाक लेखक सम्मिलन तथा विदेश में भारतीय साहित्य पर परिचर्चा भी महोत्सव का हिस्सा थे। सप्ताह के दौरान रोजाना पूर्वाह्न 10:00 बजे से सायं 7:00 बजे तक साहित्य अकादेमी प्रकाशनों की प्रदर्शनी और अकादेमी की पुस्तकों की बिक्री पर आकर्षक छूट भी लगाईं गई थी।

महोत्सव में कुछ प्रतिष्ठित साहित्यकारों, प्रकाशकों, अभिनेताओं, निर्देशकों और मीडिया हस्तियों ने भाग लिया, जिनमें सुरजीत पातर, लीलाधर जगूड़ी, आशीष नंदी, शीन काफ़ निज़ाम, अभिराज राजेंद्र मिश्र, वाई.डी. थोंगची, अर्जुन देव चारण, मोहन अगाशे, केतन मेहता, दयाप्रकाश सिन्हा, सोनल मानसिंह, जतिन दास, मृणाल मिरी, अतुल तिवारी, वेद प्रताप वैदिक, आलोक मेहता तथा अशोक घोष आदि शामिल थे।

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

11 मार्च 2023, नई दिल्ली

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए श्री अर्जुन राम मेघवाल

साहित्य अकादेमी का साहित्योत्सव 2023 शनिवार, 11 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 10:00 बजे अकादेमी प्रदर्शनी 2022 के साथ शुरू हुआ। इस प्रदर्शनी में वर्ष 2022 के दौरान अकादेमी द्वारा आयोजित गतिविधियों और कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया गया था। प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय संस्कृति राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल ने किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में बताया कि इस वर्ष के साहित्योत्सव का विषय "एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" है, जो वसुधैव कुटुंबकम की सदियों पुरानी कहावत के अनुरूप भारतीय साहित्यिक कृतियों की सार्वभौमिक आकांक्षाओं को उजागर करेगा। उन्होंने वर्ष 2022 के दौरान अकादेमी द्वारा आयोजित महत्त्वपूर्ण गतिविधियों तथा कार्यक्रमों के बारे में भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि अकादेमी ने देश भर में 579 कार्यक्रम आयोजित किए हैं; आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 10 साहित्यिक कार्यक्रमों तथा एक भारत श्रेष्ठ भारत योजना के अंतर्गत 41 कार्यक्रमों का आयोजन; पुनर्मुद्रण सहित लगभग 465 पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं; इस अवधि के दौरान 107 पुस्तक प्रदर्शनियों तथा मेलों का आयोजन करने के साथ-साथ प्रख्यात लेखकों पर 10 वृत्तचित्रों का भी निर्माण किया गया है। प्रत्येक वर्ष अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन औपचारिक रूप से साहित्योत्सव की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। इस अवसर पर श्री अर्जुन राम मेघवाल ने कहा कि हमें समाज में एक ऐसी सकारात्मकता पैदा करनी है जिससे हमारा देश विकासशील की जगह विकसित राष्ट्र की पदवी प्राप्त कर सके। उन्होंने प्राचीन संत कवियों कबीर, गुरु नानक, तिरुवल्लुवर का उदाहरण देते हुए कहा कि ये संत केवल कवि ही नहीं बल्कि महान सोच और दूरदृष्टि वाले साहित्यकार थे, जिन्होंने हमें प्रकृति से प्रेम करना सिखाया। उन्होंने अकादेमी द्वारा किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि सभी कला एवं साहित्यिक संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह समाज में रचनात्मक एवं सकारात्मक परिवेश बनाए रखें। श्री मेघवाल ने जी20 का उल्लेख करते हुए यह भी कहा कि इसका विषय भारतीय संस्कृति और परंपरा अर्थात तीन सिद्धांतों "एक

पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' पर आधारित है। ऐसे बड़े आयोजनों से ही हम अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं।

संवत्सर व्याख्यान

12 मार्च 2023, नई दिल्ली

संवत्सर व्याख्यान देते हुए भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री दीपक मिश्रा

साहित्य अकादेमी का वार्षिक *संवत्सर व्याख्यान* प्रख्यात लेखक, रचनात्मक विचारक तथा भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश, न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने "प्राचीन महाकाव्यों और ग्रंथों के मिथक : कानून और जीवन से संबंधित आधुनिक व्याख्या" विषय पर साहित्योत्सव 2023 के दौरान दिया। व्याख्यान जीवन मूल्यों के प्रति गहरी चिंता को दर्शाता है तथा साहित्यिक आंदोलन और वर्तमान साहित्यिक रुझानों के प्रति नवीन आयाम खोलता है। न्यायमूर्ति मिश्रा ने अपने व्याख्यान का आरंभ सिमोन वील (फ्रांसीसी दार्शनिक) के एक उद्धरण के साथ किया—"बौद्धिक व्यवस्था में, विनम्रता का गुण ध्यान की शक्ति से अधिक या कम नहीं है।" मिथक पर बात करते हुए उन्होंने बताया कि किस प्रकार मिथक वास्तविकता के विपरीत खड़े हैं, किंतु वे उसे पृथक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए चरित्र और घटना की एक संयुक्त अवधारणा को अपनाते हैं। उनके अनुसार, प्राचीन महाकाव्यों की अवधारणाओं तथा ग्रंथों की अवधारणा का कोई कालानुक्रमिक या विशिष्ट संदर्भ नहीं है। श्री न्यायमूर्ति मिश्रा ने अपने व्याख्यान में एकलव्य, गंगा पुत्र देवव्रत, कर्ण आदि से संबंधित *महाभारत* की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं पर चर्चा की। अपने व्याख्यान के अंत में न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा ने नोबेल पुरस्कार विजेता (2020) लुईस ग्लक की कुछ पंक्तियों को उद्घृत किया : "देन सडनली द सन वाज़ शाइनिंग/एंड टाइम वेंट ऑन,/इवन व्हेन देर वाज़ ऑलमोस्ट नन लेफ्ट/एंड द पर्सीव्ड बिकेम द रिमेम्बर्ड/द रिमेम्बर्ड, दी पर्सीव्ड।"

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह

13 मार्च 2023, नई दिल्ली

भाषा सम्मान पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी द्वारा 1966 में स्थापित भाषा सम्मान उस लेखक, विद्वान, संपादक, संग्रहकर्ता, कलाकार अथवा अनुवादक को दिया जाता है जिसने संबंधित भाषा के प्रचार-प्रसार, आधुनिकीकरण या संवर्धन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो।

साहित्योत्सव के दौरान, भाषा सम्मान अर्पण समारोह का आयोजन 13 मार्च 2023 को सायं 5.00 बजे वाल्मिकी सभागार में आयोजित किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने भाषा सम्मान पुरस्कार विजेताओं, साहित्यिक विभूतियों तथा साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया।

भाषा सम्मान 2022 श्री दयानंद भार्गव को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य 2019-उत्तरी क्षेत्र के लिए, श्री मोहम्मद आज़म को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य 2019-पश्चिमी क्षेत्र के लिए, श्री सत्येन्द्र नारायण गोस्वामी को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य 2019-पूर्वी क्षेत्र के लिए, श्री उदयनाथ झा को कालजयी और मध्यकालीन साहित्य 2019-पूर्वी क्षेत्र के लिए तथा होरसिंङ् खोलर को तिवा भाषा में योगदान देने के लिए प्रदान किया गया। श्री अशोक द्विवेदी तथा श्री अनिल कुमार ओझा को भोजपुरी भाषा में योगदान देने के लिए संयुक्त रूप से भाषा सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ. ए. दक्षिणामूर्ति और श्री अनिल कुमार ओझा पुरस्कार अर्पण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने संबोधन में सभी भाषा प्रेमियों से अपनी मातृभाषाओं की रक्षा के लिए आवश्यक क़दम उठाने का आग्रह किया। अपने समापन भाषण में, साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने भारतीय समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए सभी भाषा सम्मान पुरस्कार विजेताओं के प्रतिबद्ध साहित्यिक योगदान की सराहना की।

ए. दक्षिणामूर्ति ने 7 पुस्तकें लिखी हैं, तमिळ से अंग्रेज़ी में 32 पुस्तकों का अनुवाद किया है तथा कालजयी साहित्य के 2 संपादित खंडों का संपादन किया है, इसके अलावा कई शोध पत्र तथा इनसाइक्लोपीडिया में अध्याय प्रविष्टियाँ की हैं। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृत्तियाँ हैं - *तमिळ्र नाकारीकामुम पानपातुम, कंक इलक्कियम - परिपातल, अकानानुरु - द अकाम फोर हंड्रेड मणिमिताई पावलम (3 खंड), कुरुंतोकाई - एन एंथोलॉजी ऑफ़ क्लासिकल तमिळ्, पेरूमल तिरुमोषी, पैराटिटकन 'स द डार्केन्ड होम, कंबन - ए न्यू पर्सपेक्टिव।* आपको थमिष् नायकर विरुथु, तोलकप्पियार पुरस्कार, ना. मु. वेंकटसामी नत्तार पुरस्कार, कलैगनार पोर्किली पुरस्कार, थिरु.वी. कल्याणसुंदरनार पुरस्कार, नल्ली-थिसाई एट्टूम अनुवाद पुरस्कार, वल्लाल पंडिथियुरै थेवर पुरस्कार, भारतीदासन पुरस्कार आदि सम्मानों से विभूषित किया गया है।

दयानंद भार्गव के नाम 31 कृतियाँ हैं, इसके अलावा आपके 200 शोध आलेखों में कुछ उल्लेखनीय हैं- *ऋचा रहस्य, सांख्यकारिका : युक्तिदीपिका - भाष्य, व्योमवाद, वेदविज्ञानवाक्यमाला, भृगुवंश, श्रीमद्भगवतगीता : विपुल भाष्य, जैन परंपरा, हू एम आई, फिलॉसफी ऑफ़ नॉन-वायलेंस, जैन एथिक्स एंड स्टडीज़ इन जैन अगम्स।* आपको आचार्य हस्तीमल पुरस्कार, प्रेक्षा पुरस्कार तथा भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत की अध्येतावृत्ति सर्वोच्च सम्मान, संस्कृत अध्येतावृत्ति योग्यता प्रमाण पत्र से अलंकृत किया गया है।

मोहम्मद आज़म की कई प्रकाशित हैं। आप सामान्य रूप से धर्म पर तथा विशेष रूप से दक्खिनी भाषा में सूफ़ीवाद और साहित्य पर विद्वत्तापूर्वक ढंग से लिखते रहे हैं। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं - *सूफ़ीवाद आणी तुलानात्मक धर्मशास्त्र, सूफी तत्त्वज्ञान : स्वरूप आणी चिंतन* और *अदमजी पदमजी*। विभिन्न धर्मों, सूफ़ीवाद, दर्शन पर आधारित आपके आलेख बहु-प्रशंसित हैं। आपने 2013 में जलगाँव, महाराष्ट्र में आयोजित 10वें अखिल भारतीय मुस्लिम मराठी साहित्य सम्मेलन की अध्यक्षता की। आपको पद्म भूषण बालासाहेब भरडे 'शब्दगंध' वैचारिक पुरस्कार, श्रेष्ठता परितोषिक, पद्म श्री डॉ. विट्ठलराव विखे पाटिल उत्कृष्ट साहित्य पुरस्कार, शाहिर अमर शेख पुरस्कार, महाराष्ट्र राज्य सरकार पुरस्कार, ना.गो. नंदापुरकर साहित्य गौरव पुरस्कार, आदि कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

अशोक द्विवेदी ने भोजपुरी भाषा के प्रचार के लिए 13 से अधिक पुस्तकें लिखी हैं तथा कुछ पत्रिकाओं का संपादन किया है। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं - *घनानंद और उनकी कविता, रामजी के सुगना, गाँव के भीतर गाँव, फूटल किरिन हजार, रामजियावनदास 'बावला', भोजपुरी रचना आ आलोचना।* आपको साहित्य श्री, लोक पुरुष सम्मान, लोक कवि सम्मान, सेतु सम्मान तथा कई भोजपुरी संस्थाओं द्वारा भाषा पत्रकारिता सम्मान से सम्मानित किया जा चुका है।

अनिल कुमार ओझा ने भोजपुरी भाषा के प्रचार के लिए 7 पुस्तकें लिखीं तथा कुछ पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं - *माटी का दीया, वीर सिपाही मंगल पांडे, गुरु दक्षिणा, कहत कबीर, आचार्य जीवक।* आपको राम नगीना सम्मान, अभयानंद सम्मान, प्रोफ़ेसर कल्याणमल लोढ़ा सतत साहित्य साधना सम्मान, पाती अक्षर सम्मान तथा डॉ. रामेश्वर सिंह कश्यप सम्मान से विभूषित किया जा चुका है। आपको कई भोजपुरी संगठनों ने भी सम्मानित किया है।

सत्येन्द्र नारायण गोस्वामी ने कई पुस्तकों का लेखन एवं अनुवाद किया, तथा तीन शब्दकोश तैयार किए और असमिया में व्याकरण पुस्तक का संपादन भी किया है। आपकी कुछ प्रकाशित कृतियाँ हैं - *असमिया साहित्यर कथा, निबंध गुच्छ, राम सरस्वती अश्वकर्ण बध, सचित्य एक्समिया अभिधान, द फेस्टिवल्स ऑफ़ नॉर्थ ईस्ट इंडिया, लिंड जॉनसन, पाली धर्मपद तथा भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ।* आपको कालीचरण ब्रह्म पुरस्कार, साहित्य माहियान, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय अध्येता, यूजीसी वरिष्ठ अध्येतावृति

तथा गौहाटी विश्वविद्यालय की यूजीसी स्नातकोत्तर योग्यता छात्रवृत्ति से सम्मानित किया जा चुका है।

उदय नाथ झा के नाम 77 कृतियाँ प्रकाशित हैं। आपने मैथिली, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी, बाङ्ला तथा ओड़िआ में बड़े परिश्रम के साथ विद्वत्तापूर्ण लेखन किया है। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं - *स्मृतितत्त्वामृत, सरीसब वैभव, संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, सात सितारे, महिषी के मंडन, प्रबंध मंजूषा, शक्तिविचारः, गोनू-विनोद, ए ब्रीफ सर्वे ऑफ़ संस्कृत स्कॉलर'स इन मिथिला तथा तानकर घरारे।* आपको युवा साहित्यकार सम्मान, संस्कृत सेवी सम्मान तथा ऑल इंडिया ओरिएंटल कॉन्फ्रेंस और राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान द्वारा सम्मानित किया जा चुका है।

होरसिंङ् खोलर की 8 पुस्तकें प्रकाशित हैं तथा आपने 'लिंगुअल डिक्शनरी ऑफ़ बोडो, देओरी, दिमासा, गारो, कार्बी, मिसिंग, राभा, तिवा, असमिया, अंग्रेज़ी एंड हिंदी' जैसे शब्दकोशों को संकलित करने में भी अपना योगदान दिया है। आपकी कुछ उल्लेखनीय कृतियाँ हैं - *प्लांगसी, सिगारुने सुंजुली, अदला रे थेनडोने सदरा, खराई मुथुंगारव और पानत शाला।* आपको 2013 में तिवा स्वायत्त परिषद द्वारा सम्मानित किया गया।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार
अर्पण समारोह 2021
30 जुलाई 2022, कोलकाता

मुख्य अतिथि श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष और सचिव

साहित्य अकादेमी ने 30 जुलाई 2022 को सायं 5.00 बजे भाषा भवन सभागार, राष्ट्रीय पुस्तकालय, बेल्वेडियर, अलीपुर, कोलकाता में आयोजित कार्यक्रम में 22 भारतीय भाषाओं के प्रतिष्ठित लेखकों को बाल साहित्य पुरस्कार 2021 अर्पित किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने भव्य समारोह में प्रत्येक पुरस्कार विजेताओं को एक उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा 50,000/- रुपए की राशि प्रदान की।

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह की शुरुआत रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय के संगीत विभाग की एसोसिएट प्रोफ़ेसर सुश्री कंकना मित्रा तथा उनकी मंडली के मंगलाचरण "आनंदधारा बोहिचे भुबोन" से हुई। मंगलाचरण गीत "त्रितल" एवं राग "मिश्र मालकोश" पर आधारित था।

स्वागत भाषण साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। आरंभ में उन्होंने गणमान्य व्यक्तियों, पुरस्कार विजेताओं तथा दर्शकों का स्वागत किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति और विरासत को समृद्ध करने में बाङ्ला बुद्धिजीवियों द्वारा निभाई गई भूमिका की सराहना की। उन्होंने विभिन्न बौद्धिक परंपराओं के प्रख्यात भारतीय विद्वानों का भी उल्लेख किया। उनका मानना था कि बाल साहित्य केवल मनोरंजन और उपदेश देना नहीं है, बल्कि इसका ज्ञान के स्रोत के रूप में भी बहुत महत्त्व है। बाल साहित्य वाचिक परंपराओं को भी समाहित करता है। उन्होंने श्रोताओं को बाल साहित्य के उत्थान में साहित्य अकादेमी की अन्य गतिविधियों के बारे में भी जानकारी दी।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने की। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि बाल साहित्य के लेखक आगे आएँ तथा लेखन के माध्यम से युवा पीढ़ी को सही रास्ता दिखलाएँ। भारत में बाल साहित्य की एक समृद्ध विरासत है जो पंचतंत्र या जातक जैसी कृतियों में सन्निहित है। उन्होंने श्रोताओं को वर्तमान बाल साहित्य लेखकों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों से भी अवगत कराया।

अध्यक्षीय वक्तव्य के पश्चात्, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति-पत्र पढ़ा तथा श्री माधव कौशिक ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रख्यात बाङ्ला

लेखक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय ने पुरस्कार विजेताओं का माल्यार्पण कर स्वागत किया।

वर्ष 2021 बाल साहित्य पुरस्कार पुरस्कार विजेता हैं:- डॉ. मृणाल चंद्र कलिता (असमिया), श्री सुनिर्मल चक्रवर्ती (बाङ्ला), श्री रत्नेश्वर नारजारि (बोडो), श्री नरसिंह देव जम्वाल (डोगरी), सुश्री अनीता वछराजानी (अंग्रेज़ी), श्री देवेन्द्र मेवाड़ी (हिंदी), डॉ. बसु बेविनगिडद (कन्नड), श्री मजीद मजाज़ी (कश्मीरी), श्रीमती सुमेधा कामत देसाय (कोंकणी), डॉ. अनमोल झा (मैथिली), श्री रघुनाथ पलेरी (मलयाळम्), श्री निङोम्मबम जादुमनि सिंह (मणिपुरी), श्री संजय वाघ (मराठी), श्री सुदर्शन अम्बटे (नेपाली), डॉ. दिगराज ब्रह्म (ओड़िआ), सुश्री कीर्ति शर्मा (राजस्थानी), सुश्री आशा अग्रवाल (संस्कृत), सुश्री शोभा हाँसदा (संताली), श्री किश्न खूबचंदाणी "रनजयाल" (सिंधी), श्री एम. मुरुगेश (तमिळ), डॉ. देवराजु महाराजु (तेलुगु) तथा श्री कौसर सिद्दीक़ी (उर्दू)। पुरस्कार विजेताओं में डॉ. दिगराज ब्रह्म, श्री किश्न खूबचंदाणी "रनजयाल" तथा श्री कौसर सिद्दीक़ी अस्वस्थता के कारण समारोह में शामिल नहीं हो सके। डॉ. ब्रह्म के स्थान पर उनकी पत्नी श्रीमती ज्योत्सनारानी ब्रह्म ने तथा श्री कौसर सिद्दीक़ी के पोते श्री सोहेब अहमद ने अपने दादा के स्थान पर उनका पुरस्कार ग्रहण किया।

प्रख्यात बाङ्ला लेखक तथा साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अपने व्याख्यान में उन्होंने कहा कि एक बच्चे का मस्तिष्क अत्यधिक कल्पनाशील होता है तथा उसे आसानी से ढाला जा सकता है। किसी को भी बच्चों के साथ सावधानीपूर्वक बात करनी चाहिए क्योंकि जो कुछ भी उनसे कहा जाता है वे उस पर विश्वास कर लेते हैं। कहानियाँ बच्चों पर जादू सा असर करती हैं। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि हम सभी में एक बच्चा है और हमें उसे कभी बूढ़ा नहीं होने देना चाहिए।

लेखक सम्मिलन

31 जुलाई 2022, कोलकाता

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए श्री माधव कौशिक

अगले दिन, साहित्य अकादेमी सभागार, 4, देबेंद्र लाल खान रोड, कोलकाता में पूर्वाह्न 10.30 बजे लेखक सम्मिलन आयोजित किया गया, जिसमें पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी ने रविवार, 31 जुलाई 2022 को साहित्य अकादेमी सभागार, कोलकाता में बाल साहिती कार्यक्रम का भी आयोजन किया। उद्घाटन सत्र अपराह्न 2.30 बजे आरंभ हुआ, जिसमें प्रख्यात बाङ्ला कवि डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक व्यक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात बाङ्ला बाल लेखक श्री बलराम बसाक ने इस अवसर पर अपना उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अध्यक्षीय व्यक्तव्य प्रस्तुत किया। 'भारतीय भाषाओं में बाल साहित्य' विषयक प्रथम सत्र सायं 4.00 बजे प्रख्यात अंग्रेज़ी कवयित्री प्रोफ़ेसर संजुक्ता दासगुप्ता की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। प्रतिष्ठित बाल साहित्यकारों यथा - श्री शांतनु तामुली (असमिया), सुश्री दीपनविता रॉय (बाङ्ला), सुश्री मधुरिमा विद्यार्थी (अंग्रेज़ी), श्री दिविक रमेश (हिंदी), डॉ. यल्लप्पा के.के. पुरा (कन्नड), सुश्री स्वाती राजे (मराठी), श्री बीरेंद्र मोहांती (ओड़िआ) तथा डॉ. पट्टीपका मोहन (तेलुगु), ने क्रमश: अपनी-अपनी भाषाओं में आलेख प्रस्तुत किए।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021

अर्पण समारोह

30 सितंबर 2022, त्रिशूर, केरल

मुख्य अतिथि श्री रंजीत होसकोटे के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव और पुरस्कार विजेता

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था साहित्य अकादेमी ने 30 सितंबर 2022 को त्रिशूर के केरल संगीत नाटक अकादमी हॉल में आयोजित एक भव्य समारोह में 18 प्रतिष्ठित अनुवादकों को वर्ष 2021 के साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित किया।

पुरस्कार विजेताओं को भेंटस्वरूप उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा 50,000/- रुपए की राशि प्रदान की गई। साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता हैं - डॉ. पॅरी हिलोइदारी (असमिया), डॉ. इंदिरा बर' (बोडो), डॉ. नीलम सरीन (डोगरी), प्रो. धरणेंद्र कुरकुरी (हिंदी)), डॉ. गुरुलिंग कापसे (कन्नड), श्री प्यारे हताश (कश्मीरी), डॉ. गीता शेनॉय (कोंकणी), श्री सुनील नालियथ (मलयाळम्), श्री एम.एम. अहमद (मणिपुरी), (स्वर्गीय) श्री कुमार नवाथे (मराठी) (की पत्नी ने उनका पुरस्कार ग्रहण किया), डॉ. संजीव उपाध्याय (नेपाली), डॉ. गौरहरि दास (ओड़िआ), श्री भजनबीर सिंह (पंजाबी), श्री संजय पुरोहित (राजस्थानी), प्रो. दमयंती बेसरा (संताली), श्री मालन (वी. नारायणन) (तमिळ), श्रीमती काकरला सजय (तेलुगु) तथा प्रो. अर्जुमंद आरा (उर्दू)। पुरस्कार विजेता, श्रीमती नीता सेन समर्थ (बाङ्ला), श्रीमती शांता गोखले (अंग्रेज़ी), श्रीमती सोनल परिख (गुजराती), (स्वर्गीय) श्रीमती शिखा गोयल (मैथिली) की प्रतिनिधि, डॉ. रा. गणेश एवं श्री शशि किरण बी.एन. (संस्कृत) तथा श्रीमती मीना गोप रूपचंदाणी (सिंधी) समारोह में उपस्थित नहीं हो सके।

अपने स्वागत वक्तव्य में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने बताया कि किस प्रकार अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों को एकजुट करता है तथा सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं में अनुवाद की लंबी और समृद्ध परंपरा है तथा साहित्य अकादेमी का अनुवाद पुरस्कार पुरस्कृत विजेताओं के साथ-साथ उन परंपराओं का भी सम्मान करता है।

प्रख्यात कवि, क्यूरेटर, समालोचक, लेखक और विद्वान श्री रंजीत होसकोटे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने छह दशकों से अधिक समय तक अनुवाद परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए साहित्य अकादेमी को बधाई दी। उन्होंने हर किसी के क्षितिज को व्यापक बनाने में

अनुवादकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला और यह भी बताया कि अनुवाद और ज्ञान परंपराओं ने त्रिशूर की संस्कृति को कितना प्रभावित किया है।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में अनुवादकों द्वारा समस्त भारतीय भाषाओं में किए गए अनुवादों का साहित्यिक समुदाय तथा आम जन के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा की।

कार्यक्रम के अंत में, प्रख्यात कर्नाटक गायिका डॉ. के.आर. श्यामा ने अपनी मंडली के साथ कर्नाटक गायन की प्रस्तुति दी।

लेखक सम्मिलन

01 अक्तूबर 2022, त्रिशूर

लेखक सम्मिलन में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री माधव कौशिक

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी ने 1 अक्तूबर 2022 को त्रिशूर में केरल साहित्य अकादमी सभागार में साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार कार्यक्रम के भाग के रूप में लेखक सम्मिलन (अनुवादक सम्मिलन) का आयोजन किया। पुरस्कार विजयी अनुवादकों ने, विशेष रूप से अपनी पुरस्कृत कृति के अनुवाद के संदर्भ में अपने अनुभव साझा किए। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने बैठक की अध्यक्षता की तथा अनुवाद की रचनात्मक प्रक्रिया के बारे में संक्षेप में चर्चा की। असमिया अनुवाद पुरस्कार विजेता पॅरी हिलोइदारी ने अपने व्याख्यान में अरुणाचल प्रदेश में रहते हुए अनुवाद-कार्य करते समय उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों को साझा किया तथा सलमान रुश्दी को उद्धृत किया, "हम सभी अनूदित प्राणी हैं; हम केवल भाषा का नहीं बल्कि संस्कृति का अनुवाद करते हैं।" बोडो अनुवाद पुरस्कार विजेता इंदिरा बर' ने अपने व्याख्यान में कहा कि लोगों के लिए सभी भाषाओं को सीखना संभव नहीं है, इसलिए हमारे ज्ञान के आधार तथा हमारे क्षितिज को विस्तार देने के लिए, न केवल साहित्य में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी अनुवाद की आवश्यकता है। डोगरी अनुवाद पुरस्कार विजेता नीलम सरीन ने बताया कि किस प्रकार अनुवाद अनुवादक को तथा स्रोत एवं लक्ष्य दोनों भाषाओं में साहित्यिक परिवेश को समृद्ध बनाता है। उन्होंने अपने कुछ अनुवाद के अनुभवों को भी साझा किया। हिंदी अनुवाद पुरस्कार विजेता धरणेंद्र कुरकुरी ने बताया कि किस प्रकार अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों को एकजुट करता है, इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद आसान काम नहीं बल्कि यह कड़ी मेहनत का कार्य है। कन्नड अनुवाद पुरस्कार विजेता गुरुलिंग कापसे ने बताया कि किस प्रकार एक से अधिक भाषाएँ सीखने तथा एक-दूसरे में अनुवाद करने से उन्हें विभिन्न संस्कृतियों को जानने का अवसर प्राप्त हुआ। कश्मीरी अनुवाद पुरस्कार विजेता प्यारे हताश ने लेखक और अनुवादक के रूप में अपनी यात्रा साझा की तथा भाषाओं और साहित्य को जीवित रखने में लेखकों और अनुवादकों के योगदान की सराहना की। कोंकणी अनुवाद पुरस्कार विजेता गीता शेनॉय ने कहा कि अनुवाद एक कला है, एक समानांतर रचना है लेकिन आसान नहीं है तथा कोई भी शब्दकोश कभी भी अनुवाद करने में पूरी तरह से पर्याप्त मार्गदर्शक नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि अनुवादक की भूमिका किसी भी तरह से निष्क्रिय और यांत्रिक नहीं है। मलयाळम् अनुवाद पुरस्कार विजेता सुनील नालियथ

ने कहा कि केरल में प्रचलित वाचनालय संस्कृति की लंबी परंपरा ने मलयाळम् में अनूदित साहित्य की लोकप्रियता में योगदान दिया और उन्होंने कहा कि अनुवाद उनके जीवन की सबसे संतुष्टिदायक गतिविधि है। मणिपुरी अनुवाद पुरस्कार विजेता एम.एम. अहमद ने पुरस्कृत कृति का अनुवाद करते समय उनके सामने आने वाली चुनौतियों को साझा किया और बताया कि अनुवाद के माध्यम से उन्हें विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली। नेपाली अनुवाद पुरस्कार विजेता संजीव उपाध्याय ने अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ाकर लोगों को सक्षम और सशक्त बनाने में अनुवाद की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए तथा पुरस्कृत कृति का अनुवाद करने के अपने कुछ अनुभव भी साझा किए। ओड़िआ अनुवाद पुरस्कार विजेता गौरहरि दास ने कहा कि अनुवाद राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संचार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है तथा दिन-ब-दिन हम इस पर निर्भर होते जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि अनुवाद केवल शब्दों के अर्थ को स्थानांतरित करने का कार्य नहीं है, बल्कि यह एक संस्कृति को दूसरी मिट्टी या भूमि में प्रत्यारोपित करने का कार्य है। पंजाबी अनुवाद पुरस्कार विजेता भजनबीर सिंह ने अनुवाद कला, पंजाबी संस्कृति में अनुवाद की स्थिति तथा अपनी पुरस्कृत कृति के अनुवाद के अनुभवों को साझा किया। राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार विजेता संजय पुरोहित ने पुरस्कृत कृति के अनुवाद के दौरान के अनुभवों को साझा किया, और बताया कि किस प्रकार उन्होंने इस कृति को राजस्थानी सांस्कृतिक परिवेश में लाने, तथा राजस्थानी में उपयुक्त और प्रासंगिक शब्द खोजने की चुनौती को स्वीकार किया और आखिरकार इससे उन्हें लेखक और अनुवादक के रूप में विकसित होने में किस प्रकार मदद मिली। संताली अनुवाद पुरस्कार विजेता दमयंती बेसरा ने बताया कि अनुवाद की कला कितनी कठिन है, चाहे वह किसी की मातृभाषा से हो या किसी विदेशी भाषा से किसी अन्य भाषा में। उन्होंने बताया कि किस प्रकार उन्हें लेखिका और व्यक्ति के रूप में विकसित होने में पुरस्कृत कृति का अनुवाद करने से सहायता प्राप्त हुई। तमिळ अनुवाद पुरस्कार विजेता, मालन (वी. नारायणन) ने कहा कि अनुवाद करने के संबंध में उनका सिद्धांत यह है कि वह ऐसे शब्दों का चयन करते हैं जो उनके भीतर एक खिड़की खोले, वह कार्य उनके समक्ष ऐसा जीवन प्रकट करे जिसके बारे में उन्होंने कभी सुना ना हो, वह कार्य जो उनके समक्ष प्रश्न उठाता हो तथा उन्हें सांस्कृतिक गलियारे में ले जानेवाला हो किंतु जो उन्हें सांस्कृतिक संदर्भों से परे मनुष्यों के साथ सहानुभूति रखने में सक्षम बनाने वाला हो। तेलुगु अनुवाद पुरस्कार विजेता काकरला सजय ने कहा कि कोई भी अनुवाद केवल भाषा के मुद्दे तक ही सीमित नहीं रह सकता तथा अनुवाद के दौरान उसके संदर्भ, विषय और समग्र ढाँचे को ध्यान में रखना होगा, और उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद को मूल पाठ तथा संस्कृति के प्रति एकजुटता और सहानुभूति के बिना आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। उर्दू अनुवाद पुरस्कार विजेता अर्जुमंद आरा ने अनुवाद की संस्कृति, अनुवाद के उन पर पड़े शुरुआती प्रभावों, अनुवादकों के समक्ष आनेवाली चुनौतियों तथा देश में अनुवाद होनेवाली कृतियों की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने पुरस्कृत कृति को अनूदित करने के अपने कुछ अनुभवों को भी साझा किया।

अभिव्यक्ति

1 अक्तूबर 2022

व्याख्यान देते हुए श्री विनोद जोशी

साहित्य अकादेमी ने 1-2 अक्तूबर 2022 को त्रिशूर में केरल साहित्य अकादेमी सभागार में "अभिव्यक्ति" कार्यक्रम का आयोजन किया। 1 अक्तूबर 2022 को उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के.

श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया तथा संक्षेप में अभिव्यक्ति का अर्थ समझाया तथा साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न अभिव्यक्ति कार्यक्रमों के बारे में बताया। मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रभा वर्मा ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा अनुवाद के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार अनुवाद द्वारा ज्ञान में बढ़ोतरी होती है तथा यह भारत में विविध समुदायों और संस्कृतियों को एकजुट करता है। उन्होंने कहा कि भारत एक बहुसांस्कृतिक और बहुभाषी समाज है तथा अनुवाद के बिना ज्ञान का किसी प्रकार का कोई भी आदान-प्रदान संभव नहीं है। प्रख्यात मलयाळम् लेखक और समालोचक श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में संस्कृतियों को एक साथ लाने के लिए अनुवाद की शक्ति के बारे में चर्चा की, तथा विभिन्न उदाहरणों का हवाला देते हुए बताया कि किस प्रकार अनुवादों ने संस्कृतियों को सशक्त बनाया है, तथा उन्होंने यह भी कहा कि अनुवाद विश्वभर भर में लंबे समय तक शांति एवं एकता स्थापित करने का मार्ग है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में बताया कि किस प्रकार समस्त साहित्यिक कार्यक्रम अभिव्यक्ति के प्रस्फुटन के विभिन्न रूप हैं। उद्घाटन सत्र में, तीन प्रतिष्ठित कवियों, पिकुमोनी दत्ता (असमिया), अनंत मिश्र (हिंदी) तथा बी.आर. लक्ष्मण राव (कन्नड) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र का विषय था - "अनुवाद : संस्कृतियों को एकजुट करना"। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात द्विभाषी लेखक और विद्वान प्रोफ़ेसर के. सच्चिदानंदन ने की। 5 प्रख्यात विद्वानों, कल्याण कुमार दास (बाङ्ला), लक्ष्मीश्री बनर्जी (अंग्रेज़ी), दिलीप बोरकर (कोंकणी), अरसु (मलयाळम्) तथा बिजयानंद सिंह (ओड़िआ) ने, अनुवाद विभिन्न संस्कृतियों को किस प्रकार एकजुट करता, पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने संबोधन में प्रोफ़ेसर के. सच्चिदानंदन ने कहा कि अनुवाद भाषाओं को निकट लाता है, यह भाषाओं और संस्कृतियों को सशक्त बनाता है, नया ज्ञान तथा समानता का मंच प्रदान करता है और संस्कृतियों को समस्त प्रकार के आधिपत्य का मुकाबला करने में सक्षम बनाता है। उन्होंने कहा कि अनुवाद एक रचनात्मक कला है, जैसे कविता या नाटक या कहानियाँ लिखना। कल्याण कुमार दास ने अपने संबोधन में अनुवाद कार्य से जुड़े विभिन्न कारकों, पाठ तथा भाषा के चयन से लेकर अनुवाद और प्रकाशन तक अनुवाद को प्रभावित करने वाले अचेतन पूर्वाग्रहों पर चर्चा की।

अपने संबोधन में, लक्ष्मीश्री बनर्जी ने कहा कि अनुवादक आदर्श साहित्यिक व्यवसायी हैं जो संस्कृतियों और समुदायों के बीच सेतु का निर्माण करते हैं। संघर्षग्रस्त और हिंसा से भरे इस विश्व को इसी की आवश्यकता है और जो अनुवादक कलाकार हैं, उन्हें बढ़ावा देने की आवश्यकता है। अरसु ने अपने संबोधन में बताया कि किस प्रकार अनुवाद दुनिया को जोड़ने या एकजुट करने में अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने कई उदाहरण भी प्रस्तुत किए। इस अवसर पर श्री दिलीप बोरकर ने कहा कि देश की विभिन्न संस्कृतियों की समानताएँ एक धागे के रूप में चलती हैं जो देश को एकजुट करती हैं तथा अनुवाद इन संस्कृतियों को जोड़ने का कार्य करते हैं, भले ही वे विभिन्न भाषाओं में लिखे गए हों। अपने संबोधन में बिजयानंद सिंह ने कहा कि सभी के लिए ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम अनुवाद है तथा विचारों एवं भावनाओं के आदान-प्रदान का सबसे श्रेष्ठ माध्यम अनुवाद है।

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022

अर्पण समारोह

14 नवंबर 2022, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि श्री प्रकाश मनु एवं पुरस्कार विजेताओं के साथ, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी ने 14 नवंबर 2022 को त्रिवेणी सभागार, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में अपने बाल साहित्य पुरस्कार 2022 अर्पित किए। पुरस्कार विजेताओं के नाम हैं -- दिगंत ओज़ा (असमिया), जया मित्र (बाङ्ला), देवबार रामसियारि (बोडो), राजेश्वर सिंह 'राजू' (डोगरी), अर्शिया सत्तार (अंग्रेज़ी), किरीट गोस्वामी (गुजराती), क्षमा शर्मा (हिंदी), तम्मण्ण नारायण कोमर (तम्मण्ण बीगार) (कन्नड), हमीदुल्लाह वानी (क़मर हमीदुल्लाह) (कश्मीरी), ज्योति कुंकळकार (कोंकणी), वीरेंद्र झा (मैथिली), ए. सेतुमाधवन (मलयाळम्), नाओरेम लोकेश्वर सिंह (मणिपुरी), संगीता राजीव बर्वे (मराठी), मीना सुब्बा (नेपाली), नरेंद्र प्रसाद दास (ओड़िआ), विश्वामित्र दाधीच (राजस्थानी), कुलदीप शर्मा (संस्कृत), गणेश मरांडी (संताली), मनोहर निहलानी (सिंधी), जि. मीनाक्षी (तमिळ), पत्तिपाका मोहन (तेलुगु) तथा ज़फ़र कमली (उर्दू)। प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि आज के समाज में बाल साहित्य का महत्त्व और प्रासंगिकता कई गुना बढ़ गई है। यह एक प्रसिद्ध तथा भली प्रकार से प्रलेखित तथ्य है कि जिस समाज के बच्चे शारीरिक और मानसिक रूप से, रचनात्मक और मज़बूत होते हैं, वे किसी भी सभ्यता के लिए उसकी महत्त्वपूर्ण संपत्ति होते हैं। यह सही समय है जब कि बाल साहित्य को देश की समस्त भाषाओं का प्रधान साहित्य बन जाना चाहिए। साहित्य अकादेमी बच्चों के लिए कई महत्त्वपूर्ण परियोजनाओं पर कार्य कर रही है। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने संक्षिप्त संबोधन में कहा कि बच्चे ऊर्जा, उत्साह और जिज्ञासा से भरे होते हैं। वे हमारे पर्यावरण के बीज हैं जो विशाल पेड़ों में विकसित होते हैं। इसलिए उनके बचपन की उचित देखभाल बहुत महत्त्वपूर्ण है। पुरस्कार अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि श्री प्रकाश मनु ने अपने बचपन के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि अगर भगवान है, तो वह बच्चों में है, उनकी मुस्कान में है और उनकी मासूमियत में है। उन्होंने कहा कि जब वह बच्चों के लिए लिखने बैठते हैं, तो उन्हें लगता है कि उनकी आत्मा शुद्ध हो गई है। जब एक बाल लेखक उनके चेहरे पर मुस्कान लाता है, तब वह वो कर रहा होता है जो भगवान द्वारा अधूरा छोड़ दिया गया है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी और कहा कि भारत में बच्चों के लिए लिखने की एक लंबी परंपरा रही है। यदि हम बाल साहित्य का निर्माण करते हैं, तो हमारा लेखन शुद्ध हो जाता है। बाल साहित्य का निर्माण करना एक बड़ी चुनौती है, विशेष रूप से, बदलते समाज में तथा

बाल लेखकों को बच्चों को नई दिशा देने के लिए लिखना चाहिए। इस पुरस्कार में 50,000/- रुपये की राशि तथा एक पट्टिका प्रदान की जाती है।

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2022, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए श्री माधव कौशिक

अकादेमी ने लेखक सम्मिलन कार्यक्रम का भी आयोजन किया, जिसमें साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेताओं ने अपने साहित्यिक अनुभवों को साझा किया। श्री दिगंत ओज़ा (असमिया पुरस्कार विजेता) ने कहा कि बच्चे दुनिया में सबसे अधिक उत्पीड़ित लोग हैं। घरों, स्कूलों और अन्य सामाजिक समारोहों में उन पर शारीरिक और मानसिक उत्पीड़न सामान्य घटना बन गई है। हम भी इस जघन्य, अमानवीय परंपरा के पीड़ित हैं और अपराधी भी। सुश्री जया मित्र (बाङ्ला पुरस्कार विजेता) ने कहा कि बचपन मानव जीवन का सबसे सुंदर और आशावान भाग है। बच्चे हर तरह की परिस्थिति में ख़ुश रहने की क्षमता रखते हैं। उनमें विश्वास करने और थोड़ा सा भी समर्थन मिलने पर प्रतिक्रिया करने की प्राकृतिक शक्ति होती है। इसलिए, उन्हें सांस्कृतिक रूप से सबसे सकारात्मक विचारों और अनुभवों से अवगत कराया जाना चाहिए। श्री देवबार रामसियारी (बोडो पुरस्कार विजेता) ने कहा कि उन्हें पूरा विश्वास है कि बाल साहित्य नई पीढ़ी का एक हथियार है जो उनकी प्रतिभा को निखार सकता है। सभी प्रकार की प्रतिभाओं का विकास बचपन से ही प्रारंभ हो जाता है। देश का भविष्य विद्यार्थियों की प्रतिभा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। अत: बाल साहित्य का भंडार समृद्ध होना चाहिए। श्री राजेश्वर सिंह 'राजू', (डोगरी पुरस्कार विजेता) ने कहा कि कहानियाँ लिखते समय उन्हें बड़ा आनंद आया। वह एक ही समय में एक पिता, एक कहानीकार और एक बच्चा बन गए। दोबारा बचपन में क़दम रखना एक ख़ूबसूरत एहसास था। श्री किरीट गोस्वामी (गुजराती पुरस्कार विजेता) ने कहा कि नई पीढ़ी के बच्चों को नए विषय, नई कल्पना, नए उपकरण, नई फंतासी कविता दी जानी चाहिए और ऐसा करके हम उनके बीच प्यार और ख़ुशी फैला सकते हैं। श्रीमती क्षमा शर्मा (हिंदी पुरस्कार विजेता) ने अपने बचपन की यादों को साझा करते हुए कहा कि दरअसल, हम सभी जीवन भर अपने बचपन की ओर भागते रहते हैं, लेकिन वह इठलाता है, हमेशा आगे बढ़ता है और हम उसे कभी पकड़ नहीं पाते हैं।

श्री तम्मण्ण बीगार (कन्नड पुरस्कार विजेता) ने अपने व्याख्यान में इस बात पर बल दिया कि उनके प्रयास उनके आसपास रहने वाले बच्चों की दुनिया की वास्तविकताओं को उद्घाटित करने पर केंद्रित हैं। उनकी कहानियाँ, उपन्यास, कविताएँ तथा अन्य रचनाएँ विभिन्न परतों के साथ एक ही व्यापक विषय को लेकर चलती हैं। मेरी इच्छा है कि इस प्रकार के लेखन से बच्चों का विकास एक ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में हो। श्री क़मर हमीदुल्लाह (कश्मीरी पुरस्कार विजेता) ने कहा कि बच्चों को सीधी सलाह और निर्देश वाली कविताएँ पसंद नहीं हैं। उन्हें ऐसी कविताएँ पसंद हैं जो उनकी कल्पना को आकर्षित करती हों। वे प्राकृतिक वस्तुओं, प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण के बारे में कविताओं से प्रसन्न होते हैं। लेकिन उन्हें लंबी कविताएँ और कठिन भाषा में लिखी कविताएँ पसंद नहीं आतीं। सुश्री ज्योती कुंकळकार (कोंकणी पुरस्कार विजेता)

ने कहा कि वह अपने उपन्यास के माध्यम से यह बताना चाहती हैं कि केवल किताबी पढ़ाई ही काफी नहीं है, बच्चों का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास होना भी आवश्यक है। पर्यावरण और पशु-पक्षियों से भी प्रेम होना चाहिए। श्री वीरेंद्र झा (मैथिली पुरस्कार विजेता) ने कहा कि बाल साहित्य बच्चों की रुचि, मनोविज्ञान और इच्छा के अनुरूप होना चाहिए। बाल साहित्य का संक्षिप्त, सरल, सरस एवं रोचक होना आवश्यक है। बाल साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ खेल-कूद में ज्ञान बढ़ाना है। श्री नाओरेम लोकेश्वर सिंह (मणिपुरी पुरस्कार विजेता) ने कहा कि यदि उनका यह संदेश युवाओं तक पहुँचता है कि वे अपनी सदियों पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाजों से प्रेम करें, तो वह अपने प्रयासों को सार्थक समझेंगे।

सुश्री संगीता राजीव बर्वे (मराठी पुरस्कार विजेता) ने कहा कि वह बच्चों को अपनी मातृभाषा में लिखने के लिए प्रोत्साहित करने को वह अपना कर्त्तव्य मानती हैं, क्योंकि अब महाराष्ट्र की मातृभाषा मराठी में पढ़ना और लिखना कम हो रहा है। सुश्री मीना सुब्बा (नेपाली पुरस्कार विजेता) ने कहा कि आज की स्थिति में, हमें पारिवारिक माहौल को बच्चों के अनुकूल बनाने और अपनी जड़ों से जुड़ने के साथ-साथ भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए आधुनिक सोच विकसित करने की दिशा में काम करना होगा। श्री नरेंद्र प्रसाद दास (ओड़िआ पुरस्कार विजेता) ने कहा कि वयस्कों के लिए लिखना और बच्चों के लिए लिखना पूर्णत: अलग है। जैसा कि पहले ही बताया गया है, बाल साहित्य का उद्देश्य अपने पाठकों को अवगत कराना, उनका मनोरंजन करना तथा उन्हें रचनात्मक और कल्पनाशील बनाना है। श्री विश्वामित्र दाधीच (राजस्थानी पुरस्कार विजेता) ने मछली और आँसुओं के माध्यम से जलीय जीवों की पीड़ा प्रत्येक वर्ग के लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया। अपनी पुस्तक के माध्यम से उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्तमान वैज्ञानिक युग में हमें बच्चों के मन में पर्यावरण के प्रति मूल्यों को विकसित करना होगा। श्री कुलदीप शर्मा (संस्कृत पुरस्कार विजेता) ने अपनी पुरस्कृत कृति पर बात करते हुए कहा कि उनकी पुस्तक बच्चों और शैक्षिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। समस्त उत्तरों का स्पष्टीकरण पुस्तक के परिशिष्ट में दिया गया है।

श्री गणेश मरांडी (संताली पुरस्कार विजेता) ने कहा कि भाषा, साहित्य और संस्कृति के विकास में प्रत्येक भाषा के बाल साहित्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह किसी भाषा विशेष के साहित्य को पूर्णता प्रदान करता है।

श्री मनोहर निहलानी (सिंधी पुरस्कार विजेता) ने कहा कि बाल साहित्य लिखना एक कठिन और ज़िम्मेदारी भरा कार्य है, क्योंकि लिखते समय लेखक को प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक पैराग्राफ सोच-समझकर लिखना पड़ता है, क्योंकि इसका सीधा प्रभाव बच्चों की मानसिकता तथा उनके कोमल हृदय पर पड़ता है। सुश्री जि. मीनाक्षी (तमिळ पुरस्कार विजेता) ने कहा कि उन्हें बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद है। हालाँकि उन्होंने वयस्कों के लिए कई कहानियाँ तथा आलेख लिखे हैं, किंतु बच्चों के लिए कहानियाँ लिखने में उन्हें अत्यधिक खुशी महसूस होती है, जिसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है। श्री पत्तिपाका मोहन (तेलुगु पुरस्कार विजेता) ने अपनी पुरस्कृत कृति का हवाला देते हुए कहा कि उनकी पुस्तक दो भागों में है। प्रथम भाग में गाँधी जी के गीत हैं तथा द्वितीय भाग में गाँधी जी की गीतात्मक कहानी है। बच्चे छंदबद्ध लय में स्वयं गीतों को पढ़ एवं गा सकते हैं। गीत सरल और सरस तेलुगु शब्दों में लिखे गए हैं जो न केवल बच्चों को गाँधीवाद के बारे में बताते हैं, बल्कि गाँधी के दर्शन, उनके व्यक्तित्व, उनके धर्म, स्वतंत्रता संग्राम में उनके नेतृत्व को भी प्रकट करते हैं। श्री ज़फ़र कमाली (उर्दू पुरस्कार विजेता) ने कहा कि उन्हें 63 साल की उम्र में भी ऐसा लगता है कि उनके दिल में एक मासूम बच्चा छिपा है, जो मासूम भाव से उनकी ओर देखकर उछलता है और हँसता है, उन्हें लिखने के लिए विवश करता है। डॉ. अर्शिया सत्तार (अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता) तथा श्री ए. सेतुमाधवन (मलयाळम् पुरस्कार विजेता) कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने समस्त पुरस्कार विजेताओं तथा उपस्थित साहित्य प्रेमियों को धन्यवाद दिया।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022
अर्पण समारोह

27 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि श्रीमती ममता कालिया तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष एवं सचिव

साहित्य अकादेमी ने 27 दिसंबर 2022 को त्रिवेणी कला संगम, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 युवा भारतीय लेखकों को अपने युवा पुरस्कार 2022 से सम्मानित किया।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों, पुरस्कार विजेताओं, मीडिया हस्तियों तथा प्रख्यात साहित्य पारखी हस्तियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय युवा दिवस शीघ्र ही आनेवाला है तथा वह स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने कहा था कि युवावस्था जीवन का सर्वोत्तम चरण है। यह युवा लोग ही हैं जो समृद्धि और नवीनता के अग्रदूत हैं। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य अकादेमी स्वयं द्वारा मान्यता प्रदत्त समस्त 24 भारतीय भाषाओं में युवा लेखकों को बढ़ावा देने और प्रोत्साहित करने के लिए बहुत सक्रिय है। युवा पुरस्कार युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने की पहल में से एक है। इसके अलावा, अकादेमी भारत के युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए अन्य योजनाएँ और परियोजनाएँ भी चलाती है जैसे - युवा साहिती कार्यक्रम, नवोदय योजना, युवा लेखकों को यात्रा अनुदान आदि।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंशेखर कंबार की अनुपस्थिति में अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि अकादेमी अपने युवा पुरस्कार के माध्यम से उन युवा लेखकों को सम्मानित करती है, जिन्हें अपने रचनात्मक लेखन के माध्यम से हमारी संस्कृति का भविष्य बनाना है। उन्होंने कहा कि आज के युवा लेखक अधिकतर बहुभाषी हैं। वे प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं जो नई शब्दावली, नई भाषा, नई क्षमता और नई रचनात्मक शक्ति में वृद्धि करते हैं। वह दिन दूर नहीं जब भारतीय युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान मिलेगी।

डॉ. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति पत्र पढ़ा तथा श्री माधव कौशिक ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष की ओर से पुरस्कार विजेताओं को साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार प्रदान किए।

प्रख्यात हिंदी लेखिका श्रीमती ममता कालिया समारोह की मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने कहा कि विगत दशकों में युवा लेखकों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया। यद्यपि, आज, समस्त संस्थानों ने युवाओं को महत्त्व देने की आवश्यकता को पहचाना है तथा अकादेमी ने 35 वर्ष से कम आयु के

युवा लेखकों को अपना युवा पुरस्कार प्रदान करके इस संबंध में सराहनीय कार्य किया है। आज के युवा लेखक बहु-प्रतिभाशाली हैं तथा अतीत की तुलना में उनके पास अधिक विकल्प हैं। वे अपने साथ जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के अनुभव लेकर आते हैं जो उनके लेखन में खूबसूरती से प्रतिबिंबित होते हैं। उनकी भाषा और शैली अत्यंत जीवंत तथा वर्तमान समय की चुनौतियों से निपटने में सक्षम है।

युवा पुरस्कार 2022 विजेता हैं - प्रद्युम्न कुमार गोगोई (असमिया), सुमन पातारी (बाङ्ला), अलंबार मुसाहारि (बोडो), आशु शर्मा (डोगरी), मिहिर वत्स (अंग्रेज़ी), भरत खेनी (गुजराती), भगवंत अनमोल (हिंदी), दादापीर जैमन (कन्नड), शाइस्ता ख़ान (कश्मीरी), फादर मायरन जेसन बार्रेटो (कोंकणी), नवकृष्ण ऐहिक (मैथिली), अनघा जे. कोलथ (मलयाळम्), सोनिया खुन्द्राकपम (मणिपुरी), पवन नालट (मराठी), रोशन राई 'चोट' (नेपाली), दिलीप बेहरा (ओड़िआ), संधू गगन (गगनदीप सिंह) (पंजाबी), आशीष पुरोहित (राजस्थानी), श्रुति कानिटकर (संस्कृत), सालगे हाँसदा (संताली), हिना आसवाणी (सिंधी), पी. कालिमुथ्थु (तमिऴ), पल्लिपट्टू नागराजु (तेलुगु) और मक़सूद आफ़ाक़ (उर्दू)।

लेखक सम्मिलन

28 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करते हुए श्री माधव कौशिक

भारत की प्रमुख साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी ने 28 दिसंबर 2022 को साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें 24 भारतीय भाषाओं के युवा पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने बैठक की अध्यक्षता की।

असमिया पुरस्कार विजेता प्रद्युम्न कुमार गोगोई ने कहा कि रचनात्मकता एक बाल स्थिति की भाँति है। यह इतनी अधिक मासूम होती है कि इसमें शाश्वत उद्देश्य के लिए रचनाकार का संपूर्ण जीवन कम पड़ जाता है।

बाङ्ला पुरस्कार विजेता सुमन पातारी ने कहा कि कविता उसे कहा जाता है, जो कवि की अनुभूतियों तथा वह इस धरती से क्या सीखता है, का वर्णन करती है। उन्होंने बताया कि उनकी कविताएँ ही उनका परम आश्रय बन गई हैं।

बोडो पुरस्कार विजेता अलंबार मुसाहारि ने पुरस्कार प्राप्त करने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इसे किसी भी युवा लेखक के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि यह न केवल उनकी मातृभाषा बोडो का सम्मान है, बल्कि समस्त भारतीय भाषाओं का सम्मान है।

डोगरी पुरस्कार विजेता आशु शर्मा ने अपने पुरस्कृत कहानी-संग्रह *कठपुतली* पर चर्चा की, जिसे उन्होंने लगभग एक दशक पहले लिखना आरंभ किया था। उन्होंने कहा कि कोई भी रचनात्मक कार्य एक दिन का परिणाम नहीं होता, इसमें समयस्थ मस्तिष्क का व्यायाम, उसका परिपक्व होना तथा फिर उसका शब्दों के रूप में बाहर आना शामिल होता है।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता मिहिर वत्स ने अपनी पुरस्कृत कृति *टेल्स ऑफ़ हजारीबाग़* पर चर्चा की, जो एक ऐसे युवक की प्रेम कहानी से संबंधित है जिसने झारखंड में अपनी मातृभूमि में एक विशेष प्रकार का स्थान बनाया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार कहानियाँ उन लोगों द्वारा लिखी जाती हैं जिनके पास भाषा को रचनात्मक रूप से नियोजित करने के लिए पर्याप्त शिक्षा होती है, उसी प्रकार पीछे हटने की कहानियाँ भी उन लोगों द्वारा लिखी जाती हैं जो पीछे हटने का जोखिम उठा सकते हैं।

गुजराती पुरस्कार विजेता भरत खेनी ने प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा की पुरस्कृत जीवनी लिखने की अपनी यात्रा के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि वह रवि वर्मा की पेंटिंग्स से बेहद प्रभावित हुए तथा उन्होंने इस महान चित्रकार पर लिखने का निर्णय लिया।

हिंदी पुरस्कार विजेता भगवंत अनमोल ने साहित्य के वास्तविक अर्थ पर बात की। उन्होंने कहा कि जिस लेखन का संबंध समाज के कल्याण से नहीं है, उसे साहित्य नहीं कहा जा सकता। लेखक का कर्त्तव्य है कि वह समाज के हित के बारे में सोचे तथा उसे अपने साहित्यिक कार्यों में भी शामिल करे।

कन्नड पुरस्कार विजेता दादापीर जैमन ने कहा कि उनके जीवन के अतिसंवेदनशील क्षणों के दौरान, यह उनकी कहानियाँ ही थीं जिन्होंने सस्नेह उनका हाथ थामा था। उन्होंने आगे कहा कि, 'कहानियों ने मेरे हृदय में दबे कई रहस्यों को सुलझा दिया है।'

कश्मीरी पुरस्कार विजेता शाइस्ता ख़ान ने कहा कि लेखिका के रूप में, उन्हें व्यक्तिगत रूप से लगता है कि कविता की तुलना में गद्य अधिक अभिव्यंजक है, यही कारण है कि उन्हें कहानी लिखना पसंद है क्योंकि यह वास्तविक तथ्यों/मुद्दों पर आधारित है।

कोंकणी पुरस्कार विजेता फादर मायरन जेसन बार्रेटो ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया और कहा कि लेखन के प्रति उनका जुनून तथा अपने विचारों, सुझावों और नैतिकता के माध्यम से लोगों के बीच आशा की किरण बनने की इच्छा ने उन्हें लेखन की ओर आकृष्ट किया। वह लिखते हैं क्योंकि लेखन उनकी भावनाओं को शब्द देता है, उनके आँसुओं को शब्द देता है, उनकी आत्मा को आनंद देता है तथा उन्हें अंधेरी दुनिया से बचाता है। वह जितना अधिक लिखते हैं उन्हें उतनी अधिक शांति मिलती है।

मैथिली पुरस्कार विजेता नवकृष्ण ऐहिक ने अपने पुरस्कृत व्यंग्य-संग्रह *खुरचनभैक कछमच्छी* पर चर्चा की। आम आदमी का प्रतिनिधित्व करने वाले नायक खुरचनभाई किसी भी विषय पर व्यंग्यात्मक लहजे में बात करते हैं तथा विभिन्न घटनाओं, व्यवहारों और विचारों पर भी अपनी बेबाक राय रखते हैं।

मलयाळम् पुरस्कार विजेता अनाघा जे. कोलथ ने कहा कि रचनात्मकता अतीत और भविष्य के बीच की विशेष वार्ता है। इस प्रकार लेखन संस्कृति के स्थानिक और लौकिक पैमाने में अपना दायरा बना पाता है। किसी लेखक की प्रगति रूपकों, विचारधारा और भाषा में हो सकती है। किंतु लेखन की आदतें और अनुशासन तार्किक विचारों तथा बिखरे हुए विचारों के साथ समान हैं।

मणिपुरी पुरस्कार विजेता सोनिया खुन्द्राकपम ने कहा कि युवा पुरस्कार प्राप्त करके उन्हें बहुत साहस मिला है तथा उन्होंने अपने साहित्यिक अनुभव भी साझा किए। उन्होंने मणिपुरी साहित्य के विकास के लिए अपना जीवन समर्पित करने के अपने दृढ़ निर्णय के बारे में भी बात की।

मराठी पुरस्कार विजेता पवन नालट ने कहा कि उन्होंने जल्दी लेखन-कार्य आरंभ किया तथा कविता के विभिन्न रूपों में लिखा है। उनका मानना है कि कविता लिखना किसी के आंतरिक अस्तित्व को कविता के लिए उपलब्ध कराना है।

नेपाली पुरस्कार विजेता रोशन राई 'चोट' ने अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बात की जो उनके विद्यालय के दिनों से आरंभ हुई थी। उन्होंने यह भी कहा कि शुरुआत में उन्होंने बिना जाने-समझे साहित्य लिखा किंतु समय के साथ उन्होंने इसे समझा और वे साहित्यिक समझ के साथ लिख पाने में सक्षम हुए।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता दिलीप बेहरा ने कहा कि उन्होंने पुरस्कृत कृति में जीवन के व्यापक विस्तार और उसकी घटनाओं की कड़ी जाँच की है तथा जीवन के उत्सुक पर्यवेक्षक के रूप में रचनात्मक दृष्टि के साथ उसे सावधानीपूर्वक दर्शाया है।

पंजाबी पुरस्कार विजेता संधू गगन (गगनदीप सिंह) ने अपने वक्तव्य की इस प्रश्न के साथ शुरुआत की कि 'मैं क्यों लिखूँ?' और उन्होंने यह महसूस किया कि एक लेखक के लिए इस प्रश्न का उत्तर देना सबसे कठिन कार्य

है। उन्होंने आगे कहा कि वह कविता नहीं लिखते बल्कि कविता उन्हें लिखती है लेकिन साथ ही उन्होंने यह भी माना कि उनके मन में कुछ विचार आते हैं जिन्हें वह पाठकों के साथ साझा करना चाहते हैं, अत: इसलिए वह लिखते हैं।

राजस्थानी पुरस्कार विजेता आशीष पुरोहित ने अपने विचार साझा करते हुए कहा कि साहस और संकोच के बीच अच्छा संतुलन किसी भी रचनात्मक लेखन की कसौटी है। लेखक को अपने साहित्यिक कार्य में अधिक साहसी होना चाहिए।

संस्कृत पुरस्कार विजेता श्रुति कानिटकर ने कहा कि गुण तभी उत्कृष्ट होते हैं जब आप उन लोगों में से होते हैं जो उनकी सराहना करना जानते हैं। उन्होंने अपनी पुरस्कृत कृति *श्रीमती चरित्रम* के बारे में बात की तथा कवयित्री के रूप में अपनी साहित्यिक यात्रा को साझा किया।

संताली पुरस्कार विजेता सालगे हाँसदा ने अपनी पुरस्कृत कृति *जनम बिसोम उजरोग काना* के बारे में बात की, जिसमें उन्होंने अर्ध शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासियों की स्थितियों का गहन वर्णन किया है। उन्होंने कहा कि इस कृति के माध्यम से उन्होंने युवाओं को जागृत करने तथा उन्हें विभिन्न सामाजिक व्यसनों से दूर रखने का प्रयास किया है।

सिंधी पुरस्कार विजेता हिना आसवाणी ने अपने व्याख्यान में कहा कि उनका सबसे अधिक ज़ोर 'सिंधियत' की खोज, उसे आगे बढ़ाने तथा उसे संरक्षित करने पर है। उन्होंने सिंधी लोगों, विशेष रूप से युवाओं को सावधानीपूर्वक समझाया कि चाहे वे अपने जीवन में कितना भी ऊपर क्यों न पहुँचें, उन्हें मातृभाषा 'सिंधी' को अपनी संस्कृति के साथ संरक्षित करना चाहिए तथा किसी को भी यह कहने में गर्व महसूस करना चाहिए कि 'हाँ, मैं सिंधी हूँ'।

तमिळ पुरस्कार विजेता पी. कालिमुथ्थु ने कहा, "मुझमें सांसारिक चीज़ों को नए दृष्टिकोण से देखने की भावना विकसित हुई है। इसने नवीनता की तलाश में रचनाकार के रूप में मेरे जीवन के पूरे अनुभव को बदल दिया है। मेरी कविताएँ आम लोगों के मुद्दों, सामाजिक वास्तविकताओं, सांस्कृतिक उत्पीड़न तथा जीवन की अन्य समस्याओं पर केंद्रित हैं"।

तेलुगु पुरस्कार विजेता पल्लिपट्टू नागराजु ने कहा कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच रहना भी एक प्रकार का सीखना है। उन्हें अशिक्षित लोगों के ज्ञान और स्मृति पर आश्चर्य हुआ। वे एक प्रकार के पुस्तकालय हैं जिन्होंने उसके मस्तिष्क को व्यापक बनाया। उनका मानना ही कि किसी भी कवि को अपने समय की आवाज़ बनना चाहिए, जिसमें वह रहता है।

उर्दू पुरस्कार विजेता मक़सूद आफ़ाक़ ने कहा कि शायरी भावना का विषय है जिसमें कवि अपने सभी अनुभवों को बयान करता है। उन्होंने यह भी कहा कि कवि के रूप में वह स्वप्न और वास्तविकता के बीच गहरा संबंध स्थापित कर सकते हैं।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022
अर्पण समारोह

11 मार्च 2023, नई दिल्ली

मुख्य अतिथि श्री उपमन्यु चटर्जी तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सचिव

11 मार्च 2023 को कमानी सभागार, कॉपरनिक्स मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य समारोह में 24 लेखकों को साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 प्रदान किए गए।

पुरस्कार अर्पण समारोह सुश्री संगीता खन्ना के मंगलाचरण के साथ आरंभ हुआ। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री माधव कौशिक तथा साहित्य अकादेमी की नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा का स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने श्री माधव कौशिक से पुरस्कार अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि श्री उपमन्यु चटर्जी का स्वागत करने का अनुरोध किया। अपने स्वागत व्याख्यान से पूर्व डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी के निवर्तमान अध्यक्ष तथा प्रख्यात कन्नड साहित्यकार डॉ. चंद्रशेखर कंबार की, भारतीय साहित्य में उनके उत्कृष्ट योगदान तथा साहित्य अकादेमी के साथ उनके उल्लेखनीय सहयोग देने के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि पुरस्कार, वास्तव में, लेखकों के साथ-साथ उन साहित्यिक परंपराओं के प्रति सम्मान का प्रतीक है जिनसे वे जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि यह एक लेखक का विशिष्ट रूप से दुर्लभ विश्व दृष्टिकोण है जो उसे विश्व साहित्य से जोड़ता है। डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि इस वर्ष का साहित्योत्सव 39वाँ संस्करण है तथा इसमें लगभग 40 कार्यक्रम और 400 से अधिक लेखक शामिल हैं, इसलिए यह अब तक का सबसे बड़ा आयोजन है। उन्होंने बताया कि पुरस्कार अर्पण समारोह में कज़ाख लेखकों का प्रतिनिधिमंडल भी उपस्थित है तथा साहित्योत्सव के दौरान इंडो-कज़ाख लेखक सम्मिलन का आयोजन भी किया जाएगा। उन्होंने प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत किया तथा समस्त पुरस्कार विजेताओं को पुन: बधाई दी। अपने व्याख्यान के अंत में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की स्थापना के बाद से निरंतर संरक्षण और समर्थन देने के लिए भारतीय लेखक समुदाय को धन्यवाद दिया।

श्री माधव कौशिक ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि साहित्य अकादेमी विश्व की सबसे बड़ी प्रकाशन संस्था है तथा यह हमारे देश की बहुलता का उत्सव मनाती है। उन्होंने यह भी कहा कि मंच के बाएँ कोने से दाएँ कोने तक बैठे पुरस्कार विजेता हमारे पूरे देश का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन सभी पुरस्कार विजेताओं ने आम आदमी के दर्द और पीड़ा को स्वर दिया है तथा आम आदमी के जीवन के सार को दर्शाया है। उन्होंने कहा कि लेखक समाज के

दर्द को व्यक्त करता है तथा अदृश्य शक्ति से प्रेरित भी होता है और स्व-शिक्षित होता है। इसलिए लेखकों को सम्मानित करके वास्तव में, हम सभी को सम्मानित कर रहे हैं। अपने व्याख्यान के अंत में उन्होंने कहा कि भारत में साहित्य, गर्मजोशी और संस्कृति उतनी ही जीवंत है जितनी 5000 वर्ष पूर्व थी। उन्होंने समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी।

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रशस्ति पत्र पढ़ा तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार अर्पित किए।

प्रतिष्ठित अंग्रेज़ी लेखक और विद्वान तथा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री उपमन्यु चटर्जी ने अपने संबोधन में कहा कि साहित्य एक थका देने वाला व्यवसाय है। व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त करने का सटीक तरीका खोजने के लिए दर्द से कठिन संघर्ष करता है। उन्होंने समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि पुरस्कार विजेता इस समारोह के मुख्य अतिथि हैं क्योंकि वे ही इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के आयोजन का प्रधान कारण हैं और यह शायद दुनिया में साहित्य का सबसे असाधारण सम्मान है। उन्होंने कहा कि दुनिया में कहीं भी एक ही समय में 24 भाषाओं का उत्सव नहीं मनाया जाता है और यह वास्तव में एक बड़ी उपलब्धि और बहुलवाद का संकेत है।

साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि यह एक अत्यंत प्रतिष्ठित सम्मान है। उन्होंने कहा कि एक मंच पर व्याप्त 24 भारतीय भाषाओं की सुंदरता और समृद्धि अपने आप में असाधारण सांस्कृतिक घटना है। उन्होंने आगे कहा कि यह सच है कि हम सभी अपने रीति-रिवाजों, फैशन, शैलियों आदि में भिन्न हैं लेकिन सांस्कृतिक रूप से हम एकजुट हैं और यही भारतीयता है। अपने संबोधन के अंत में उन्होंने समस्त पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा सभी को धन्यवाद दिया।

लेखक सम्मिलन

12 मार्च 2023, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन की अध्यक्षता करती हुई साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रो. डॉ. कुमुद शर्मा

साहित्योत्सव के दौरान लेखक सम्मिलन का आयोजन वाल्मीकि सभागार, साहित्य अकादेमी परिसर, नई दिल्ली में किया गया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेताओं ने सम्मिलन में अपने साहित्यिक अनुभव साझा किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की नव निर्वाचित उपाध्यक्ष प्रो. कुमुद शर्मा ने की।

असमिया पुरस्कार विजेता मनोज कुमार गोस्वामी ने कहा कि उन्होंने चार दशक पहले कहानी लेखन शुरू किया था। उनके अनुसार, वह ऐसे लेखक हैं जो प्रेम, घृणा, मुस्कान और आँसुओं को बयां करते हैं, राजनीति की दुनिया और समाज के कई मुद्दों को कलमबद्ध करते हैं।

बाङ्ला पुरस्कार विजेता श्री तपन बंद्योपाध्याय ने कहा कि उन्होंने सोचा, केवल कविताएँ लिखना उनके अनुभवों को पाठकों के साथ साझा करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा, इसलिए उन्होंने कहानी और कथा साहित्य लिखना आरंभ किया। बोडो पुरस्कार विजेता सुश्री रश्मि चौधरी ने कहा कि उन्होंने शब्दों को उस दर्द को व्यक्त करने के साधन के रूप में उपयोग किया जिससे वे गुजरीं। क्योंकि उस दर्द को केवल वही महसूस कर सकती थीं जिसे उन्होंने कई महीनों तक सहा था। डोगरी पुरस्कार विजेता वीणा गुप्ता ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि उन्होंने उस समय तक प्रकाशित डोगरी साहित्य को अधिकतम पढ़ा था। इसलिए, भाषायी अध्ययन के साथ-साथ उन्होंने विशेष रूप से डोगरी कथा साहित्य और नाटक, और

सामान्यत: कविता और अन्य विधाओं के अध्ययन का भरपूर आनंद लिया।

गुजराती पुरस्कार विजेता गुलाममोहम्मद शेख ने अपने अतीत को याद किया और अपने व्याख्यान में (दिवंगत) माला मारवाह द्वारा 'घेर जतन' के 3 से अधिक अनुवादों के कई अंश उद्धृत किए। उन्होंने कहा कि जैसे-जैसे जीवन ने अपने रहस्यों को उजागर किया और उन्हें अप्रत्याशित घटनाओं से अवगत कराया, उन्हें अपने दादा, माँ, भाई और अपनी गली के सामने एक अकेली दीवार के आस-पास की कहानियाँ मिलीं।

हिंदी पुरस्कार विजेता बद्रीनारायण ने कहा कि कोई भी पुरस्कार न केवल हमारी रचनात्मक यात्रा का सम्मान करता है, बल्कि हमारी रचनात्मकता के लिए नई चुनौतियाँ भी पैदा करता है। हमारी सबसे बड़ी चुनौती है कि हम रचना को चीज़ों में बदलने से बचाएँ। हमें रचनाओं को इस मायाबाज़ार में शामिल नहीं होने देना है, क्योंकि कविता के बिना कवि और समाज का जीवन व्यर्थ है। मुदनाकुडु चिन्नास्वामी, जिन्हें कन्नड में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सममानित किया गया है, ने अपनी पुरस्कृत कृति के बारे में जानकारी दी और कहा कि यह दार्शनिक अर्थों में अतीत की भव्यता के साथ वर्तमान भारत को प्रासंगिक बनाने से संबंधित है। उनके ज़्यादातर निबंध फ्रांसिस बेकन के उच्च महत्त्व के आख्यानों से प्रभावित हैं।

कश्मीरी पुरस्कार विजेता फ़ारूक़ फयाज़ ने कहा कि कश्मीरी भाषा में लिखित साहित्यिक परंपरा लगभग एक हज़ार वर्षों से चली आ रही है। उन्होंने आगे कहा कि ललद्यद से लेकर मौजूदा सदी तक, कश्मीरी भाषा में विविध विषयगत और प्रयोगधर्मी कविता रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनी है।

कोंकणी पुरस्कार विजेता माया अनिल खरांगटे ने कहा कि जब पुर्तगालियों ने 450 वर्षों तक गोवा पर शासन किया, तो उन्होंने कोंकणी भाषा को नष्ट करने की बहुत कोशिश की, लेकिन गोवा के लोगों ने अपनी भाषा को नष्ट नहीं होने दिया। साहित्य लिखना नहीं छोड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि गोवा की स्वतंत्रता के बाद, कोंकणी भाषा पूर्ण रूप से फलने-फूलने लगी।

मैथिली पुरस्कार विजेता अजीत आजाद ने कहा कि आज धरती अनेक प्रकार के संकटों का सामना कर रही है, न तो साँस लेने के लिए शुद्ध हवा है और न ही पीने के लिए शुद्ध पानी। रिश्ते निभाना दिन-ब-दिन कठिन होता जा रहा है। मेरा लक्ष्य इसे बचाना है और इसलिए मैं धरती को बचाने की कोशिश करते हुए कभी प्रेम लिखता हूँ तो कभी प्रतिरोध। प्रेम और प्रतिरोध मेरी कविताओं का मूल है। विडंबनापूर्ण परिस्थितियों से संघर्ष करना और थके हुए लोगों को संघर्ष के लिए प्रेरित करना ही मेरी कविताओं का उद्देश्य है। मलयाळम् पुरस्कार विजेता एम. थॉमस मैथ्यू ने कहा कि एक नवजात शिशु का अपनी माँ के गर्भ से निकलते ही उसका पहले पहल रोना उसकी घोषणा है कि यह दुनिया कितनी शत्रुतापूर्ण है जिसमें उसे रहना तय है। भाषा मनुष्य की मानवता से अविभाज्य है।

मणिपुरी में पुरस्कृत कोइजम शांतिबाला देवी ने कहा कि कविता प्रेमी होने के नाते, कविता के भीतर की सुंदरता ने उन्हें हमेशा मंत्रमुग्ध किया है। उनका मानना है कि कविता दिल की सबसे प्यारी प्रस्तुति है और कविता आत्माओं के बीच एक संबंध प्रदान करती है। मराठी में पुरस्कृत प्रवीण दशरथ बांदेकर ने अपने लेखन की जड़ों के बारे में बताया कि जिस स्थान पर हम पैदा हुए हैं वहाँ की संस्कृति और हो रहे परिवर्तन हमारे लेखन को प्रभावित करते हैं।

नेपाली पुरस्कार विजेता के.बी. नेपाली ने कहा कि वे महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा कृत *मुन्ना मदान* से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा कि वे वर्ष 1955-56 से साहित्य से जुड़े तथा उन्होंने कुछ रचनाएँ लिखीं, तत्पश्चात उनकी रचनाएँ कई पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं तथा उन्होंने 1960 और 1965 से पुस्तकें लिखना आरंभ किया। पाठकों से प्रेरित और प्रोत्साहित होकर वे पूरी तरह से साहित्य लेखन में शामिल हो गए और लिखना प्रारंभ कर दिया।

ओड़िआ पुरस्कार विजेता गायत्रीबाला पांडा ने कहा कि पुरस्कार किसी लेखक के लिए नहीं बल्कि साहित्यिक सृजन के लिए होता है। उन्होंने यह भी कहा कि कविता रातों-रात समाज को बदल नहीं सकती। मुद्दों को सुलझाना भी कवि की जिम्मेदारी नहीं है। यद्यपि, यह पाठक की

अंतरात्मा को झकझोर सकती है, सीमित परिवर्तन ला सकती है तथा समाज को किसी हद तक प्रभावित कर सकती है।

पंजाबी पुरस्कार विजेता सुखजीत ने ग्रामीण इलाकों में किसानों के बीच बिताए अपने बचपन के अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि यह उनके माता-पिता द्वारा सुनाए गए गीत और कहानियाँ थीं जिन्होंने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने जीवन को करीब से जाना।

संस्कृत पुरस्कार विजेता जनार्दन प्रसाद पांडे 'मणि' ने कहा कि संस्कृत भाषा विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है। वर्तमान शताब्दी में भी संस्कृत विभिन्न विधाओं में लिखी जा रही है। संस्कृत में जहाँ शास्त्र लिखे गए हैं, वहीं साहित्य भी लिखा गया है। विश्व राष्ट्र और समाज की समग्र विसंगतियाँ, सुसंगतियाँ और परिस्थितियाँ संस्कृत साहित्य में परिलक्षित हो रही हैं और वह इसलिए हो रही हैं क्योंकि संस्कृत कवि सीमाओं से परे है। आज के युग की सभी विधाओं में संस्कृत लिखी जा रही है।

संताली पुरस्कार विजेता, जगन्नाथ सोरेन (काजली सोरेन) ने अपने बचपन को याद करते हुए कहा कि 1960 के दशक की शुरुआत में जब स्वदेशी समुदाय, कवियों और गीतकारों के बीच संताली भाषा और साहित्य के संरक्षण की दिशा में सांस्कृतिक आंदोलन चल रहा था, ऐसे में गुहीराम हेम्ब्रम, सारदा प्रसाद किस्कू तथा कई अन्य लोग एक गाँव से दूसरे गाँव तक यात्रा करते थे, जिससे युवाओं की मानसिकता को अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करने के लिए सशक्त बनाया जा सके। कई अन्य लोगों की भाँति, वह भी इस दौरान प्रभावित हुए तथा उन्होंने अल्पवय से ही गीत लिखना आरंभ कर दिया था।

सिंधी पुरस्कार विजेता कन्हैयालाल लेखवानी ने कहा कि सिंधी भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख विकसित भाषा है। साहित्य की दृष्टि से यह अत्यंत समृद्ध भाषा है, जिसका इतिहास एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। उन्होंने सिंधी साहित्य के विकास के प्रत्येक काल की शुरुआत में राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियों का विस्तार से वर्णन किया गया है, जिससे काल विशेष में साहित्यिक रूढ़ियों को आसानी से समझा जा सकता है।

तमिळ पुरस्कार विजेता एम. राजेंद्रन ने अपनी पुरस्कृत कृति *काला पानी* के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि अपनी पुस्तक में उन्होंने पेनांग और सुमात्रा द्वीपों की 66 दिनों की समुद्री यात्रा का वर्णन किया है। उन्होंने आगे कहा कि ऐतिहासिक उपन्यास लिखते समय, एक लेखक को दो चुनौतियों का सामना करना पड़ता है : एक, उसे ज्ञात तथ्यों को लिखना होता है जो कुछ लोगों को नापसंद भी आ सकते हैं, तथा दूसरा, ऐतिहासिक उपन्यास को नाम, वर्ष तथा घटनाओं का संकलन बनाने से बचाना चाहिए।

तेलुगु पुरस्कार विजेता मधुरांतकम नरेंद्र ने कहा कि उन्होंने जीवन और साहित्य के बीच कभी न खत्म होने वाली प्रतिस्पर्धा देखी है। जब तक कोई लेखक किसी सत्य को पकड़ता है, तब तक वही सत्य रूपांतरित हो चुका होता है और एक अलग और अप्रत्याशित आकार ले चुका होता है और इस प्रकार जीवन साहित्य का उपहास करता है। उन्होंने यह भी कहा कि लेखक को नए तरीके सीखकर व अपनाकर स्वयं को आधुनिक बनाना चाहिए।

उर्दू पुरस्कार विजेता अनीस अशफ़ाक़ ने 15 वर्ष की उम्र में शुरू हुई अपनी साहित्यिक यात्रा को याद करते हुए अपनी माँ को अपना प्रथम शिक्षक माना। उन्होंने कहा कि वह पश्चिमी सिद्धांतों के बजाय हमारे अपने सिद्धांतकारों द्वारा बनाए गए पारंपरिक उपकरणों में दृढ़ता से विश्वास करते हैं जो अक्सर बहुत भ्रमित करने वाले और अतिव्यापी होते हैं। इसलिए आधुनिकतावाद, उत्तरआधुनिकतावाद, विखंडनवाद आदि का उनके लिए कोई खास महत्त्व नहीं है। किसी भी रचनात्मक लेखन को परखने का मेरा एकमात्र सिद्धांत है - यह नहीं कि क्या कहना है; बल्कि उसे किस प्रकार कहना है।

अंग्रेज़ी पुरस्कार विजेता अनुराधा रॉय तथा राजस्थानी पुरस्कार विजेता श्री कमल रंगा लेखक सम्मिलन में शामिल नहीं हो सके। उनके आलेख श्रोताओं के बीच वितरित किए गए। प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने अपने समापन वक्तव्य में उपस्थित समस्त पुरस्कार विजेताओं तथा साहित्य प्रेमियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022

अर्पण समारोह

25 - 26 मार्च 2023, पणजी, गोवा

मुख्य अतिथि श्री दामोदर मावज़ो तथा पुरस्कार विजेताओं के साथ साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सचिव

साहित्य अकादेमी ने शनिवार, 25 मार्च 2023 को सायं 5.00 बजे इंस्टीट्यूट मेनेज़ेस ब्रैगेंज़ा, पणजी, गोवा में आयोजित एक भव्य समारोह में वर्ष 2022 के साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्रदान किए। पुरस्कार विजेताओं को उत्कीर्ण ताम्रफलक तथा 50,000/- रुपए की राशि प्रदान की गई।

25 मार्च 2023 को आयोजित कार्यक्रम में 24 भारतीय भाषाओं के पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार अर्पित किए। प्रख्यात कोंकणी लेखक श्री दामोदर मावज़ो समारोह के मुख्य अतिथि थे। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया।

अनुवादक सम्मिलन

26 मार्च 2023, पणजी, गोवा

अनुवादक सम्मिलन की अध्यक्षता करती हुई प्रोफ़ेसर डॉ. कुमुद शर्मा

साहित्य अकादेमी ने शनिवार, 26 मार्च 2023 को पूर्वाह्न 5.00 बजे इंस्टीट्यूट मेनेज़ेस ब्रैगेंज़ा, पणजी, गोवा में *अनुवादक सम्मिलन* का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने की तथा अनुवाद पुरस्कार विजेताओं ने अपने रचनात्मक अनुवादकीय अनुभवों को साझा किया।

वर्ष 2022 के अनुवाद पुरस्कार विजेता हैं : डॉ. जूरी दत्ता (असमिया), श्री शौभिक दे सरकार (बाङ्ला), श्री देबजित ब्रह्म (राजा देबजित बसुमतारी) (बोडो), डॉ. निर्मल विनोद (डोगरी), श्री एन. कल्याण रामन (अंग्रेज़ी), प्रोफ़ेसर विजय पंड्या (गुजराती), डॉ. गौरी शंकर रैणा (हिंदी), डॉ. पद्मराज दंडावति (कन्नड), श्री अब्दुल मजीद मीर (शबनम तिलगामी) (कश्मीरी), श्री माणिकराव राम नायक गावणेकार (कोंकणी), डॉ. रत्नेश्वर मिश्र (मैथिली), डॉ. चात्तनात् अच्युतन् उण्णी (मलयाळम्), श्री सलाम तोंबा (मणिपुरी), श्री प्रमोद मुजुमदार (मराठी), श्री पूर्णकुमार शर्मा (नेपाली), श्रीमती कमला सतपथी (ओड़िआ), श्रीमती भूपिंदर कौर प्रीत (पंजाबी), डॉ. मदन गोपाल लढ़ा (राजस्थानी), डॉ. गोपबंधु मिश्र (संस्कृत), श्री लक्ष्मण किस्कू (संताली), श्री भगवान अटलानी (सिंधी), श्री के. नल्लतंबि (तमिऴ), श्री वारला आनंद (तेलुगु) तथा डॉ. रेनू बहल (उर्दू)।

मलयाळम् अनुवाद पुरस्कार विजेता डॉ. चात्तनात् अच्युतन् उण्णी की अनुपस्थिति में उनके स्थान पर उनका पुरस्कार उनकी सुपुत्री ने ग्रहण किया।

अभिव्यक्ति

26 मार्च 2023, पणजी, गोवा

उद्घाटन सत्र में उपस्थित गणमान्य अतिथि

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने 26 मार्च 2023 को इंस्टीट्यूट मेनेज़ेस ब्रैगेंज़ा, पणजी, गोवा में बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम *अभिव्यक्ति* का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र अपराह्न 2.30 बजे आरंभ हुआ। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात कोंकणी कवि तथा कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मेल्विन रोड्रिग्स ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता तथा प्रख्यात भारतीय अंग्रेज़ी लेखक श्री जेरी पिंटो ने उद्घाटन व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अनुवाद के महत्त्व पर बल देते हुए कहा कि अनुवाद संस्कृतियों को जोड़ता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने सत्र की अध्यक्षता की तथा अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष प्रोफ़ेसर कुमुद शर्मा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात्, बहुभाषी कविता-पाठ सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी कवि एवं अनुवादक डॉ. चंद्रकांत पाटिल ने की। इस कार्यक्रम में देशभर की विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रख्यात कवियों ने भाग लिया। श्री नीलिम कुमार (असमिया), श्री रंजीत दास (बाङ्ला), श्री ब्रायन मेनडोनका (अंग्रेज़ी), डॉ. यज्ञेश दवे (गुजराती), श्री एकांत श्रीवास्तव (हिंदी), डॉ. पूर्णानंद च्यारी (कोंकणी), सुश्री विजयालक्ष्मी (मलयाळम्), डॉ. यशोधारा मिश्रा (ओड़िआ) तथा सुश्री मंदारपु हेमावती (तेलुगु) ने अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ-साथ अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ पढ़कर सुनाईं।

प्रख्यात पंजाबी लेखक तथा विद्वान तेजवंत सिंह गिल को महत्तर सदस्यता प्रदत्त तथा संवाद कार्यक्रम

22 अप्रैल 2022, चंडीगढ़

डॉ. तेजवंत सिंह गिल को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक

साहित्य अकादेमी ने बुधवार, 27 अप्रैल 2022 को पंजाब कला परिषद, सेक्टर 16 - बी, चंडीगढ़ स्थित डॉ. एम.एस. रंधावा सभागार में प्रख्यात पंजाबी लेखक तथा विद्वान डॉ. तेजवंत सिंह गिल को अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया तथा प्रशस्ति-पाठ किया। उन्होंने कहा कि अकादेमी को तेजवंत सिंह गिल को महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए हर्ष हो रहा है और यह भी ख़ुशी की बात है कि यह समारोह पंजाब कला परिषद के संरक्षण में आयोजित किया जा रहा है। साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने डॉ. तेजवंत सिंह गिल को महत्तर सदस्यता पट्टिका, शॉल तथा फूलों का गुलदस्ता भेंट कर महत्तर सदस्यता प्रदान की। उन्होंने अपने संबोधन में तेजवंत सिंह गिल के अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ-साथ पंजाबी साहित्य में उनके योगदान का ज़िक्र किया और कहा कि उन्होंने पंजाबी, अंग्रेज़ी तथा अन्य भाषाओं के बीच एक सेतु की भाँति कार्य किया है। सम्मान स्वीकार करते हुए डॉ. तेजवंत सिंह गिल ने कहा कि यह महत्तर सदस्यता पहले गुरबख्श सिंह 'प्रीतलड़ी', अमृता प्रीतम तथा करतार सिंह दुग्गल जैसे प्रसिद्ध लेखकों को प्रदान की जा चुकी है तथा उन्हें अब लगता है कि मातृभाषा की सेवा के प्रति उनकी ज़िम्मेदारियाँ और अधिक बढ़ गई हैं।

अर्पण समारोह के बाद *संवाद* कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें प्रख्यात पंजाबी कवि और पंजाब कला परिषद के अध्यक्ष डॉ. सुरजीत पातर, डॉ. वनीता और

प्रोफ़ेसर इंदु बंगा ने डॉ. गिल के जीवन और कार्यों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. सुरजीत पातर ने कहा कि आज पंजाबी जगत के लिए गर्व का दिन है, जब विगत साठ वर्षों के दौरान डॉ. गिल महत्तर सदस्यता प्राप्त करने वाले छठे पंजाबी साहित्यकार बने हैं। डॉ. वनीता ने डॉ. तेजवंत सिंह गिल को महत्तर सदस्यता प्रदान करने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. गिल एक साधारण व्यक्ति हैं और वह एक स्तरीय विचारक तथा अनुवादक भी हैं। प्रोफ़ेसर इंदु बंगा ने अपने संबोधन में उनकी पुस्तकों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम का संचालन पंजाबी कला परिषद के सचिव डॉ. लखविंदर जोहल ने किया। प्रख्यात लेखकों जैसे डॉ. मनमोहन, श्री स्वराजबीर, श्री गुलज़ार सिंह संधू, डॉ. हरीश पुरी, श्री गुरदेव सिंह बरार, श्री राम अर्श, डॉ. निर्मल जौरा, सुश्री रछपाल कौर गिल, सुश्री राजपाल कौर, श्री दीपक चारनारथल, श्री शब्देश, श्री सुभाष भास्कर, पंजाबी लेखक सभा के अध्यक्ष तथा रंगमंच कलाकार श्री बलकार सिद्धू, श्री हमीर सिंह, श्री अमर ज्योति, श्री नरिंदर नसरीन, श्री जगदीप नूरानी, श्री सिमरजीत ग्रेवाल, श्री बलतेज सिंह, सुश्री सुखराज कौर, सुश्री रंजीत कौर, कलाकार दर्शन पाटली तथा पंजाब कला परिषद के समन्वयक श्री बलबीर गिल एवं श्री निंदर घुगियानवी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

प्रख्यात बाङ्ला लेखक तथा विद्वान शीर्षेंदु मुखोपाध्याय को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

25 जून 2022, कोलकाता

श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय को साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी ने 25 जून 2022 को अपने क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय को अपनी महत्तर सदस्यता प्रदान की। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रस्तुत किया। उन्होंने श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय के बहुमुखी जीवन का संक्षिप्त परिचय भी

प्रस्तुत किया। उन्होंने बाङ्ला लेखकों की समृद्ध परंपरा की बात करते हुए बाङ्ला बुद्धिजीवियों की भी प्रशंसा की। उसके बाद उन्होंने सम्मानित श्रोताओं के समक्ष प्रशस्ति पत्र पढ़ा। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने श्री मुखोपाध्याय को महत्तर सदस्यता प्रदान की तथा प्रख्यात भारतीय साहित्यकारों के मध्य उनके रचनात्मक स्थान पर बात की। उन्होंने श्री मुखोपाध्याय के लेखन की बहुमुखी आभा पर बात की, जिसने समकालीन भारतीय लेखकों को प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय अपनी विविधता और लेखन की उत्कृष्टता के कारण विश्व साहित्य के मास्टर हैं।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में, श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने महत्तर सदस्यता प्रदान करने के लिए अकादेमी के प्रति अपना आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने साहित्यिक करियर के साथ-साथ अपने जीवन में आने वाली उथल-पुथल और उन मुद्दों के बारे में भी संक्षेप में बात की, जिन्होंने उनके जीवन और साहित्य को प्रभावित किया। उन्होंने सुनील गंगोपाध्याय और शक्ति चट्टोपाध्याय जैसे अपने समकालीन लेखकों के बारे में बात की तथा उनके निम्न-मध्यम वर्ग की पृष्ठभूमि के संघर्षों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह पृष्ठभूमि छद्म रूप में वरदान साबित हुई क्योंकि इससे उन्हें ज़मीनी स्तर से जुड़े लोगों के साथ आसानी से बातचीत करने में मदद मिली। श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने बहुत-सी यात्राएँ की हैं, जिससे उनके अनुभवों के भंडार में बढ़ोत्तरी हुई है। वह हमेशा से यही जानना चाहते हैं कि क्या उनकी भावनाओं, लोगों के प्रति उनके प्रेम, प्रकृति और दुनिया को उनके पाठकों तक सही तरीके से पहुँचाया जा रहा है।

संवाद कार्यक्रम में तीन वक्ताओं—श्री प्रचेता गुप्ता, श्री स्मरणजीत चक्रवर्ती तथा श्री उल्लास मलिक ने श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय के जीवन और साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया। डॉ. सरकार ने उन प्रख्यात बाङ्ला लेखकों का भी उल्लेख किया, जिन्हें अब तक साहित्य अकादेमी की महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया जा चुका है। शीर्षेंदु को भारत के साथ-साथ बांग्लादेश के भी घर-घर में जाना जाता है। शीर्षेंदु कृत *घुनपोका* की रुग्णता और विषादपूर्ण वातावरण का उल्लेख करते हुए, उन्होंने अकेलेपन की भावनाओं के बारे में साक्षात्कारों में शीर्षेंदु की स्वीकारोक्ति की ओर इशारा किया। उन्होंने शीर्षेंदु कृत *पार्थिबो, मानबजमिन, परापार* आदि का भी उल्लेख किया। शीर्षेंदु को कोएट्जी के पामुक की भांति एक अंतरराष्ट्रीय लेखक बताते हुए, डॉ. सरकार ने यह भी कहा कि शीर्षेंदु के प्रफुल्लित करने वाले लेखन ने उनकी उदासी को और अधिक विचलित कर दिया है।

अपने भाषण में, श्री प्रचेता गुप्ता ने आधुनिक बाङ्ला लेखकों पर शीर्षेंदु के लेखन के प्रभाव पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उन विधियों के बारे में बताया जिनके अनुसार शीर्षेंदु अपने पाठकों को तैयार कर रहे हैं। उन्होंने उनकी साहित्यिक तकनीकों के विकास के बारे में भी बताया। श्री उल्लास मल्लिक ने शीर्षेंदु के लेखन में कल्पना के उपयोग के साथ-साथ उनके द्वारा सृजित नए शब्दों के बारे में भी बताया। उन्होंने श्री मुखोपाध्याय द्वारा नियोजित कथा तकनीकों पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री मल्लिक द्वारा शीर्षेंदु के प्रयोगात्मक लेखन के अलावा, उनके गद्य की विशिष्टता के साथ-साथ आधुनिकता पर भी प्रकाश डाला गया। श्री स्मरणजीत चक्रवर्ती ने शीर्षेंदु कृत उपन्यासों में उनके द्वारा विकसित पात्रों में पाए गए उदासीन रवैये का उल्लेख किया। उन्होंने श्री मुखोपाध्याय के लेखन में प्रेम के विषय पर भी बल दिया। आम लोगों के दर्द की सामूहिक अनुभूति और आत्म-व्यंग्य ने शीर्षेंदु के लेखन में अपना रास्ता तलाश कर लिया है। उन्होंने शीर्षेंदु के लेखन में उनके बचपन के निशान खोजने के भी प्रयास किए। कार्यक्रम के अंत में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रख्यात मलयाळम् लेखिका और विद्वान एम. लीलावती को महत्तर सदस्यता प्रदत्त

29 सितंबर 2022, कोच्चि (केरल)

डॉ. एम. लीलावती को महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी ने 29 सितंबर 2022 को कोच्चि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, दक्षिण कलामस्सेरी, एर्नाकुलम, कोच्चि के हिंदी विभाग के सेमिनार ऑडिटोरियम में प्रख्यात मलयाळम् लेखिका डॉ. एम. लीलावती को अपनी महत्तर सदस्यता प्रदत्त की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने गणमान्य व्यक्तियों तथा अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रशस्तिपत्र का वाचन किया, जिसमें उन्होंने मलयाळम् और अंग्रेज़ी साहित्य में डॉ. एम. लीलावती के योगदान का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने कहा कि मलयाळम् और अंग्रेज़ी में एलेगीज पर आधारित मातृभूमि साप्ताहिक में प्रकाशित उनके लेखों की शृंखला को व्यापक प्रशंसा मिली। उनके कार्यों को अत्यधिक सम्मान प्राप्त है तथा मलयाळम् समालोचना को समृद्ध करने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वागत वक्तव्य के पश्चात् साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष तथा प्रख्यात कन्नड लेखक डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने डॉ. एम. लीलावती को महत्तर सदस्यता प्रदान की। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा, "डॉ. लीलावती ने जो सादगी और विनम्रता बनाए रखी है, वह अनुकरणीय है।" उन्होंने कहा कि डॉ. एम. लीलावती मलयाळम् की प्रमुख समालोचक एवं लेखिका हैं तथा वे समस्त क्षेत्रों में हमेशा ईमानदार रहीं हैं तथा ऐसे लोग बड़े दुर्लभ होते हैं। डॉ. एम. लीलावती ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में कहा "जीवन में मेरी प्रथम गुरु मेरी माँ थीं, जो कविता से प्रेम करती थीं। उन्होंने महान कवियों की कविताओं को नोटबुक में लिखकर रखा, और शेक्सपियर, वल्लाथोल और शंकरन नांबियार जैसे महान कवियों के साहित्य के प्रति मुझमें रुझान पैदा किया तथा मेरे जीवन की नियति निर्धारित की।" उन्होंने अपने शिक्षकों तथा शुभचिंतकों को याद किया, जिन्हें वे अपनी जीवन-यात्रा के दौरान मिली थीं तथा अपने वक्तव्य में उन्होंने अपने दिवंगत पति डॉ. सी.पी. मेनन और अपने बच्चों से जुड़ी बातों का भी स्मरण किया। अपने संबोधन में उन्होंने 1965 में महाकवि जी.

शंकर कुरुप को दिए गए पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार को याद किया। उन्होंने अपने पूर्ववर्तियों यथा - बालमणि अम्मा और तकाषी शिवशंकर पिल्लई का भी उल्लेख किया, जिन्हें पहले महत्तर सदस्यता से सम्मानित किया जा चुका है। डॉ. एम. लीलावती ने बताया कि शिक्षिका के रूप में उनके पेशे ने साहित्यिक मूल्यांकन के प्रति उनकी रुचि जागृत की। उन्होंने कहा, "मैं इसे मलयाळम् साहित्यिक परंपराओं को दी गई मान्यता के रूप में लेती हूँ, न कि व्यक्तिगत उपलब्धि के रूप में।" अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री प्रभा वर्मा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि डॉ. एम. लीलावती समालोचक हैं जिन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से विज्ञान और कला को जोड़ा है। उन्होंने डॉ. एम. लीलावती की तुलना अलेक्जेंडर पोप के साथ की क्योंकि उनके लेखन करियर में काफी समानताएँ थीं। दोनों ने 19 वर्ष की आयु में लेखन आरंभ किया था तथा दोनों ने आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए शास्त्रीय और आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाया तथा दोनों ही रचनात्मक लेखक एवं समालोचक हैं। कोचीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति डॉ. के. एन. मधुसूदनन ने डॉ. एम. लीलावती तथा समारोह में उपस्थित अन्य माननीय मुख्य अतिथियों को सम्मानित किया। समारोह में प्रख्यात साहित्यकारों सहित कई लोगों ने भाग लिया। केरल साहित्य अकादमी के पूर्व सचिव तथा संगीत नाटक अकादेमी के सचिव डॉ. पी.वी. कृष्णन नायर, उपन्यासकार डॉ. सी.वी. राधाकृष्णन, लेखक डॉ. एस.के. वसंतन, लेखक ए. एस. प्रिया, लतालक्ष्मी, अनुवादक वाइकोम मुरली, श्री बालचंद्रन वडक्केदाथ, आलोचक और प्रोफ़ेसर थॉमस मैथ्यू, कोचीन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. के.एन. मधुसूदनन तथा प्रो. वाइस चांसलर डॉ. पी.जी. शंकरन भी अन्य विशिष्ट अतिथियों तथा प्रतिभागियों के साथ समारोह में उपस्थित थे।

प्रख्यात मराठी लेखक एवं विद्वान भालचंद्र नेमाडे को महत्तर सदस्यता प्रदत्त तथा संवाद कार्यक्रम

26 फ़रवरी 2023, मुंबई

प्रो. भालचंद्र नेमाडे को महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी ने प्रोफ़ेसर भालचंद्र नेमाडे को अपना सर्वोच्च सम्मान साहित्य अकादेमी महत्तर सदस्यता प्रदान किया। इस समारोह का आयोजन 26 फ़रवरी 2023 को मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय, दादर, मुंबई के सुरेंद्र गावस्कर

हॉल में आयोजित किया गया। महत्तर सदस्यता समारोह के पश्चात् *संवाद* कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें श्री प्रदीप गोपाल देशपांडे तथा डॉ. प्राची गुर्जरपाध्ये ने नेमाड़े के साहित्यिक योगदान के बारे में चर्चा की तथा डॉ. रंगनाथ पठारे ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

प्रारंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रो. नेमाडे, अतिथि वक्ताओं तथा श्रोताओं का स्वागत किया। उन्होंने प्रोफ़ेसर नेमाडे को प्रदान की जानेवाली महत्तर सदस्यता की जानकारी देते हुए बताया कि इतने बड़े भारतीय साहित्यकार को महत्तर सदस्यता प्रदान करना साहित्य अकादेमी के लिए गौरव की बात है। उन्होंने साहित्य अकादेमी के साथ नेमाडे के दशकों पुराने जुड़ाव तथा मार्गदर्शक के रूप में उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन को भी याद किया। तत्पश्चात, डॉ. के. श्रीनिवासराव ने महत्तर सदस्यता प्रशस्ति-पत्र पढ़ा तथा प्रो. कंबर ने प्रो. नेमाडे को महत्तर सदस्यता पट्टिका भेंट की। प्रो. नेमाड़े ने अपने स्वीकृति वक्तव्य में उनके कार्यों को साहित्य अकादेमी द्वारा स्वीकार करने के लिए अकादेमी का धन्यवाद किया। उन्होंने यह भी बताया कि मराठी परामर्श मंडल के संयोजक के रूप में उनके दो कार्यकालों के दौरान अकादेमी में किस प्रकार नए कार्यक्रम आरंभ किए गए। उन्होंने यह भी कहा कि भारत में असंख्य भाषाएँ मौजूद हैं और यही हमारी समृद्ध संस्कृति का निर्माण करतीं हैं। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने प्रो. नेमाडे को महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए अकादेमी के साथ उनके दीर्घ संबंधों को भी याद किया।

संवाद कार्यक्रम में, प्रख्यात अनुवादक एवं समालोचक श्री प्रदीप गोपाल देशपांडे ने प्रोफ़ेसर नेमाडे के साहित्यिक कार्यों, समाज को दिए गए उनके योगदानों पर प्रकाश डाला और बताया कि किस प्रकार प्रकृति की एक छोटी-सी घटना ने नेमाडे को अपने अनुभव लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने यह भी कहा कि नेमाड़े का गद्य कई बार काव्यात्मक ऊँचाइयों को छूता है। प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. प्राची गुर्जरपाध्ये, जो प्रोफ़ेसर नेमाडे की छात्रा भी थीं तथा जिनके मातहत उन्होंने अपनी पी-एच.डी. पूरी की, ने बताया कि उन्होंने उनके मार्गदर्शन में जीवन और साहित्य के बारे में बहुत कुछ सीखा है। प्रख्यात मराठी कहानीकार डॉ. रंगनाथ पठारे ने सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि नेमाडे ने हमेशा स्थानीय लोक भाषा का प्रयोग किया है, जिससे मराठी भाषा को अपनी सीमाओं का विस्तार करने में सहायता मिली तथा इसके साथ ही बहु-सांस्कृतिक विविधता का भी उत्सव मनाया जा सका।

प्रख्यात लेखक तथा अंग्रेज़ी विद्वान प्रफुल्ल मोहंती को साहित्य अकादेमी मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त

15 नवंबर 2022, नई दिल्ली

श्री प्रफुल्ल मोहंती को साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता प्रदान करते हुए अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार

साहित्य अकादेमी ने मंगलवार, 15 नवंबर 2022 को रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में एक भव्य समारोह में प्रख्यात लेखक तथा अंग्रेज़ी विद्वान श्री प्रफुल्ला मोहंती को अपनी मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त की। यह समारोह पुस्तकायन - साहित्य अकादेमी पुस्तक मेला 2022 के दौरान आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम की शुरुआत में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने श्रोताओं तथा गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। उन्होंने श्री मोहंती के जीवन और कार्यों पर तैयार किए गए प्रशस्ति-पत्र को पढ़कर सुनाया तथा अंग्रेज़ी में भारतीय साहित्य को दिए गए उनके योगदान के बारे में बताया। उन्होंने चित्रकार के रूप में भी श्री मोहंती के कार्यों की सराहना की।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री मोहंती को हार्दिक बधाई दी तथा उन्हें औपचारिक रूप से साहित्य अकादेमी की मानद महत्तर सदस्यता, शॉल और ताम्र पट्टिका से सम्मानित किया।

अपने स्वीकृति वक्तव्य में, श्री प्रफुल्ल मोहंती ने कहा कि यह एक चमत्कार है कि मैं दिल्ली में हूँ जब साहित्य अकादेमी मुझे अपनी मानद महत्तर सदस्यता से सम्मानित कर रही है, जो एक गाँव के लड़के के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है, जिसने स्वयं के प्रयासों से अंग्रेज़ी लिखना

और पढ़ना सिखा तथा एक पुस्तक लिखी *माई विलेज, माई लाइफ़* - जो एक ग्रामीण द्वारा अपने गाँव के बारे में लिखी गई दुनिया की अब तक की एकमात्र पुस्तक है। मैं साहित्य अकादेमी का आभारी हूँ कि उसने मुझे दिल्ली आमंत्रित किया और एक अत्यंत ही सुंदर वातावरण तैयार किया है जहाँ सूर्य चमक रहा है, लोग मुस्कुरा रहे हैं और बच्चे नाच रहे हैं। मैं इस सम्मान को स्वीकार करके अत्यंत प्रसन्न हूँ।

साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक श्री बिजयानंद सिंह ने श्री मोहंती को बधाई देते हुए उनके शानदार करियर और अंग्रेज़ी लेखक एवं कुशल चित्रकार के रूप में उनके कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि अकादेमी श्री प्रफुल्ल मोहंती को सम्मानित करने में गर्व महसूस कर रही है। उन्होंने कहा कि श्री मोहंती महान विद्वान हैं तथा उन्होंने भारतीय साहित्य को समृद्ध करने के लिए बड़े पैमाने पर कार्य किए हैं।

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

प्रोफ़ेसर लुईस गार्सिया मोंटेरो के साथ साहित्यिक संवाद कार्यक्रम

7 जुलाई 2022, नई दिल्ली

डॉ. के. श्रीनिवासराव और प्रोफ़ेसर लुईस गार्सिया मोंटेरो के साथ अन्य प्रतिभागी

साहित्य अकादेमी ने अपने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत 7 जुलाई 2022 को नई दिल्ली में प्रख्यात स्पानी साहित्यकार तथा इंस्तीत्यूतो सर्वान्तेस, मैड्रिड के महानिदेशक प्रोफ़ेसर लुईस गार्सिया मोंटेरो के साथ साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान प्रो. मोंटेरो ने अपनी कविताएँ सुनाईं तथा भारत और स्पेन में समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों पर दिल्ली स्थित प्रख्यात लेखकों के साथ संवाद किया।

भारत-रूसी लेखक सम्मिलन

1 मार्च 2023, नई दिल्ली

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने अपने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत 1 मार्च 2023 को तीन दिनों के दौरे पर आए रूसी लेखक प्रतिनिधिमंडल तथा दिल्ली स्थित प्रख्यात भारतीय लेखकों के साथ साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रख्यात लेखक प्रोफ़ेसर अभय मोर्य तथा रूसी विद्वान ने सत्र की अध्यक्षता की।

भारत-ईरानी लेखक एवं प्रकाशक सम्मिलन

2 मार्च 2023, नई दिल्ली

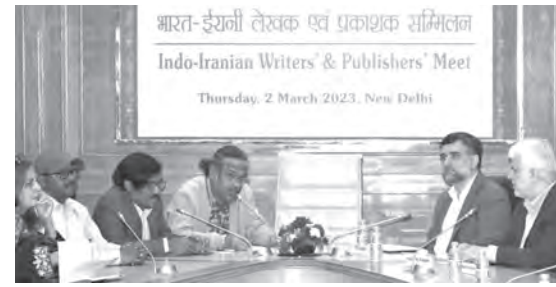

प्रतिनिधियों का परिचय देते हुए श्री कृष्णा किंबहुने

साहित्य अकादेमी ने अपने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत 2 मार्च 2023 को 12 सदस्यीय ईरानी लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रतिनिधिमंडल तथा दिल्ली स्थित प्रख्यात भारतीय लेखकों के साथ साहित्यिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया।

इंडो-कज़ाक लेखक सम्मिलन

15 मार्च 2023, नई दिल्ली

इंडो-कज़ाक लेखक

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने 15 मार्च 2023 को सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत कज़ाकिस्तान से पधारे सभी लेखकों अकाबेरेन येलबेज़ेक, अलमाज़ अमिरबेकुली मइामेत, नुरलन सरसेनबियुली इस्साबेकोब, तानाकोज़ यस तोलीनोवना तथा उलाइबेक ओराजबायुली येसदौलेत का हार्दिक अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि मुझे इस समय भीष्म साहनी की याद आ गई कि उन्होंने रूस और कज़ाकिस्तान के साहित्य का अनुवाद किया था। वे मुझे कज़ाकिस्तान के साहित्य के बारे में लगातार बताते रहते थे। उनकी कुछ कविताओं एवं शोध पढ़कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। हमारे भारत में भी इस तरह की कहानियों एवं बोध कथा का अनुवाद होना चाहिए। हम आज भी इन कहानियों के ज़रिए अपने समाज को अच्छा बनाने की कोशिश करते हैं और इस समय मुझे खलील जिब्रान की भी याद आती है। मेरी इच्छा है कि भारत और कज़ाकिस्तान दोनों देशों की किताबों का एक-दूसरे की भाषा में अनुवाद हो।

अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि हमें ऐसे विनिमय कार्यक्रमों को निरंतर आयोजित करते रहना चाहिए। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम में विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखक—वरयाम सिंह, शीन काफ़ निज़ाम, मो. जमां आर्ज़ुदा, गौरीशंकर रैणा, राजेंद्र उपाध्याय, अमरनाथ अमर, पारमिता सतपथी, अवधेश कुमार, मोहन सिंह, चिन्मय गुहा आदि शामिल हुए।

एकता का प्रतीक तिरंगा : भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय ध्वज का साहित्यिक चित्रण पर परिसंवाद

2 अगस्त 2022, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए आंध्र प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री बिस्वा भूषण हरिचंदन

आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के भाग के रूप में तथा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को डिजाइन करने वाले

पिंगली वेंकैया की 146 वीं जयंती के अवसर पर साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने "एकता का प्रतीक : भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय ध्वज का साहित्यिक चित्रण" विषय पर 2 अगस्त 2022 को विजयवाड़ा में परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय दिया और विभिन्न भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय ध्वज के साहित्यिक चित्रण के बारे में संक्षेप में बात की तथा यह भी बताया कि किस प्रकार राष्ट्रीय ध्वज ने भारतीयों को एकजुट होने और अंग्रेज़ों से लड़ने के लिए प्रेरित किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में आंध्र प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री बिस्वा भूषण हरिचंदन ने पिंगली वेंकैया को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और बताया कि किस प्रकार राष्ट्रीय ध्वज ने लाखों भारतीयों को प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पिंगली जी हालाँकि वे अनपढ़ थे, उन्होंने ध्वज से प्रेरणा ली और स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हुए। उन्होंने ओड़िआ, हिंदी और बाङ्ला साहित्य में ध्वज के साहित्यिक चित्रण के कई क़िस्सों को साझा किया। उन्होंने कहा कि भारत के दूरदर्शी प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू किए गए 'हर घर तिरंगा' अभियान का सभी को स्वागत करना चाहिए तथा प्रत्येक भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए। उद्घाटन सत्र में, आंध्र प्रदेश विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. मंडली बुद्ध प्रसाद ने राष्ट्रीय ध्वज के तेलुगु चित्रण पर बात की। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाली श्रीमती रामपिला नरसयम्मा को आंध्र प्रदेश के माननीय राज्यपाल द्वारा सम्मानित किया गया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर के. शिवा रेड्डी, ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र का विषय था - "कथा साहित्य में भारतीय ध्वज का चित्रण"। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. बिजयानंद सिंह ने की। इस सत्र में 3 प्रख्यात विद्वानों प्रोफ़ेसर चंदन कुमार शर्मा (असमिया), श्री मधुकर उपाध्याय (हिंदी)तथा डॉ. अनंत पद्मनाभ राव (तेलुगु)ने क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए। "भारतीय कविता और नाटकों में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज का चित्रण" विषयक द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर के. शिवा रेड्डी ने की। इस सत्र में 3 प्रख्यात विद्वानों श्री अरिंदम घोष (बाङ्ला), श्री समीर भट (गुजराती) तथा श्रीमती भूमा वीरावल्ली (तमिळ) ने क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बंदला माधव राव ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन

9-10 अगस्त 2022, कोलकाता

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

विश्व के आदिवासी लोगों के अंतरराष्ट्रीय दिवस तथा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने अपने क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सभागार में "अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन" का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने आदिवासी ज्ञान प्रणालियों पर अपने विचार व्यक्त किए, जिनका समय बीतने के साथ धीरे-धीरे विकास हुआ। अन्य संस्कृतियों ने भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आदिवासी समाज में महिलाओं की भूमिका की भी सराहना की। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने इन आदिवासी भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय परिषदों की आवश्यकता पर चर्चा की। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात संताली लेखिका और पद्मश्री से सम्मानित सुश्री दमयंती बेसरा ने प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में, उन्होंने आदिवासी समाज की संस्कृति और जीवन शैली के संरक्षण में महिलाओं की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने अगली पीढ़ी को परंपरा

और संस्कृति का ज्ञान प्रदान करने में माताओं की भूमिका पर भी बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पद्मश्री से अलंकृत प्रख्यात भाषाविज्ञानी श्री देवी प्रसन्न पटनायक ने की। उन्होंने विश्व के आदिवासी लोगों के अंतरराष्ट्रीय दिवस के महत्त्व पर बात की। उन्होंने आदिम जनजाति और आदिवासी जैसे शब्दों के अर्थों पर प्रकाश डाला। उन्होंने आदिवासी भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन, विकास और अनुवाद के महत्त्व पर भी बल दिया। उन्होंने मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के महत्त्व पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र में सुश्री अयुंग रैखान (ताङखुल), सुश्री दीपाली देववर्मा (ककबरक) और श्री लंकेश्वर कँहर (कुई) ने हिंदी/ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ मूल कविताओं का पाठ प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

सम्मिलन के प्रथम सत्र का विषय था - "गैर आदिवासी भाषाओं में आदिवासी स्वर"। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मराठी कथाकार श्री लक्ष्मण गायकवाड ने की। सुश्री पुष्पम्मा एस., श्री हाँसदा शौभेंद्र शेखर और श्री वाल्टर भेंगरा तरुण ने सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में सुश्री असिंता असुर (असुरी), सुश्री कुमुद बी. (वागरी) तथा श्री बादल हेम्ब्रम (संताली) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कहानियाँ पढ़कर सुनाईं। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात खासी लेखक तथा विद्वान मिनिमॉन लालू ने की, उन्होंने मूल खासी भाषा में कहानी-पाठ भी किया। तृतीय सत्र में रौशन चौधरी (चौधरी), पाइकराई चंपिया (हो), कइसा पोजे (माओ), थोवाइअंगेया मोग (मोग), जयसिंह संता (कोंध) तथा गैगरीन सबर (सौरा) ने हिंदी/ अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात चकमा लेखक और विद्वान अरुण चकमा ने की।

अगले दिन, चतुर्थ सत्र का विषय था- "भारतीय आदिवासी भाषाओं में महिला लेखन"। सत्र में पुष्पा गावित, वंदना टेटे, चुकी भूटिया तथा धन्या वेंगचेरी जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। उषाकिरण आत्राम ने सत्र की अध्यक्षता की।

पंचम सत्र में रौशन रामदास जंबु (कोरकू), लनबन कबुई (कबुई), आनंद गोपाल हांसदा (महाली), सलोमी एक्का (मुंडारी), सत्यजीत टोटो (टोटो), शांतिमयी चिरान (गारो), सज्जाद अली शुजात (पुर्गी) और अल्ताफ सलीम तडवी (तडवी) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं। सत्र की अध्यक्षता वासमल्ली के. (टोडा) ने की।

षष्ठ सत्र में वाइकॉमदिनबो तथा जैन्सी जॉन जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने "भारतीय आदिवासी भाषाओं का संरक्षण और विकास" विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए गए। सत्र की अध्यक्षता गंगा सहाय मीणा ने की।

सप्तम सत्र में पाओमिनसन खोङसाई (खोङसाई), के. ललनुनजामा (मिजो), धनीराम टिस्सो (कार्बी), रघुनाथ मडकाणी (कोया), कमालु मुदिलु (दिदिई), मोहम्मद अली (बल्टी) और राजेश्वरी (हक्कीपिक्की) ने हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं। सत्र की अध्यक्षता गोसा पेंटर (पावरी) ने की।

संस्कृति और नायक पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

24-25 सितंबर 2022, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

साहित्य अकादेमी ने जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, प्रयागराज के सहयोग से 24-25 सितंबर 2022 को प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में 'संस्कृति और नायक' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का मूल उद्देश्य उन समुदायों के नायकों पर चर्चा करना था जो मुद्रित साहित्य के साथ-साथ मौखिक, लोककथाओं, अनुष्ठान कथाओं तथा कई अन्य माध्यमों से प्रसारित होते हैं। यह नायक न केवल समाज विशेष की कथात्मक पहचान को दर्शाते हैं बल्कि समाज के आधारभूत मूल्यों, सामाजिक मानदंडों तथा नैतिक सिद्धांतों को भी दर्शाते हैं। नायक समाज की आकांक्षाओं, सपनों और इच्छाओं का भी प्रतिनिधित्व करते हैं।

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के दौरान साहित्य अकादेमी के सचिव ने संस्कृति और नायकों की अवधारणा पर बात की। उन्होंने कहा कि नायक की कल्पना केवल कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं है क्योंकि भारत की विविध संस्कृति में

नायक विविधता से भरा होता है। प्रो. बद्रीनारायण ने अपने आरंभिक वक्तव्य में विषय की उपयोगिता और आज के समय में इसकी आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि कोई भी समाज मिथकों और नायकों के बिना नहीं रह सकता। यह संगोष्ठी उन सभी नायकों की स्मृति को समर्पित है जो साहित्य, लोक और समाज में लिखित और मौखिक स्रोतों तथा स्मृतियों में विद्यमान हैं। प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में समाज और संस्कृति की बेहतरी के लिए एक नायक की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. टी.वी. कट्टीमनी ने भारत में विभिन्न संस्कृतियों तथा आदिवासी जीवन की बहुमुखी प्रतिभाओं के बारे में बात की। श्री माधव कौशिक ने अपने समापन वक्तव्य में भारतीय संस्कृति में लोक और जनजातीय नायकों पर चर्चा की।

उद्घाटन सत्र के अलावा, संगोष्ठी 6 विभिन्न सत्रों में विभक्त थी, यथा– नायकों की सैद्धांतिकी, जंगलों के नायक, पर्वतीय नायक, इतिहास एवं नायक, हाशिये के नायक और साहित्य में नायक। राधावल्लभ त्रिपाठी, नंद किशोर आचार्य, अरुण कमल, चितरंजन मिश्र, कांजी पटेल, शेखर पाठक, लीलाधर जगूड़ी, ममता कालिया, अखिलेश, श्यौराज सिंह बेचैन, देवेन्द्र चौबे आदि कई प्रख्यात लेखकों/विद्वानों ने कार्यक्रम में भाग लिया तथा संगोष्ठी के विषय पर अपने विचार साझा किए।

महिला लेखक सम्मिलन

07 मार्च 2023, नई दिल्ली

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 7 मार्च 2023 को नई दिल्ली में *महिला लेखक सम्मिलन* का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि महिलाओं के बिना सामाजिक रीति-रिवाज़, शिक्षा और मनोरंजन, सांस्कृतिक परंपराएँ और दर्शन संभव नहीं हैं तथा इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करना भी महिलाओं के बिना संभव नहीं है। उन्होंने साहित्य अकादेमी के विशेष मंच- नारी चेतना- का उल्लेख किया जो 24 भाषाओं में भारत की महिला लेखकों को समर्पित है, ताकि उन्हें अपने विचार व्यक्त करने में सक्षम बनाया जा सके।

डॉ. अजीत कौर ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बात की और विशेष रूप से विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाली प्रख्यात भारतीय महिलाओं के विश्वकोश का उल्लेख किया, जिसे उन्होंने लगभग 40 वर्ष पूर्व तैयार किया था। उन्होंने यह भी कहा कि रचनात्मक लेखन या तो अच्छा है या बुरा, हमें इसे पुरुष या महिला लेखन में विभक्त नहीं करना चाहिए।

प्रोफ़ेसर नासिरा शर्मा उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि थीं तथा उन्होंने भारत और विश्व में महिला लेखन की यात्रा पर चर्चा की। उन्होंने हमारी पूर्ववर्ती महिला लेखकों के संघर्ष और भारत में महिला लेखन के प्रचार-प्रसार और उत्थान में उनके योगदान को सूक्ष्मता से रेखांकित किया।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् कविता-पाठ सत्र आयोजित किया गया। सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका एवं विदुषी प्रोफ़ेसर मालाश्री लाल ने की तथा डॉ. रत्नोत्तमा दास (असमिया), सुश्री त्रिना चक्रवर्ती (बाङ्ला), सुश्री लक्ष्मी कण्णन (अंग्रेज़ी), डॉ. छाया त्रिवेदी (गुजराती), प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय (हिंदी एवं बाङ्ला), सुश्री स्वाति शर्मा (हिंदी), सुश्री सुनीता रैना (कश्मीरी), डॉ. शेफालिका वर्मा (मैथिली), सुश्री संजीवनी देशपांडे (मराठी), डॉ. प्रवासिनी महाकुड (ओड़िआ), सुश्री तरिंदर कौर (पंजाबी), सुश्री वीणा शृंगी (सिंधी) तथा सुश्री श्रीलक्ष्मी इनामपुडी (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

अखिल भारतीय काव्योत्सव

21 मार्च 2023, नई दिल्ली

उद्घाटन सत्र में उपस्थित साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सचिव

साहित्य अकादेमी द्वारा विश्व कविता दिवस के अवसर पर 'अखिल भारतीय काव्योत्सव' का आयोजन किया गया, जिसमें 24 भारतीय भाषाओं के कवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और उद्घाटन वक्तव्य वरिष्ठ हिंदी कवि प्रयाग शुक्ल ने दिया। स्वागत वक्तव्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव द्वारा प्रस्तुत किया गया और समापन वक्तव्य साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा द्वारा दिया गया।

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रयाग शुक्ल ने कहा कि आज अनुवाद द्वारा किसी भी देश की कविता विश्व के कोने-कोने तक पहुँच रही है और यही कविता की सत्ता एवं उसका सम्मान है। उन्होंने यह भी कहा कि पृथ्वी का समूचा और सच्चा रूप कविता के कारण ही हमारे सामने आ पा रहा है। जैसे ही अनुवाद किसी दूसरे देश और भाषा में पहुँचता है, वह वहाँ की स्थानीयता को ग्रहण कर लेता है और विश्व बंधुत्व का सार्वभौमिक संदेश हर तरफ प्रसारित होने लगता है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में माधव कौशिक ने कहा कि कवि समानांतर दुनिया रचता है, इसीलिए भारतीय संस्कृति में उसे 'प्रजापति' कहा गया है। कवि सच्चे मायने में विश्व नागरिक हैं और वे हर जगह आम आदमी के प्रवक्ता के रूप में उपस्थित हैं। संसार का सौंदर्य कविता द्वारा ही बचा है। उन्हीं के शब्दों ने संसार को रहने लायक बनाया हुआ है। अपने समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि एक समर्थ कवि रोज़मर्रा के दवाबों को अपनी कविता में दर्ज करता है, इसीलिए भारतीय भाषाओं में कविताओं का रूप बहुमुखी और समर्थ है। आज का दिन कविता की ज़मीन को विस्तारित करने के रूप में मनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि कविता मानवता का हिस्सा है और पूरे विश्व में शांति की वाहक है। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात हिंदी कवि केदारनाथ सिंह पर प्रकाशित विनिबंध (लेखक - हरिमोहन शर्मा) का लोकार्पण भी किया गया। इस सत्र में सेजल शाह (गुजराती), सुमन केसरी (हिंदी), शेफालिका वर्मा (मैथिली), सावित्री राजीवन (मलयाळम्), एम. प्रियॅब्रत सिंह (मणिपुरी), चंद्रभान ख़याल (उर्दू) ने अपनी-अपनी भाषाओं में कविताएँ प्रस्तुत कीं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता सागरी छाबड़ा ने की, जिसमें तूलिका चेतिया येन (असमिया), अलङ्बर मुसाहारी (बोडो), ग्वादलूप डायस (कोंकणी), कर्णा बिराहा (नेपाली), संतोष माया मोहन (राजस्थानी), शालिनी सागर (सिंधी), के. श्रीकांत (तेलुगु) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता दर्शन दर्शी ने की और अंशुमन कर (बाङ्ला), रानी श्रीवास्तव (हिंदी), रतना कालेगौड़ा (कन्नड), सुनीता रैणा पंडित (कश्मीरी), साहेबराव ठाणगे (मराठी), शुभश्री लेंका (ओड़िआ), बरजिंदर चौहान (पंजाबी), ऋषिराज पाठक (संस्कृत), सरोजनी बेसरा (संताली) और सबरीनाथन (तमिळ) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

संगोष्ठियाँ, परिसंवाद, लेखक सम्मिलन आदि

बाङ्ला

रामपद चौधरी पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

21 जनवरी 2023, कोलकाता

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. सुबोध सरकार

साहित्य अकादेमी ने 21 जनवरी 2023 को अपने क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सभागार में रामपद चौधरी पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात बाङ्ला कवि और विद्वान डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने श्रोताओं को बताया कि रामपद चौधरी हमेशा साहित्यिक के साथ-साथ अनुशासित और नियंत्रित जीवन व्यतीत करते थे। श्री हर्षा दत्ता ने अपने बीज-वक्तव्य में उनकी कार्यशैली के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. पबित्र सरकार ने रामपद चौधरी के लेखन के विषयों तथा उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन को किस प्रकार आकार दिया, के बारे में विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र के अंत में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम शैक्षणिक सत्र में, श्री तपन बंद्योपाध्याय ने रामपद चौधरी के साथ अपने व्यक्तिगत पत्राचार के बारे में बात की, जिसने उनके लेखन को बहुत प्रभावित किया। श्री अर्घ्य बंद्योपाध्याय ने रामपद चौधरी के जीवन के उन महत्त्वपूर्ण चरणों की विस्तार से चर्चा की जिन्होंने उनके साहित्यिक जीवन को प्रभावित किया। द्वितीय शैक्षणिक सत्र में, श्री सुमन सेनगुप्ता ने संपादक के रूप में रामपद चौधरी के योगदान पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। श्री शमिक घोष ने अपने व्याख्यान में रामपद चौधरी की कुछ महत्त्वपूर्ण कहानियों के आलोक में विद्यमान सहज ऐतिहासिकता को समझाने का प्रयास किया। श्री स्वप्नमय चक्रवर्ती ने रामपद चौधरी के लेखन पर चर्चा करते हुए कहा कि उनके लेखन ने बाङ्ला साहित्य पर समग्र रूप से अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है। अंतिम शैक्षणिक सत्र में, श्री आलोक कुमार चक्रवर्ती ने रामपद चौधरी के समयकाल का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया और बताया कि उनके लेखन ने किस प्रकार उन्हें प्रभावित किया। श्री राजा मित्र ने रामपद चौधरी के लेखन के पात्रों की क्षमता को सेल्युलाइड के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। संगोष्ठी का समापन प्रख्यात फ़िल्म निर्माता राजा मित्र द्वारा निर्देशित तथा साहित्य अकादेमी द्वारा निर्मित रामपद चौधरी के जीवन और कार्यों पर बने वृत्तचित्र के प्रदर्शन के साथ हुआ।

हिंदी

उदयराज सिंह जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम

04 नवंबर 2022, नई दिल्ली

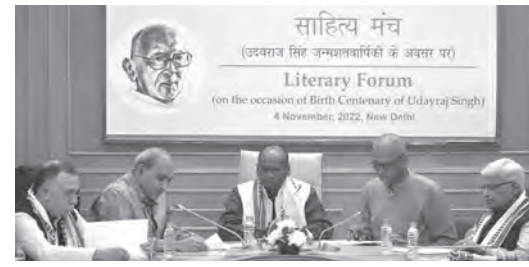

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी द्वारा उदयराज सिंह की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया

गया, जिसमें उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी वक्तागणों का स्वागत अंगवस्त्रम् प्रदान करके किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि उदयराज जी का व्यक्तित्व बहुआयामी था और उन्होंने सारा जीवन हिंदी भाषा और साहित्यकारों के उत्थान के लिए अर्पित किया।

उनके पुत्र प्रमथराज सिन्हा ने अपने पिता के व्यक्तिगत संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि उनका हिंदी साहित्यकारों के प्रति प्रेम अतुलनीय था और उनके साथ रहते हुए मेरी साहित्य एवं कलाओं के प्रति रुचियाँ जाग्रत हुईं। उन्होंने उनके शास्त्रीय संगीत की पसंदगी करने के बारे में भी बताया। सत्यकेतु सांकृत ने उदयराज सिंह के उपन्यासों पर बोलते हुए कहा कि उनके उपन्यासों में हम विश्वविद्यालय परिसरों की फुसफुसाहट को सुन सकते हैं। उपन्यास 'भूदानी सोनिया' का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस उपन्यास में 1942 के आंदोलन की झलक देख सकते हैं। इसमें भी छात्र आंदोलन का उल्लेख है, जो उनकी भविष्यदृष्टा सोच का परिचायक है। देवशंकर नवीन ने उनकी कहानियों पर बोलते हुए कहा कि उनकी कहानियाँ बिना किसी फार्मूले के लिखी गईं और कहानी ही बनी रहीं। उनके पात्र जहाँ मानवता को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं वहीं वे पात्र अँधेरों से हौसले भी पाते हैं। उन्होंने उनकी कहानियों 'भूख', 'पालनहार' का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि इन्हें पाठकों को अवश्य पढ़ना चाहिए। प्रेम जनमेजय ने उनके कथेतर साहित्य पर बोलते हुए कहा कि उनके संस्मरण यात्रा-वृत्त और रेखाचित्र कथेतर साहित्य के उत्कृष्ट नमूने हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे शिवनारायण ने उनकी साहित्यिक पत्रकारिता के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि उन्होंने 'नई धारा' पत्रिका का प्रकाशन साहित्यिक पत्रकारिता को स्थायी रूप प्रदान करने के लिए ही किया था, जो आज तक जारी है।

मैथिली

सुधांशु शेखर चौधरी पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

26-27 फ़रवरी 2022, मुज़फ़्फ़रपुर, बिहार

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. रामनरेश सिंह

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने स्नातकोत्तर मैथिली विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर तथा ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय, मुज़फ्फरपुर के सहयोग से 26-27 फ़रवरी 2022 को सुधांशु शेखर चौधरी पर जन्मशतवार्षिकी मैथिली संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के उप सचिव डॉ. एन. सुरेश बाबु ने विद्वानों, मीडियाकर्मियों तथा साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया। उन्होंने विशेष रूप से समाजशास्त्रीय संरचना में मातृभाषा की रक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने समाज के उत्थान के लिए वैज्ञानिक योगदान के माध्यम से समसामयिक बोध की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में मिथिला संस्कृति और मैथिली साहित्य को सुधांशु शेखर चौधरी द्वारा दिए गए योगदान की सराहना की। प्रख्यात मैथिली लेखक प्रोफ़ेसर इंद्रकांत झा ने अपने बीज-वक्तव्य में सुधांशु शेखर चौधरी के अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डाला। बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ़्फ़रपुर के प्रति-कुलपति प्रोफ़ेसर रवींद्र कुमार ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। ललित नारायण तिरहुत महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. संजय ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादेमी का इस संगोष्ठी को आयोजित करने के लिए विशेष रूप से आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद के सदस्य प्रोफ़ेसर प्रेम मोहन मिश्र ने की। श्री संतोष कुमार झा ने "सुधांशु शेखर चौधरी की संपादन कला वैशिष्ट्य", श्री बुचरू पासवान ने "सफल निबंधकार सुधांशु शेखर चौधरी", प्रो. पंकज पराशर ने "सुधांशु शेखर चौधरी का एकांकी नाटकों में योगदान" तथा श्री राजन कुमार सिंह ने "सुधांशु शेखर चौधरी का व्यक्तित्व और कृतित्व" विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान तथा साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रामनरेश सिंह ने की। साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता डॉ. मुरलीधर झा ने 'सुधांशु शेखर चौधरी के नाटकों में अभिव्यक्त यथार्थवादी दृष्टिकोण', श्री विजयेंद्र झा ने 'नाटककार सुधांशु शेखर चौधरी और भफाइत चाहक जिनगी' विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखिका प्रो. इंदिरा झा ने की। बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय की प्रो. इंदुधर झा ने "ई बतहा संसार के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण", श्री रत्नकृष्ण झा ने "सुधांशु शेखर चौधरी की आत्मकथा : मैं साहित्यकार और संपादक हूँ", श्री हीरेंद्र कुमार झा ने "सुधांशु शेखर चौधरी के नाटकों में यथार्थवादी दृष्टिकोण" तथा सुश्री कुमारी संध्या ने "सुधांशु शेखर चौधरी की कहानियों में आधुनिकता" विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान श्री लक्ष्मण झा 'सागर' ने की। श्री मंज़र सुलेमान ने "सुधांशु शेखर चौधरी की कविता में समकालीनता", श्री हितनाथ झा ने "मैथिली में शैली निर्धारण और सुधांशु शेखर चौधरी" तथा श्री उमेश मंडल ने "सुधांशु शेखर चौधरी के उपन्यासों में चित्रित समाज" विषयों पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने धन्यवाद दिया।

पं. गोविंद झा तथा डॉ. अमरनाथ झा पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

18-19 अगस्त 2022, दरभंगा

जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा एम.एल.एस.एम. कॉलेज, दरभंगा, बिहार, ने संयुक्त तत्त्वावधान में 18-19 अगस्त 2022 को कॉलेज सभागार में साहित्यकार पंडित गोविंद झा तथा प्रो. अमरनाथ झा पर द्विदिवसीय जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत मैथिली के पारंपरिक भगवती गीत 'जय जय भैरवी' भेल के साथ हुई। सर्वप्रथम साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. अमरनाथ झा को पारंपरिक गमछा और साहित्य अकादेमी की पुस्तकें भेंट कर सम्मानित किया। स्वास्थ्य कारणों से पंडित गोविंद झा कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके। दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति तथा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पंडित शशिनाथ झा ने अपने संस्मरण तथा अपने लोक साहित्यिक ज्ञान को साझा किया। प्रो. भीमनाथ झा ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा श्री रामानंद झा रमन ने पं. अमरनाथ झा पर एवं श्री सदन मिश्र ने पंडित गोविंद झा पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कॉलेज के प्राचार्य डॉ. शंभु कुमार यादव ने की। डॉ. उषा चौधरी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सत्र समाप्त हुआ।

प्रथम सत्र में डॉ. नरेंद्र नाथ झा, डॉ. रमेश झा तथा श्री अरविंद 'अक्कू' ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रो. बीना ठाकुर ने सत्र की अध्यक्षता की। द्वितीय सत्र में श्री हिरेंद्र कुमार झा, डॉ. भवनाथ झा भवन तथा डॉ. सुरेंद्र भारद्वाज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रोफ़ेसर प्रेम मोहन मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की।

द्विदिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र में डॉ. विश्वनाथ पासवान, डॉ. अजीत मिश्र तथा डॉ. ललित नारायण झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री कमल कांत झा ने सत्र की अध्यक्षता की। अंतिम और चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. जगदीश मिश्र ने की तथा डॉ. सत्येन्द्र कुमार झा, श्री अजीत आज़ाद तथा श्री सतीरामन झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी का समापन साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

जयकांत मिश्र पर जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी

26-27 नवंबर 2022, प्रयागराज

बीज वक्तव्य देते हुए प्रोफ़ेसर डॉ. भीमनाथ झा

साहित्य अकादेमी ने तीरभुक्ति विद्यापति मिथिला पूर्ति न्यास, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के सहयोग से 26-27 नवंबर 2022 को पं. बृज मोहन व्यास सभागार, प्रयागराज संग्रहालय परिसर, प्रयागराज में जयकांत मिश्र पर द्वि-दिवसीय जन्मशतवार्षिकी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने मैथिली और अंग्रेज़ी के प्रो. जयकांत मिश्र की विद्वता का उल्लेख किया और अपनी मातृभाषा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने प्रोफ़ेसर जयकांत मिश्र की रचनाओं पर अपना आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रख्यात मैथिली विद्वान प्रो. भीमनाथ झा ने प्रो. जयकांत मिश्र की साहित्यिक अभिव्यक्ति पर बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि प्रोफ़ेसर सुशील कुमार शर्मा ने प्रोफ़ेसर जयकांत मिश्र से जुड़ी विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री रामचरण त्रिपाठी ने प्रोफ़ेसर जयकांत मिश्र द्वारा निष्पादित कार्यों के प्रति उनके समर्पण भाव पर प्रकाश डाला। डॉ. योगानंद झा ने साहित्य अकादेमी को इस प्रकार की ऐतिहासिक संगोष्ठी के आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया। श्री अखिलेश झा ने सत्र का संचालन किया।

प्रो. वीरेंद्र झा ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री मुरारी कुमार मिश्र, श्री अखिलेश झा तथा प्रो. वंदना झा ने प्रो. जयकांत मिश्र के व्यक्तित्व और साहित्यिक योगदान पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में डॉ. रवीन्द्र नारायण मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की तथा "मातृभाषा में शिक्षण और प्रो. जयकांत मिश्र" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री रतन कुमार झा, सुश्री रेवती मिश्रा और डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन की शुरुआत डॉ. एन. सुरेश बाबू की अध्यक्षता में तृतीय सत्र से हुई, जिसमें प्रो. योगानंद झा, डॉ. दयाकांत झा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. धनाकर ठाकुर ने की तथा "जयकांत मिश्र का मिथिला राज्य से संबंध और अंतरराष्ट्रीय मिथिला सम्मेलन" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री संजीव कुमार मिश्र, प्रोफ़ेसर कमलेश झा तथा डॉ. दिलीप कुमार झा ने मैथिली भाषा और साहित्य के विशेष संदर्भ में भारतीय साहित्य में प्रोफ़ेसर जयकांत मिश्र के योगदान पर आलोचनात्मक और सूक्ष्म स्तर के विश्लेषण के साथ अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अंत में, साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने प्रतिभागियों और सहयोगियों को धन्यवाद दिया तथा मिथिला समाज को प्रो. जयकांत मिश्र से प्रेरित

होकर नवीन विचारों के साथ मैथिली भाषा को भारत के कोने-कोने तक फैलाने के लिए आगे आने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रो. जयकांत मिश्र ने मैथिली साहित्य के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, तथा उन्होंने भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में मैथिली को शामिल करवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मणिपुर

"एम. के. बिनोदिनी देवी का जीवन और कार्य" पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

18 मई 2022, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी ने सांस्कृतिक मंच के सहयोग से 18 मई 2022 को जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादमी, इंफ़ाल में येंगखोम रोमा देवी, एन. किरणकुमार सिंह, एच. बिहारी सिंह, राजेन तोइजाम्बा, के. शांतिबाला देवी, एनजी एकाशिनी देवी, मखोनमणि मोंगसाबा, एन. बिद्यासागर सिंघा, के.एन. चंद, श्री अचोऊ शर्मा, शरतचंद्र लोंगज़ोम्बा, एन. अहानजाओ मैतेई, टी. कुंजेशोर सिंह तथा एल. आनंद सिंह जैसे प्रसिद्ध मणिपुरी विद्वानों के साथ "एम. के. बिनोदिनी देवी का जीवन और कार्य" पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एम.के. बिनोदिनी देवी पर उनके बेटे एल. सोमी रॉय द्वारा लिखित विनिबंध का भी लोकार्पण किया गया। साहित्य अकादेमी की मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक एन. किरणकुमार सिंह ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने एम.के. बिनोदिनी देवी के जीवन और कार्यों पर संक्षेप में चर्चा की। श्री पुखरामबम मिलास सिंह कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि सुश्री येंगखोम रोमा देवी थीं। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर हुइरेम बिहारी सिंह ने की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर राजेन तोइजाम्बा ने की। इस सत्र में डॉ. के. शांतिबाला देवी ने बिनोदिनी देवी के उपन्यास *बोर साहेद ओंगबी सनातोम्बी* पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। नगंगोम एकाशिनी देवी ने कथाकार के रूप में एम.के. बिनोदिनी देवी पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री मखोनमनी मोंगसाबा ने एम.के. बिनोदिनी देवी और मणिपुरी सिनेमा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. एन. बिद्यासागर ने एम.के. बिनोदिनी देवी द्वारा किए गए अनुवादों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. नयनचंद सिंह ने की। सत्र में, श्री संगलकपम अचोऊ शर्मा ने बिनोदिनी देवी के गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री शरतचंद्र लोंगज़ोम्बा ने निबंधकार के रूप में बिनोदिनी देवी पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री नाओरेम अहनजाओ सिंह ने रेडियो नाटककार के रूप में बिनोदिनी देवी पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री तेनसुबम कुंजेश्वर सिंह ने एम.के. बिनोदिनी देवी के यात्रा-वृत्तांतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री लोंगजाम आनंद सिंह ने बिनोदिनी देवी के कार्यों की भाषा और उच्चारण पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। द कल्चरल फोरम, मणिपुर के महासचिव श्री क्षेत्री राजेन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

ओड़िआ

कमल लोचन मोहंती पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

15 अप्रैल 2022, भुवनेश्वर

व्याख्यान देते हुए कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि सुश्री अरुणा मोहंती

साहित्य अकादेमी ने न्यायमूर्ति अरिजीत पसायत, अनंत महापात्र, अरुणा मोहंती, समर मुदाली, बिजयानंद सिंह, प्रदीप कुमार पांडा, बिरंची कुमार साहू, संदीप महापात्र, मन्मथ सतपथी, सरस्वती देवी, ज्ञानरंजन मोहंती ज्ञानरंजन

मोहंती, सुभाष महापात्र तथा प्रबोध रथ जैसे प्रसिद्ध ओड़िआ विद्वानों के साथ 15 अप्रैल 2022 को भुवनेश्वर में कमल लोचन मोहंती पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद का उद्घाटन भारत के सर्वोच्च न्यायालय, नई दिल्ली के माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति अरिजीत पसायत (सेवानिवृत्त) द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध ओड़िआ नाटककार, अनंत महापात्र तथा कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि पद्मश्री अरुणा मोहंती, अध्यक्ष, ओडिशा संगीत नाटक अकादमी, भुवनेश्वर, मंच पर आसीन अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ उपस्थित थे। प्रसिद्ध नाटक समीक्षक प्रो. समारा मुदाली ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी साहित्यिक रचनाओं के साथ-साथ कमल लोचन मोहंती के संक्षिप्त जीवन इतिहास पर भी प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परमर्श मंडल के सदस्य प्रो. बिजय कुमार सत्पथी ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

प्रथम सत्र में प्रदीप्त कुमार पांडा, बिरंची कुमार साहू तथा संदीप महापात्र ने आलेख प्रस्तुत किए। इन सभी ने कहा कि के.एल. मोहंती का साहित्य उनके जीवन और उनके पाठकों या दर्शकों से अविभाज्य थे। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नाटककार मन्मथ सत्पथी ने की तथा डॉ. बिष्णुप्रिया ओटा ने सत्र के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता ओडिशा संगीत नाटक अकादमी के सचिव प्रबोध रथ ने की। यह सत्र कमल लोचन मोहंती और उनके साहित्यिक व्यक्तित्व को समर्पित था। ज्ञानरंजन मोहंती, सरस्वती देवी तथा सुभाष महापात्र ने सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा अपने नाटकीय करियर के दौरान कमल लोचन के साहित्यिक व्यक्तित्व से अपने व्यक्तिगत जुड़ावों का भी वर्णन किया। समापन वक्तव्य डॉ. बिजय कुमार सत्पथी ने प्रस्तुत किया, उन्होंने ओडिया नाटकीय संस्कृति और इसके साहित्यिक क्षेत्र के पुनरुद्धार के बारे में व्यावहारिक और विचारशील टिप्पणियों के साथ दिन भर आयोजित सत्रों का संक्षेप में समाहार प्रस्तुत किया।

पंजाबी

भाई वीर सिंह की 150वीं जन्म शतवार्षिकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

1-2 मार्च 2023, चंडीगढ़

भाई वीर सिंह जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने भाई वीर सिंह चेयर, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़ के सहयोग से 1-2 मार्च 2023 को डॉ. मुल्क राज आनंद सभागार (अंग्रेज़ी सभागार), पंजाब विश्वविध्यालय, चंडीगढ़ में भाई वीर सिंह की 150वीं जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र के दौरान, प्रख्यात पंजाबी विद्वान तथा कार्यक्रम समन्वयक हरविंदर सिंह ने साहित्य अकादेमी की ओर से अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पहला काम तो यह होना चाहिए कि भाई वीर सिंह के नाम से प्रकाशित उस साहित्य की पहचान करना जिसे उन्होंने नहीं लिखा है। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम हमारी विरासत और परंपराओं के बारे में हमारी समझ का आत्मनिरीक्षण करने का अवसर प्रदान करते हैं। पंजाबी विभाग के अध्यक्ष सरबजीत सिंह ने भी विश्वविद्यालय की ओर से प्रतिभागियों का स्वागत किया और अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संगोष्ठी के उद्देश्यों और लक्ष्यों पर विस्तार से

चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमने भाई वीर सिंह के पद्यों को केवल आध्यात्मिक काव्य माना है, लेकिन अब हमें उनकी व्याख्या एक अलग दृष्टिकोण से करनी चाहिए। उमा सेठी, चेयर प्रोफ़ेसर, भाई वीर सिंह चेयर ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। सत्र के दौरान पैनल ने केंद्री श्री गुरु सिंह सभा द्वारा प्रकाशित पत्रिका का जनवरी 2023 (भाई वीर सिंह) विशेषांक भी जारी किया। सुखदेव सिंह सिरसा ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने भाई वीर सिंह की कविता के संदर्भ में सामाजिक, सांस्कृतिक, उपनिवेशवाद विरोधी पहलुओं पर चर्चा की। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि भाई साहब ने अपने काल की समसामयिक प्रवृत्तियों के साथ एक समानांतर संवाद कायम किया। उद्घाटन वक्तव्य देते हुए वनीता ने कहा कि भाई वीर सिंह कविता के आध्यात्मिक विषयों को भौतिक दुनिया में ले जाते हैं। योगराज ने धन्यवाद प्रस्ताव देकर सत्र का समापन किया। प्रथम आलेख वक्ता धर्म सिंह ने अपने आलेख में कहा कि भाई वीर सिंह के साहित्य को पूरी तरह से समझने के लिए, किसी को उनकी समकालीन दुनिया की जाँच करनी चाहिए। सुरजीत सिंह ने कहा कि द्विआधारी विरोधों की हमारी समझ ने हमें उन्हें वास्तविक अर्थों में उलझाने से रोक दिया है। हम धर्म और राजनीति की रैखिक परिभाषाओं में फँसते जा रहे हैं। योगराज ने इस बात पर बल दिया कि आध्यात्मिकता कविता का एक तत्त्व है और आध्यात्मिक कविता आधुनिक भी हो सकती है, यही कारण है कि कवि समकालीन समय में भी इस विषय पर लिखते रहते हैं। पाली भूपिंदर सिंह के अनुसार आई.सी. नंदा के एकांकी नाटक *दुल्हन* (1913) से शुरू होने वाले पंजाबी नाटकों के इतिहास में भाई वीर सिंह के नाटकों की उपेक्षा की जाती रही है। फिर भी, यह यात्रा वास्तव में भाई वीर सिंह की *ज़ैना दा विरलाप* और *राजा लखदाता सिंह* से शुरू होती है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस शैली में भाई वीर सिंह अंग्रेज़ों से नहीं बल्कि संस्कृत नाट्य शैली से प्रभावित हैं। ओ.पी. वशिष्ठ ने कोशकार के रूप में भाई वीर सिंह के योगदान की ओर ध्यान आकृष्ट किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, हरभजन सिंह भाटिया ने प्रस्तुत आलेखों का समाहार प्रस्तुत किया और कहा कि प्रस्तुत किए गए आलेख वस्तुनिष्ठ और ईमानदारी से लिखे गए थे।

दूसरे दिन की शुरुआत वृत्तचित्र "मेरे सैयां जीयो" के प्रदर्शन के साथ हुई, जो भाई वीर सिंह के जीवन और कार्यों पर आधारित है। इस सत्र में फ़िल्म निर्देशक राजीव कुमार ने अपने दृष्टिकोण और निर्माण के पीछे की परिकल्पना साझा की। उन्होंने कहा कि भाई वीर सिंह की प्रकृति के प्रति सराहना वर्तमान पर्यावरणीय संकट के परिप्रेक्ष्य में अधिक प्रासंगिक है। इसके पश्चात् द्वितीय सत्र में गुरमुख सिंह ने तर्क दिया कि भाई वीर सिंह के उपन्यास सिख धर्म के स्थान पर सिख पहचान को दर्शाते हैं। बलजीत सिंह ने कहा कि भाई साहब द्वारा लिखित चमत्कारों को सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से पढ़ने से यह स्पष्ट होता है कि गंभीर समसामयिक परिस्थितियों में समुदाय अतीत या इतिहास में शरण लेते हैं। भीमिंदर सिंह ने कहा कि भाई वीर सिंह ने अपने लेखन, भाषा और परंपराओं के माध्यम से ब्रिटिश उपनिवेश का विरोध किया। सुवर्ण सिंह विर्क ने सुझाव दिया कि हमें भाई साहब के गद्य को उनके समकालीनों की तुलना में पढ़कर देखना चाहिए। चर्चा सत्र के दौरान, हरजिंदर सिंह ने कहा कि यदि कोई किसी भाषा या सामुदायिक अल्पसंख्यक क्षेत्र में रहता है, तो वह धार्मिक या भाषाई आंदोलन को अलग दृष्टिकोण से देखता है। इस सत्र के मुख्य अतिथि गुरपाल संधू थे। उन्होंने श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर देकर सत्र का समापन किया। रवैल सिंह ने इस सत्र की अध्यक्षता की और विद्वानों द्वारा प्रस्तुत आलेखों का समाहार प्रस्तुत किया। अंत में, सरबजीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सिंधी

कीरत बाबाणी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

03 जून 2022, मुंबई

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री मोहन गेहाणी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 03 जून 2022 को कार्यालय सभागार में "कीरत बाबाणी जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में अतिथि वक्ताओं ने सिंधी के सुप्रसिद्ध लेखक कीरत बाबाणी के सिंधी भाषा साहित्य और सिंधी भाषा मान्यता आंदोलन योगदान, सृजन एवं कार्यों पर विस्तार से चर्चा की और अपने विचार व्यक्त किए। परिसवांद के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने स्वागत वक्तव्य दिया।

परिसंवाद के उद्घाटन वक्तव्य में सिंधी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार मोहन गेहाणी ने कहा कि कीरत बाबाणी का सिंधी भाषा साहित्य के साथ-साथ भाषा की मान्यता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने कहा कि कीरत बाबाणी न केवल भाषा बल्कि सिंधी संस्कृति के प्रचार - प्रसार में भी जीवनभर जुटे रहे। परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने दिया।

परिसंवाद के चर्चा सत्र में सिंधी के साहित्यकार राम जवाहरानी ने "कीरत बाबाणी और सिंधी भाषा आंदोलन", शोभा माल्ही चंदनाणी ने "कीरत बाबाणी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व", कैलाश शादाब ने "कीरत बाबाणी का कथात्मक साहित्य", संध्या कुंदनाणी ने "कीरत बाबाणी की आत्मकथा" विषय पर विस्तार से अपने विचार व्यक्त किए। चर्चा सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार मोहन गेहाणी ने की।

इस अवसर पर अरुण बाबाणी ने कीरत बाबाणी से जुड़े संस्मरण भी श्रोताओं से साझा किए। परिसंवाद में बड़ी संख्या में सिंधी साहित्य–संस्कृति प्रेमी उपस्थित थे।

नारायण श्याम जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

22 जुलाई 2022, भोपाल

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री अर्जुन चावला

साहित्य अकादेमी और सिंधु संस्था, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में संस्कार स्कूल, लक्ष्मण नगर, बैरागढ़, भोपाल के स्थानीय सभागार में "नारायण श्याम जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद" आयोजित किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र के आरंभ में सिंधी परामर्श मंडल के सदस्य नारी लच्छानी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने के बीज वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव ताराचंदाणी ने विख्यात सिंधी कवि-शायर नारायण श्याम के जीवन एवं सृजन के विविध पक्षों का उल्लेख करते हुए भाषा, संस्कृति एवं सिनेमा में उनके योगदान को विस्तार से रेखांकित किया। सत्र की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सिंधी साहित्यकार अर्जुन चावला ने की।

परिसंवाद के चर्चा सत्र में साहित्यकार नादिया मसंद "नारायण श्याम : व्यक्तित्व : कृतित्व", विनोद असुदानी ने "कवि नारायण श्याम" और खिमन मुलाणी ने

"ग़ज़लकार : नारायण श्याम" विषय पर अपने विचार साझा किए। चर्चा सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित सिंधी साहित्यकार भगवान बाबाणी ने की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में सिंधी साहित्य-संस्कृति प्रेमी उपस्थित थे।

तमिऴ

अकिलन पर द्वि-दिवसीय शतवार्षिकी संगोष्ठी

3-4 नवंबर 2022, चेन्नै

स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै ने तमिऴ विभाग, लोयोला कॉलेज, चेन्नै के सहयोग से 3-4 नवंबर 2022 को कॉलेज परिसर में 'अकिलन' पर द्वि-दिवसीय शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन किया। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय वक्तव्य प्रस्तुत किया। उनके लिए, अकिलन के 'पेन' और 'स्नेगिधी' उपन्यास साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए एक प्रेरणा थे। उन्होंने कहा, वह अपनी यथार्थवादी और सरल लेखन शैली के उल्लेखनीय लेखक थे। तमिऴ लेखिका श्रीमती जी. तिलागावती ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने उल्लेख किया कि उन्होंने ऐतिहासिक उपन्यासों से लेकर नाटकों, यात्रा लेखन, कहानियाँ तथा बाल पुस्तकें तक सब कुछ लिखा है।

यदि 'वेंगैयिन मेनधन' कृति चोल साम्राज्य पर ऐतिहासिक दृष्टि डालती है, तो 'एज़ुथुम वाज़कैयुम' में वह अपने व्यक्तिगत अनुभवों पर चर्चा करने के लिए एक पूरा अध्याय लिख डालते हैं। उन्होंने अपने रुख से कभी समझौता नहीं किया और यही उनकी बहुत बड़ी ताक़त थी"। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् की सदस्य डॉ. भारतीबालन ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। विचारों से गाँधीवादी, उनके कार्यों में बच्चों की भावनाएँ झलकती हैं। अपने यथार्थवादी लेखन के कारण वह कई पाठकों के सबसे पसंदीदा रहे हैं। कॉलेज के सचिव श्री बी. जयराज, एस.जे. ने विशेष भाषण प्रस्तुत किया और अपने कॉलेज में संगोष्ठी आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। लेखक तथा अकिलन के पुत्र श्री अकिलन कण्णन ने पालन-पोषण करने वाले पिता और प्यारे पारिवारिक व्यक्ति की अपनी स्मृतियाँ साझा कीं। अकिलन ने कभी भी किसी भी चीज़ के लिए अपने लेखन से समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा, एक गाँधीवादी लेखक के रूप में उनकी समाज के उत्थान में गहरी रुचि थी। तमिऴ विभाग के प्रमुख डॉ. एस. अमलराज ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र में श्री के.एस. राधाकृष्णन ने अध्यक्षता की और 'अकिलन द्वारा दिखाए गए समाज' पर आलेख प्रस्तुत किया। वे समाज सुधार के गाँधीवादी विचारक थे। श्रीमती उमा मोहन ने 'अकिलन कृतियों में महिलाएँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। 'स्नेगिधि' और 'पोनमलार' उपन्यासों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अकिलन ने अपने लेखन में अतीत की महिलाओं की स्थिति को चित्रित किया और अपने पाठकों को तमिऴ परंपरा और समकालीनता से परिचित कराया, जिसने व्यापक पाठकों और प्रशंसा को आकर्षित किया। द्वितीय सत्र में, श्री किज़ाम्बुर शंकर सुब्रह्मण्यम ने 'अकिलन के 'एज़ुथुम वाज़क्कैयुम' पर आलेख प्रस्तुत किया। जीवन की खुशियाँ और दुख अकिलन के लेखन के माध्यम से आकार लेते हैं और स्वयं को व्यक्त करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि किस प्रकार अकिलन के लेखन ने

कई लोगों के जीवन को आकार दिया। इसके बाद, डॉ. बी. रविकुमार ने 'अकिलन के निबंध' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अकिलन के दो निबंधों, 'बक्तवत्सलम एनरा ओरु मनिधान' और 'गाँधी' पर चर्चा की। डॉ. जे.आर. लक्ष्मी ने 'अकिलन की कहानियाँ' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ परिवार व्यवस्था, समाज, राजनीति, नारीवाद, जाति व्यवस्था, शिक्षा और जीवन बदलने वाली वास्तविकताओं पर आधारित थीं। उन्होंने उनकी पहली और आखिरी कहानियों क्रमश: 'अवन एझाई' और 'कानावन मनाइवी' पर चर्चा की। श्रीमती थेंडराल शिवकुमार ने 'अकिलन के यात्रा वृत्तांत' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत में रूस और मलेशिया की अपनी यात्रा के अनुभवों का वर्णन किया है। संगोष्ठी के अगले दिन, तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. कामरासु ने की और 'पालमारक कैटिनाइल' पर आलेख प्रस्तुत किया। यह एक सामाजिक उपन्यास है और उपन्यास का कथानक मलेशियाई रबर एस्टेट में काम करने वाले तमिळ प्रवासियों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों के बारे में है। यह उपन्यास श्रमिकों द्वारा अपनी आजीविका के लिए झेले जाने वाले दर्द, पीड़ा, उथल-पुथल को गहराई से उजागर करता है। श्रीमती अरुलमोझी ने 'चिथिरा पावई' पर आलेख प्रस्तुत किया। अकिलन के बेहतरीन उपन्यासों में से एक, यह पुराने समाज को दर्शाता है और मानव व्यवहार को समझने और पीड़ा और भावनात्मक विस्फोट को प्रतिबिंबित करने का प्रयास करता है। श्री तमीज़मगन ने 'वेंगैयिन मेनधन' पर आलेख प्रस्तुत किया। जिस उपन्यास ने उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिलाया, वह राजेंद्र चोल के जीवन और उपलब्धियों पर आधारित है। श्री एम.एस. पेरुमल ने 'वानामा? भूमिया?' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनका अंतिम उपन्यास होने के नाते, यह स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल तीन अलग-अलग व्यक्तियों के जीवन का वर्णन करता है। डॉ. वी. सहायराज ने 'पुधु वेल्लम' पर आलेख प्रस्तुत किया। अकिलन का यह उपन्यास नायक 'मुरुगैयन' के इर्द-गिर्द घूमता है जो गाँधीवादी सिद्धांतों पर आधारित था। लेखक ने इस उपन्यास को आज़ादी से पहले लिखना शुरू किया था और आज़ादी के बाद समाप्त किया। उन्होंने कहा, उपन्यास शहरीकरण का वर्णन करता है और अकिलन के सरल लेखन कौशल को प्रदर्शित करता है। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री कलाप्रिया ने की और 'कायलविज़ी' पर आलेख प्रस्तुत किया। अकिलन के लेखन को अक्सर स्क्रीन के अनुरूप माना जाता था। यह पांड्य साम्राज्य की पृष्ठभूमि पर आधारित मनोरंजक गाथा है जिसे बाद में अकिलन की स्वीकृति के पश्चात् कुछ बदलाव करने के बाद फ़िल्म बनाई गई थी। श्री पज़ानी भारती ने 'पावई विलक्कु' पर आलेख प्रस्तुत किया। बृंदा सारथी ने 'वाझवु एंगे?' पर आलेख प्रस्तुत किया, इस कहानी पर 'कुलमगल राधाई' नामक फ़िल्म बनाई गई थी। उन्होंने कहा, विभिन्न शैलियों में अकिलन के विशाल कार्य ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री मालन ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। अकिलन ने अपने उपन्यासों, कहानियों और अन्य लेखों के लिए कई पुरस्कार अर्जित किए। उन्होंने अपने पीछे ऐसी विरासत छोड़ी जिसने आज भी उनकी प्रासंगिकता को सुनिश्चित किया है। उन्होंने तमिळ साहित्य को वैश्विक पाठकों के लिए सुलभ बनाया। श्री मालन ने कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. थॉमस अमिरथम एस.जे. ने कहा कि इस संगोष्ठी की अमिट छाप छात्रों के मस्तिष्क पर सदैव बनी रहेगी। उन्होंने कहा, अकिलन जैसा अग्रणी पिता तुल्य युवा पीढ़ी को अपने क्षितिज और कौशल का विस्तार करने के लिए प्रेरित करेगा। तमिळ लेखक श्री सूबा. वीरपांडियन ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। अकिलन के जीवन और कार्यों पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि उन्होंने कई ज़िंदगियों पर प्रकाश डाला है। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में छात्र, संकाय सदस्य और कई साहित्यिक विभूतियों ने भाग लिया।

तेलुगु

रा रा पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

24 नवंबर 2022, कडपा

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए प्रो. राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी

श्री राचामालु रामचंद्र रेड्डी (रा रा) की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु ने सी.पी. ब्राउन रिसर्च सेंटर फ़ॉर लैंग्वेजेज़ के सहयोग से 24 नवंबर 2022 को कडप्पा में योगी वेमना विश्वविद्यालय में एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में डॉ. भूतापुरी गोपाल कृष्ण शास्त्री ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय दिया। सी.पी. ब्राउन रिसर्च सेंटर फ़ॉर लैंग्वेजेज रेफरिंग टू रा रा के संगोष्ठी निदेशक एवं प्रभारी डॉ. मुला मल्लिकार्जुन रेड्डी ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि वह अपने छात्र जीवन में मार्क्सवाद की ओर आकर्षित थे और उन्होंने साहित्यिक, सामाजिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक विज्ञान का गहराई से अध्ययन किया था। उनकी संवेदनशील आलोचना, पत्रकारीय लेखन, अनुवाद, कथा साहित्य और बच्चों के साहित्य के साथ तेलुगु साहित्य में उनका योगदान अविस्मरणीय है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रो. राचापलेम चन्द्रशेखर रेड्डी ने रा रा के कार्यों की मुख्य विशेषताओं पर विस्तार से चर्चा की और उन्हें पीढ़ीयों में एक बार आने वाले कवि के रूप में वर्णित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि तथा योगी वेमना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुनगाला सूर्य कलावती ने कहा कि राचामालु रामचन्द्र रेड्डी, जो रा रा के नाम से लोकप्रिय हैं, का बहुमुखी व्यक्तित्व था तथा उन्होंने अपनी आलोचना, अनुवाद और पत्रकारिता के लेखन के माध्यम से तेलुगु साहित्यिक आलोचना में एक नई प्रवृत्ति का चलन सृजित किया। अपने संबोधन में, कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रोफ़ेसर केतु विश्वनाथ रेड्डी ने कहा कि आलोचक के पास बुद्धि और संवेदनशील हृदय होना चाहिए। रा रा के अनुसार, साहित्य हृदय का व्यवसाय है, जबकि आलोचना मस्तिष्क का व्यवसाय है, जिससे बुद्धि, विचार और ज्ञान प्राप्त होता है। रा रा गुरजादा कृत *कन्याशुल्कम* का उल्लेख करते थे और उनका मानना था कि महिलाओं को पुरुषों के समान स्वतंत्रता होनी चाहिए। प्रथम सत्र में, प्रो. राचापलेम चंद्रशेखर रेड्डी ने 'रा रा एक मार्क्सवादी साहित्यिक आलोचक के रूप में' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा आर. राजेश्वरम्मा ने 'रा रा के पत्र और प्रस्तावना' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में, प्रोफ़ेसर किन्नरा श्रीदेवी ने 'रा रा एक कहानीकार के रूप में' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा तुम्मलुरु सुरेश बाबू ने 'रा रा रा एक पत्रकार के रूप में' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। तृतीय सत्र में, श्री मंडलापार्थी किशोर ने 'एक अनुवादक के रूप में रा रा तथा उनके अनुवाद का अध्ययन' पर आलेख प्रस्तुत किया और चिंताकुंटा शिव रेड्डी ने 'रा रा के जीवन और व्यक्तित्व' पर आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर दुर्भका विजया राघव प्रसाद ने की तथा समापन वक्तव्य आकाशवाणी के सेवानिवृत्त निदेशक डॉ. तक्कोलू माचिरेड्डी ने प्रस्तुत किया। डॉ. मुला मल्लिकार्जुन रेड्डी ने कार्यक्रम का समाहार प्रस्तुत किया तथा डॉ. भूतापुरी गोपाल कृष्ण शास्त्री ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कुंदुरति अंजनेयुलु पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

11 दिसंबर 2022, हैदराबाद

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. के. शिवा रेड्डी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने कविसंध्या सांस्कृतिक संस्था, यनम के सहयोग से 11 दिसंबर 2022

को हैदराबाद में कुंदुरति अंजनेयुलु की जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. शिवा रेड्डी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत भी किया। अपने व्याख्यान में, उन्होंने न केवल कविता में बल्कि विभिन्न शैलियों में कुंदुर्ति अंजनेयुलु द्वारा किए गए विभिन्न प्रयोगों के बारे में बात की। आंध्र ज्योति के संपादक श्री के. श्रीनिवास, जो सत्र के मुख्य अतिथि थे, ने कुंदुरती अंजनेयुलु की कविता की सादगी और पठनीयता के बारे में चर्चा की। प्रख्यात कवि और तेलंगाना साहित्य अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष, श्री नंदिनी सिद्ध रेड्डी ने अपने बीज-वक्तव्य में उल्लेख किया कि कुंदुरती तेलुगु मुक्त छंद की पहचान हैं और उनके द्वारा शुरू किया गया मुक्त छंद पाँच दशकों से अधिक समय तक चला। कवि संध्या के अध्यक्ष श्री के. संजीव राव (सिखामणि) ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि साहित्यिक हठधर्मिता और धारणाओं के आधार पर कई क्रांतियाँ हुईं, किंतु कुंदुरती अद्भुत तरीक़े से मुक्त छंद को अपनी प्रतिबद्धता और दृढ़ संकल्प के साथ क्रांतिकारी स्तर पर ले गए। कुंदुरती अंजनेयुलु की पौत्री सुश्री कंदुरथी कविता ने कहा कि उनके दादाजी ने हम सभी के अनुसरण और अनुकरण के लिए समृद्ध विरासत छोड़ी है। सत्र में कुंदुरति अंजनेयुलु की कविता के दो खंडों का लोकार्पण किया गया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सीला सुभद्रा देवी ने की। उन्होंने "कुंदुरति काव्य शैली" पर अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। दो प्रख्यात विद्वानों, आर. सीता राम और नलेश्वरम शंकरम ने "कुंदुरति प्रयोगालु" और "कुंदुरति कथा काव्यालु" विषयों पर क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता सुधामा ने की। उन्होंने "कुंदुरति मुक्त छंद मोर्चा" पर अपना आलेख भी प्रस्तुत किया। तीन प्रख्यात विद्वानों, याकूब, एन. वेणुगोपाल तथा पुप्पला श्रीराम ने "कुंदुरति साहित्य व्यासालु", "कुंदुरति अभ्युदय द्रिकपथम" और "कुंदुरति वचन कविता" विषयों पर क्रमश: अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री सिखमणि ने की। सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात कवि श्री निखिलेश्वर थे तथा प्रख्यात लेखक श्री विहारी (जे. एस. मूर्ति) ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। कवि संध्या के संयोजक चल्ला राम फणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाङ्ला

बाङ्ला साहित्य और भारत का स्वतंत्रता संग्राम विषय पर संगोष्ठी

15-16 अक्तूबर 2022, कोलकाता

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी ने 15-16 अक्तूबर 2022 को अपने क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के सभागार में "बाङ्ला साहित्य और भारत का स्वतंत्रता संग्राम" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर रंजन चक्रवर्ती ने किया। उन्होंने प्रारंभिक भारतीय राष्ट्रवाद के भावनात्मक पूर्व-इतिहास और बाङ्ला साहित्य पर इसके प्रभाव पर विस्तार से चर्चा की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रमुख बाङ्ला लेखकों का उल्लेख किया जिनके लेखन ने स्वतंत्रता सेनानियों को प्रभावित किया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर कृत "घरे बाइरे" और काजी नज़रुल इस्लाम कृत "बिद्रोही" में दर्शाए गए राष्ट्रवाद की अवधारणा के विभिन्न आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए। श्री

समिक बंद्योपाध्याय ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान संस्कृतियों के टकरावों से उत्पन्न संवेदनशीलता की प्रकृति पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय ने युवाओं पर उग्र राष्ट्रवादी लेखन के प्रभाव पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र के अंत में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र का विषय था - "बाङ्ला साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम : प्रस्तुति और उसका स्वागत"। सत्र में, प्रोफ़ेसर अचिंत्य बिस्वास ने "स्वतंत्रता संग्राम : आत्मकथा, जीवनी, स्मृतियाँ, संस्मरण"; प्रोफ़ेसर सुमिता चक्रवर्ती ने "समकालीन भारतीय समाज : धर्म, महिला और संघर्ष"; तथा डॉ. पायल बसु ने "बाङ्ला साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम : तथ्य और कल्पना" विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था - "1947 : समकालीन बाङ्ला लेखक, विचारक और स्वतंत्रता सेनानी : रिश्तों का मानचित्रण"। सत्र में, प्रोफ़ेसर बारीदबरन घोष ने "समकालीन बाङ्ला लेखकों की स्वतंत्रता संग्राम में प्रत्यक्ष भागीदारी"; प्रोफ़ेसर गौतम घोषाल ने "समकालीन राष्ट्रवादी बाङ्ला साहित्य : सुभाषचंद्र, अरबिंदो और विवेकानंद" तथा प्रोफ़ेसर अभ्र घोष ने "समकालीन राष्ट्रवादी बाङ्ला साहित्य : रवींद्रनाथ और गाँधी" विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र का विषय था - "बाङ्ला साहित्य में प्रतिबिंबित स्वतंत्रता संग्राम : 1947 से पूर्व"। सत्र में, प्रोफ़ेसर अनुराधा रॉय ने उस दौर की कविताओं और गीतों पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर उर्मी रॉय चौधरी ने उस समय के उपन्यासों, कहानियों और निबंधों पर बात की। श्री देवेश चट्टोपाध्याय ने उस दौर की स्थिति की चर्चा की। सत्र के अंत में, "इंडिया इंडिपेंडेंट" नामक वृत्तचित्र प्रदर्शित की गई, जो फ़िल्म प्रभाग, भारत सरकार द्वारा निर्मित है। दूसरे दिन, प्रथम सत्र का विषय था - "बाङ्ला साहित्य में प्रतिबिंबित स्वतंत्रता संग्राम : 1947 के बाद"। सत्र में, श्री अशोक मुखोपाध्याय ने उस दौर की कविताओं और गीतों पर आधारित अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री चंदन सेन ने उस दौर की स्थिति पर चर्चा की तथा विभिन्न मुद्दों जैसे औपनिवेशिक अधीनता और बंगाल का पुनर्जागरण, बाङ्ला नाटकों पर स्वतंत्रता का प्रभाव, इप्टा आंदोलन और इसके पतन के आधिपत्यवादी कारणों, नाटकों में परिलक्षित होने वाले विभिन्न प्रमुख मुद्दों तथा पेशेवर रंगमंच और समूह रंगमंच पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रोफ़ेसर गोपा दत्ता भौमिक ने मुख्य रूप से उस काल की महिला उपन्यासकारों पर अपने विचार व्यक्त किए। अगले सत्र का शीर्षक था - "साहित्य : हथियार या दर्पण"। इस सत्र में, माननीय पूर्व न्यायाधीश श्री अशोक कुमार गांगुली ने "बाङ्ला साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम : अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सेंसरशिप : प्रतिबंध की संस्कृति" विषय पर बात की। प्रोफ़ेसर इप्शिता चंदा ने "स्वतंत्रता की ओर जन विद्रोह के उपकरण के रूप में साहित्य : बाङ्ला साहित्य और अन्य का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रोफ़ेसर समर्पण मित्रा ने "बाङ्ला साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम : समाचार पत्र, पम्फ्लेट्स, पत्रिकाएँ और बाङ्लाप्रेस" विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। समापन सत्र में, प्रोफ़ेसर सिबाजी प्रतिम बसु ने अपने समापन वक्तव्य में "भारत के स्वतंत्रता संग्राम का संदर्भ : राष्ट्रवाद का विचार और बाङ्ला साहित्य पर इसका प्रभाव" विषय पर बात की। समापन सत्र के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर तपोधीर भट्टाचार्य ने "राष्ट्रवादी बाङ्ला साहित्य : आधुनिक मूल्यांकन" विषय पर चर्चा की। अपने भाषण में उन्होंने राष्ट्रवादी बाङ्ला साहित्य का इतिहास और विकास पर बात की। समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने संगोष्ठी की सफलता के लिए सभी को धन्यवाद दिया। समापन सत्र के पश्चात् "इंडिया विंस फ्रीडम" शीर्षक से वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया, जो भानुमूर्ति अलूर द्वारा निर्देशित तथा फ़िल्म्स डिवीजन, भारत सरकार द्वारा निर्मित है। शैक्षणिक सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू तथा साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने किया।

बोडो

बोडो साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक तत्त्वों की खोज पर संगोष्ठी

19 दिसंबर 2022, काजलगाँव, असम

स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. नीलपदमिनी राभा

साहित्य अकादेमी ने बोडो विभाग शिक्षक संघ (बीडीटीए) तथा बोडो विभाग, उपेन्द्र नाथ ब्रह्मा कॉलेज के सहयोग से 19 दिसंबर 2022 को उपेन्द्र नाथ ब्रह्मा कॉलेज, काजलगाँव, चिरांग, असम में "बोडो साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक तत्त्वों की खोज" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश के स्वागत वक्तव्य से हुई। उन्होंने संगोष्ठी में उपस्थित समस्त आलेख वक्ताओं तथा प्रतिभागियों का स्वागत किया। आरंभिक वक्तव्य में कॉलेज की प्रधानाचार्य डॉ. नीलपदमिनी राभा ने विभिन्न स्थानों से पधारे समस्त प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा कॉलेज में इस प्रकार की महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर अनिल कुमार बर' ने ऐतिहासिक घटनाओं तथा बोडो साहित्य में परिलक्षित सांस्कृतिक तत्त्वों पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र में बोडो साहित्य सभा के महासचिव प्रशांत बर' तथा प्रतिष्ठित बोडो लेखक एवं साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार विजेता गोबिंदा बसुमतारी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता बोडो विभाग शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ. मिहिर कुमार ब्रह्म ने की।

संगोष्ठी को दो तकनीकी सत्रों में विभक्त किया गया था। प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित बोडो कवयित्री तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता अंजलि (अंजू) बसुमतारी ने की। इस सत्र में इंद्रजीत ब्रह्म, जखांगसा ब्रह्म, लेश्री मोहिलारी तथा कुमुद नार्ज़ारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में, श्रोताओं ने आलेख वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत आलेखों पर चर्चा भी की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गर्ल्स कॉलेज, कोकराझार, असम के प्रधानाचार्य डॉ. अदाराम बसुमतारी ने की तथा मनेश्वर गोयारी, गुड्डु प्रसाद बसुमतारी, केनेरी बसुमतारी और मृणाली रामचियारी ने क्रमश: अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का समापन बोडो विभाग शिक्षक संघ के महासचिव डॉ. रुजब मुसाहारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, इस कार्यक्रम में कॉलेज और विश्वविद्यालय के शिक्षकों तथा छात्रों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया।

डोगरी

20वीं और 21वीं सदी के डोगरी उपन्यास की समालोचनात्मक समीक्षा और मूल्यांकन पर संगोष्ठी

18-19 नवंबर 2022, कटरा, जम्मू-कश्मीर

आरंभिक वक्तव्य देते हुए श्री दर्शन दर्शी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू-कश्मीर के सहयोग से 18-

19 नवंबर 2022 को विश्वविद्यालय के मातृका सभागार में "20वीं और 21वीं सदी के डोगरी उपन्यास की समालोचनात्मक समीक्षा और मूल्यांकन" पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का आयोजन आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि, "जब तक हम अपनी भाषाओं का सम्मान नहीं करेंगे तब तक हम अपनी संस्कृति, सभ्यता और राष्ट्र का सम्मान भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में किया गया था। प्रो. आर.के. सिन्हा, पद्मश्री, कुलपति, एसएमवीडीयू ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा अध्यक्षीय व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने मातृभाषा में संचार को अधिक सहज बताया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबु ने साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव, जो कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके, द्वारा भेजे गए संदेश को पढ़ा, उन्होंने अकादमिक गतिविधियों से इतर भाषाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "डोगरी जम्मू क्षेत्र की समृद्ध और जीवंत संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है और अकादेमी अच्छी गुणवत्ता वाले साहित्य के लेखन, प्रकाशन और प्रचार को प्रोत्साहित करने के लिए सभी प्रयास कर रही है।" साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री दर्शन दर्शी ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। डोगरी के साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री मोहन सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में डोगरी लेखकों के योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि लोगों को एक साथ बाँधने के लिए भाषाएँ आवश्यक हैं। एसएमवीडीयू के रजिस्ट्रार श्री नागेंद्र सिंह जामवाल ने डोगरी भाषा को संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए सामूहिक प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर की सीमाओं से इतर डोगरी के पोषण, प्रचार और परिचय में प्रख्यात डोगरी लेखकों के नि:स्वार्थ योगदान की सराहना की।

पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्री नरसिंह देव जामवाल और श्री देश बंधु डोगरा नूतन और डॉ. ओम गोस्वामी सहित अन्य प्रतिष्ठित डोगरी लेखकों और कवियों ने कार्यक्रम के प्रथम सत्र में अपने उपन्यासों के बारे में चर्चा की।

पहले दिन के द्वितीय सत्र में श्री राजिंदर रांझा, सुश्री सुनीता भडवाल और श्री जगदीप दुबे ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध डोगरी लेखक श्री प्रकाश प्रेमी ने की। श्री वी.के भट्ट, डीन, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज, एसएमवीडीयू ने संगोष्ठी के पहले दिन के समापन पर धन्यवाद ज्ञापित किया। डॉ. ईशा मल्होत्रा, एचओडी स्कूल ऑफ़ लैंग्वेजेज़ एंड लिटरेचर, डॉ. राकेश थुस्सू और बोर्ड कल्चर एक्टिविटीज की डॉ. कामिनी पठानिया ने कार्यक्रम का समन्वयन किया।

दूसरे दिन के तृतीय सत्र में श्री विजय वर्मा, श्री शिव देव सिंह सुशील और डॉ. सुषमा रानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक श्री जतिंदर उधमपुरी ने की। चतुर्थ एवं अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी लेखक श्री ध्यान सिंह ने की तथा श्री इंद्रजीत केसर, श्री शैलेंद्र सिंह और डॉ. नसीब सिंह मन्हास ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी का समापन साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबु के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

गुजराती

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती साहित्य का योगदान विषय पर संगोष्ठी

6-7 अगस्त 2022, सणोसरा

बीज वक्तव्य देतु हुए श्री मनसुख सल्ला

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और लोकभारती विश्वविद्यालय, सणोसरा, गुजरात के संयुक्त तत्वावधान में सणोसरा में 6-7 अगस्त 2022 को आज़ादी

का अमृत महोत्सव के अंतर्गत "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती साहित्य का योगदान" विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने अपने स्वागत वक्तव्य में अकादेमी द्वारा आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

उद्घाटन सत्र में अपने आरंभिक वक्तव्य में गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना के विस्तार में लोकभारती और उससे जुड़े स्वतंत्रता सैनानियों का अमूल्य योगदान रहा है। ऐसे लोकभारती विश्वविद्यालय में यह आयोजन होना, सार्थक है। उन्होंने कहा कि साहित्य के शब्द उपदेश के शब्द नहीं, चेतना की निर्मिति के कारक और उद्घोष करने वाले भी हैं। गुजराती साहित्य हमेशा अग्रणी रहा है।

संगोष्ठी के बीज वक्तव्य में सुप्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार मनसुख सल्ला ने कहा कि साहित्य अकादेमी की यह संगोष्ठी और विषय अपने अतीत को याद कराने वाला है और भविष्य के लिए नवीन युगबोध को सृजित करने वाला भी। उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती साहित्य का आंदोलन अद्वितीय रहा है। उसने समाज को नया जीवन–दर्शन दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लोकभारती विश्वविद्यालय के कुलपति भद्रायु वछराजानी ने कहा स्वतंत्रता की चेतना के विस्तार में जो महत्त्वपूर्ण कार्य करता है, वो है साहित्य। उस समय शब्द का अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता ही रहा। सत्र के अंत में लोकभारती विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति विशाल भादाणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गाँधी जी और मेघाणी जी का योगदान" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें गुजराती साहित्यकार डंकेश ओझा और महेंद्र सिंह परमार ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता सोनल परीख ने की। द्वितीय सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती कविता की भूमिका" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें गुजराती साहित्यकार दीपक रावल और ध्वनिल पारेख ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता यज्ञेश दवे ने की। तृतीय सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती नाटकों की भूमिका" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें गुजराती साहित्यकार राजेश्वरी पटेल और शैलेश टेवाणी ने आलेख - पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता भरत याज्ञिक ने की।

चतुर्थ सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती उपन्यास की भूमिका' विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें गुजराती साहित्यकार केसर मकवाणा और नरेश शुक्ल ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता मणिलाल पटेल ने की। पंचम सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती कहानी की भूमिका" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें गुजराती साहित्यकार राजेश वणकर और अजय रावल ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता किरीट दूधात ने की। द्वि-दिवसीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी प्राध्यायक साहित्यकार उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में प्राध्यापक दिनुभाई चुडासमा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कन्नड भाषा के प्रतिबंधित साहित्य के बारे में राघवेंद्र पाटिल, ओड़िआ साहित्य के बारे में चित्तरंजन भोई, तमिळ भाषा के बारे में पी.आनंद कुमार और तेलुगु भाषा के साहित्य के बारे में वासिरेड्डी नवीन ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

हिंदी

अंग्रेज़ों द्वारा प्रतिबंधित भारतीय साहित्य विषय पर परिसंवाद

15 अगस्त 2022, नई दिल्ली

व्याख्यान देते हुए ध्रुव ज्योति बोरा

साहित्य अकादेमी द्वारा स्वाधीनता दिवस और आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर 'अंग्रेज़ों द्वारा प्रतिबंधित भारतीय साहित्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद में हिंदी सहित पंजाबी, (ओड़िआ, उर्दू, गुजराती, तमिळ, तेलुगु, कन्नड़, मलयाळम् और अंग्रेज़ी भाषाओं में प्रतिबंधित साहित्य के बारे में चर्चा हुई। कार्यक्रम के आरंभ में सभी प्रतिभागियों का स्वागत अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अंगवस्त्रम अर्पित कर किया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने कहा कि आज़ादी की लड़ाई के समय सभी भारतीय भाषाओं में लेखकों ने बिना सज़ा की परवाह किए निर्भीक होकर अपनी बात कही। असमिया भाषा में प्रतिबंधित साहित्य के बारे में बोलते हुए ध्रुव ज्योति बोरा ने कहा कि असम पर अंग्रेजों से पहले 4 वर्ष वर्मा का क़ब्ज़ा रहा और छपाई के अभाव में वाचिक साहित्य के सहारे अंग्रेजों का विरोध किया गया। इसके लिए गीतों और नाटक आदि का सहारा लिया गया। सबसे ज़्यादा पंफलेट्स बैन किए गए जिन्हें अधिकतर हाथों द्वारा लिखा जाता था। अंग्रेज़ी में प्रतिबंधित साहित्य के बारे में हरीश त्रिवेदी ने कहा कि अंग्रेजों ने इस संबंध में तीन एक्ट बनाए थे जो मुख्यत: भारतीय प्रेस और भारतीय संपादकों को परेशान करने के लिए थे। उन्होंने पंडित सुंदर लाल और दामोदर सावरकर द्वारा लिखित पुस्तकों, अनेक पत्र-पत्रिकाओं के अंकों के जब्त करने के संदर्भ प्रस्तुत किए। हर्षद त्रिवेदी ने गुजराती लोकगीतों के साथ ही मेघाणी, कवि सुंदर, जीवन सिंह, मनसुख झावेरी आदि के कई कविता-संग्रहों और नाटकों को जब्त किए जाने की जानकारी दी। रामजन्म शर्मा ने हिंदी के जब्तशुदा गीतों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने प्रेमचंद के कहानी-संग्रह *सोज़े वतन* के ज़ब्त होने पर भी प्रकाश डालते हुए बताया कि उस दौरान 264 किताबों और 500 से ज़्यादा गीतों पर प्रतिबंध लगाया गया। प्रतिबंधित गीत मुख्यत: हसरत मोहानी, अशफ़ाक़ उल्लाह ख़ान, रामप्रसाद बिस्मिल, जोश मलीहाबादी, मोहनलाल अरमान और सोहन लाल दिवेदी आदि द्वारा लिखे गए थे। पंजाबी के प्रतिबंधित साहित्य के बारे में बताते हुए गुरदेव सिंह सिद्धू ने कहा कि इसे मुख्यत: तीन चरणों में बांटा जा सकता है। एक जो 1912 में गदर पार्टी के उदय के साथ हुआ जिसमें मुख्यत: लाला हरदयाल की किताबें थीं और गदर पार्टी के पर्चे थे जो बैन किए गए। दूसरा चरण था जो जलियाँवाला बाग कांड के बाद रचा गया साहित्य और तीसरा चरण राजगुरु, भगत सिंह और सुखदेव की फाँसी के बाद का। उन्होंने वहाँ छपने वाले भगत सिंह के पोस्टरों का भी ज़िक्र किया जो भारी मात्रा में छपते थे और तुरंत ही जब्त कर लिए जाते थे। उर्दू के जब्त साहित्य के बारे में बात करते हुए रखशंदा जलील ने कहा की उर्दू में मुख्य रूप से कम्युनिस्ट साहित्य पर नज़र रखी जा रही थी जो ताशकंद से आता था। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ब्रिटिश लाइब्रेरी में जितना भी जब्तशुदा साहित्य रखा गया है अगर उसकी सिलसिलेवार समीक्षा की जाए तो भारत के पूरे राष्ट्रीय आंदोलन को समझने के लिए एक नई दृष्टि मिलेगी। राघवेंद्र पाटिल ने कन्नड साहित्य, चित्तरंजन भोइ ने ओड़िआ साहित्य, पी. आनंद कुमार ने तमिळ भाषा तथा वासिरेड्डी नवीन ने तेलुगु भाषा और साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए।

कन्नड

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड साहित्य का योगदान पर संगोष्ठी

12-13 अगस्त 2022, बेंगळूरु

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए डॉ. चंद्रशेखर कंबार

आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के भाग के रूप में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु ने जैन विश्वविद्यालय के सहयोग से 12-13 अगस्त 2022 को जैन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ़ साइंसिस बेंगळूरु में "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड साहित्य का योगदान" विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और संक्षेप में बताया कि साहित्य ने दुनिया भर में सामाजिक आंदोलनों को किस प्रकार प्रभावित किया है। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर भारतीय साहित्य के प्रभाव को उजागर करने के लिए महात्मा गाँधी, बाल गंगाधर तिलक, सुब्रह्मण्यम भारती, शिवराम कारंत, गोखले, बंकिम चंद्र चटर्जी तथा अन्य के उदाहरण भी प्रस्तुत किए। उन्होंने संगोष्ठी के आयोजन में अकादेमी के साथ सहयोग करने के लिए जैन विश्वविद्यालय को धन्यवाद दिया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने स्वतंत्रता-पूर्व युग के कई व्यक्तिगत क़िस्से और दिलचस्प घटनाएँ साझा कीं। विभिन्न उपाख्यानों के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्रता की उस भावना की तस्वीर प्रस्तुत की जिसने युवाओं और वृद्धों के मन पर गहन प्रभाव डाला था। उन्होंने 15 अगस्त 1947 से पहले की घटनाओं और 17 वर्ष के युवा के रूप में उन पर पड़े प्रभाव का सजीव वर्णन किया। उन्होंने बताया कि स्वतंत्रता के लिए लड़ने की आवश्यकता के प्रति ग्रामीणों के बीच जागरूकता पैदा करने में नाटक और समाचार-पत्र की विशेष भूमिका थी। उन्होंने यह भी देखा कि कविता भी अपने रूप और संरचना से मुक्त हो गई है। कुवेम्पु, बेंद्रे, गलागानाथ, पुथिना, बी. कट्टीमनी, अनाक्रू, पुराणिक और अन्य ने हमें यह समझाया है कि किस प्रकार उस समय के कवियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपने तरीक़े से योगदान दिया। प्रख्यात कवि और नाटककार प्रोफ़ेसर एच.एस. शिवप्रकाश ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि स्वतंत्र पूर्व और बाद के भारत के साहित्यिक परिदृश्य की आलोचनात्मक जाँच करना महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि उस समय के कवियों ने दो प्रकार की स्वतंत्रता के बारे में बात की : 1. औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता, अपना देश चलाने की राजनीतिक स्वतंत्रता, अपने स्वयं के नियम, नीतियाँ बनाना आदि। 2. समाज के उन बंधनों से मुक्ति जो समाज के कुछ वर्गों जैसे दलित, महिलाओं और ग़रीबों को अच्छा जीवन जीने के बुनियादी अधिकारों से वंचित करने के लिए ज़िम्मेदार थे। 75 वर्ष का युवा देश होने के नाते, यह आकलन करना ज़रूरी था कि हमने क्या हासिल किया और हमें क्या करने की आवश्यकता है, उत्सव के साथ आत्मनिरीक्षण भी होना चाहिए। स्वतंत्रता दिवस पर अपना मत प्रस्तुत करते हुए उन्होंने भारत की उस तस्वीर को स्पष्ट रूप से चित्रित किया, जिसने औपनिवेशिक शासन से मुक्त होने के समय हिंसा का सामना किया था- विभाजन, गाँधी की हत्या। जैन विश्वविद्यालय की डॉ. रजनी जयराम ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि साहित्य तब इतिहास बन जाता है जब वह हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के पहलुओं को व्यक्त करता है। साहित्य व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को समाहित करता है। इस भूमि का साहित्य कहता है, "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी", किंतु इस प्रकार की संगोष्ठी ही उन सभी चीज़ों की याद दिलाती

है जिन पर हमें गर्व करने, राष्ट्र के प्रति प्रेम दिखाने और निश्चित रूप से आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में संगोष्ठी आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। प्रोफ़ेसर नागन्ना की अध्यक्षता में, प्रथम सत्र "स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड कथा साहित्य का योगदान" विषय पर समर्पित था। श्री चन्द्रशेखर नंगाली, डॉ. आशा देवी और श्री. बसवराज सदारा ने उपरोक्त विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड कविता का योगदान' तथा इस सत्र की अध्यक्षता श्री. के. वाई. नारायण स्वामी ने की। श्री सिद्धराम होन्नकल तथा श्रीमती शुभा मारवंते ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता आंदोलन में पत्रकारिता और पत्रकारों का योगदान'। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. सरजू काटकर ने की। श्रीमती आर. पूर्णिमा, श्री सनथ कुमार बेलागली तथा श्री पद्मराज दण्डवती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड नाटकों का योगदान'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री सतीश कुलकर्णी ने की। श्री कुरुवा बसवराज, श्रीमती विजयनलिनी रमेश तथा श्री जयप्रकाश मविनाकुली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड लोककथाओं का योगदान'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री दुर्गादास ने की। वीरेश बडिगर, बी.आर. पुलिस पाटिल तथा राजप्पा दलवई ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। षष्ठ सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता आंदोलन में कर्नाटक के जनजातीय समुदाय का योगदान'। इस सत्र की अध्यक्षता सुब्बू होलेयार ने की। श्री वड्डगेरे नागराजय्या तथा श्रीमती आर.ए. पुष्पा भारती ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. मनु बलिगर ने समापन सत्र की अध्यक्षता की, श्री बालासाहेब लोकपुर ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा जैन विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर एम.राव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने संगोष्ठी के महत्त्व पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा उन्होंने इस संगोष्ठी को संभव बनाने के लिए जैन विश्वविद्यालय को धन्यवाद भी दिया।

मैथिली

स्वतंत्रता संग्राम-मैथिली साहित्य : संस्कृति एवं विचारधारा पर संगोष्ठी

13-14 मई 2022, मधेपुरा, बिहार

बीज-वक्तव्य देती हुईं प्रो. बीना ठाकुर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने ठाकुर प्रसाद कॉलेज, मधेपुरा, बिहार के सहयोग से 13-14 मई 2022 को संस्कृत में द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन.सुरेश बाबु ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा किसी भी चीज़ को हासिल करने के लिए अहिंसात्मक आंदोलन पद्धति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने मैथिली भाषा के लिए अपना समय समर्पित करने के लिए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव की ओर से समस्त प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। संगोष्ठी का विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने कहा कि मथुरा की संस्कृति और दर्शन विदेह की अवधारणा से प्रेरित है, इसमें कहानी की कोई गुंजाइश नहीं है। यही कारण है कि हमारे कुछ राजा और ज़मींदार अंग्रेजों के साथ रहे होंगे। लेकिन हमारी समस्त जनता अंग्रेजों के ख़िलाफ़ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल रही है। उन्होंने कहा कि मिथिला के साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम में अहम भूमिका निभाई है। लक्ष्मीनाथ गोसाईं, रंगलाल दास, रामस्वरूप दास आदि के गीतों और भजनों में राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुखरित हुआ है। उपन्यास और काव्य परंपरा की लोक परंपरा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रही है। छेदी झा द्विजवार, यदुनाथ झा यदुवर, राघवाचार्य, भवप्रीतानंद ओझा आदि की कविताओं ने 1919 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. ललितेश मिश्र ने कहा कि मैथिली साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित साहित्य की कोई कमी नहीं है। लेकिन मैथिली इतिहास के लेखकों ने इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया और मैथिली इतिहासकारों के साथ न्याय नहीं किया। इतिहास की पुस्तकों में मैथिली साहित्य में मौजूद आज़ादी के स्वर को वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ, जो मिलना चाहिए था। उन्होंने इस संदर्भ में 1911 में प्रकाशित मैथिली गीत कुसुम की विशेष रूप से चर्चा की और कहा कि आज़ादी की चेतना के संदर्भ में यह असमिया, तमिळ और बाङ्ला सहित किसी भी भारतीय भाषा के साहित्य के समकक्ष है।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं साहित्य अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की पूर्व संयोजिका प्रो. (डॉ.) बीना ठाकुर ने कहा कि साहित्य सिर्फ़ कल्पना नहीं है। यही हमारा सामाजिक इतिहास भी है। साहित्य में समाज अंतर्निहित है। उन्होंने कहा कि साहित्य और समाज दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। यह बात मैथिली साहित्य और मैथिली समाज पर भी लागू होती है। मैथिली साहित्य समाज आम लोगों का साहित्य है। इसका समाज से गहरा संबंध है। उन्होंने कहा कि आज़ादी की लड़ाई में मैथिली साहित्य, संस्कृति और दर्शन की अहम भूमिका रही। आज़ादी की लड़ाई में मैथिली के साहित्यकार अन्य साहित्यकारों से पीछे नहीं रहे हैं।

टी.पी. कॉलेज के प्राचार्य और मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. के.पी. यादव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ। उद्घाटन सत्र का संचालन श्री सुधांशु शेखर ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. बीना ठाकुर ने की तथा उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम और मैथिली गीतात्मक काव्य विषय पर आलेख प्रस्तुत किया, जबकि डॉ. संजय कुमार मिश्र ने मिथिला और स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक दार्शनिक पहलू तथा श्री शिवकुमार मिश्र ने स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में मिथिला का बौद्धिक एवं सांस्कृतिक योगदान विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने की तथा उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम-मैथिली कहानियाँ विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। प्रो. के.पी. यादव ने स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में पूर्णिया और मधेपुरा के बौद्धिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक योगदान तथा डॉ. सदानंद यादव ने भारत छोड़ो आंदोलन - मैथिली साहित्य और समाज विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय और चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने की। डॉ. अजीत मिश्र ने स्वतंत्रता संग्राम और मैथिली कविता, डॉ. उपेन्द्र यादव ने स्वतंत्रता संग्राम और मैथिली नाटक, डॉ. अमोल रॉय ने मैथिली लोक साहित्य और स्वतंत्रता संग्राम तथा डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी ने स्वतंत्रता संग्राम और मैथिली नाटक विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

डॉ. भैरब लाल दास ने स्वतंत्रता संग्राम - महात्मा गाँधी और मिथिला, डॉ. डी.एन. सिंह ने मैथिली साहित्य में वर्णित स्वतंत्रता सेनानी, श्री तारानंद वियोगी ने स्वतंत्रता संग्राम और मैथिली संत साहित्य विषयों पर अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. रामनरेश सिंह अपरिहार्य परिस्थितियों के कारण संगोष्ठी में शामिल नहीं हो सके, किंतु उन्होंने आपना स्वतंत्रता संग्राम और कोशी क्षेत्र विषयक आलेख अकादेमी को पहले ही भिजवा दिया था।

मलयाळम्

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

12 मई 2022, तिरुर

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री प्रभा वर्मा

आज़ादी का अमृत महोत्सव समारोह के भाग के रूप में, साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय ने थुंचन मेमोरियल

ट्रस्ट के सहयोग से 12 मई 2022 को तिरुर में 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय साहित्य' पर संगोष्ठी का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय दिया और सभी भाषाओं में भारतीय साहित्य के विकास, महिला लेखकों, दलित लेखकों, लघु पत्रिकाओं के उद्भव और भारतीय साहित्यिक परिदृश्य में डिजिटल क्रांति के बारे में संक्षेप में बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, श्री प्रभा वर्मा, संयोजक, मलयाळम् परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी, ने कहा कि भले ही स्वतंत्र संघर्ष के दौरान लोगों का मार्गदर्शन और नेतृत्व करने वाले बहुत सारे लेखक थे, लेकिन स्वतंत्रता के बाद उल्लेख करने लायक कोई नहीं था। सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकताओं को भुला दिया गया। आधुनिक साहित्य स्वभावत: अंतर्मुखी है। उन्होंने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि आजकल एक नया साहित्य उभरकर आया है, जिसे चतुर साहित्य कहा जाता है, जिसका अर्थ है महाकाव्यों से कुछ लेना, विज्ञान से कुछ, पुराने साहित्य से कुछ, पौराणिक कथाओं से कुछ, इंटरनेट से कुछ लेना एवं उन्हें उपयुक्त रूप से संयोजित करना और एक उपन्यास बनाना। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, कवि, लेखक, गीतकार और मलयाळम् विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफ़ेसर के. जयकुमार ने साहित्य में इतिहास के प्रभाव के बारे में बात की। उन्होंने दलित, द्रविड़ और कम्युनिस्ट आंदोलन और भारतीय साहित्य पर इनके प्रभाव के बारे में भी बताया। महाकाव्यों को भी यह पता लगाने के लिए इस आशय से पुन: परिभाषित किया गया है कि "क्या इसका कोई और भी अर्थ है"। अपने बीज-वक्तव्य में, मलयाळम् विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर अनिल वलाथोल ने बताया कि किस प्रकार पुराणों में मिथकों को पुन: परिभाषित किया गया है। उन्होंने अंत में कहा कि स्वतंत्रता के बाद कला और साहित्य को आध्यात्मिकता से मुक्त कर दिया गया और मौखिक साहित्य को एक नई परिभाषा दी गई। श्री मनाम्बुर राजनबाबू की अध्यक्षता में प्रथम सत्र में, तीन प्रतिष्ठित लेखकों, श्री विश्वास पाटिल, के.वी. सजय और मेडिपल्ली रविकुमार ने क्रमश: मराठी, मलयाळम् और तेलुगु के दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के बाद के साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किए। पी.के.गोपी की अध्यक्षता में द्वितीय सत्र में, दो प्रतिष्ठित लेखकों, श्री अरुण कमल और ओ.एल. नागभूषण स्वामी ने क्रमश: हिंदी और कन्नड के दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के बाद के साहित्य पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री जी.के. राममोहन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मराठी

1990 के पश्चात् के मराठी नाटक : संरचना और कथ्य पर संगोष्ठी

01-02 जुलाई 2022, श्रीरामपुर, महाराष्ट्र

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. रंगनाथ पठारे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और शब्दालय प्रकाशन, श्रीरामपुर के संयुक्त तत्वावधान में प्रतिष्ठान के परिसर में 01-02 जुलाई 2022 "1990 के पश्चात् मराठी के नाटक : संरचना और कथ्य" विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के प्रथम दिवस 01 जुलाई 2022 को उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया।

संगोष्ठी के आरंभिक वक्तव्य में मराठी परामर्श मंडल के सदस्य वरिष्ठ उपन्यासकार राजन गवस ने मराठी नाट्य परम्परा और वर्तमान स्थितियों पर अपने विचार व्यक्त करते

हुए कहा कि परम्परागत नाटक मंडलियों की संख्या बहुत कम रह गई। नाटक गाँव से दूर हो रहे है। उन्होंने नाटक विधा को लेकर उपस्थित चिंताओं और चुनौतियों पर गंभीर चर्चा कर फिर से विचार करने की बात कही।

इस अवसर पर उद्घाटन वक्तव्य में सुप्रसिद्ध नाटककार सतीश आळेकर ने कहा कि रंगमंच सामूहिकता की कला है। उन्होंने कहा कि तकनीक और आर्थिक प्रगति हुई है। आज दर्शकों तक पहुँच के माध्यम एवं साधन बढ़े है लेकिन असुरक्षा भी बढ़ी है। लेकिन वह हमेशा से आशावादी रहे हैं, आज मराठी रंगभूमि पर नवीन प्रयोग हो रहे हैं। गत तीन दशकों में समाज में बहुत बदलाव भी हुए हैं, गाँव नगरों की सूरत में ढल रहे हैं। ऐसे में नई पीढ़ी की संवेदना लिखित रूप में सामने आनी चाहिए। सुपरिचित नाटककार दत्ता भगत के बीज वक्तव्य का वाचन युवा नाटककार दत्ता पाटील ने किया।

सत्र के अध्यक्ष मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने कहा कि काल के साथ अनुभव, संवेदना और प्रस्तुति में परिवर्तन संभाव्य है। परंपरागत रूप से जनजागरण के लिए नाटक उपयोग होता रहा है। उन्होंने कहा कि मराठी रंगभूमि को संपूर्ण देशकाल में बहुत आदर मिला है। सत्र के अंत में मराठी परामर्श मंडल की सदस्या सुमती लांडे ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र "1990 के पश्चात् मराठी नाटकों की प्रस्तुति" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें मराठी नाट्य निर्देशक-लेखक स्वागत थोराट सचिन शिंदे ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित मराठी लेखक एवं समीक्षक नीलकंठ कदम ने की। द्वितीय सत्र में "1990 के पश्चात् मराठी नाटकों में बदलते कथ्य और भूमिका" विषय पर साहित्यकार, समीक्षक प्रवीण भोळे और रमेश भोळे ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मराठी नाटककार प्रेमानंद गज्वी ने की।

शनिवार 02 जुलाई 2022 को, संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय सत्र में "1990 के पश्चात् नाट्य चेतना" विषय पर नाटककार-अभिनेता गिरीश पतके, प्रवीण काळोखे और प्राजक्त देशमुख ने अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता राजन गवस ने की। चतुर्थ सत्र में "मराठी नाट्य परंपरा और 1990 के पश्चात् मराठी नाटक" विषय पर साहित्यकार प्रतीक पूरी, रमेश रावळकर और दत्ता पाटील ने अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित मराठी लेखक एवं समीक्षक नीलकंठ कदम ने की।

संगोष्ठी के पंचम सत्र "नाट्य-पठन और संवाद" के अंतर्गत सुप्रसिद्ध नाटककार सतीश आळेकर ने अपने नवीन लिखित नाटक "ठकीशी संवाद" का वाचन किया। इस सत्र की अध्यक्षता मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने की। कार्यक्रम के अंत में शब्दालय प्रकाशन के सुमित लांडे ने सभी का आभार व्यक्त किया। द्वि-दिवसीय संगोष्ठी में बड़ी संख्या में मराठी रंगभूमि से जुड़े लेखक, निर्देशक और कलाकारों के साथ मराठी साहित्य-संस्कृति प्रेमी उपस्थित थे।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और मराठी साहित्य पर संगोष्ठी

30–31 जुलाई 2022, पैठण

समापन वक्तव्य देते हुए श्री सतीश बडवे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई और प्रतिष्ठान महाविद्यालय, पैठण के संयुक्त तत्वावधान में पैठण में 30–31 जुलाई 2022 को आज़ादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत "भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और मराठी साहित्य" विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के कार्यक्रम अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने अपने स्वागत वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

उद्घाटन सत्र का आरंभिक वक्तव्य प्रतिष्ठान महाविद्यालय, पैठण के प्राचार्य एस.जी. सोनकांबळे ने दिया।

संगोष्ठी के उद्घाटन वक्तव्य में मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक और समालोचक कौतिकराव ठाले पाटिल ने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन में मराठी साहित्य का अत्यधिक योगदान है। उन्होंने अपने वक्तव्य में विभिन्न विधाओं के मराठी साहित्य का उल्लेख भी किया, जिसमें स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि और विचार चेतना की उपस्थिति मिलती है।

संगोष्ठी के बीज वक्तव्य में साहित्यकार, आलोचक एकनाथ पगार ने कहा कि मराठी लोगों का इतिहास संघर्ष का इतिहास रहा है। मराठी साहित्य में कई लेखकों द्वारा अभिव्यक्त किए गए विचार तथा स्वतंत्रता के संदेश प्रतिबिंबित होते हैं। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मराठी परामर्श मंडल के संयोजक रंगनाथ पठारे ने की। उद्घाटन सत्र में प्रतिष्ठान शिक्षण प्रसारक मंडल के सचिव राजेंद्र पाटील शिसोदे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सत्र का संयोजन प्रतिष्ठान महाविद्यालय, पैठण के प्राध्यापक हंसराज जाधव ने किया।

शनिवार को संगोष्ठी के प्रथम सत्र में "भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और मराठी कविता" विषय पर मराठी लेखक राजा होळकुंदे और रवि कोरडे ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता मराठी परामर्श मंडल की सदस्या सुमती लांडे ने की। द्वितीय सत्र में "भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और मराठी गद्य साहित्य एवं पत्रकारिता" विषय पर लेखक एवं पत्रकार विनोद शिरसाठ और समीता जाधव ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता मराठी के वरिष्ठ लेखक-पत्रकार जयदेव डोळे ने की। तृतीय सत्र में "भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और महाराष्ट्र की लोककला एवं साहित्य" विषय पर लेखक दिलीप चव्हाण और सुशिल धसकटे ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता गणेश चंदनशिवे ने की।

रविवार को संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र "भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और मराठी कथन साहित्य" विषय पर केंद्रित रहा। जिसमें लेखक गणेश मोहिते और विनायक येवले ने आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता मराठी परामर्श मंडल के सदस्य राजन गवस ने की।

संगोष्ठी के समापन सत्र में समाहार वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध मराठी लेखक और समालोचक सतीश बडवे ने कहा कि स्वतंत्रता जीवन की संकल्पना है। मराठी साहित्य पर गाँधी जी का भी गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने कहा कि सामन्यजन में राष्ट्र चेतना का संचार करने एवं स्वतंत्रता की चाह पैदा करने में मराठी साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अपने वक्तव्य में राष्ट्र एवं स्वाधीनता की चेतना से पूर्ण मराठी साहित्य का उल्लेख भी अपने समाहार वक्तव्य में किया। सत्र की अध्यक्षता रंगनाथ पठारे ने की।

संगोष्ठी के अंत में प्रतिष्ठान महाविद्यालय के उपाचार्य सर्जेराव जिगे ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में बड़ी संख्या में मराठी रंगभूमि से जुड़े रंगकर्मी, पाठक एवं साहित्य रसिक उपस्थित थे। सत्र का संयोजन प्रतिष्ठान महाविद्यालय, पैठण के प्राध्यापक मधुकर बैकरे ने किया।

महाराष्ट्र के जनजातीय लोक-साहित्य पर संगोष्ठी

16-17 फ़रवरी 2023, तलासरी, महाराष्ट्र

समापन वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए डॉ. रंगनाथ पठारे

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने कॉम. गोदावरी शामराव पारुलेकर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय, तलासरी, महाराष्ट्र के सहयोग से 16-17 फ़रवरी 2023 को कॉलेज सभागार में "महाराष्ट्र के आदिवासी लोक-साहित्य" पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रारंभ में, ओम प्रकाश नागर, प्रभारी अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई

ने संगोष्ठी में उपस्थित अतिथि वक्ताओं, दर्शकों और छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने भारत और विशेष रूप से महाराष्ट्र के आदिवासी साहित्य पर साहित्य अकादेमी के कार्यों पर संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात मराठी-आदिवासी साहित्यकार विनोद कुमार ने प्रस्तुत किया, जिन्होंने दावा किया कि आदिवासी समाज का इतिहास आदिवासी साहित्य के लोक-गीतों से लिया गया है। जब भी आदिवासी समाज, जन आदि की बात होती है तो जल, जंगल और ज़मीन का ज़िक्र ज़रूर होता है। उन्होंने महाराष्ट्र के आदिवासी लोक-साहित्य पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। बीज-वक्तव्य काशीनाथ बरहाटे ने दिया, जिन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि भाषा लोक-साहित्य का मूल माध्यम है। प्रतिष्ठित मराठी उपन्यासकार रंगनाथ पठारे ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। बी. ए. राजपूत, प्राचार्य कॉम. गोदावरी शामराव पारुलेकर कॉलेज ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

"महाराष्ट्र का आदिवासी लोक-साहित्य" विषय पर प्रथम सत्र की अध्यक्षता बी.ए. राजपूत ने की, जबकि संबंधित विषय पर राजू शनवार और सखाराम डाखोरे ने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे दिन का द्वितीय सत्र "आदिवासी लोक-साहित्य के नए सन्दर्भ एवं चुनौतियाँ" विषय पर आधारित था। इस सत्र की अध्यक्षता अंजलि मासेरान्हास ने की, जबकि पेहीरामन झिरवाड और चिंतामन ढिंडाले ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'कहानी कहने की कला/कथा-वाचन' पर आधारित तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रभु राजगडकर ने की, जबकि भीली में कहानी सुनील गायकवाड़ ने प्रस्तुत की।

'जनजातीय भाषाओं में काव्य पाठ' पर आधारित चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता सुमति लांडे ने की, जबकि रेखा जुगनके ने गोंडी में, संतोष पावरा ने पावरी में, तुकाराम धांडे ने डांगनी में और रवि बुधार ने वारली में काव्य-पाठ प्रस्तुत किया।

धन्यवाद ज्ञापन बी.ए. राजपूत ने प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में आदिवासी साहित्य प्रेमियों, कॉलेज के छात्रों और मीडिया ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

ओड़िआ

गोपबंधु और राष्ट्रवादी साहित्य के उद्भव पर संगोष्ठी

27 मई 2022, भुवनेश्वर

संगोष्ठी का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने गोपबंधु दास रिसर्च चेयर, के.आई. एस.एस. के सहयोग से 27 मई 2022 को भुवनेश्वर में "गोपबंधु और राष्ट्रवादी साहित्य का उद्भव" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

स्वागत वक्तव्य, साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने दिया। उन्होंने गोपबंधु के जीवन और कार्यों पर संक्षेप में चर्चा की। आरंभिक वक्तव्य, साहित्य अकादेमी के ओड़िआ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. बिजयानंद सिंह ने दिया। उन्होंने गोपबंधु के जीवन के कुछ प्रमुख पहलुओं पर बात की। श्री निरंजन रथ ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। उन्होंने समकालीन महान ओड़िआ हस्तियों के साथ-साथ उन लोगों के नाम पर भी प्रकाश डाला, जिन्होंने गोपबंधु के साथ काम किया था। प्रोफ़ेसर बसंत कुमार पांडा ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने गोपबंधु के जीवन और कार्यों के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने उनके दार्शनिक विचारों के साथ-साथ राष्ट्रवादी प्रयासों के बारे में भी विस्तार से चर्चा की। प्रोफ़ेसर दीपक कुमार बेहरा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ओड़िआ राष्ट्रवादी साहित्य में गोपबंधु के योगदान पर बात की। उद्घाटन सत्र में डॉ. प्रशांत कुमार राउतराय ने

धन्यवाद प्रस्ताव रखा। प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. अर्चना नायक ने की। सत्र में, श्री पवित्र मोहन दास ने गोपबंधु के राष्ट्रवाद के विचार और दूसरों के विचारों के तुलनात्मक अध्ययन पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री संग्राम जेना ने गोपबंधु के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, विशेष रूप से ग्रामीणों को सशक्त बनाने की उनकी अवधारणा प्रस्तुत की। द्वितीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता एसजे. गौरा चंद्र परीदा ने की। इस सत्र में, श्री अरबिंदो राय ने गोपबंधु के जीवन और समाज के प्रति उनके योगदान पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री लालतेन्दु दास महापात्र ने "कृपासिंधु मिश्र के लेखन में राष्ट्रवाद" पर आलेख प्रस्तुत किया। एसजे. प्रसन्न कुमार स्वैन ने गोपबंधु की चयनित कविताओं और गद्य लेखन पर आलेख प्रस्तुत किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. रस्मिता त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया।

पंजाबी

बहु एवं परा संस्कृतिवाद : पंजाबी साहित्य पर संगोष्ठी

5-6 दिसंबर 2022, अमृतसर

संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने स्कूल ऑफ़ पंजाबी स्टडीज़, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के सहयोग से 5-6 दिसंबर 2022 को गुरु नानक भवन, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर में "बहु एवं परा संस्कृतिवाद : पंजाबी साहित्य" पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी के स्वागत वक्तव्य से शुरू हुआ। उन्होंने गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर के माननीय कुलपति का आभार व्यक्त किया और कहा कि यह संगोष्ठी विश्वविद्यालय के बहुमूल्य सहयोग से ही संभव हो सकी है। इसके अलावा स्कूल ऑफ़ पंजाबी स्टडीज़ के प्रमुख मनजिंदर सिंह ने भी विद्वानों का स्वागत किया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के सदस्य मनमोहन सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बहु और परा संस्कृतिवाद के सैद्धांतिक ढाँचे की व्याख्या की। प्रख्यात पंजाबी विद्वान, अमरजीत ग्रेवाल ने अपने बीज-वक्तव्य में संस्कृति को पुन: परिभाषित करते हुए कहा, कि संस्कृति को प्रकृति और संस्कृति के द्वंद्व के बजाय प्रकृति के साथ इसके अंतर्संबंध के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के एमेरिटस प्रोफ़ेसर हरजीत सिंह गिल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य के दौरान कहा कि महान साहित्य हमेशा परा सांस्कृतिक संवेदनशीलता का प्रतिनिधित्व करता है। सत्र के मुख्य अतिथि, सरबजोत सिंह बहल, डीन, अकादमिक मामले, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय ने कहा कि सांस्कृतिक मतभेदों से परे सोचना अंतर-सांस्कृतिक संवेदनशीलता है। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजक वनीता ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और कहा कि अकादेमी ऐसी साहित्यिक गतिविधियों के लिए हमेशा तैयार है। प्रथम शैक्षणिक सत्र के दौरान चार आलेख प्रस्तुत किए गए। अमनदीप कौर ने 'बहु एवं परा संस्कृतिवाद : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य' पर अपना आलेख पढ़ा। सुखप्रीत कौर ने 'बहु एवं परा संस्कृतिवाद : शैली एवं कथासाहित्य' विषय पर प्रस्तुति दी। तृतीय आलेख बलजिंदर नसराली द्वारा 'बहु एवं परा संस्कृतिवाद : पंजाबी कथासाहित्य' पर प्रस्तुत किया गया। चतुर्थ आलेख परवीन कुमार द्वारा 'बहुसंस्कृतिवाद एवं सांस्कृतिक अध्ययन' विषय पर प्रस्तुत किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए मनमोहन सिंह ने कहा कि पंजाबी साहित्य में बहु-संस्कृतिवाद की अवधारणा को बहुत अच्छे तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। द्वितीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता धर्म सिंह ने की। अवतार सिंह ने 'श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सांस्कृतिक बहुलता' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। मनजिंदर सिंह

ने 'गुरमत में बहु एवं परा संस्कृतिवाद समझ' विषय पर अपना आलेख पढ़ा। तृतीय आलेख 'भगत-बाणी : बहु सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य' विषय पर कुलदीप सिंह द्वारा प्रस्तुत किया गया। तृतीय शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता 6 दिसंबर 2022 को जोगिंदर सिंह कैरों ने की। यहाँ तीन आलेख प्रस्तुत किए गए, यादविंदर सिंह ने 'पंजाबी सांस्कृतिक लोकाचार की खानाबदोशता के सूत्र की खोज' विषय पर, हरजिंदर सिंह ने 'प्रवासी पंजाबी नाटक : बहु सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य' पर तथा गुरप्रीत सिंह बोरावाल ने 'प्रवासी पंजाबी कविता : बहु और परा संस्कृतिवाद (21वीं सदी के पहले दशक के संदर्भ में)' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता रमिंदर कौर ने की, इस सत्र में दो आलेख प्रस्तुत किए गए। प्रथम आलेख हरिंदर कौर सोहल द्वारा 'पंजाबी प्रवास और बहु-सांस्कृतिकवाद' विषय पर प्रस्तुत किया गया और द्वितीय आलेख परमिंदर सिंह द्वारा 'मध्यकालीन पंजाबी गद्य : बहु सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य' पर प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का समापन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिन्दी) अनुपम तिवारी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

राजस्थानी

स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी साहित्य पर संगोष्ठी

3-4 नवंबर 2022, सालासर, राजस्थान

उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देते हुए डॉ. मधु आचार्य 'आशावादी"

साहित्य अकादेमी ने मरुदेश संस्थान, सुजानगढ़, सवार्थिया सेवा सदन, लक्ष्मणगढ़ रोड, सालासर के सहयोग से 3-4 नवंबर 2022 को सालासर, राजस्थान में 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी साहित्य' पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि डॉ. अर्जुन देव चारण ने राजस्थानी भाषा को विश्व की समृद्ध भाषाओं में से एक बताते हुए कहा कि राजस्थानी भाषा में स्वातंत्र्योत्तर साहित्य का विशाल भंडार है, जो इसके विकास का प्रतीक है। यह शाश्वत सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में बोलने और शिक्षा लेने का अधिकार है, लेकिन आज़ादी के पचहत्तर साल बाद भी राजस्थान के दस करोड़ निवासियों की मातृभाषा को संवैधानिक मान्यता नहीं मिल पाई है। राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता मिलने के बिना हमारी आज़ादी अधूरी है। डॉ. मंगत बादल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि शब्दों पर मनन करना अद्भुत है। शब्दों में वह शक्ति होती है जिसे हर कोई नहीं समझ सकता। विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि आज़ादी के बाद राजस्थानी साहित्य में, साहित्य की विभिन्न विधाओं में बदलाव आना स्वाभाविक है और इन्हीं बदलावों को उजागर करने के लिए इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। अपने स्वागत वक्तव्य के दौरान साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहित्य संस्कृति का संरक्षक है। उन्होंने इस अवसर पर युवाओं से लोक साहित्य की अनमोल विरासत को संरक्षित करने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने का आह्वान किया। उद्घाटन सत्र में मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने आभार व्यक्त किया। सत्र का संचालन हरीश बी. शर्मा ने किया।

चाय के बाद, साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार भंवर सिंह सामौर की अध्यक्षता में हुए प्रथम सत्र में युवा साहित्यकार डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी काव्य साहित्य' के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी युवा साहित्य' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्रीमती सीमा राठौड़ ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी गीत और छंद साहित्य' पर बात की। डॉ. मंगत

बादल की अध्यक्षता में द्वितीय सत्र में श्रीमती सीमा भाटी ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी उपन्यास' विषय पर, श्री विजय जोशी ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी कथा साहित्य' पर तथा श्री हरीश बी. शर्मा ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी नाटक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध आलोचक कुन्दन माली ने की। इस सत्र में डॉ. राजेश कुमार व्यास ने 'स्वातंत्र्योत्तर कथेतर साहित्य' पर, श्री रामरतन लटियाल ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी आलोचना साहित्य' पर तथा डॉ. गीता सामौर ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी निबंध' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा राजस्थानी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर चर्चा की।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता डॉ. मदन सैनी ने की। इस सत्र में नागेन्द्र नारायण किराडू ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी बाल साहित्य', संजय पुरोहित ने 'स्वातंत्र्योत्तर अनुवाद में राजस्थानी साहित्य', डॉ. जगदीश गिरी ने 'स्वातंत्र्योत्तर राजस्थानी पत्रकारिता' तथा संतोष चौधरी ने 'राजस्थानी महिलाओं द्वारा स्वातंत्र्योत्तर लेखन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन श्रीमती किरण बादल ने किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार भंवरसिंह सामौर ने कहा कि अपनी भाषा के बिना व्यक्ति और देश का कोई अस्तित्व नहीं है। उन्होंने कहा कि राजस्थानी दुनिया की समृद्ध भाषाओं में से एक है और इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। यदि राजस्थानी को संवैधानिक दर्जा मिलता है तो इससे इस भाषा को एक गति मिलेगी। समापन सत्र का संचालन डॉ. गजेसिंह राजपुरोहित ने किया। मरुदेश संस्थान के अध्यक्ष डॉ. घनश्याम नाथ कच्छावा ने संगोष्ठी में भाग लेने वाले समस्त सहयोगियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री ज्योतिकृष्ण वर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संस्कृत

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य का योगदान विषय पर संगोष्ठी

16-17 मई 2022, नलबाड़ी, असम

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रोफ़ेसर दीपक कुमार शर्मा

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने 16-17 मई 2022 को कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत और प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबाड़ी, असम के सहयोग से 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य का योगदान' विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव की ओर से स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जनता को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु संस्कृत साहित्य की जीवंतता पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक विरासत का भी उल्लेख किया, जिसने स्वतंत्रता सेनानियों को स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रक्रिया में स्वयंसेवा करने के लिए प्रभावित किया है। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने उद्घाटन वक्तव्य प्रस्तुत किया और ब्रिटिश शासकों द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान संस्कृत को आधिकारिक भाषा घोषित करने की प्रक्रिया के बारे में बताया। तत्पश्चात, साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. रमाकांत पांडे ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया और सभी को स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने में संस्कृत पत्रिकाओं और संस्कृत विद्वानों के लेखों की

भूमिका गिनाई। विश्वविद्यालय के कुलपति और साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य प्रोफ़ेसर दीपक कुमार शर्मा ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की और सभी प्रतिभागियों तथा दर्शकों से संस्कृत विद्वान श्री रमाकांत शुक्ल जी एवं पद्मश्री भागीरथ प्रसाद त्रिपाठी के आकस्मिक निधन पर एक मिनट का मौन रखने का अनुरोध किया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत विश्वविद्यालय के संस्कृत छात्रों द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना गीत से हुई।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'स्वतंत्रता संग्राम - वैदिक परंपरा, संस्कृत महाकाव्य और खंडकाव्य' पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर हरेकृष्ण शतपथी ने की। इस सत्र में, डॉ. मंजूषा कुलकर्णी ने 'स्वतंत्रता संग्राम में वैदिक विद्वानों के योगदान' पर, डॉ. एन.के सुंदरेश्वरन ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत महाकाव्यों के योगदान' पर तथा प्रो. अरुण रंजन मिश्र ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत खंडकाव्यों के योगदान' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था - 'स्वतंत्रता संग्राम - संस्कृत गद्य साहित्य, नाटक एवं क्रांतिकारी गीत'। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। प्रो. जी.एस.आर. कृष्ण मूर्ति ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत गद्य साहित्य के योगदान' पर, डॉ. राघवेंद्र भट्ट ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत नाटकों के योगदान' पर और प्रोफ़ेसर सत्यनारायण चक्रवर्ती ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य के क्रांतिकारी गीतों' पर अपनी शानदार प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

तृतीय सत्र का विषय था— 'संस्कृत कवियों, संतों और विदेशी संस्कृत विद्वानों का योगदान'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. जी.एस.आर. कृष्णमूर्ति ने की। डॉ. एस. रंगनाथ ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत कवियों के योगदान' पर, डॉ. गोविंद शर्मा ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संतों के योगदान' पर तथा डॉ. रूणिमा शर्मा ने 'विदेशी संस्कृत विद्वानों के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के दूसरे दिन की शुरुआत प्रोफ़ेसर रमाकांत पांडे की अध्यक्षता में चतुर्थ सत्र से हुई, सत्र का विषय था 'स्वतंत्रता संग्राम - संस्कृत पत्रिकाएँ और पारंपरिक संस्कृत विद्वान'। इस सत्र में प्रो. सदाशिव द्विवेदी ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत पत्रिकाओं के योगदान' पर, डॉ. केशव लॉइटेल ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत पारंपरिक विद्वानों के योगदान' पर तथा प्रो. मीरा द्विवेदी ने 'संस्कृत पत्रिकाओं में कुछ महत्त्वपूर्ण संपादकीय और स्वतंत्रता संग्राम में इसके योगदान' पर अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्र-मुग्ध कर दिया।

पंचम सत्र 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत भक्ति साहित्य और स्पुट संस्कृत साहित्य का योगदान' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. एस.रंगनाथ ने की। इस सत्र में, प्रो. देबराज पाणिग्राही ने 'ओड़िशा में स्वतंत्रता संग्राम और संस्कृत भक्ति साहित्य' पर तथा डॉ. बी. बुजर बरुआ ने 'स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत स्पुट साहित्य के योगदान' पर अपनी प्रस्तुतियाँ देकर संगोष्ठी को पूर्णता प्रदान की।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. दीपक कुमार शर्मा ने की और विश्वविद्यालय के साथ सहयोग करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया। प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने समापन टिप्पणी प्रस्तुत की, जबकि डॉ. एन. सुरेश बाबू ने संगोष्ठी को सफल बनाने में कड़ी मेहनत करने के लिए विश्वविद्यालय के अधिकारियों को धन्यवाद दिया।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर *रामायण* और *भगवद गीता* का प्रभाव विषय पर संगोष्ठी

8-9 जुलाई 2022, जयपुर

गणमान्य अतिथियों के अभिनंदन का दृश्य

'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर रामायण और भगवद गीता के प्रभाव' पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी, साहित्य अकादेमी,

नई दिल्ली द्वारा केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर, जयपुर, राजस्थान के सहयोग से 8-9 जुलाई 2022 को आयोजित की गई, जिसमें डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत न केवल विश्व की अनेक भाषाओं की जननी है, बल्कि प्रकृति के अनेक विज्ञानों का स्रोत भी है। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के सदस्य तथा प्रख्यात संस्कृत लेखक प्रो. रमाकांत पांडे ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के साथ *रामायण* और *भगवद* गीता की भूमिका को स्पष्ट रूप से समझाया। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक तथा प्रख्यात संस्कृत विद्वान प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में देश को स्वतंत्रता दिलाने में संस्कृत और संस्कृत विद्वानों की भूमिका पर प्रकाश डाला। जयपुर परिसर की निदेशक डॉ. भगवती सुदेश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की, जबकि आईक्यूएसी निदेशक प्रो. रामकुमार शर्मा ने राष्ट्रीय महत्त्व के कार्यक्रम के आयोजन के लिए आगे आने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर विजयकुमार सी.जी., कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन ने की, जिसमें प्रोफ़ेसर मधुसूदन पेन्ना, प्रोफ़ेसर ललित कुमार पटेल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र के दौरान प्रो. सी. रंगनाथन, प्रो. सी.एस. राधाकृष्णन तथा प्रो. अनिल प्रताप गिरि ने पॉवरपॉइंट प्रेजेंटेशन के साथ अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र की अध्यक्षता प्रो. ललित कुमार पटेल ने की।

तृतीय सत्र '*रामायण* और *भगवत गीता* के सत्य, अहिंसा एवं सार्वभौमिक भाईचारे की प्रकृति और स्वतंत्रता सेनानियों पर उनके प्रभाव' को समर्पित था, जिसमें डॉ. राजेश कुमार जैन, डॉ. तुलसीदास परौहा और प्रोफ़ेसर शिवराम शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्विदिवसीय संगोष्ठी के दूसरे दिन की शुरुआत चतुर्थ सत्र से हुई जो 'स्वतंत्रता संग्राम के दौरान लेखन पर *रामायण* और *भगवद गीता* का प्रभाव और इसकी श्रेष्ठता' पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। प्रो. रमाकांत पांडे, प्रो. के. वरलक्ष्मी तथा प्रो. चंद्रकला आर. कोंडी ने अपने वक्तव्यों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

अंतिम तथा पंचम सत्र '*रामायण* में पात्रों के प्रभाव और स्वतंत्रता संग्राम में *भगवद गीता* की धारणा' पर केंद्रित था, जिसमें डॉ. एस. कौशल, प्रो. प्रमोद शर्मा, प्रो. कुलदीप शर्मा, प्रो. लीना सक्करवाल, डॉ. सीमा अग्रवाल, डॉ. रानी दाधीच ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर परिसर के विद्यार्थियों ने संस्कृत भाषा में एकल गीत, नृत्य एवं एकांकी जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनोरंजक प्रस्तुतियाँ भी दीं। धन्यवाद ज्ञापन दर्शनशास्त्र संकाय के प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई ने दिया।

संताली

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संताली साहित्य का योगदान विषय पर संगोष्ठी

20 नवंबर 2022, जमशेदपुर, झारखंड

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री छोटे राम माझी

साहित्य अकादेमी ने 20 नवंबर 2022 को झारखंड के जमशेदपुर में एलबीएसएम कॉलेज तथा जाहेरथान के सहयोग से 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संताली साहित्य का योगदान' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने दिया। आरंभिक वक्तव्य देते हुए, श्री मदन मोहन सोरेन ने अन्य भारतीय भाषाओं के प्रकाशन की तुलना में संताली प्रकाशनों की कमी पर बात की। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात संताली लेखक श्री छोटे राम माझी ने किया। विशिष्ट अतिथि एलएसबीएन कॉलेज, जमशेदपुर के प्राचार्य श्री अशोक कुमार झा थे। श्री झा ने संताली स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान की खोज करने और उनके प्रसंगों को संताली साहित्य में पुन: समाहित करने के महत्त्व पर बात की। बीज-वक्तव्य प्रख्यात संताली लेखक शोभनाथ बेश्रा ने प्रस्तुत किया, जिसकी अध्यक्षता जाहेरथान समिति, काराडीह के सचिव रवीन्द्रनाथ मुर्मू ने की। श्री बेश्रा ने भाषाओं के बीच मौजूदा आधिपत्य पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता भोगला सोरेन ने की, जिसमें चैतन सोरेन, दुर्गा हेम्ब्रम, कालीचरण हेम्ब्रम और स्वपन कुमार परमानिक ने सत्र के विषय "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, जैसा कि संताली नाटकों में परिलक्षित होता है" के विभिन्न पहलुओं पर बात की। द्वितीय सत्र का शीर्षक था - "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, जैसा कि संताली कथाओं और निबंधों में परिलक्षित होता है।" इस सत्र की अध्यक्षता संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री मदन मोहन सोरेन ने की। सत्र में लालचंद सोरेन, नज़ीर हेम्ब्रम तथा सुधीर चंद्र मुर्मू ने उक्त विषय की विशेषताओं पर आधारित आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, जैसा कि संताली कविता और गीतों में परिलक्षित होता है" पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता जोबा मुर्मू ने की, जिसमें अंजलि किस्कू, सिंगराई मुर्मू और सोवा हाँसदा ने सत्र के विषय पर बात की।

तमिऴ

तमिऴ साहित्य के विशेष संदर्भ में भारतीय स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष पर संगोष्ठी

22-23 अगस्त 2022, पोलाची

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

चेन्नै स्थित साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय ने एन.जी.एम. कॉलेज, पोलाची के सहयोग से 22-23 अगस्त 2022 को कॉलेज परिसर में 'तमिऴ साहित्य के विशेष संदर्भ में भारतीय स्वतंत्रता के 75वें वर्ष' विषय पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' समारोह के अंतर्गत लागू की गई साहित्य अकादेमी की साहित्यिक पहल के बारे में संक्षेप में चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे साहित्य अकादेमी अपने प्रकाशनों और योजनाओं के माध्यम से भारतीय साहित्य को बढ़ावा देने और राष्ट्र निर्माण के लिए काम करने का प्रयास कर रही है। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने साहित्य और भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध एक शीर्ष संगठन के रूप में साहित्य अकादेमी की भूमिका के बारे में बताया और साहित्य अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों की बहुमुखी शृंखला पर चर्चा की। कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. बी.के. कृष्णराज वनवरयार ने विशेष वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बुज़ुर्गों और शैक्षणिक संस्थानों का यह

कर्तव्य है कि वे युवा पीढ़ी को सद्गुण, कलावादी मूल्यों से अवगत कराएँ। उन्होंने यह भी कहा कि शिक्षण संस्थानों को छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान करने पर भी अधिक ध्यान देना चाहिए। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आर. मुथुकुमारन ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। 'विदुथलाई वेल्वियिल तमिझागम' पुस्तक के संपादक और प्रकाशक श्री स्टालिन गुणसेकरन को 'सुथंथिरा चुदर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने स्वीकृति वक्तव्य में श्री स्टालिन गुणसेकरन ने पुस्तक प्रकाशित करते समय उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पुस्तक का अंग्रेज़ी और हिंदी अनुवाद पहले ही प्रकाशित हो चुका है और यह भी बताया कि पुस्तक का तीसरा भाग अगले वर्ष प्रकाशित किया जाएगा। श्री टी.एस. चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने धन्यवाद ज्ञापित किया। प्रथम सत्र में, श्री अरुमुगा थमिज़ान ने अध्यक्षता की और 'गाँधी जी की स्वतंत्रता की अवधारणा' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वराज्य की अवधारणा को समझाते हुए कहा कि गाँधी जी आधुनिकता विरोधी नहीं थे। उनका मानना था कि जब तक कोई व्यक्ति स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर लेता, कोई राष्ट्र स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता। उन्होंने कहा, आज़ादी का अर्थ केवल देश की आज़ादी नहीं है, बल्कि किसी की मानसिक ग़ुलामी को दूर करना भी है। श्री सुनील कृष्णन ने 'गाँधी जी - समय की आवश्यकता' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने महात्मा गाँधी के अहिंसक प्रतिरोध के बारे में बताया और बताया कि कैसे उनकी रणनीतियाँ शांतिपूर्ण विरोध के लिए कुछ मूल्यवान सीख प्रदान कर सकती हैं। 'लोकगीत और लघु साहित्य में स्वतंत्रता की भावना' शीर्षक वाले द्वितीय सत्र में श्री आई.के. सुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षता की और 'वन्नाचरबम दंडपाणि स्वामीगल' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कवि-संत वन्नाचरबम दंडपाणि स्वामीगल की व्याख्या की, जिन्होंने महाकवि भारती से बहुत पहले, ब्रिटिश शासन के खिलाफ़ विद्रोह करते हुए, तमिळ में शक्तिशाली देशभक्ति गीत लिखे थे। श्री एम. पलानीअप्पन ने 'कट्टाबोम्मन, पूलिथेवन, मारुथु ब्रदर्स और वेलु नचियार' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों की हृदय विदारक पीड़ा के बारे में बताया और बताया कि कैसे उन्होंने तत्कालीन ब्रिटिश शासकों को कर देने से इनकार कर दिया था और अपनी आख़िरी साँस तक लड़ते रहे। 'रीसाउन्डिंग पोएटिक वॉयस' शीर्षक वाले तृतीय सत्र में प्रोफ़ेसर वाई. मणिकंदन ने अध्यक्षता की और 'सुब्रह्मण्यम भारती' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने चर्चा की कि कैसे महाकवि ने अपनी 'कुयिल पट्टू' और 'पाँचाली सबधम' रचनाओं में भारत माता का स्तुति-गान किया था और कैसे अंग्रेजों द्वारा कई बार चेतावनी देने और उन्हें क़ैद करने के बाद भी उन्होंने अपनी स्वतंत्रता की खोज नहीं छोड़ी। इसके बाद, श्री सेंथलाई एन. गौतमन ने 'भारतीदासन' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि कैसे भारतीदासन ने अपनी विद्रोही कविताओं में भारतियार के क्रांतिकारी आदर्शों को आत्मसात किया। डॉ. सी. सेतुपति ने 'नामक्कल कविग्नार से कोठामंगलम सुब्बू तक' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने, दांडी से गाँधी जी के नमक सत्याग्रह मार्च का अनुसरण करते हुए, नमक्कल कविग्नर ने दक्षिण में श्री रंगम से वेदारण्यम तक नमक सत्याग्रह का नेतृत्व, के बारे में बताया। उन्होंने कहा, जब अंग्रेजों ने इसे रोकने की कोशिश की, तो उन्होंने प्रसिद्ध 'कठियिन्द्री रथमिंदरी' गीत गाया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन चतुर्थ सत्र का विषय था- 'स्वतंत्रता आंदोलन में साहित्यिक विद्वान'। सत्र की अध्यक्षता डॉ. भारतीबालन ने की तथा 'फ्रॉम वा. वे. सु. अय्यर टू अय्या मुथु', विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, "हम लाखों स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों और बहादुर आत्माओं के बलिदान के कारण एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में रहने और आनंद लेने में सक्षम हुए हैं, जिन्होंने बिना भोजन और पानी के अपने जीवन का बलिदान दिया।" डॉ. पी. आनंदकुमार ने 'पी. जीवानंदम' पर आलेख प्रस्तुत किया। एक अथक सेनानी, जीवानंदम ने युवाओं की नवोदित जागृति के लिए गीत लिखे। उन्होंने कहा, जीवानंदम ने सुब्रह्मण्यम भारती के गीतों को लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच लोकप्रिय बनाया। इसके बाद,

श्री रेंगैया मुरुगन ने 'वी.ओ. चिदंबरम' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनके अथक प्रयासों के कारण ही स्वदेशी आंदोलन को दक्षिण में शक्ति और गति मिली। वह एक असाधारण प्रतिभाशाली संगठनकर्ता थे जो लोगों को राष्ट्रवादी उद्देश्यों के लिए जागृत कर सकते थे, जिससे स्वदेशी आंदोलन के सामाजिक आधार का विस्तार हुआ। तत्पश्चात डॉ. सु. वेणुगोपाल ने 'राजाजी' पर आलेख प्रस्तुत किया। 'स्वतंत्रता आंदोलन में बहुआयामी योगदान - I' शीर्षक वाले पंचम सत्र में, श्री मालन ने अध्यक्षता की तथा 'तमिऴ उपन्यास' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने आज़ादी के पहले और बाद में आए उपन्यासों की संक्षेप में चर्चा की। डॉ. के. पंजंगम ने 'तमिऴ कहानियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया तथा श्री एन. मुरुगेसा पांडियन ने 'तमिऴ जर्नल्स' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री के. पार्थीबा राजा ने 'तमिऴ नाटकों' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षेप में बताया कि कैसे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान नाटकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और साथ-साथ विश्वनाथ दास, मणिमुथु भागवतर और खादर बाशा जैसे कलाकारों के योगदान का भी उल्लेख किया, जिनके नाटकों ने तमिऴ जनता के बीच राष्ट्रीय भावना को जागृत किया। 'स्वतंत्रता आंदोलन में बहुआयामी योगदान - II' शीर्षक वाले षष्ठ तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता तमिऴ समालोचक श्री इंदिरन ने की। उन्होंने कहा, स्वतंत्रता आंदोलन न जाने कितने सारे लोगों द्वारा दिए गए बलिदान की गाथा है और इस स्वतंत्रता की रक्षा करना हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है। श्री रासी अलगप्पन ने 'तमिऴ फ़िल्म्स' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, फ़िल्में अपने दृश्य और ध्वनि प्रभाव के कारण दृश्य साक्षरता देती हैं। इसके बाद, श्री भारती कृष्णकुमार ने 'वक्तृत्व कौशल' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि नाटक मंचन सबसे आसानी से उपलब्ध होने वाला माध्यम है और यह लोगों की आकांक्षाओं के पुनर्जागरण को प्रतिबिंबित करता है। अंत में, श्री अरिमलम पद्मनाभन ने 'ऑन द म्यूजिक फ्रंट' पर आलेख प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, संगीत ने एक नए नायकत्व के भाव को अपनाया और पूरे देश में देशभक्ति का उत्साह फैलाया। उन्होंने कहा, महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती के गीतों ने पौराणिक दर्जा हासिल कर लिया है और आज भी देश भर के लोग उन्हें गाते हैं। आलेख प्रस्तुतियों के बाद, श्री इंदिरन ने समापन वक्तव्य दिया और डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। इस कार्यक्रम को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली एवं पोलाची और उसके आसपास के कई विशिष्ट साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित किया। संगोष्ठी में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, प्रोफ़ेसर, विद्यार्थी, शोधार्थी एवं साहित्य प्रेमी शामिल हुए।

असमिया

असमिया साहित्य के विकास में महिला लेखकों के योगदान पर परिसंवाद

17 अप्रैल 2022, गुवाहाटी, असम

साहित्य अकादेमी ने 17 अप्रैल 2022 को गुवाहाटी, असम में सदौ असोम लेखिका समारोह समिति के सहयोग से "असमिया साहित्य के विकास में महिला लेखकों का योगदान" विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें अरूपा पतंगिया कलिता, लुत्फा हनुम सलीमा बेगम, ज्योतिरेखा हजारिका, सुभा देवी, अनुराधा शर्मा, विभा भराली, जॉयश्री बोरा, कबिता चौधरी, पूरबी दुवारा और लीना डेका जैसे प्रसिद्ध असमिया विद्वान शामिल थे।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने दिया। बीज-वक्तव्य सुश्री अरूपा पतंगिया कलिता द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने असमिया की प्रमुख महिला लेखिकाओं का ज़िक्र किया और उनके विशिष्ट पहलुओं से श्रोताओं को अवगत कराया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सदौ असोम लेखिका समारोह समिति की अध्यक्ष सुश्री चारू सहरिया नाथ ने की। धन्यवाद ज्ञापन सादौ असोम लेखिका समारोह समिति की सचिव सुश्री थुनु कलिता ने दिया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री लुत्फा हनुम सलीमा बेगम ने की। इस सत्र में, सुश्री अनुराधा शर्मा

ने "सामाजिक परंपरा और चुनौतियाँ : महिला लेखिकाओं की चयनित असमिया कहानियाँ" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री ज्योतिरेखा हजारिका ने "असमिया कविता में महिला लेखिकाओं का योगदान (अवधि : 1938-2000)" पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री सुभा देवी ने "असमिया गीतात्मक साहित्य में लोक जीवन का प्रतिबिंब : एक विश्लेषण" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में, सुश्री जयश्री बोरा ने "असमिया महिला लेखिकाओं के सामाजिक परिप्रेक्ष्य" पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री कबिता चौधरी ने "प्रारंभिक असम की महिला लेखिकाएँ" विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अंतिम आलेख सुश्री पूरबी दुवारा द्वारा प्रस्तुत किया गया। यह "मामनी रायसोम गोस्वामी और उनके उपन्यास" पर आधारित था। समापन सत्र में, समापन वक्तव्य सुश्री लीना डेका द्वारा प्रस्तुत किया गया।

1980 के दशक के बाद के विशेष संदर्भ में असमिया रचनात्मक साहित्य में सबाल्टर्न इतिहास पर विमर्श विषय पर परिसंवाद

3 जून 2022, गोलाघाट, असम

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 3 जून 2022 को गोलाघाट में बी. आर. कॉलेज सोसाइटी फ़ॉर ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज देबराज रॉय कॉलेज के सहयोग से "1980 के दशक के बाद के विशेष संदर्भ में असमिया रचनात्मक साहित्य में सबाल्टर्न इतिहास पर विमर्श" विषय विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र पुतुल चौधरी सैकिया, पूर्व प्राचार्य, देबराज रॉय कॉलेज, गोलाघाट, द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ आरंभ हुआ। इसके पश्चात् कॉलेज के अंग्रेज़ी विभाग की छात्रा पल्लबी बरुआ द्वारा वरगीत प्रस्तुत किया गया। साहित्य अकादेमी कोलकाता के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश तथा देबराज रॉय कॉलेज के प्राचार्य श्री जयंत बारुकियाल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। इसके बाद साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के सदस्य पिकुमोनी दत्ता ने परिसंवाद के विषय पर आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। अपने संक्षिप्त विचार-विमर्श में, उन्होंने आधिपत्य और निम्नता पर अध्ययन के विकास में एंटोनियो ग्राम्शी के योगदान पर प्रकाश डाला और यह भी बताया कि 1980 के दशक के बाद के असमिया साहित्यकार हाशिए के मुद्दों पर कैसे प्रतिक्रिया दे रहे हैं। अपने बीज-वक्तव्य में, प्रसिद्ध लेखक तथा साहित्य अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के संयोजक ध्रुबज्योति बोरा ने कहा कि सच्चा साहित्य निम्नवर्गीय आवाज़ों को शामिल किए बिना अधूरा है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता देबराज रॉय कॉलेज के प्रधानाचार्य, जयंत बारुकियाल ने की। देबराज रॉय कॉलेज सोसाइटी फ़ॉर ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज के अध्यक्ष, देवोजीत फुकन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता बी. बरूआ कॉलेज, गुवाहाटी की लेखिका सह एसोसिएट प्रोफ़ेसर गीताश्री तमुली ने की। सत्र के दौरान डी. शर्मा तथा मृदुल शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'असमिया साहित्य में उप-विषमता का ऐतिहासिकीकरण : 1980 के दशक के बाद' शीर्षक वाली अपनी प्रस्तुति में, डी. शर्मा ने भारतीय उपमहाद्वीप में उत्तर-उपनिवेशवाद के ऐतिहासिक प्रपथ का अनुरेखण किया और उसमें उप-विषयकता का संदर्भ दिया। मृदुल शर्मा ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में प्रश्न उठाया : समकालीन भारतीय संदर्भ में "सबाल्टर्न कौन है?" उन्होंने लैंगिक भेदभाव और महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति के दोहरे मुद्दों को भी सामने रखा। द्वितीय तकनीकी सत्र की शुरुआत प्रख्यात लेखिका अरूपा पतंगिया कलिता की अध्यक्षता में हुई। इस सत्र के आलेख वक्ता अरबिंद

राजखोवा, अनामिका बर' और नंदिता देवी थे। रचनात्मक लेखिका के रूप में अपने अनुभवों को साझा करते हुए, अनामिका बर' ने अपने रचनात्मक लेखन में एक महत्त्वपूर्ण मुद्दे के रूप में सबाल्टर्निटी के प्रश्न पर चर्चा की। दूसरी ओर, लेखिका नंदिता देवी ने तर्क दिया कि मुख्यधारा के इतिहास पर हमेशा शासक वर्ग का वर्चस्व रहा है और इसलिए हाशिए पर रहने वाले समुदायों को अभिजात्य ऐतिहासिक विमर्श में बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। असमिया संदर्भ में सबाल्टर्निटी को परिभाषित करते हुए, अपनी समापन टिप्पणी में, अरूपा पतंगिया कलिता ने तर्क दिया कि असमिया समाज बड़े पैमाने पर सूक्ष्म है और इसलिए एक निश्चित संरचना के भीतर सबाल्टर्न स्थिति को सीमित करना समस्याग्रस्त है।

बाङ्ला

21वीं सदी में बाङ्ला कहानियाँ विषय पर परिसंवाद

14 जुलाई 2022, कोलकाता

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 14 जुलाई 2022 को अपने कार्यालय सभागार, कोलकाता में '21वीं सदी की बाङ्ला कहानियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने बाङ्ला विरासत और संस्कृति के प्रमुख माध्यम के रूप में बाङ्ला कहानियों के उद्भव पर बात की। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक शेखर बसु ने किया। बीज-वक्तव्य प्रसिद्ध विद्वान प्रोफ़ेसर हिमबंत बंद्योपाध्याय ने प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री अमर मित्रा के साथ दिया। उन्होंने समकालीन बाङ्ला कहानियों की विभिन्न विशेषताओं पर बात की और साथ ही चर्चा की कि कैसे अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में उनकी विषय वस्तु और वर्णन के तरीक़ों में बदलाव आए हैं। उन्होंने इस शैली के प्रमुख समकालीन लेखकों का भी उल्लेख किया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने किया। प्रथम शैक्षणिक सत्र में, श्री सैकत रक्षित ने 21वीं सदी की बाङ्ला कहानियों के क्षेत्र में हो रहे समकालीन कार्यों पर चर्चा की। उन्होंने उन मुद्दों के बारे में भी बात की जिन्होंने आधुनिक बाङ्ला कथाकारों को प्रभावित किया और वे उनसे कैसे निपटते हैं। श्री भास्कर लैट ने 21वीं सदी की बाङ्ला कथाओं में हाशिए की आवाज़ों की उपस्थिति पर बात की। उन्होंने अपने वक्तव्य में नबारुन भट्टाचार्य, सैयद मुस्तफ़ा सिराज और अमर मित्रा जैसे प्रमुख लेखकों का ज़िक्र किया। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर संजुक्ता दासगुप्ता ने की। द्वितीय सत्र में डॉ. अर्नब साहा ने 21वीं सदी की बाङ्ला कथाओं के नवाचार, विकास और प्रस्तुति पर बात की। अपने वक्तव्य में उन्होंने सुदीप बसु, शोभन तरफदार और द्विजेंद्र भौमिक सहित कुछ प्रतिनिधि लेखकों की ओर ध्यान आकृष्ट किया। डॉ. राहुल दासगुप्ता ने प्रकाशन उद्योग और 21वीं सदी की बाङ्ला कहानियों के पाठक वर्ग पर बात की। सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर बिस्वजीत राय ने की। परिसंवाद के बाद साहित्यिक मंच पर बाङ्ला कथा वाचन कार्यक्रम हुआ। मंच पर श्री किन्नर राय, सुश्री काबेरी रायचौधरी और सब्यसाची सरकार ने 'पुत्रार्थे', 'बामन' और 'डॉज' नामक कहानियाँ पढ़ीं। इन सभी कहानियों में कई आयामों में सामाजिक परिस्थितियों के प्रदर्शित चिन्ह के रूप में उनके पात्रों के साथ लेखक की समानुभूति को दर्शाया गया है। सत्र की अध्यक्षता श्री देवर्षि सरगी ने की। कार्यक्रम का संचालन साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने किया।

बाङ्ला कविता पर परिसंवाद

27 नवंबर 2022, सिलचर, असम

साहित्य अकादेमी ने सिलचर के एक वेबमैग-सह-प्रकाशन गृह दारुहरिद्रा के सहयोग से 27 नवंबर 2022 को असम, सिलचर में 'बाङ्ला कविता' पर परिसंवाद का आयोजन किया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने दिया। उद्घाटन वक्तव्य साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सुबोध सरकार ने दिया। उन्होंने सामान्य तौर पर बाङ्ला साहित्य में सिलचर के बाङ्ला कवियों के योगदान पर संक्षेप में बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बाङ्ला विद्वान प्रोफ़ेसर तपोधीर भट्टाचार्य ने की, जिन्होंने दर्शकों को बराक घाटी के भाषा शहीदों की विरासत से अवगत कराया। उन्होंने बराक घाटी के बाङ्ला साहित्य के विभिन्न सर्वोत्कृष्ट पहलुओं पर भी बात की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन मनोज देब ने दिया।

आलेख वाचन सत्र की अध्यक्षता श्री संजीब देबलास्कर ने की। प्रथम वक्ता अमलेंदु भट्टाचार्जी ने 'बराक' नाम के व्युत्पत्ति संबंधी अर्थ पर बात की और विस्तार से बताया कि कैसे ग़ैर-बाङ्ला दिमासा राजाओं ने घाटी में बाङ्ला साहित्यिक गतिविधियों को संरक्षण दिया। दूसरे वक्ता अमिताभ देव चौधरी ने बताया कि लेखन के आधुनिक और आधुनिकतावादी स्कूल, घाटी में बाङ्ला कवियों के मानस को कैसे प्रभावित करते हैं। उन्होंने कोलकाता और बेंगलुरु में घाटी के प्रवासी कवियों की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला। अंतिम वक्ता सुतापा चक्रवर्ती थे। उन्होंने अपने समय की काव्य जगत् की प्रवृत्तियों और भाषा शैली के बारे में बात की।

बोडो

बोडो साहित्य के बोडो महिला लेखन में नारीवाद पर परिसंवाद

18 अप्रैल 2022, कोकराझार, असम

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 18 अप्रैल 2022 को बोडो विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार के सहयोग से 'बोडो साहित्य के बोडो महिला लेखन में नारीवाद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें अंजली बसुमतारी, लिशरेम लादु सिंह, अनिल कुमार बर', इंदिरा बर', स्वर्ण प्रभा चेनरी, सुनील कुमार बसुमतारी, केनेरी बसुमतारी, लेइश्री महिलारी तथा गोबिंदो बोरो जैसे प्रसिद्ध बोडो विद्वान शामिल थे।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर अनिल कुमार बर' ने की। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव, डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने दिया। आरंभिक वक्तव्य साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री अंजली बसुमतारी द्वारा दिया गया। इस सत्र में उद्घाटन वक्तव्य बोडोलैंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफ़ेसर लैशराम लाधू सिंह ने दिया। बीज-वक्तव्य प्रोफ़ेसर इंदिरा बर', रजिस्ट्रार प्रभारी, बोडोलैंड विश्वविद्यालय तथा सदस्य, बोडो परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत किया गया। उन्होंने बोडो साहित्य में बोडो महिला लेखन में नारीवाद के बारे में बताया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभागाध्यक्ष डॉ. भौमिक चंद्र बर' ने दिया।

अगले सत्र की अध्यक्षता भी प्रोफ़ेसर अनिल कुमार बर', संयोजक, बोडो परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने की। इस सत्र में चार आलेखवक्ता थे। बोंगाईगाँव कॉलेज के बोडो विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. कनेरी बासुमतारी ने 'नारीवाद पर 'जिउ द्विमानी गुथल' कहानी : एक अध्ययन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. लेइश्री महिलारी ने 'आइज़व में नारीवाद का एक अध्ययन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। गौहाटी विश्वविद्यालय के बोडो विभाग की प्रोफ़ेसर स्वर्ण प्रभा चेनेरी ने 'बोरो महिला लेखिकाएँ और महिलाओं की आवाज़' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। अंत में, डॉ. सुनील फुकन बसुमतारी ने 'बोरो महिला लेखन में नारीवाद' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। अंत में, डॉ. अंजलि बसुमतारी, डॉ. अदाराम बसुमतारी, श्री ह्वब्था ब्रह्म और श्री सिबिसन नार्ज़ारी ने संवाद सत्र में भाग लिया।

डोगरी

'डोगरी साहित्य में प्रगतिवाद, सदाचार और कौशल व्यवहार के रंग' विषय पर परिसंवाद

27 मई 2022, पौनी, जम्मू-कश्मीर

आलेख प्रस्तुत करती हुईं सुश्री हीना चौधरी

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा द नेचेर्स लैप इंटरनेशनल स्कूल, पौनी ने 27 मई 2022 को पौनी, रियासी, जम्मू-कश्मीर में 'डोगरी साहित्य में प्रगतिवाद, सदाचार और कौशल व्यवहार के रंग' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में डोगरी भाषा के मशहूर कवियों और साहित्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता, द नेचेर्स लैप इंटरनेशनल हाई स्कूल की प्रधानाचार्य सुश्री मीनाक्षी शर्मा ने की तथा साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री राजेंद्र रांझा ने स्वागत वक्तव्य तथा आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस सत्र में प्रख्यात डोगरी समालोचक श्री यशपाल निर्मल ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। सुश्री मीनाक्षी शर्मा ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली को उनकी संस्था के साथ कार्यक्रम आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र की अध्यक्षता डोगरी भाषा के प्रसिद्ध कवि श्री गोपाल कृष्ण कोमल ने की तथा श्री बाबू भाटी ने 'डोगरी कविता में प्रगतिवाद और कूटनीतिक स्वर' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि डॉ. नरसिंह दास ने 'डोगरी नाटकों में प्रगतिवाद और कूटनीतिक स्वर' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंतिम तथा तृतीय सत्र की अध्यक्षता डोगरी भाषा के प्रसिद्ध कथाकार एवं साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित श्री राज राही ने की। इस सत्र में, श्री तरसेम रैना ने 'डोगरी कहानी में प्रगतिवाद और कौशल व्यवहार के रंग' पर आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री हीना चौधरी ने 'डोगरी उपन्यास में प्रगतिवाद और कौशल व्यवहार के रंग' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में श्री राजेंद्र रांझा ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली तथा डोगरी परामर्श मंडल की ओर से द नेचेर्स लैप हाई स्कूल, पौनी को धन्यवाद दिया, जिनके सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया जा सका। उन्होंने कहा कि अकादेमी दूर-दराज़ के क्षेत्रों में ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर आम जनता को डोगरी भाषा और साहित्य से जोड़ने का प्रयास करती है। इस कार्यक्रम में स्थानीय वरिष्ठ साहित्यकारों ने भाग लिया।

'21वीं सदी का डोगरी साहित्य : गुणवत्ता और मात्रा के विशेष संदर्भ में' विषय पर परिसंवाद

28 अक्तूबर 2022, अघर जित्तो, कटरा, रियासी, जम्मू-कश्मीर

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए श्री गोपाल कृष्ण कोमल

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा, हायर सेकेंडरी स्कूल, अघर जित्तो, कटरा, रियासी, जम्मू-कश्मीर के सहयोग से, 28 अक्तूबर 2022 को अघर जित्तो कटरा, रियासी, जम्मू-कश्मीर में '21वीं सदी का डोगरी साहित्य : गुणवत्ता और मात्रा के विशेष संदर्भ में' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रकाश प्रेमी ने साहित्य अकादेमी की ओर से कार्यक्रम में उपस्थित सभी आमंत्रित प्रतिभागियों तथा साहित्य प्रेमियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध डोगरी कवि श्री विजय वर्मा ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ. वंदना डोगरा ने स्कूल परिसर में इतना महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए, साहित्य अकादेमी तथा डोगरी परामर्श मंडल को धन्यवाद दिया। यह निश्चित रूप से युवाओं के मन में अपनी मातृभाषा के प्रति प्रेम पैदा करेगा। सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात डोगरी कवि श्री गोपाल कृष्ण कोमल ने कहा कि साहित्य अकादेमी की ओर से डुग्गर के दूर-दराज़ के इलाकों में, विशेष रूप से स्कूलों में इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करना सराहनीय है, क्योंकि ये युवा हमारी उम्मीदें हैं।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवयित्री और साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. सुषमा रानी ने की। इस सत्र में डॉ. राधा रानी द्वारा '21वीं सदी की डोगरी कहानी : मात्रा और गुणवत्ता' पर तथा डॉ. तरसीम रैना द्वारा '21वीं सदी के डोगरी उपन्यास : मात्रा और गुणवत्ता' पर आलेख प्रस्तुत किए गए। द्वितीय तथा अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि और उपन्यासकार श्री इंद्रजीत केसर ने की। इस सत्र में साहित्य अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री राजिंदर रांझा ने '21वीं सदी की डोगरी कविता : मात्रा और गुणवत्ता' पर तथा श्री जगदीप दुबे ने '21वीं सदी के डोगरी नाटक : गुणवत्ता और मात्रा' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। वहाँ उपस्थित समस्त श्रोतागण तथा विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए समस्त आलेखों की सराहना की गई।

अंत में, कार्यक्रम के संचालक श्री प्रकाश प्रेमी ने दर्शकों एवं प्राचार्य जी.एच.एस. स्कूल अघार जित्तो, को इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करने के लिए धन्यवाद दिया।

अंग्रेज़ी

'टैगोर और राष्ट्रवाद' पर परिसंवाद

9 मई 2022, नई दिल्ली

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की जयंती के अवसर पर और आज़ादी का अमृत महोत्सव के भाग के रूप में साहित्य अकादेमी ने 9 मई 2022 को अकादेमी के सभाकक्ष, तृतीय तल, रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में 'टैगोर और राष्ट्रवाद' पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें पाँच प्रतिष्ठित

लेखकों एवं विद्वानों - श्री देवेन्द्र चौबे, डॉ. मौसमी मुखर्जी, डॉ. रंजीत साहा, डॉ. रेखा सेठी और प्रो. एस.पी. गांगुली ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखक एवं विद्वान प्रो. उदय नारायण सिंह ने की।

आरंभ में, साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथि वक्ताओं का अंगवस्त्रम से स्वागत किया। उन्होंने संक्षेप में बताया कि किस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक विशाल आंदोलन रहा है और ठाकुर का मानवता में विश्वास, 'वसुधैव कुटुंबकम' दर्शन और राष्ट्रीयता पर उनके व्यापक दृष्टिकोण के बारे में भी बताया। प्रोफ़ेसर उदय नारायण सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि टैगोर के निधन पर अपने शोक संदेश में गाँधी जी ने टिप्पणी की थी - "रवींद्रनाथ टैगोर की मृत्यु से, हमने न केवल इस युग के सबसे महान कवि को खो दिया है, बल्कि एक उत्साही राष्ट्रवादी को खो दिया है जो मानवतावादी भी थे।" यह टिप्पणी प्रश्न उठाती है कि क्या टैगोर में कोई 'राष्ट्रवादी' छिपा था, जबकि आलोचक हमें लगातार बताते हैं कि टैगोर राष्ट्रवाद के विचार के विरोधी थे? हम इस जटिल प्रश्न और कुछ संबंधित मुद्दों पर ग़ौर करते हैं। उन्होंने यह कहते हुए निष्कर्ष निकाला कि राष्ट्रवाद की सीमाओं और राष्ट्र-राज्य चलाने में इसे सर्वोपरि बनाने की माँगों के बारे में, इस प्रकार की बहस से यह देखना मुश्किल नहीं है, कि टैगोर शुरू से ही वर्चस्ववादी राष्ट्रवाद के विचारों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ क्यों उठा रहे थे। चुनौती यह देखने की होगी कि क्या कोई राष्ट्रवाद के मौजूदा स्वरूप को अधिक धर्मनिरपेक्ष, अधिक लोकतांत्रिक, जातीय, धार्मिक और भाषाई सभी प्रकार के अल्पसंख्यकों - के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकता है। प्रसिद्ध हिंदी लेखक और शिक्षाविद् श्री देवेन्द्र चौबे ने कहा कि टैगोर की राष्ट्रवाद की अवधारणा के बारे में बहुत सारी कहानियाँ हैं और इतिहासकारों की भी अलग-अलग राय है, जिस पर बहुत बहस हुई है। उन्होंने कहा कि अंबेडकर, भगत सिंह, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, गाँधी-टैगोर के समकालीन रहे हैं। उन्होंने गाँधी और टैगोर के राष्ट्रवाद की अवधारणा के बारे में बात की जो एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक थी। श्री चौबे ने कहा कि टैगोर की रचनाओं *गोरा, घरे बाइरे* तथा कई अन्य पुस्तकों से कोई भी उनकी राजनीतिक समझ के बारे में जान सकता है। ओ.पी. जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फ़ॉर हायर एजुकेशन रिसर्च एंड कैपेसिटी बिल्डिंग में एसोसिएट प्रोफ़ेसर तथा उप निदेशक डॉ. मौसमी मुखर्जी ने राष्ट्रवाद पर टैगोर के उपनिवेशवाद विरोधी दृष्टिकोण के बारे में बात की। उन्होंने कहा, टैगोर ने राष्ट्रवाद के अपने विचार को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कई पत्र-पत्रिकाओं में लिखा। टैगोर ने मनुष्य की आध्यात्मिक एकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, टैगोर के लिए मन की स्वतंत्रता राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. रंजीत साहा, जो हिंदी एवं बाङ्ला के लेखक और विद्वान हैं, ने कहा कि 21वीं सदी की शुरुआत टैगोर के जीवन में कई चुनौतियाँ लेकर आई। उन्होंने निबंधों के साथ-साथ कई देशों में विभिन्न स्थानों पर टैगोर द्वारा दिए गए व्याख्यानों और कवि, चित्रकार और साहित्यकार के रूप में उनके विशाल व्यक्तित्व के बारे में बात की। इंद्रप्रस्थ महिला कॉलेज की उप-प्रधानाचार्य डॉ. रेखा सेठी ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि कोई भी टैगोर के दो पहलुओं को देख और पढ़ सकता है - एक उनके ग़ैर-काल्पनिक लेखन के माध्यम से और दूसरा एक लेखक या साहित्यकार के रूप में। टैगोर विविधता को स्वीकार करते हैं, लेकिन परिवर्तनशीलता को नहीं। टैगोर कुछ सिद्धांतों पर असहमत हैं, लेकिन राष्ट्रवाद की नई अवधारणा भी देते हैं। वह आधुनिकता को मन की स्वतंत्रता के माध्यम से परिभाषित करते हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के स्पेनिश, पुर्तगाली, इतालवी और लैटिन अमेरिकी अध्ययन केंद्र के पूर्व प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष प्रोफ़ेसर एस.पी. गांगुली ने, टैगोर के *हिज़ पैनिक रिसेप्शन ऑफ़ टैगोर* पर बात की। उन्होंने टैगोर के कार्यों का संक्षिप्त विवरण दिया, जिनका कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद किया गया है एवं मेक्सिको, स्पेन और कई अन्य देशों में टैगोर के अद्भुत प्रभाव का विवरण दिया। कार्यक्रम में कई जाने-माने लेखक और छात्र मौजूद थे।

"अंग्रेज़ी में भारतीय कविता के वर्तमान रुझान" विषय पर परिसंवाद

06 जनवरी 2023, कोलकाता

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. सुबोध सरकार

साहित्य अकादेमी ने न्यू अलीपुर कॉलेज, कोलकाता के सहयोग से 06 जनवरी 2023 को कॉलेज परिसर में परिसंवाद का आयोजन किया। प्रोफ़ेसर संजुक्ता दासगुप्ता, प्रोफ़ेसर अनीसुर रहमान, डॉ. मिहिर कुमार साहू, कार्यक्रम अधिकारी, साहित्य अकादेमी, कोलकाता तथा प्रसिद्ध कवि सुबोध सरकार ने इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। प्रो. दासगुप्ता ने स्वतंत्र भारत के विशेष संदर्भ में, अंग्रेज़ी में भारतीय कविता के उद्‌भव के बारे में बात की। उन्होंने विश्लेषण किया कि कैसे अंग्रेज़ी, भारत में एक कवि के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण भाषा बन गई है। प्रो. दासगुप्ता ने एक कविता भी सुनाई। प्रो. अनीसुर रहमान ने डेरोज़ियो से आधुनिक युग तक भारतीय कविता के विकास पर प्रकाश डाला। इस परिसंवाद की प्रासंगिकता पर बात करते हुए, प्रो. रहमान ने कहा, 'बहुत सारे कवि आज इतना लिख रहे हैं, जितना उन्होंने पहले कभी नहीं लिखा था। कवियों की संख्या बढ़ रही है तथा संभावनाओं की संख्या भी। खोजने के लिए और समझने के लिए बहुत कुछ है।' उन्होंने वर्तमान परिदृश्य में अंग्रेज़ी अनुवाद में, भारतीय कविता के महत्त्व पर भी बल दिया। डॉ. मिहिर कुमार साहू ने भारतीय कविता और अनुवाद अध्ययन से संबंधित कार्यों में साहित्य अकादेमी की हालिया परियोजनाओं के बारे में बात की। प्रख्यात कवि, सुबोध सरकार ने स्थानीय कविता के बारे में बात की, बहुसंस्कृतिवाद के युग में अनुवाद के महत्त्व पर बल दिया तथा अपनी कविता सुनाई। न्यू अलीपुर कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. जयदीप सारंगी ने कविता को राष्ट्र के हृदय में लाने तथा कवियों को मंच देने के महत्त्व पर बल दिया। अंतिम सत्र की अध्यक्षता द्विभाषी कवि गोपाल लाहिड़ी ने की। प्रो. शर्मिला राय, प्रो. बसुधरा राय, प्रो. निशी पुलगुर्था ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं। विचारोत्तेजक सत्रों से दर्शक बेहद प्रेरित हुए। कई चर्चाओं में राष्ट्र निर्माण के लिए कविता की भूमिका और समकालीन युग में भारतीय कवियों के लिए अंग्रेज़ी भाषा के महत्त्व पर बल दिया गया। संगोष्ठी में लगभग 130 छात्रों, विद्वानों तथा प्रोफ़ेसरों ने भाग लिया।

अभिग्रहण के रूप में अनुवाद पर परिसंवाद

12 जनवरी 2023, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्य अनुवाद केंद्र (सी.ई.एन.टी.आई.एल.), जादवपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से गुरुवार, 12 जनवरी 2023 को 'अभिग्रहण के रूप में अनुवाद' विषय पर ऑनलाइन परिसंवाद का आयोजन किया गया। परिसंवाद का उद्‌देश्य था कि किस प्रकार अनुवाद के रूप में अभिग्रहण ने आधुनिक भारतीय साहित्य की रूपरेखा को आकार दिया है। परिसंवाद में, एंडोट्रोपिक अनुवाद के दायरे में जाँच के लिए विभिन्न प्रश्न उठाए गए। परिसंवाद में विभिन्न भाषा/साहित्य पृष्ठभूमि के नौ वक्ता थे। सैद्धांतिक रूप तथा केस अध्ययन पर आधारित दोनों प्रकार के आलेख परिसंवाद के महत्त्वपूर्ण भाग बने।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत वक्तव्य दिया और आगामी वार्ता के लिए आधार तैयार करने के लिए परिसंवाद के विषय पर बात की। इसके बाद प्रख्यात भाषाविद् कपिल कपूर ने बीज-वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने अनुवाद में 'आदान-प्रदान' की सैद्धांतिक अवधारणाओं और भारतीय संदर्भ में 'आदान-प्रदान' के पीछे की राजनीति पर बात की। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि भारत में अनुवाद गतिविधियों को किस दिशा में आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। जादवपुर विश्वविद्यालय के भारतीय साहित्य अनुवाद केंद्र के समन्वयक सायंतन दासगुप्ता ने, सी.ई.एन.टी.आई.एल. की ओर से धन्यवाद प्रस्ताव देकर उद्‌घाटन सत्र का समापन किया।

कृष्णा मनावल्ली द्वारा संचालित, प्रथम सत्र में सुभा चक्रवर्ती दासगुप्ता, नीलुफर भरूचा और सचिन केतकर ने भाग लिया। सुभा चक्रवर्ती दासगुप्ता ने बाङ्ला और हिंदी साहित्य के केस अध्ययन के साथ अभिग्रहण के रूप में अनुवाद के कुछ मुद्दों पर बात की। नीलुफर भरूचा ने अभिग्रहण के रूप में अनुवाद की अवधारणा के अंतर्गत गुजराती लेखन पर विविध संस्कृतियों और साहित्य के प्रभाव पर चर्चा की। सचिन केतकर ने मराठी में दिलीप चित्रे के कार्य के केस अध्ययन को शामिल करते हुए, एक अलग तरीक़े से अनुवाद करने के बारे में बात की। द्वितीय सत्र में कृष्णा मनावल्ली, गौतम चौबे और अनिमेष महापात्र वक्ता थे तथा नीलुफर भरूचा ने इस सत्र का संचालन किया। कृष्णा मनावल्ली ने कन्नड अनुवाद अध्ययन की वर्तमान स्थिति के बारे में बात की और कुछ महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रश्नों पर प्रकाश डाला, जिन्होंने कन्नड अनुवाद के समकालीन परिदृश्य को आकार दिया है। इसके बाद, गौतम चौबे ने भोजपुरी ग्रंथों के अनुवाद और उनके भविष्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अन्य भाषाओं से भोजपुरी में ग्रंथों के अनुवाद का सर्वेक्षण किया, तथा भाषा में अनुवाद की जीवंत संस्कृति की अनुपस्थिति पर संबोधित करने का प्रयास किया। अनिमेष महापात्र ने ओड़िआ साहित्य के इतिहास में परिवर्तन के घटक के रूप में अनुवाद के विषय पर बात की। तृतीय सत्र में सुचित्र चट्टोपाध्याय, दीपेंदु दास तथा परवीन कुमारी ने भाग लिया तथा इस सत्र का संचालन सचिन केतकर ने किया। बाङ्ला के संदर्भ में अभिग्रहण के रूप में अनुवाद के विचार को समझने के लिए सुचित्र चट्टोपाध्याय ने एक सौ वर्षों की अवधि में किए गए मैकबेथ के चार बाङ्ला अनुवादों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। दीपेंदु दास ने अपने आलेख में असम के असमिया और बाङ्ला साहित्य के संदर्भ में, भारत के उत्तर-पूर्व पर एक प्रत्युत्तर विमर्श की शुरुआत की। अंत में, परवीन कुमार ने विशिष्ट उदाहरणों का उपयोग करके डोगरी साहित्य के अंग्रेज़ी में अनुवाद और अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के ग्रंथों के डोगरी में अनुवाद के महत्त्व पर चर्चा की। परिसंवाद में प्रत्येक सत्र के पश्चात् चर्चा में दर्शकों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

गुजराती

संत-साहित्य उत्सव : नरसिंह मेहता

31 दिसंबर 2022–01 जनवरी 2023, जूनागढ़ (गुजरात)

उद्घाटन सत्र में दीप प्रज्ज्वलन का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई और रूपायतन संस्थान, जूनागढ़ के संयुक्त तत्वावधान में संस्थान के परिसर में 31 दिसंबर 2022 – 01 जनवरी 2023 को द्वि-दिवसीय 'संत-साहित्य उत्सव : नरसिंह मेहता' विषयक साहित्य उत्सव का आयोजन किया गया। संत-साहित्य उत्सव के पहले दिन उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई के प्रभारी अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया। आरंभिक वक्तव्य में गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक विनोद जोशी ने कहा कि नरसिंह मेहता गुजराती में कविता करने वाले भारतीय कवि और गुजराती भाषा-साहित्य, संस्कृति की धरोहर हैं।

गुजराती के सुप्रसिद्ध लेखक एवं समालोचक बलवंत जानी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि कृष्ण लीला के आद्य गायक नरसिंह मेहता के भावविश्व को समझने के लिए संत-साहित्य उत्सव जैसे आयोजन अवसर देते हैं। गुजराती के सबसे लोकप्रिय कवि नरसिंह मेहता की कविताएँ लोक के कंठ में हैं और सदा रहेंगी। नरसिंह मेहता के लीला पदों को लोक ने प्रमुखता से स्वीकार किया है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के पश्चिमी क्षेत्र परामर्श मंडल के संयोजक नामदेव

ताराचंदानी ने की। सत्र के अंत में रूपायतन संस्थान के प्रबंध न्यासी हेमंत नाणावटी ने सभी अतिथि वक्ताओं का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रथम सत्र में साहित्यकार मनोज रावल ने 'नरसिंह मेहता और पश्चिम भारतीय भक्ति परंपरा' और रमेश मेहता ने 'नरसिंह मेहता की आत्मकथात्मक रचनाएँ' विषयक आलेख-पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता संत साहित्य-अभ्यासक नाथालाल गोहिल ने की। द्वितीय सत्र में आशा गोहिल ने 'नरसिंह मेहता की कृष्ण भक्ति की कविता' और निरंजन राज्यगुरु ने 'नरसिंह मेहता की ज्ञानमार्गी कविता' विषय पर आलेख-पाठ किया। इस अवसर पर निरंजन राज्यगुरु ने नरसिंह मेहता के पदों का गायन भी किया। सत्र की अध्यक्षता विनोद जोशी ने की।

संत साहित्य उत्सव के दूसरे दिन, तृतीय सत्र में 'नरसिंह मेहता और पश्चिम क्षेत्रीय संत-साहित्य' विषय पर चर्चा हुई। जिसमें अतिथि वक्ता सुरेश बबलाणी ने 'सिंधी भक्त कवि सामी और नरसिंह मेहता' और ताहेर पठान ने 'संत तुकाराम की कविता और नरसिंह मेहता' विषयक आलेखों का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने की। चतुर्थ सत्र 'नरसिंह मेहता और पश्चिम क्षेत्रीय संत-साहित्य' विषय पर ही केंद्रित रहा। जिसकी अध्यक्षता गुजराती के लेखक आलोचक हसित मेहता ने की। सत्र में 'सिंधी भाषा की भक्ति काव्य परंपरा और नरसिंह मेहता' विषय पर सिंधी साहित्यकार कलाधर मुतवा और कृष्णदास शामा ने 'नरसिंह मेहता और अन्य संत कवि' विषयक आलेख-पाठ किया।

द्वि-दिवसीय संत-साहित्य उत्सव के दूसरे दिन समापन सत्र में मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक और संत साहित्य के अध्येता सतीश बडवे ने समाहार वक्तव्य करते हुए कहा कि संत साहित्य हमारे जीवन की महत्त्वपूर्ण धारा है। गुजराती साहित्य की प्रेरणा में नरसिंह मेहता दिखाई देते हैं, जो भारतीय संत साहित्य परंपरा के उज्ज्वल स्तंभ के रूप में उपस्थित हैं। उन्होंने कहा कि मराठी संतों के अभंगों में कृष्ण की लीलाएँ हैं। भक्ति हृदय का धर्म है। संतों की रचनाएँ जनमानस को राष्ट्र एकात्मकता की ओर अग्रसर करती हैं। समापन सत्र की अध्यक्षता नामदेव ताराचंदाणी ने की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी, अध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

गुजराती साहित्य पर महर्षि श्री अरबिंदो के प्रभाव पर परिसंवाद

11 फ़रवरी 2023, गाँधीनगर

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री भाग्येश झा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने समर्पण आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज के सहयोग से श्री अरबिंदो घोष की 150वीं जयंती मनाने के लिए 'गुजराती साहित्य पर महर्षि श्री अरबिंदो का प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद का आयोजन समर्पण आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज, सेक्टर-29, गाँधीनगर के सभागार में किया गया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी अधिकारी, साहित्य अकादेमी, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने स्वागत वक्तव्य दिया। उन्होंने साहित्य अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। आरंभिक वक्तव्य प्रख्यात गुजराती कवि प्रोफ़ेसर विनोद जोशी द्वारा प्रस्तुत किया गया। गुजरात साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. भाग्येश झा ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में श्री अरबिंदो के विचारों के महत्त्व पर बल दिया। साहित्य जगत में श्री अरबिंदो द्वारा प्रभावित आध्यात्मिक विरासत अतुलनीय है। उन्होंने गुजराती साहित्य के गद्य और पद्य को भी प्रभावित किया। बीज वक्तव्य कुमारपाल देसाई ने प्रस्तुत किया, उन्होंने साहित्यिक कृतियों के दिग्गजों के बीच श्री अरबिंदो की मान्यताओं के महत्त्व पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता गाँधीनगर चैरिटेबल ट्रस्ट के

ट्रस्टी महेंद्रसिंह वाघेला ने की, जबकि राजेश मेहता ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता शरदभाई जोशी ने की, उन्होंने श्री अरबिंदो की रचनात्मकता पर आलेख भी प्रस्तुत किया। दिलीपभाई पटेल ने श्री अरबिंदो के व्यक्तित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि किरीटभाई ठक्कर ने महाकाव्य 'सावित्री' तथा उसके गुजराती अनुवाद पर चर्चा की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजेंद्र पटेल ने की, उन्होंने गुजराती कविता पर श्री अरबिंदो के प्रभाव पर अपनी अंतर्दृष्टि व्यक्त की। बारिन मेहता ने श्री अरबिंदो से प्रभावित गुजराती चरित्रों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जबकि सत्र के दूसरे आलेख वक्ता दीपक रावल ने दक्षिण के व्यापक योगदान पर अपने विचार व्यक्त किए।

धन्यवाद ज्ञापन समर्पण कॉलेज के गुजराती विभाग के प्रमुख दीपक पंड्या ने प्रस्तुत किया तथा इस कार्यक्रम में साहित्य प्रेमियों और छात्रों ने भाग लिया।

हिंदी

अखिल भारतीय दलित लेखक सम्मिलन

20 फ़रवरी 2023, नई दिल्ली

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. के. इनोक

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय दलित लेखक सम्मिलन' के पहले दिन अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए तेलुगु के प्रख्यात विद्वान और लेखक के. इनोक ने कहा कि हमें दलित नहीं बल्कि अपने को भारतीय कहना चाहिए और हम देश के संविधान के अनुसार सम्मान, न्याय और रोज़गार पाने के हक़दार हैं। भारतीय इतिहास में हमें बराबरी का दर्जा पाने के लिए एक लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी है। इससे पहले बीज वक्तव्य देते हुए प्रख्यात हिंदी आलोचक बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि दलित साहित्य की मात्र कोई एक परंपरा नहीं है बल्कि यह वैविध्यपूर्ण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अलग-अलग भाषाओं से आने के कारण उसकी जड़ें अलग-अलग स्थानों से मिलकर एक अखिल भारतीय दलित साहित्य का स्वरूप बनाती हैं। उन्होंने दलित साहित्य की दूसरी विशेषता एकत्व की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि इस एकत्व के सहारे ही हमारा समाज बराबरी वाला बनेगा। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि भारत में संतों की एक लंबी और प्रतिष्ठित परंपरा रही है, जिन्होंने हर तरीक़े की असामनता का लगातार विरोध किया। उदघाटन सत्र में साहित्य अकादेमी द्वारा हाल ही में प्रकाशित *पुस्तक गुजराती दलित कविता* का लोकार्पण भी हुआ।

कार्यक्रम का प्रथम सत्र लक्ष्मण गायकवाड़ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें जयदीप सारंगी ने अंग्रेज़ी और मोहन परमार ने गुजराती भाषाओं में दलित साहित्य की वर्तमान स्थिति और उसकी चुनौतियों पर बात की। जयदीप सांरगी ने दलित साहित्य के दस्तावेज़ीकरण की ज़रूरत पर ज़ोर देते हुए कहा कि इसमें साक्षात्कार एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में है, जिन्हें संगृहीत और विश्लेषण करना आवश्यक है। मोहन परमार ने गुजराती दलित साहित्य की चुनौतियों पर बात करते हुए कहा कि 47 साल का गुजराती साहित्य 1981 के आरक्षण आंदोलन से एक नई चुनौती पाकर आगे बढ़ा है। उन्होंने गुजराती दलित साहित्य की वर्तमान स्थिति को संतोषजनक मानते हुए कहा कि उसके सृजन में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी उत्साहवर्धक है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रख्यात मराठी लेखक लक्ष्मण गायकवाड़ ने कहा कि दलित साहित्य ही मानवता का साहित्य है और यह हमेशा मानवता को महत्त्व देता है। दलित साहित्य ने हमेशा समाज को जोड़ने का काम किया है। सम्मिलन का अगला सत्र कहानी-पाठ का था, जो, पी. शिवकामी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पीतांबर तराई

ने ओड़िआ, राकेश वानखेड़े ने मराठी और शिवबोधि ने राजस्थानी कहानी का पाठ किया।

अखिल भारतीय दलित लेखक सम्मिलन के दूसरे दिन का प्रथम सत्र 'कहानी पाठ' पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात मराठी लेखक शरण कुमार लिंबाले ने की, जिसमें धीरज्या ज्योति बसुमतारी (बर'), एच.टी.पोटे (कन्नड), सत्यजीत आर. (मलयाळम्) ने अपनी-अपनी कहानियों का पाठ किया। कविता-पाठ के अगले सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात पंजाबी कवि एवं लेखक बलबीर माधोपुरी ने की और कर्मशील भारती (हिंदी), बी.एल. पारस (राजस्थानी) दीप नारायण विद्यार्थी (मैथिली) एवं लीलाधर मंडलोई (हिंदी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

कविता-पाठ का अगला सत्र अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात गुजराती कवि जयंत परमार ने की और इसके मुख्य अतिथि प्रख्यात कन्नड लेखक एच.एस. शिवप्रकाश थे। इस सत्र में कल्याणी ठाकुर धराल (बाला), अशोक अंबर (डोगरी), वीनू बामनिया (गुजराती), रजत रानी मीनू (हिंदी), लीलेश कुडलकर (कोंकणी) एवं मदन वीरा (पंजाबी) ने अपनी-अपनी रचनाएँ मूल के साथ हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद में प्रस्तुत कीं।

'माधवराव सप्रे और उनका युग' विषय पर राष्ट्रीय परिसंवाद तथा माधवराव सप्रे विनिबंध का विमोचन

29 अगस्त 2022, भोपाल

उद्घाटन सत्र में उपस्थित प्रतिभागी

हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूत माने जाने वाले माधवराव सप्रे के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। सप्रे जी का लेखन ऐसा था जो लोगों को स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ने के लिए विवश करता है। स्प्रे जी का समय भारत को नई पहचान देने वाला था। इस राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन सप्रे संग्रहालय तथा साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। इस अवसर पर तीन विचार सत्रों में विद्वानों के वक्तव्य हुए। उद्घाटन सत्र में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति के.जी. सुरेश उपस्थित थे।

सत्र की अध्यक्षता रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति संतोष चौबे ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि चितरंजन मिश्र थे। मुख्य अतिथि के.जी. सुरेश ने कहा कि सप्रे जी ने स्वाधीनता आंदोलन के प्रति लोगों के मन में अलख जगाई। वे एक ऐसे पत्रकार थे जिन पर पहली बार राजद्रोह का मुक़दमा चला था।

सप्रे जी हिंदी के लिए तब कार्य कर रहे थे जब ब्रज भाषा और खड़ी बोली की स्थापना के लिए द्वंद्व चल रहा था। चौबे ने कहा कि आज साहित्य से इतर विषयों को हिंदी में लिखने की बात चल रही है लेकिन सप्रे जी तब आर्थिक विषयों को हिंदी में लिख रहे थे।

संग्रहालय के संस्थापक संयोजक विजयदत्त श्रीधर ने कहा कि यह वर्ष सप्रे जी का 150वाँ जन्म वर्ष है। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित *माधवराव सप्रे* विनिबंध (ले. सुशील त्रिवेदी) का विमोचन किया गया। प्रथम सत्र में माधवराव सप्रे और उनका युग विषय पर सुशील त्रिवेदी, संपादक माधवराव सप्रे ने तथा नवजागरण विषय पर कृपाशंकर चौबे और माधवराव सप्रे के निबंधों में राष्ट्रबोध पर सूचना आयुक्त विजय मनोहर तिवारी ने उद्बोधन दिया।

कन्नड

महिला एवं वर्तमान परिदृश्य पर परिसंवाद

28 जुलाई 2022, कोलार

साहित्य अकादेमी के बेंगळूरु स्थित क्षेत्रीय कार्यालय ने बेंगळूरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी के सहयोग से 28 जुलाई 2022 को कोलार में, 'महिला और वर्तमान परिदृश्य' (साहित्य

और समाज) विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, डॉ. पद्मिनी नागराजू, सदस्य, कन्नड परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी, ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया, डॉ. मनु बलिगर, सदस्य, सामान्य पार्षद, साहित्य अकादेमी, ने बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा सत्र में प्रोफ़ेसर निरंजन वनल्ली, कुलपति, बेंगळूरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी, प्रख्यात कन्नड लेखिका डॉ. धरणी देवी मालागट्टी तथा बेंगलुरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. डी. डोमिनिक और पीजी सेंटर के निदेशक डॉ. कुमुदा ने भी चर्चा में भाग लिया। प्रथम सत्र में, लेखिका और अनुवादक डॉ. तमिल सेल्वी ने 'ट्रांसजेंडर की चुनौतियों' शीर्षक पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि ट्रांसजेंडर कहलाने की समस्याओं, चुनौतिओं एवं दुविधाओं और ट्रांसजेंडर होने के जैविक कारणों से व्यक्ति को किन कठिनाइयों से गुज़रना पड़ता है। तुमकारू विश्वविद्यालय की प्रोफ़ेसर गीता वसंता ने 'महिला और पोस्ट-कोरोना साहित्यिक आयाम' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर गीता वसंता ने अपने वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार सर्वोत्तम-न्यूनतम, प्रबल-निर्बल प्रकार के द्विआधारी विपरीत मानकों से, महिलाओं के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार किया जाता रहा। इस ब्रेक-अप ने कोविड के बाद के समय में, महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को प्रस्तुत किया। समापन सत्र में समापन वक्तव्य श्रीमती अक्कई पद्मशाली द्वारा प्रस्तुत किया गया। उनके विचारों से स्पष्ट था, कि 'जन्म महत्त्वपूर्ण नहीं, जीवन महत्त्वपूर्ण है।' डॉ. डोमिनिक ने कन्नड भाषा संरचना में विरोधाभासी आयाम पर चर्चा की तथा तीसरे आयाम और बहु-लिंगी मुद्दों के भाषाई प्रदर्शन के विचार पर भी अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र में बेंगळूरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफ़ेसर निरंजन वनल्ली, बेंगळूरु नॉर्थ यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. डी. डोमिनिक तथा पीजी सेंटर के निदेशक डॉ. कुमुद तथा कन्नड परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती पद्मिनी नागराजू उपस्थित थीं।

कोंकणी

कोंकणी भक्ति साहित्य पर परिसंवाद

16 दिसंबर 2022, मडगाँव, गोवा

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री कमलाकर म्हाळशी

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई तथा कोंकणी भाषा मंडल, मडगाँव के संयुक्त तत्वावधान में 16 दिसंबर 2022 को स्थानीय सभागार में 'कोंकणी भक्ति साहित्य' विषय पर परिसंवाद आयोजित किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के आरंभ में साहित्य अकादेमी, मुंबई कार्यालय के प्रभारी अधिकारी ओम प्रकाश नागर ने स्वागत वक्तव्य दिया। परिसंवाद की अध्यक्षता कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने की। परिसंवाद का आरंभिक वक्तव्य कोंकणी भाषा मंडल की अध्यक्ष अन्वेषा सिंगबाळ ने दिया।

परिसंवाद के अपने उद्घाटन वक्तव्य में कोंकणी साहित्यकार कमलाकर म्हाळशी ने कोंकणी साहित्य में भक्ति काव्य के विविध संदर्भ और परंपराओं को रेखांकित किया। उन्होंने संत कवि कृष्ण दास शामा के भक्ति काव्य के उदहारण भी इस अवसर उल्लेखित किए। अपने बीज-वक्तव्य में कोंकणी लेखक एवं समालोचक सुशांत नायक ने कहा कि भारतीय और कोंकणी भक्ति साहित्य परंपरा में हमें राष्ट्रीयता का बोध होता है, जिसमें आध्यात्मिकता प्रमुख है।

परिसंवाद के चर्चा सत्र में कोंकणी साहित्यकर योगिता वेर्णेकर, जुजे सिल्वैर, सबिना मुल्ला और गुणाजी देसाय ने विविध धर्मों के भक्ति साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्र की अध्यक्षता सुपरिचित कोंकणी कवि आर.एस.

भास्कर ने की। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कोंकणी लेखक एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

सेबास्तियाँव रोदोल्फ़ो दाल्गादो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिसंवाद

07 मई 2022, मापुसा, गोवा

उद्घाटन सत्र का दृश्य

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने सेंट जेवियर्स कॉलेज, मापुसा, गोवा के सहयोग से 07 मई 2022 को कोंकणी परिसंवाद 'सेबास्तियाँव रोदोल्फ़ो दाल्गादो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

इस एक दिवसीय परिसंवाद की अध्यक्षता कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक भूषण भावे ने की। आरंभिक वक्तव्य सेंट जेवियर्स कॉलेज के प्रधानाचार्य ब्लैंच मासेरानहास ने प्रस्तुत किया। बीज-वक्तव्य मौज़ो डी. एटाइड द्वारा प्रस्तुत किया गया, जबकि उद्घाटन वक्तव्य एलिसिया मेनेजेस ने प्रस्तुत किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र में कोंकणी विद्वान लुईस ने, दाल्गादो के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। पूर्णानंद चारी ने दाल्गादो की कविता पर विस्तार से चर्चा की।

परिसंवाद के द्वितीय सत्र में, दामोदर घाणेकर ने शब्दकोश पर दाल्गादो के विशेष कार्य के बारे में चर्चा की। इस सत्र की अध्यक्षता काजमा फर्नांडिस ने की।

मैथिली

'मैथिली लोक साहित्य और संस्कृति में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ' पर परिसंवाद

11 जनवरी 2023, आभासी मंच

परिसंवाद का दृश्य

अपनी 'वेबलाइन साहित्य शृंखला' के अंतर्गत साहित्य अकादेमी ने 11 जनवरी 2023 को प्रात: 10:30 बजे से यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीमिंग के साथ, ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से वर्चुअल मोड पर 'मैथिली लोक साहित्य और संस्कृति में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ.एन. सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि लोक साहित्य स्वयं प्रकृति से जुड़े होने का संकेत देता है क्योंकि उसके साहित्य का पर्यावरण से अभिन्न संबंध है। उन्होंने कहा कि आज ग्लोबल वार्मिंग के समय में जल, भूमि और अन्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण लेखकों के सामने मुख्य मुद्दा है, क्योंकि मानवता इसकी माँग करती है। विशिष्ट मैथिली साहित्यकार डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने अपने आरंभिक वक्तव्य में मैथिली साहित्य की विशिष्टता एवं इसके अनोखेपन तथा इस भाषा में संरक्षण की परंपरा को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि सभी प्राचीन और आधुनिक लेखन प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए सलाह से भरे हुए हैं और मैथिली उनमें से एक है। प्रसिद्ध मैथिली लेखक श्री अजीत आजाद

ने बीज-वक्तव्य दिया और साहित्य के संरक्षण के लिए चेतना की आवश्यकता पर बल दिया, जो उनके अनुसार हमेशा किसी भी समाज के सांस्कृतिक लोकाचार का एक दस्तावेज़ होता है। प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. महेंद्र नारायण राम ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि मैथिली साहित्य सदैव प्रकृति से जुड़ा रहा है, विशेषकर मैथिली लोक साहित्य। मैथिली लोकगीतों और महाकाव्यों की अभिव्यक्तियाँ प्रकृति के उन रहस्यों को उजागर करती हैं, जिनसे मानव जाति भयमुक्त होकर दीर्घकाल तक जीवित रह सकती है। लेकिन, वैश्वीकरण के कारण एक लेखक की भूमिका में कई गुना वृद्धि हुई है और समय की माँग है कि लेखक की बिरादरी इन रहस्यों को उजागर करके प्रकृति के संबंध में प्रेरित हो।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखक प्रोफ़ेसर कमलानंद झा, हिंदी के प्रोफ़ेसर, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने की। श्रीमती रूपम झा ने 'मैथिली त्योहारों के गीतों में पर्यावरण संबंधी चिंता' पर, श्री पंकज प्रियांशु ने 'मैथिली लोक महाकाव्यों में पर्यावरण संबंधी चिंता' पर, तथा श्री राज किशोर मिश्र ने 'मिथिला के सांस्कृतिक पहलुओं में पर्यावरणीय चिंता' पर आलेख प्रस्तुत किए। अपने समापन वक्तव्य में, डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कार्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा मैथिली लेखक बिरादरी से इसे महत्त्व देने का अनुरोध किया। अंत में, डॉ. एन. सुरेश बाबू ने इस समय के एक उत्कृष्ट कार्य को संबोधित करने के लिए, साहित्य अकादेमी के साथ सहयोग करने के लिए समस्त प्रतिभागियों और श्रोताओं को धन्यवाद दिया।

ज्योतिरीश्वर, महाकवि विद्यापति, मनबोध, कवीश्वर चंदा झा और जीवन झा विषयक 'पुनर्पाठ' परिसंवाद

24 जनवरी 2023, आभासी मंच

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने अपनी 'वेबलाइन साहित्य शृंखला' के अंतर्गत यूट्यूब पर लाइव स्ट्रीमिंग के साथ ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से वर्चुअल मोड पर ज्योतिरीश्वर, महाकवि विद्यापति, मनबोध, कवीश्वर चंदा झा और जीवन झा विषयक 'पुनर्पाठ' परिसंवाद का आयोजन 24 जनवरी 2023 को प्रात: 10:30 बजे किया गया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने स्वागत वक्तव्य दिया और कहा कि साहित्य अकादेमी ने इस प्रकार के परिसंवाद का आयोजन पहली बार किया है। उन्होंने ऐसे महान लेखकों के साहित्यिक योगदान को समझने के लिए ऐसे पुनर्पाठ कार्यक्रमों पर भी बल दिया, जिनके लेखकों की प्रासंगिकता वर्षों तक रहेगी। उन्होंने प्रत्येक लेखक की साहित्यिक कृतियों को भी पढ़ा, जिस पर परिसंवाद केंद्रित था। अपने आरंभिक वक्तव्य में, प्रतिष्ठित मैथिली साहित्यकार डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने समाज की चेतना को एक प्रगतिशील राज्य की ओर बदलने में लेखकों की भूमिका को रेखांकित किया, जिससे पृथ्वी पर मानव जाति का संवर्धन हो सके। उन्होंने सामान्य रूप से सभी मैथिली लेखकों और विशेष रूप से महाकवि विद्यापति के साहित्यिक कार्यों का भी स्पष्ट रूप से उल्लेख किया, जो बड़े पर्दे पर मैथिली साहित्य के पथ को प्रदर्शित करने में अपने पिछले वर्षों के समकालीन विद्वानों से प्रभावित थे। प्रख्यात मैथिली लेखक डॉ. पंकज पराशर ने अपना

बीज-वक्तव्य देते हुए, मैथिली लेखकों की तुलना उनके समकालीन हिंदी लेखक बिरादरी से करते हुए पुनर्पाठ कार्यक्रम की भूमिका बताई। प्रख्यात मैथिली नाटककार श्री महेंद्र मलंगिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उत्कृष्ट कार्यों के लिए समाज के निर्माण में लेखक की भूमिका के बारे में चर्चा की। उन्होंने विशेष रूप से महाकवि विद्यापति से लेकर मैथिली में भक्ति साहित्य के स्थान का उल्लेख किया, जो बाद में मैथिली में कई साहित्यिक परिवर्तनों के प्रतीक बने। उन्होंने कवीश्वर चंदा झा की *रामायण* का भी वर्णन किया।

आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रतिष्ठित मैथिली लेखक श्री रामानंद झा 'रमन' ने की। डॉ. विद्यानंद झा ने 'ज्योतिरीश्वर पर पुनर्पाठ' पर, प्रो. वंदना झा ने 'महाकवि विद्यापति पर पुनर्पाठ' पर, श्री अजित आज़ाद ने 'मनबोध पर पुनर्पाठ' पर, डॉ. अरविंद कुमार सिंह झा ने 'कवीश्वर चंदा झा पर पुनर्पाठ' पर तथा डॉ. कमल मोहन चुन्नू ने 'जीवन झा पर पुनर्पाठ' पर उपयुक्त उदाहरणों के साथ अपने आलेख प्रस्तुत किए, जो आज की स्थिति के लिए प्रासंगिक हैं। अपने समापन वक्तव्य में डॉ. अशोक कुमार झा 'अविचल' ने एक अनूठे कार्यक्रम के आयोजन के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया तथा मैथिली लेखकों से इसके लिए आवश्यक क़दम उठाने का अनुरोध किया। अंत में, डॉ. एन. सुरेश बाबू ने समस्त प्रतिभागियों तथा श्रोताओं को सहभागिता एवं साहित्य अकादेमी के साथ उनके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

मलयाळम्

मलयाळम् उपन्यास के प्रपथ पर परिसंवाद

13 सितंबर 2022, तिरुवनंतपुरम

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए डॉ. जॉर्ज ओनाक्कूर

विभाग, मार इवानियोस कॉलेज के सहयोग से 13 सितंबर 2022 को तिरुवनंतपुरम में 'मलयाळम् उपन्यास के प्रपथ' पर परिसंवाद का आयोजन किया। उद्घाटन सत्र में, मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य, श्री एल. वी. हरिकुमार ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा उनका परिचय दिया तथा मलयाळम् साहित्य को बढ़ावा देने के लिए साहित्य अकादेमी की विभिन्न पहलों के बारे में संक्षेप में बात की। अपने आरंभिक वक्तव्य में, कॉलेज के प्राचार्य, प्रोफ़ेसर जिजिमोन थॉमस ने कॉलेज में परिसंवाद के आयोजन के लिए अकादेमी को धन्यवाद दिया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री प्रभा वर्मा, संयोजक, मलयाळम् परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने मलयाळम् उपन्यास के विकास के बारे में बात की और कहा कि "उपन्यास एक सामाजिक दस्तावेज़ है। उपन्यास के साहित्यिक रूप में ऐतिहासिक विकास हुआ है। मलयाळम् उपन्यास भी इस तथ्य को स्पष्ट करता है।" अपने उद्घाटन वक्तव्य में, प्रख्यात विद्वान डॉ. जॉर्ज ओनाक्कूर ने कहा कि मलयाळम् उपन्यास विविधता की एक विशाल दुनिया के द्वार खोलते हैं। उपन्यास के इतिहास के अध्ययन से केरल के सांस्कृतिक इतिहास को समझा जा सकता है। रेव. फ़ादर सोजी मुरुप्पेल ने अभिनंदन किया और कॉलेज की उप प्राचार्य डॉ. शर्ली स्टुअर्ट ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में, सेंट जॉन्स कॉलेज, अंचल के मलयाळम् विभाग की प्रोफ़ेसर तथा विभागाध्यक्ष डॉ. मैरी एम. अब्राहम ने सत्र की अध्यक्षता की। एमजी यूनिवर्सिटी के मलयाळम् स्कूल ऑफ़ लेटर्स के प्रोफ़ेसर पी.एस. राधाकृष्णन ने 'उपन्यास : लोकप्रिय संस्कृति का रसायन शास्त्र' पर आलेख प्रस्तुत किया। एसएन कॉलेज, वर्कला में मलयाळम् विभाग की प्रोफ़ेसर तथा विभागाध्यक्ष डॉ. निथ्या पी. विश्वम ने 'मलयाळम् उपन्यास में महिलाएँ : अनुभव और अभिव्यक्ति' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में, केरल विश्वविद्यालय के ओरिएंटल रिसर्च एंड पांडुलिपि लाइब्रेरी के विभागाध्यक्ष, प्रोफ़ेसर आर.बी. श्रीकला ने अध्यक्षता की और

आलोचक श्री चंद्रशेखरन थिक्कोडी ने 'उपन्यास में देशभक्ति' पर आलेख प्रस्तुत किया। अंतिम आलेख प्रस्तुति सहायक प्राध्यापक डॉ. राजेंद्रन एडाथुमकारा, सरकारी कॉलेज मदप्पल्ली, मलयाळम् विभाग द्वारा 'मलयाळम् उपन्यास का भविष्य' पर की गई। प्रो. जिजिमोन के. थॉमस ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। उपन्यासकार वी. जे. जेम्स ने सत्र का उद्घाटन किया। केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक अध्ययन के डीन तथा साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद के सदस्य, प्रोफ़ेसर एन. अजित कुमार ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। डॉ. सजिता बी. एल. सहायक प्रोफ़ेसर मार इवानिओस कॉलेज ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मणिपुर

खोंगजोम युद्ध और शहीदों को काव्यात्मक श्रद्धांजलि पर परिसंवाद

23 अप्रैल 2022, इंफ़ाल

आरंभिक वक्तव्य देते हुए श्री एन. किरणकुमार सिंह

साहित्य अकादेमी ने ए.एस.एच.ई.आई.एल.यू.पी. और जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी के सहयोग से 23 अप्रैल 2022 को जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी, इंफ़ाल के सभागार में 'खोंगजोम युद्ध और शहीदों को काव्यात्मक श्रद्धांजलि' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें शरतचंद्र लोंगजोम्बा, दिलीप मायेंगबम, एन. किरणकुमार सिंह, पी. नबचंद्र सिंह, ठा. टोम्बी सिंह, एस. लानचेनबा मीतेई, डब्ल्यू. कुमारी चानू, युमलेम्बम इबोम्चा सिंह, आर.के. भुबोनसाना सिंह, बीरेंद्रजीत नाओरेम, शांतिबाला देवी, अरंबम मेमचौबी, सबिता सौबम, एल. इबेमहल, एस. प्रह्लाद शर्मा, डी. कोन्सम, उमा मायेंगबाम, शरतचंद थियाम, टी. सुनीतिबाला और थबाटोम्बी सहित प्रसिद्ध मणिपुरी विद्वानों और लेखकों ने भाग लिया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने दिया। आरंभिक वक्तव्य श्री एन. किरणकुमार सिंह, संयोजक, मणिपुरी परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य अकादेमी के निदेशक श्री पी. विलास के विशिष्ट अतिथि के वक्तव्य के पश्चात्, सत्र के अध्यक्ष श्री दिलीप मायेंगबाम ने मणिपुरी साहित्य पर खोंगजोम युद्ध के प्रभाव की चर्चा की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री पी. नबचंद्र सिंह ने की। सत्र में, श्री एस. लैनचेनबा मीतेई ने खोंगजोम युद्ध के प्रभाव पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री ठा. तोम्बी सिंह ने मणिपुरी चित्रकला में खोंगजोम युद्ध के चित्रण पर आलेख प्रस्तुत किया। डब्ल्यू कुमारी चानू ने मणिपुरी कविता पर खोंगजोम युद्ध के प्रभाव पर आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री युमलेम्बम इबोम्चा सिंह ने की। इस कविता-पाठ सत्र में, अरंबम ओंगबी मेमचौबी देवी, सबिता सौबम, एल. इबेम्हल, एस. प्रह्लाद शर्मा, डी. कोनसम, उमा मायेंगबम, श्री शांतिबाला देवी और टी. सुनीतिबाला सहित लगभग 27 प्रसिद्ध मणिपुरी कवि शामिल हुए, जिन्होंने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

मणिपुरी साहित्य में हास्य और व्यंग्य पर परिसंवाद

24 अप्रैल 2022, इंफ़ाल

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने मणिपुरी साहित्यिक सोसायटी, इंफ़ाल के सहयोग से 'मणिपुरी साहित्य में हास्य और व्यंग्य' विषय पर 24 अप्रैल 2022 को इंफ़ाल में परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें शरतचंद्र लोंगजोम्बा, एन. किरणकुमार सिंह, एम. प्रियब्रत सिंह, के. शांतिबाला देवी, टी. कुंजेशोर सिंह, ख. इनाओबी, एन. अरुणा देवी, माया नेप्राम, एस. सुभासिनी तथा बी. सुरेश शर्मा जैसे प्रसिद्ध मणिपुरी लेखकों और विद्वानों ने भाग लिया।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने प्रस्तुत किया। शरतचंद्र लोंगजोम्बा ने श्री एन. किरणकुमार सिंह की अध्यक्षता में परिसंवाद का उद्घाटन किया। प्रथम सत्र में डॉ. माया नेप्रम, डॉ. सैखोम घनश्याम नेपरम तथा डॉ. तेनसुबम कुंजेशोर सिंह ने प्रोफ़ेसर नाहकपम अरुणा देवी की अध्यक्षता में अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. नेपरम ने मणिपुरी कहानियों में हास्य और व्यंग्य पर बात की, वहीं डॉ. घनश्याम तथा डॉ. कुंजेशोर ने क्रमशः मणिपुरी लोक साहित्य और मणिपुरी कविता में हास्य और व्यंग्य पर आधारित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर मोइरांगथेम प्रियोब्रत सिंह ने की। सत्र में, श्री गुरुमायुम बिजॉयकुमार शर्मा, डॉ. खोइसनाम इनाओबी सिंह तथा सुश्री एस. शोभारानी देवी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। जबकि श्री बिजॉयकुमार ने मणिपुरी रेडियो नाटक में परिलक्षित हास्य और व्यंग्य की ओर ध्यान आकृष्ट किया, डॉ. इनाओबी सिंह ने मणिपुरी में जीवनी साहित्य पर प्रकाश डाला।

मराठी

वामनदादा कर्डक : व्यक्तित्व और कृतित्व जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

10 दिसंबर 2022, मुंबई

उद्घाटन वक्तव्य देते हुए श्री अर्जुन डांगले

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई ने 10 दिसंबर 2022 को वामनदादा कर्डक की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर, अपने सभागार में 'वामनदादा कर्डक : व्यक्तित्व और कृतित्व जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद का आयोजन किया। डॉ. ओम प्रकाश नागर, प्रभारी अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई ने उपस्थित अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध मराठी लेखक अर्जुन डांगले ने कहा कि वामनदादा कर्डक सांस्कृतिक रूप से वंचितों के आदर्श थे। उनकी कविताएँ जनता की आवाज़ थीं। योगीराज बागुल ने अपने बीज-वक्तव्य में वामनदादा के संस्मरणों को साझा किया। श्री राजन गावस ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि वामनदादा जन प्रतिनिधि सभाओं में काम करने में विश्वास रखते थे। उनकी कविता में आम आदमी के दु:ख का चित्रण था।

'वामनदादा कर्डक की कविता' विषय पर आधारित प्रथम सत्र की अध्यक्षता संभाजी भगत ने की, जबकि राकेश वानखेड़े और अनिल सपकाल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 'बुद्ध, फुले, अंबेडकर और वामनदादा कर्डक के

कार्य' विषय पर आधारित द्वितीय सत्र की अध्यक्षता राजन गावस ने की, जबकि मंगेश बंसोड़ और गणेश चंदनशिवे ने संबंधित विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के दौरान संभाजी भगत और गणेश चंदनशिवे ने वामनदादा कर्डक की कविताओं का पाठ किया। परिसंवाद में साहित्य प्रेमियों और मीडिया ने भाग लिया।

नेपाली

भारतीय नेपाली कविता और उसके विभिन्न रुझान पर परिसंवाद

03 जुलाई 2022, सोनितपुर, असम

स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. खेमराज नेपाल

साहित्य अकादेमी ने असम नेपाली साहित्य सभा, सोनितपुर के सहयोग से 'भारतीय नेपाली कविता और उसके विभिन्न रुझान' पर परिसंवाद का आयोजन किया तथा लोकनायक अमिया कुमार दास महाविद्यालय, बेजबरुआ क़ॉन्फ्रेंस हॉल, ढेकियाजुली, असम में प्रख्यात नेपाली लेखक छविलाल उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन भी किया।

उद्घाटन सत्र की शुरुआत हिम सागर उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं कुछ वैदिक भजनों के पाठ के साथ की गई तथा इसके पश्चात् गोरखा महिला समूह द्वारा सामूहिक गायन प्रस्तुत किया गया। सोनितपुर नेपाली साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री दिल्लीराम खनाल ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. खेमराज नेपाल ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं भारतीय नेपाली कविता और इसके विभिन्न रुझानों के साथ-साथ समकालीन नेपाली साहित्य का संक्षिप्त विवरण दिया। सत्र के विशिष्ट अतिथि, सोनितपुर ज़िला समिति, असम नेपाली साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष, श्री गुरु प्रसाद उपाध्याय ने, आधुनिक भारतीय नेपाली कविता पर इस प्रकार की चर्चा के साथ-साथ, प्रख्यात नेपाली लेखक और नेपाली में साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता, श्री छविलाल उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के आयोजन के लिए आयोजकों की सराहना की। उद्घाटन सत्र के अंत में श्री देबराज उपाध्याय ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

प्रथम शैक्षणिक सत्र क्रमश: डॉ. दैबकी देवी तिम्सिना, श्री चंद्र प्रसाद घिमिरे और श्रीमती सुदक्षिणा देवी के तीन आलेख-पाठ के साथ आरंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता श्री ज्ञान बहादुर छेत्री ने की। प्रस्तुत किए गए आलेखों के क्रमश: विषय इस प्रकार थे - विभिन्न प्रभागों वाली भारतीय नेपाली कविता और आधुनिक काल में उनकी बढ़ती प्रवृत्तियाँ; आधुनिक भारतीय नेपाली कविता में लोक संस्कृति के प्रतिबिंब; तथा भारतीय नेपाली कविता में गीतों अथवा छंदों और विभिन्न छंदात्मक रचनाओं के एकाधिक अनुप्रयोग और उनकी प्रासंगिकता। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. जमदग्नि उपाध्याय ने की, जिसमें श्री मोहन सुबेदी, श्री रेबती उपाध्याय और श्रीमती नवप्रभा देवी द्वारा तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। द्वितीय सत्र में प्रस्तुत किए गए आलेखों के क्रमश: विषय इस प्रकार थे- आधुनिक भारतीय नेपाली कविता में उत्तर औपनिवेशिक चेतना; आधुनिक भारतीय नेपाली कविता में पर्यावरण जागरूकता; तथा आधुनिक भारतीय नेपाली कविता में महिला जागरूकता। दोनों सत्रों के बाद इंटरैक्टिव सत्र हुआ। दिन भर चले कार्यक्रम का अंतिम सत्र प्रख्यात कवि, आलोचक और अनुवादक श्री छविलाल उपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम था।

स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य में मनोविज्ञान पर परिसंवाद

12 जून 2022, भुवनेश्वर

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने बीराबारा जयंती परिषद, भुवनेश्वर के सहयोग से 12 जून 2022 को बुद्ध मंदिर, यूनिट-4, भुवनेश्वर, ओडिशा के सम्मेलन कक्ष में 'स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य में मनोविज्ञान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िआ लेखक और आईएएस (सेवानिवृत्त) रबीनारायण सेनापति ने किया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. बिजयानंद सिंह, संयोजक, ओड़िआ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा डॉ. बिष्णुप्रिया ओट्टा, सदस्य, ओड़िआ परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में, रबीनारायण सेनापति ने कहा कि किशोरों और छोटे बच्चों के मनोविज्ञान में बहुत अंतर होता है और जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, मनोविज्ञान बदलता जाता है। इस अवसर पर, प्रख्यात ओड़िआ लेखक मनिन्द्र मोहंती ने अपने शोधपरक बीज-वक्तव्य में कहा कि बाल साहित्य के अनुसंधान के क्षेत्र में, विशेषकर बाल मनोविज्ञान में, कई चीज़ें अभी भी प्रतीक्षारत हैं। उद्घाटन सत्र बीराबारा जयंती परिषद के सदस्य निरंजन त्रिपाठी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता शरत कुमार बिश्वाल ने की। इस सत्र में दो प्रख्यात शोधकर्ताओं, गोविंद चंद्र चाँद तथा प्रशांत कुमार दास ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए। दोनों शोधकर्ताओं ने ओड़िआ बाल साहित्य के उल्लेखनीय लेखकों को रेखांकित किया और मनोविज्ञान के प्रतिबिंब तक पहुँचने का प्रयास किया, विशेषरूप से स्वतंत्रता के बाद के समय में तथा उनके विचारों का निचोड़ यह था कि प्रत्येक बच्चा विशेष और अद्वितीय है। सत्र का समापन प्रताप कुमार सेनापति द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता शरत कुमार नायक ने की तथा इस सत्र में सुनामनी राउत और निर्मला कुमारी महापात्रा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र गिरिजा भूषण ओट्टा द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संपन्न हुआ।

'ओडिशा में महिला शिक्षा : मधुसूदन दास का मौलिक योगदान' विषय पर परिसंवाद

28 मई 2022, भुवनेश्वर

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने मधुसूदन दास रिसर्च चेयर, के.आई.एस.एस. के सहयोग से 28 मई 2022 को के.आई.एस.एस.-डी.यू., भुवनेश्वर के कॉन्फ्रेंस हॉल में 'ओडिशा में महिला शिक्षा : मधुसूदन दास का मौलिक योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता के.आई.एस.एस.-डी.यू. के कुलपति प्रोफ़ेसर दीपक कुमार बेहरा ने की। कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा गाए गए 'मधु बाबू' गीत से हुई। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने स्वागत वक्तव्य दिया। प्रो. बिजयानंद सिंह, संयोजक, ओड़िआ परामर्श मंडल तथा प्रो. गोपबंधु, अनुसंधान अध्यक्ष, के.आई.एस.एस.-डी.यू.

ने अपने आरंभिक वक्तव्य में, मधुसूदन दास के जीवन और गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्रोफ़ेसर जुगल किशोर मिश्र, चेयर प्रोफ़ेसर, मधुसूदन दास रिसर्च चेयर, के.आई.एस.एस.-डी.यू. ने परिसंवाद के विषय का विवरण साझा किया। प्रोफ़ेसर नागराजू, कुलपति, जी.एम. विश्वविद्यालय, संबलपुर ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में, महिला सशक्तिकरण में मधुसूदन दास के मौलिक योगदान पर प्रकाश डाला। प्रख्यात लेखक प्रोफ़ेसर प्रफुल्ल कुमार मोहंती ने मधुसूदन के बारे में कुछ अनदेखे सच उजागर किए। प्रोफ़ेसर जतींद्र कुमार नायक, प्रोफ़ेसर एमेरिटस, के.आई.एस.एस.-डी.यू. ने अपने बीज-वक्तव्य में उत्कल गौरव, मधुसूदन दास के कार्यों का उल्लेख किया। डॉ. प्रशांत कुमार राउत्रे, रजिस्ट्रार, के.आई.एस.एस.-डी.यू. ने इस सहयोगात्मक परिसंवाद के आयोजन के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में बताया।

'ओडिशा में महिला शिक्षा : मधुसूदन दास का मौलिक योगदान' विषय पर आधारित परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर स्वर्णमयी त्रिपाठी, प्रोफ़ेसर एमेरिटस के.आई.एस.एस.-डी.यू. ने की। प्रख्यात लेखिका डॉ. हिरण्मयी मिश्रा ने 'ओडिशा में महिला शिक्षा : मधुसूदन दास का मौलिक योगदान' विषय पर विद्वत्तापूर्ण आलेख प्रस्तुत किया। अंग्रेज़ी के सेवानिवृत्त रीडर डॉ. चितरंजन मिश्र ने समग्र रूप से शिक्षा और विशेष रूप से महिला शिक्षा के प्रति मधुसूदन दास के प्रभावशाली योगदान पर बात की। मधुसूदन दास की विदुषी अध्येता डॉ. अनिता साबत ने मधुसूदन के जीवन-मूल्यों पर बात की। उन्होंने बताया कि मधु बाबू किस प्रकार लोकल के लिए वोकल और ग्लोबल के लिए लोकल थे। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता के.आई.एस.एस.-डी.यू. के अंग्रेज़ी विभाग के वरिष्ठ प्रोफ़ेसर अशोक महापात्र ने की। लेखक और समालोचक डॉ. अरुण कुमार मोहंती ने मधुसूदन के लेखन का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया तथा फकीर मोहन सेनापति के साथ समानता की तुलना की। वरिष्ठ प्रोफ़ेसर और मधुसूदन दास के विद्वान अध्येता प्रीतीश आचार्य ने मधुसूदन के समावेशी शिक्षा के विचार पर बात की। प्रोफ़ेसर अशोक कुमार महापात्र ने मधुसूदन दास के कुछ प्रासंगिक पहलुओं पर चर्चा करते हुए सत्र का सारांश प्रस्तुत किया। डॉ. सुजाता आचार्य ने अध्यक्ष, विशिष्ट अतिथियों तथा सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। सुश्री शाश्वती जेना ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

पंजाबी

हरनाम दास सहराई पर परिसंवाद

7 अप्रैल 2022,आभासी मंच

आरंभिक वक्तव्य देती हुईं डॉ. वनीता

साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल की ओर से पंजाबी के विख्यात लेखक, उपन्यासकार, गद्यकार, कवि हरनाम दास सहराई की जन्मशताब्दी को ऑनलाइन आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम वैसे तो अप्रैल 2020 में उनकी जन्मशताब्दी पर मनाया जाना था, परंतु कोविड 19 के प्रारंभ होने से यह कार्यक्रम स्थगित होता गया। अंततः इस परिसंवाद का आयोजन 7 अप्रैल 2022 को वैबसीरीज़ के रूप में आयोजित किया गया, जिसमें पंजाबी परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वनीता ने लेखक का परिचय देते हुए इस बात पर अफ़सोस भी प्रकट किया कि जो पंजाबी के इतने हिम्मती लेखक थे, जिन्होंने 36 से अधिक सिक्ख इतिहास से संबंधित, सामाजिक व धार्मिक उपन्यासों की सृजना की, उन्हें हमारी युवा पीढ़ी नज़रंदाज़ करती जा रही है, तथा साहित्य अकादेमी इस कार्यक्रम के आयोजन द्वारा सभी अदारों को उनके कर्तव्यों का स्मरण

करवाना चाहती है। इसी के साथ मनजीत सिंह (पूर्व प्रधान, पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने अपने बीज-वक्तव्य में हरनाम दास सहराई के जीवन और उनके कार्यों की सारगर्भित जानकारी दी तथा अपने वाईस चांसलर, जीएनडी विश्वविद्यालय एस.पी. सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सहराई जी की आरंभिक रचनाओं, कविताओं तथा सामाजिक उपन्यासों एवं उनके व्यक्तिगत अनुभवों को साकार करते हुए उनके कार्यों का पुनरवलोकन करने का सुझाव भी दिया। बलदेव सिंह धालीवाल जो उत्कृष्ट पंजाबी कहानीकार एवं समालोचक हैं, ने कहा कि यह हमारा ही दुर्भाग्य है कि हम ऐसे ऐतिहासिक लेखक का मूल्य नहीं पा पाए। परिसंवाद के द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुरपाल सिंह संधु ने की जिसके अंतर्गत देशराज काली, जोगिंद्र सिंह संधु तथा कुलदीप सिंह बेदी ने अपने-अपने आलेखों में हरनाम दास सहराई की रचनाओं के ऐतिहासिक पक्ष, कला पक्ष तथा अन्य कई पहलुओं से श्रोताओं को अवगत कराया।

इस कार्यक्रम में एक बात जो बड़ी गंभीरता से उठकर आई वो यही थी कि हम अपने पुराने लेखकों की ओर अधिक ध्यान न देकर भागदौड़ में लगे हुए हैं, जबकि किसी भी क़ौम के साहित्य को अमर बनाने के लिए उसकी बुनियाद रखने वाले लेखकों को गंभीरता व सुहृदयता से देखना चाहिए। सहराई जी के बेटे कुलदीप राय ने भी इस परिसंवाद में भाग लिया तथा सभी का धन्यवाद भी किया। एक बात जो उभर कर सामने आई वह यह थी कि किसी भी पंजाबी अदारे, विश्वविद्यालय सिक्ख क़ौम की विभिन्न कमेटियों ने हरनाम दास सहराई के कार्यों पर इतना ध्यान नहीं दिया जितना जन्मशताब्दी के अवसर पर साहित्य अकादेमी ने ये शुभ कार्य आरंभ किया है। कार्यक्रम के अंत में, साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी)अनुपम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

साहित्यिक अनुवाद, सिद्धांत और व्यवहार पर परिसंवाद

18 जनवरी 2023, नई दिल्ली

परिसंवाद का दृश्य

18 जनवरी 2023 को साहित्य अकादेमी द्वारा पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्यिक अनुवाद, सिद्धांत और व्यवहार' पर परिसंवाद का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को दो सत्रों में विभाजित किया गया था - उद्घाटन सत्र तथा आलेख प्रस्तुति सत्र। प्रात: 11 बजे आरंभ हुए उद्घाटन सत्र के दौरान, पंजाबी विभाग के प्रमुख और दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन कल्चर, रवि रविंदर ने स्वागत वक्तव्य देते हुए इस परिसंवाद के महत्त्व की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने अनुवाद की प्रक्रिया को अलग-अलग चरणों में विभाजित करके बताया, जैसे 'राज सत्ता', 'धर्म सत्ता', 'ज्ञान सत्ता' तथा अन्य। प्रख्यात पंजाबी कवयित्री और समालोचक डॉ. वनीता ने, अपने आरंभिक वक्तव्य में अनुवाद से संबंधित कई मुद्दों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अनुवाद के लिए सीमित ज्ञान और परिवेश नहीं होना चाहिए, बल्कि हर चीज़ की जानकारी होनी चाहिए, चाहे वह विज्ञान हो, राजनीति हो, अर्थशास्त्र हो, संस्कृति हो, धर्म हो, समाज हो आदि। मुख्य अतिथि प्रकाश सिंह, निदेशक, साउथ कैंपस, दिल्ली विश्वविद्यालय ने किसी भी अनुवाद के लिए एक अच्छे अनुवादक के महत्त्व पर बल दिया। भाषा का ज्ञान ही अच्छा अनुवाद उत्पन्न करता है। विशिष्ट अतिथि, दिल्ली विश्वविद्यालय के एमआईएल विभाग के रवि प्रकाश टेकचंदानी और राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद के निदेशक ने, अनुवाद की

एक दिलचस्प विशेषता पर प्रकाश डाला। उनके अनुसार अनुवाद राष्ट्र को एकता की ओर ले जाता है। अनुवाद लोगों को जोड़ता है। अपना बीज-वक्तव्य देते हुए प्रख्यात आलोचक एवं अनुवादक राणा नायर ने अनुवाद गतिविधि को प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया। प्रत्येक व्यक्ति हर समय अनुवाद प्रक्रिया में मौजूद रहता है। उन्होंने 'अचेतन का अनुवाद' विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अनुवाद करने की क्षमता व्यक्ति के अचेतन मन में सदैव विद्यमान रहती है। प्रख्यात पंजाबी लेखक एवं समालोचक मनमोहन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, अनुवाद के चल रहे व्यवसाय पर प्रकाश डाला जिसके कारण अनुवाद की गुणवत्ता गिरती जा रही है। उनके अनुसार अनुवाद को दबाव में किया जाने वाला कार्य नहीं समझना चाहिए; इसके बजाय यह अपनी पसंद का स्वैच्छिक कार्य होना चाहिए। सत्र के अंत में, साहित्य अकादेमी के संपादक (हिन्दी) श्री अनुपम तिवारी ने समस्त अतिथियों का अभिनंदन किया, अकादेमी की कार्यप्रणाली पर चर्चा की तथा अपने अनुभव साझा किए। आलेख-प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध अनुवादक और लेखक जंग बहादुर गोयल ने की, जिसमें परवेश शर्मा, सुभाष नीरव, हिना नंदराजोग और स्वराज राज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

राजस्थानी

'राजस्थानी साहित्य में प्रकृति चित्रण एवं पर्यावरण चेतना' विषय पर परिसंवाद

30 जून 2022, लाडनू, राजस्थान

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने श्री सुभाष शिक्षण संस्थान उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के सहयोग से रोडा भवन, लाडनू, राजस्थान में 'राजस्थानी साहित्य में प्रकृति चित्रण एवं पर्यावरण चेतना' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि वरिष्ठ राजस्थानी साहित्यकार एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के पूर्व प्रोफ़ेसर डॉ. सोहन दान चारण थे। डॉ. चारण ने कहा कि राजस्थानी भाषा के विशाल एवं अमूल्य साहित्य भंडार में, प्रकृति एवं पर्यावरण के अनूठे पाठ मिलते हैं, जो पूरे विश्व के समक्ष उदाहरण हैं। उन्होंने कहा कि मौखिक, लौकिक और कालांतर में विभिन्न विधाओं में रचा गया साहित्य, हमारी भाषा की समृद्धि को उजागर करता है। डॉ. चारण ने कहा, कि साहित्य अकादेमी छोटे शहरों में ऐसे आयोजन कर सराहनीय कार्य कर रही है, जिससे राजस्थानी भाषा को बढ़ावा मिलता है और साथ ही लोग इस भाषा के महत्त्व को पहचानते हैं। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक, श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने कहा कि राजस्थानी साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण का भरपूर वर्णन किया गया है।

ऐसे विषयों पर चर्चा करना बहुत महत्त्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि प्रकृति और पर्यावरण का संरक्षण अधिक महत्त्व रखता है। यदि हमने अभी सुधारात्मक क़दम नहीं उठाए, तो बहुत देर हो जाएगी और स्थिति हाथ से बाहर जा सकती है। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री सुभाष बोस शिक्षण संस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य, भंवरलाल मील ने की। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक, श्री ज्योतिकृष्ण वर्मा ने इस अवसर पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों और अतिथियों का स्वागत किया एवं साहित्य में प्रकृति और पर्यावरण की उपस्थिति के बारे में संक्षेप में उल्लेख किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ राजस्थानी साहित्यकार, प्रोफ़ेसर सोहन दान चारण ने की, जो साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के सदस्य भी हैं। इस प्रथम सत्र में डॉ. दिनेश पांचाल, श्रीमती किरण बादल एवं डॉ. गौरीशंकर प्रजापत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री डूंगरगढ़ के वरिष्ठ राजस्थानी साहित्यकार डॉ. मदन सैनी ने की। डॉ. घनश्याम

नाथ कच्छावा, श्रीमती रीना मेनारिया तथा डॉ. भूपेन्द्र सिंह ने आपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र में कार्यक्रम का सारांश प्रस्तुत करते हुए श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने, लाडनू में परिसंवाद के सफल आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह भूमि संतों और साहित्य की है। उन्होंने सभी आलेख वक्ताओं को बधाई दी। समापन सत्र में - सुरेंद्र भास्कर, बजरंगलाल जेठू, सीताराम सोनी, मुकेश खीची, गजेंद्र सिंह, रामनिवास पटेल, जगदीश पारीक, सुनीता वर्मा, किशोर सैन, रमेश सिंधी, सूरजपाल रोडा, अनूप लोहिया, मुकुल आकाश, अनूप तिवारी, राजकुमार भोजक, नंदलाल वर्मा, अंजनी कुमार सारस्वत, महेंद्र सिंह सहित कई प्रमुख लेखक और विद्वान एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

राजस्थानी आदिवासी साहित्य पर परिसंवाद

17 जनवरी 2023, उदयपुर, राजस्थान

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने शहीद चंदन सिंह राठौड़ फ़ाउंडेशन, उदयपुर, राजस्थान के सहयोग से विज्ञान समिति, अशोक नगर, उदयपुर में 'राजस्थानी आदिवासी साहित्य' पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की शुरुआत भार्गवी मेहता और शिखा बावरा की सरस्वती वंदना से हुई। स्वागत वक्तव्य शहीद चंदन सिंह राठौड़ फ़ाउंडेशन, उदयपुर की निदेशक डॉ. अनुश्री राठौड़ ने दिया। अपने स्वागत वक्तव्य में उन्होंने साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया और कहा कि यह एक सुविचारित कार्यक्रम है, जो अकादेमी की मदद से संभव हुआ है, जो समय-समय पर राजस्थान के विभिन्न स्थानों पर अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से राजस्थानी साहित्य को बढ़ावा देता रहा है। बीज-वक्तव्य प्रख्यात राजस्थानी लेखक और साहित्य अकादेमी के राजस्थानी परामर्श मंडल के पूर्व संयोजक, मधु आचार्य 'आशावादी' ने दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि राजस्थानी साहित्य के दो रूप हैं। एक लोकसाहित्य और दूसरा आदिवासी साहित्य। लोक साहित्य में तो बहुत काम हुए हैं लेकिन चिंता की बात यह है कि राजस्थानी आदिवासी साहित्य में बहुत कम काम हुए हैं। यह कार्यक्रम राजस्थानी आदिवासी साहित्य के संरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण है और जो आने वाले वर्षों में भी जारी रहेगा। मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी ने राजस्थानी आदिवासी साहित्य के संरक्षण पर अपनी बात रखते हुए कहा कि आदिवासियों को कई बार बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ा, कई बार उन्हें दबाने की कोशिश की गई, जिसके कारण उन्होंने कई लड़ाइयाँ लड़ीं और अपने साहित्य और संस्कृति की रक्षा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. के.एल. कोठारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आदिवासी साहित्य के संरक्षण के इस अनूठे प्रयास की सराहना की और कहा कि वह और उनकी संस्था इस कार्य में शहीद चंदन सिंह राठौड़ फाउंडेशन और केंद्रीय साहित्य अकादेमी, दिल्ली को आगे भी सहयोग करेगी। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. कुंजन आचार्य ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री नागेन्द्र नारायण किराडू ने की। इस सत्र में आलेख वक्ता थे - गजेसिंह राजपुरोहित, दीप्ति पंड्या और कपिल पालीवाल। गजेसिंह राजपुरोहित ने 'राजस्थानी आदिवासी मौखिक साहित्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा डॉ. दीप्ति पंड्या के आलेख का विषय था- 'राजस्थानी आदिवासी लिखित साहित्य एवं प्रमुख कृतियाँ।' गजेसिंह राजपुरोहित ने अपने आलेख में कहा कि आदिवासी साहित्य में विभिन्न प्रतीकों एवं कलाओं का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आदिवासी समाज में शकुन-अपशकुन को पहचाना जाता है और कई बुराइयों

को रोकने के उपाय किए जाते हैं, इसलिए कहा जा सकता है कि यह आदिवासी रीति-रिवाज़ों और संस्कृति की विरासत हैं। ऐसे ही विचार दीप्ति पंड्या ने दिए और अपने आलेख में राजस्थानी साहित्य की विविधताओं और बहुलता का ज़िक्र किया। राजस्थान की विभिन्न बोलियों और विशाल संस्कृति को समझने में लिखित पुस्तकों और जनजातीय साहित्य की पुस्तकों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। अगले वक्ता कपिल पालीवाल ने अपने आलेख में राजस्थान की आदिवासी बोली और भाषा पर भी प्रकाश डाला और कहा कि राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओं का प्रभाव है, जिसमें विभिन्न जातियों की बोलियों में अंतर है। इन बोलियों और भाषाओं की मौखिक प्रकृति के कारण कई शब्द और बोलियाँ लुप्त हो रही हैं, जिनके संरक्षण के लिए इसमें साहित्य लिखने की आवश्यकता है। साहित्य और संस्कृति के इस अद्‌भुत संगम को और अधिक यादगार बनाते हुए इस अवसर पर, डॉ. दीप्ति पंड्या और डॉ. सीमा राठौड़ की पुस्तक 'वागड़ के लोक सूर' का विमोचन भी किया गया। पुस्तक के बारे में जानकारी देते हुए डॉ. दीप्ति पंड्या ने बताया, कि यह पहली ऐसी पुस्तक है जिसमें लोकगीतों और उनकी संस्कृति की जानकारी के साथ-साथ उनके गीतों की धुनों और तरीक़ों का विवरण भी दिया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता वागड़ साहित्य के मर्मज्ञ एवं युगधारा साहित्यिक संस्थान के संस्थापक, डॉ. ज्योतिपुंज पंड्या ने की तथा विभिन्न आदिवासी संस्कृति एवं कलाओं का उल्लेख किया। सत्र का संचालन डॉ. करुणा दशोरा ने किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात राजस्थानी लेखक राजेंद्र बारहठ ने की। इस सत्र में संजय शर्मा ने 'भीलों का साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए, राजस्थानी आदिवासी साहित्य में लोकगीतों के महत्त्व को समझाया और कहा कि असली लोक तो लोकगीतों में ही जीता है। सत्र में दो और वक्ता थे - दिनेश पांचाल, जिन्होंने अपनी एक कहानी प्रस्तुत की जिसके माध्यम से उन्होंने आदिवासी मेलों की झलक प्रस्तुत की, जबकि रेखा खराड़ी ने वागड़ी भाषा में लिखी अपनी कविताओं के माध्यम से मातृभूमि, संस्कृति और लोक भाषाओं के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त किया। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री देव कोठारी ने की तथा समापन वक्तव्य श्री मधु आचार्य 'आशावादी' ने दिया। सत्र का संचालन आशा पांडे ओझा ने किया।

संस्कृत

संस्कृत साहित्य में भारतीय न्यायिक प्रणाली पर परिसंवाद

25 जनवरी 2023, आभासी मंच

परिसंवाद का दृश्य

अपनी 'वेबलाइन साहित्य शृंखला' के अंतर्गत साहित्य अकादेमी ने 25 जनवरी 2023 को लाइव स्ट्रीमिंग के साथ ज़ूम प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से आभासी मंच पर, 'संस्कृत साहित्य में भारतीय न्यायिक प्रणाली' पर संस्कृत में परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने अपना स्वागत वक्तव्य देते हुए कहा कि भारतीय जीवन शैली वैदिक काल से ही बहुत वैज्ञानिक रही है और वह हर काम न्यायपूर्ण तरक़े से, धर्म पर बहुत विश्वास के साथ करती है। अत: हमारे सभी राजा वेदों के निर्देशों का पालन करते हुए राजा दिलीप के पुत्र राजा रघु की भाँति, प्रजा की रक्षा, शिक्षा और जीवन प्रदान करके शासन करते थे। प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में प्राचीन काल में धर्म की भूमिका की ओर संकेत

किया, जिसके माध्यम से हमारे पूर्वज अपना जीवन व्यतीत करते थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से उपयुक्त उद्धरणों के साथ *मनुस्मृति* और *याज्ञवल्क्य स्मृति* में दिखाए गए धार्मिक मार्ग के बारे में उल्लेख किया और आम लोगों से उनमें बताए गए सिद्धांतों को समझने का आग्रह किया। उन्होंने न केवल उन दिनों न्यायिक प्रणाली की भूमिका के बारे में बताया, बल्कि वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था द्वारा उन ग्रंथों का पालन करने की आवश्यकता का भी वर्णन किया, क्योंकि ये उन्हीं मापदंडों पर आधारित हैं। प्रोफ़ेसर हरिदत्त शर्मा ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में, हमारे प्राचीन राजाओं की अपने दैनिक प्रशासन का पालन करते हुए अपनी प्रजा की रक्षा करने की समग्र धारणा प्रस्तुत की। उन्होंने *कामन्दक, याज्ञवल्क्य, कात्यायन* आदि नीतिशास्त्रों पर भी प्रकाश डाला। आलेख प्रस्तुति सत्र की अध्यक्षता गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के संस्कृत विभाग के पूर्व प्रमुख प्रोफ़ेसर वसंतकुमार एम. भट्ट ने की और सभी आलेख वक्ताओं को अपने आलेख प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया। प्रोफ़ेसर अनिल प्रताप गिरि ने 'प्राचीन भारतीय न्यायिक प्रणाली में दण्ड की अवधारणा' पर, प्रोफ़ेसर हरिप्रसाद अधिकारी ने 'प्राचीन भारतीय न्यायिक प्रणाली में स्मृतियों का योगदान' पर, प्रोफ़ेसर रानी दाधीच ने 'प्राचीन भारतीय न्यायिक प्रणाली में न्यायपालिका अवधारणाओं का विश्लेषण' पर, प्रोफ़ेसर मुरलीमाधवन ने 'प्राचीन भारतीय न्यायिक प्रणाली में न्यायिक परिषद की संरचना' और प्रोफ़ेसर प्रफुल्ल कुमार मिश्र ने 'प्राचीन भारतीय न्यायिक प्रणाली में लोकतांत्रिक राजशाही' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने समापन वक्तव्य में, प्रोफ़ेसर वसंतकुमार एम. भट्ट ने हमारे प्राचीन ग्रंथों के रहस्यों के बारे में तथ्यों को सामने लाने के लिए, जिसमें कई वैज्ञानिक तथ्य और आँकड़े शामिल हैं, भारत के प्रमुख साहित्यिक संगठन साहित्य अकादेमी द्वारा की गई पहल की सराहना की। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव की ओर से, डॉ. एन. सुरेश बाबू ने कार्यक्रम में भाग लेने के लिए सभी प्रतिभागियों और दर्शकों को हार्दिक धन्यवाद दिया।

धार्मिकता और संस्कृत साहित्य पर परिसंवाद

9 फ़रवरी 2023, तिरुपति, आंध्र प्रदेश

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश के सहयोग से 9 फ़रवरी 2023 को 'धार्मिकता और संस्कृत साहित्य' पर संस्कृत में राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं समाज को धर्मनिष्ठ बनाने में संस्कृत साहित्य और भाषा की भूमिका पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह संस्कृत भाषा और साहित्य ही है, जो ज्ञान की दुनिया से युक्त संसार को सही रास्ता दिखा सकता है। राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के कुलपति प्रोफ़ेसर जी.एस.आर. कृष्ण मूर्ति ने संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रभुत्व को स्पष्ट रूप से समझाया और इसे प्रकृति की शुरुआत से ही उचित बताया। संभवत: संस्कृत के प्रकाश के बिना, दुनिया जीवंतता से समृद्ध नहीं होती। साहित्य अकादेमी के संस्कृत परामर्श मंडल के संयोजक, प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने आरंभिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा एक महान समाज के निर्माण के लिए राष्ट्र के निर्माण में धार्मिकता की भूमिका की ओर इशारा किया, जहाँ लोग भाईचारे के साथ रह सकते हैं। उन्होंने संस्कृत लेखन के विभिन्न स्रोतों से ली गई संस्कृत की विद्वत्तापूर्ण कहावतों के महत्त्व को भी गिनाया, जो सभी को भारत का एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाए रखती हैं। प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान प्रोफ़ेसर कुटुम्ब शास्त्री ने बीज-वक्तव्य

दिया और 'धर्म' शब्द को परिभाषित करते हुए, संस्कृत साहित्य में इसके महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी कहा कि संस्कृत भाषा, साहित्य और धर्म अविभाज्य हैं और एक के बिना दूसरे का अस्तित्व नहीं रह सकता। साहित्य अकादेमी के उपसचिव डॉ. एन. सुरेश बाबू ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति के साहित्य विभाग के प्रमुख प्रोफ़ेसर सी. रंगनाथ ने उद्घाटन सत्र की कार्यवाही का संचालन किया, जबकि डॉ. भारत भूषण रथ, संकाय, साहित्य, ने गणमान्य व्यक्तियों का दर्शकों से परिचय कराया।

प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संस्कृत लेखक प्रो. विंध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ने की, जिसमें प्रो. डी.पी.वाई. यजुलु ने 'वेदों में धार्मिकता की प्रकृति' पर, प्रो. सत्यनारायण आचार्य ने, 'पुराणों में धार्मिकता की प्रकृति' पर, प्रो. नारायण पुजार ने 'दर्शनों में धार्मिकता की प्रकृति' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिन्हें दर्शकों द्वारा बहुत सराहा गया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात संस्कृत विद्वान, तथा जिन्होंने अपना जीवन संस्कृत भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया, डी. प्रभाकर शर्मा ने की। इस सत्र में, 'अनुष्ठान में धार्मिकता की प्रकृति' पर प्रो. सी. रंगनाथन ने, 'आर्षकाव्य में धार्मिकता की प्रकृति' पर डॉ. राधागोविंद त्रिपाठी ने तथा 'संस्कृत पंचमहाकाव्य में धार्मिकता की प्रकृति' पर प्रो. के. राजगोपालन ने अपने विचार प्रकट किए।

अंत में, प्रोफ़ेसर अभिराज राजेंद्र मिश्र ने समापन वक्तव्य तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संताली

संताली साहित्य में काल्पनिक लेखन के रुझान पर परिसंवाद

29 अप्रैल 2022, करनडीही, झारखंड

साहित्य अकादेमी ने 29 अप्रैल 2022 को एलबीएसएम कॉलेज, करनडीही, जमशेदपुर, झारखंड और अखिल भारतीय संताली लेखक संघ के सहयोग से एलबीएसएम कॉलेज सभागार, करनडीही जमशेदपुर, झारखंड में 'संताली साहित्य में काल्पनिक लेखन के रुझान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। कार्यक्रम में मदन मोहन सोरेन, अशोक कुमार झा, खेरवाल सोरेन, लक्ष्मण किस्कू, बादल हेम्ब्रम, श्याम बेश्रा, चैतन्य प्रसाद माझी, सारी धोरोम हंसदा, गंगाधर हंसदा, सुब्रत बास्की, कुना हांसदा और होलिका मरांडी जैसे प्रसिद्ध संताली विद्वान शामिल हुए।

स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने दिया। परिसंवाद का उद्घाटन एलएसबीएम कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अशोक कुमार झा ने किया। आरंभिक वक्तव्य श्री मदन मोहन सोरेन, संयोजक, संताली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा दिया गया। उन्होंने समसामयिक संताली साहित्य और उसके विशिष्ट लक्षणों पर बात की। श्री चैतन्य प्रसाद माझी ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने संताली कथा साहित्य की उत्पत्ति और विकास पर बात की। सत्र की अध्यक्षता अखिल भारतीय संताली लेखक संघ के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण किस्कू ने की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री रवीन्द्रनाथ मुर्मू द्वारा दिया गया। प्रथम सत्र का विषय था - '2002 तक संताली साहित्य में कथा लेखन की प्रवृत्तियाँ'। सत्र की अध्यक्षता श्री बादल हेम्ब्रम ने की। इस सत्र में, श्री मोहन चंद्र बास्की ने संताली साहित्य के महत्त्वपूर्ण कार्यों में रुझानों के विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री समई किस्कू ने भी '2005 तक संताली उपन्यास के रुझान' पर आलेख प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र का विषय था - '2002 के बाद संताली साहित्य में कथा लेखन के रुझान'। सत्र की अध्यक्षता डॉ. गंगाधर हंसदाह ने की। सत्र में, श्री सुब्रत बास्की ने '2005 के बाद संताली कहानियों के रुझान' पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री अंजन कुमार कर्माकर ने 'कुछ संताली कहानी-संग्रहों और उपन्यासों के विश्लेषणात्मक अध्ययन' पर आलेख प्रस्तुत किया।

संताली भाषा, लिपि और साहित्य का आंदोलन पर परिसंवाद

21 मई 2022, बारीपदा, ओडिशा

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने 21 मई 2022 को ओडिशा के बारीपदा में, एमएससीबीडी विश्वविद्यालय संताली विभाग के सहयोग से 'संताली भाषा, लिपि और साहित्य का आंदोलन' पर परिसंवाद का आयोजन किया, जिसमें मदन मोहन सोरेन, जतींद्र नाथ बेश्रा, दमयंती बेश्रा, किशोर कुमार बासा, लक्ष्मण मरांडी, लक्ष्मण बास्की, लखाई बास्की, श्रीपति टुडू, माधब चंद्र हांसदा, अर्जुन मांडी और लालचंद सोरेन जैसे प्रसिद्ध संताली विद्वान शामिल हुए।

साहित्य अकादेमी पूर्वी क्षेत्र के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत वक्तव्य दिया। परिसंवाद का उद्घाटन प्रोफ़ेसर प्रमोद कुमार सतपथी ने किया। आरंभिक वक्तव्य श्री मदन मोहन सोरेन, संयोजक, संताली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी द्वारा दिया गया। बीज-वक्तव्य डॉ. जतीन्द्र नाथ बेश्रा ने दिया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. दमयंती बेश्रा ने की। उन्होंने संताली भाषा की वर्तमान स्थिति पर चर्चा की। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बिष्णुप्रिया हांसदा ने प्रस्तुत किया। प्रथम शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण मरांडी ने की। सत्र में श्री लखाई बास्की ने 'झारखंड में संताली भाषा, लिपि और साहित्य का आंदोलन' पर आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें कुछ संताली बौद्धिक संगठनों के आंदोलन पर विशेष ध्यान दिया गया। श्री लक्ष्मण बास्की ने कुछ संताली बौद्धिक संगठनों के आंदोलन पर विशेष ध्यान देते हुए 'ओडिशा में संताली भाषा, लिपि और साहित्य का आंदोलन' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री श्रीपति टुडू ने कुछ संताली बौद्धिक संगठनों के आंदोलन पर विशेष ध्यान देने के साथ 'पश्चिम बंगाल में संताली भाषा, लिपि और साहित्य का आंदोलन' विषय पर बात की। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री माधब चंद्र हांसदा ने की। श्री अर्जुन मरांडी ने 'संताली भाषा मोर्चा द्वारा, संताली भाषा और लिपि का आंदोलन' पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री लालचंद सोरेन ने 'राजनीतिक हस्तियों द्वारा संताली भाषा और लिपि के आंदोलन और भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में संताली भाषा को शामिल करने की दिशा में उनकी भूमिका' पर आलेख प्रस्तुत किया।

सिंधी

सिंधी युवा लेखन पर परिसंवाद

22 जनवरी 2023, नागपुर

परिसंवाद का दृश्य

साहित्य अकादेमी ने भारतीय सिंधु सभा सांस्कृतिक मंच, नागपुर के सहयोग से 22 जनवरी 2023 को मुक्ति धाम हॉल, दयानंद पार्क के सामने, जरीपटका, नागपुर में 'सिंधी युवा लेखन' पर परिसंवाद का आयोजन किया। प्रारंभ में, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के प्रभारी अधिकारी डॉ. ओम प्रकाश नागर ने अतिथि वक्ताओं और उपस्थित लोगों का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन साधना सहकारी बैंक के उपाध्यक्ष, विनोद लालवानी ने किया। अपने बीज-वक्तव्य में सिंधी परामर्श मंडल के पूर्व सदस्य किशोर लालवानी ने कहा कि सिंधी युवा पीढ़ी को सिंधी भाषा और साहित्य के संरक्षण और संवर्धन के लिए आगे आना चाहिए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. विनोद आसुदानी ने की, जिन्होंने

दावा किया कि सिंधी साहित्य मूल्यों में बहुत समृद्ध है तथा युवा साहित्यकारों को सिंधी साहित्यकारों द्वारा निर्धारित मानदंडों को पढ़ना और उनका पालन करना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता राजेश आसुदानी ने की, जबकि 'सिंधी युवा गद्य लेखन' विषय पर कैलाश शादाब ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। भोपाल से समीक्षा लछवानी और नागपुर से शारदा भागचंदानी ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता किशोर लालवानी ने की तथा 'सिंधी युवा काव्य लेखन' विषय पर खिमन मुलानी ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। युवा सिंधी कवयित्री किरण परयानी, इंदौर और मुस्कान बचानी, बिलासपुर ने अपनी कविताएँ सुनाईं।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रोतागण एवं साहित्य प्रेमी उपस्थित हुए।

तमिऴ

'राजम कृष्णन : तमिऴ साहित्य के अग्रदूत' विषय पर परिसंवाद

06 सितंबर 2022, चेन्नई

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए डॉ. तिरुप्पुर कृष्णन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने तमिऴ विभाग, बी.एस. अब्दुर रहमान क्रिसेंट इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, वंडालूर, चेन्नई के सहयोग से 06 सितंबर 2022 को कॉलेज परिसर में 'राजम कृष्णन : तमिऴ साहित्य के अग्रदूत' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री टी.एस. चन्द्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नई ने स्वागत वक्तव्य दिया। कॉलेज के कुलपति डॉ. ए. पीर मोहम्मद ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि राजम कृष्णन बड़ी ही अनोखी, व्यक्तिवादी एवं अग्रणी लेखिका थीं, जिन्हें किसी भी रूढ़िबद्ध लेखकों में शामिल नहीं किया जा सकता है। उन्होंने कहा, अनुभवी नारीवादी लेखिका पर आयोजित यह परिसंवाद, तमिऴ साहित्य के पाठकों और प्रेमियों के बीच जागरूकता पैदा करेगा। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य, डॉ. वैगई सेल्वी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। एक अग्रणी नारीवादी-कार्यकर्ता, राजम कृष्णन ईमानदार और साहसी थीं, जिन्होंने अपने सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने कहा कि राजम कृष्णन ने किसी भी काम को लिखने से पूर्व व्यापक क्षेत्र-कार्य किया, तथा उन्होंने तमिऴ साहित्य में नया चलन स्थापित किया। कॉलेज के, स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज एंड ह्यूमैनिटीज के डीन डॉ. अयूब ख़ान दाऊद ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया। प्रथम सत्र में डॉ. तिरुप्पुर कृष्णन ने अध्यक्षता की और 'राजम कृष्णन का जीवन और साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उनकी कृतियों को पढ़ते समय कोई भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। वह उन लोगों के स्थानों पर जातीं, जिन पर उनकी कहानी आधारित होती थी और वे इसे कहानी या उपन्यास के रूप में रिकॉर्ड करती थीं। उनके पति उनकी रीढ़ थे और उनके प्रोत्साहन ने उन्हें गहन लेखन की ओर बढ़ने में मदद की। डॉ. तिरुप्पुर कृष्णन ने राजम कृष्णन के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों को याद किया और उनके दो कार्यों - 'कुरिंजी थेन' और 'वेरुक्कु नीर' के बारे में संक्षेप में बात की। इसके बाद, डॉ. के. भारती ने 'राजम कृष्णन का जीवन चरित्रों पर कार्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने डॉ. रंगाचारी, भरतियार और मनालूर मनियाम्मल जैसी दिग्गज हस्तियों की जीवनियाँ लिखीं। रंगाचारी, जो कि बहुत अमीर लेकिन दयालु डॉक्टर थे, मरीज़ों की बीमारियों का इलाज करने के लिए स्वयं उनके पास जाते थे। भरतियार पर उनकी जीवनी, उनकी पत्नी चेल्लाम्मल के दृष्टिकोण से उनके जीवन का इतिहास प्रस्तुत करती है। मनालूर मनियाम्मल बाल विधवा थीं, जो बाद में एक नारीवादी और स्वतंत्रता सेनानी बन गईं। एक अनवरत

योद्धा, उन्होंने अपनी आत्मरक्षा के लिए सिलंबम की मार्शल आर्ट सीखी एवं ग़रीबों और उत्पीड़ित लोगों के लिए भी लड़ाई लड़ी। उनके जीवन के इतिहास को राजम कृष्णन ने उनकी जीवनी कृति 'पधायिल पथिंथा आदिगल' में चित्रित किया है। तत्पश्चात, डॉ. ई. राजलक्ष्मी ने 'राजम कृष्णन के कार्यों में क्षेत्र-कार्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने राजम कृष्णन के लेखन की अनूठी शैली का वर्णन किया, जो एक विषय चुनती थीं, जगह का दौरा करती थीं, लोगों से मिलती थीं और फिर उन्हें अपनी कहानी या उपन्यास में ढालती थीं। मजदूरों पर उनका लेखन जीवंत था और पीड़ितों की वास्तविक स्थिति को समझाता था। उनकी कहानी 'करिप्पु मनिगल' में नमक के खेतों में काम करने वाले लोगों के जीवन को दर्शाया गया है। 'मुल्लुम मलारन्थाथु' में एक डाकू के पुनर्वास के बारे में बात की गई है।

'मन्नागाथिन पूनथुलिगल' कन्या भ्रूण हत्या पर आधारित उपन्यास है, जिसके लिए उन्होंने व्यापक शोध किया था। उन्होंने कहा, वह घटनास्थल का दौरा करेंगी और उन लोगों के साथ रहेंगी, जिनके बारे में उन्होंने लिखा है। द्वितीय सत्र में डॉ. डी. गाँधीमथी ने अध्यक्षता की और 'राजम कृष्णन की कहानियों में महिला सशक्तिकरण' पर आलेख प्रस्तुत किया। वह एक अथक कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई। उनकी कहानियाँ अधिकतर महिला-केंद्रित थीं, जो उन मुद्दों को संबोधित करती थीं जिनके बारे में उनके समय में कोई नहीं बोलता था। उनकी स्त्रियाँ स्वतंत्र, सशक्त और शांतचित्त थीं। उन्होंने नारीत्व के पुराने मिथकों का खंडन किया और व्यक्तिवादी महिलाओं का चित्रण किया, जिन्होंने यथास्थिति के ख़िलाफ़ विद्रोह किया था। इसके बाद, डॉ. एम. पट्टाझगन ने 'राजम कृष्णन के कार्यों में नारीवाद' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने उल्लेख किया कि राजम कृष्णन के अनुसार, नारीवाद वह नई महिला है जो अच्छी तरह से शिक्षित है, आत्म-सम्मान और पहचान से भरी है एवं सदियों पुरानी परंपराओं के बंधनों से बाहर आने के लिए तैयार है। उन्होंने 'थानीमई' और 'वेली' जैसी कहानियों के अंश भी उद्धृत किए। श्री देव विराथन ने 'राजम कृष्णन के उपन्यासों में नायिकाएँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने सुशीला (पेन कुरल), चित्रा (मलारगल), पारू (कुरिंजी थेन) और कात्यायनी (पुयालिन मैयम) जैसे चुनिंदा पात्रों के बारे में बात की। उन्होंने कहा, राजम कृष्णन ने उन सकारात्मक गुणों का प्रतिनिधित्व करने वाली आवाज़ के रूप में काम किया, जिन्हें महिलाओं को अपनाने की आवश्यकता है और उनके पात्र नारीत्व के बदलते चेहरे का प्रतिनिधित्व करते हैं। अंत में, डॉ. राधिका मेगनाथन ने 'राजम कृष्णन की कृतियों में मज़दूरों का चित्रण' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने संक्षेप में 'अलाइवाई कराई' के बारे में बात की, जो मछुआरों और चर्च के बीच संघर्ष का वर्णन करता है; 'सेट्रिल मनिथार्गल' जो किसानों की कठिनाइयों का वर्णन करता है, 'करिप्पु मनिगल' जो नमक-पैन श्रमिकों के बारे में बताता है, 'कुरिंजी थेन' जो चाय एस्टेट श्रमिकों के जीवन को दर्शाता है और 'कुट्टु कुंजुगल' जो माचिस के कारख़ाने में काम करने वाले बच्चों की दुर्दशा को चित्रित करता है। उन्होंने कहा, उनके लेखन में नारीवाद की ओर झुकाव था और उन्होंने असमानताओं और उत्पीड़ितों की अपरिवर्तित दुर्दशा पर अपनी पीड़ा व्यक्त की। आलेख प्रस्तुतियों के पश्चात्, डॉ. राधिका मेगनाथन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

'साहित्य क्या है?' विषय पर परिसंवाद

13 दिसंबर 2022, तिरुपत्तूर

आरंभिक वक्तव्य देते हुए डॉ. तमिझावन

साहित्य अकादेमी के उप-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई ने तमिऴ विभाग, सेक्रेड हार्ट कॉलेज, तिरुपत्तूर के सहयोग से 13 दिसंबर 2022 को कॉलेज परिसर में 'साहित्य क्या है?' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री टी.एस.

चंद्रशेखर राजू, कार्यालय प्रभारी, साहित्य अकादेमी, चेन्नै ने स्वागत वक्तव्य दिया। डॉ. के.ए. मारिया अरोकियाराज, एसडीबी, अतिरिक्त प्राचार्य, ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। उन्होंने ने कहा कि एक लेखक जानता है कि अपने अनुभवों को उपन्यास, कविता या कहानी में किस प्रकार पिरोया जाए। कला और साहित्य के कारण दुनिया एक बेहतर स्थान है। उन्होंने कहा कि जीवन जीने की कला को लेखकों द्वारा आकार दिया जाता है तथा पाठक ऐसे प्रेरक लेखकों से सबक़ सीखते हैं। साहित्य अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. तमिझावन ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि साहित्य की परिभाषा निरंतर बदलती और विकसित होती रहती है। उन्होंने कहा कि जिसमें सिखाने, समृद्ध करने और बदलने की शक्ति हो उसे साहित्य कहते हैं। वक्ताओं का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि यह परिसंवाद 'साहित्य' के व्यापक अर्थ को समझने के लिए आयोजित किया गया है। डॉ. पोन. सेल्वाकुमार, प्रमुख, तमिऴ विभाग (शिफ्ट-I) ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने अपने कॉलेज में परिसंवाद की मेज़बानी के लिए आगे आने के लिए साहित्य अकादेमी को धन्यवाद दिया और कार्यक्रम के आयोजन में उनकी गहरी रुचि और सहयोग के लिए दर्शकों के उत्साह की सराहना की। तमिऴ विभाग (शिफ्ट-II) के प्रमुख डॉ. पी. बालसुब्रह्मण्यम ने हार्दिक शुभकामनाएँ दीं और कहा कि छात्रों को प्रसिद्ध लेखकों से मिलने और बातचीत करने का अवसर मिलता है। डॉ. ए. मुथैयान, सहायक प्रोफ़ेसर, तमिऴ विभाग (शिफ्ट-II) ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

प्रथम सत्र में डॉ. के. पंजंगम ने अध्यक्षता की और 'साहित्य-आलोचना और तमिऴ परिवेश' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने साहित्य और आलोचना की प्रासंगिकता पर बात की। आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद के बीच तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिकतावादी कला और साहित्य उनसे पहले के कला और साहित्य से स्पष्ट रूप से भिन्न हैं, जबकि उत्तर-आधुनिकतावाद, आधुनिकतावाद से एक विचलन है। उन्होंने कहा कि आधुनिकतावादी और मार्क्सवादी सिद्धांत तमिऴ साहित्यिक परिवेश पर लगभग 100 वर्षों तक हावी रहे। का.ना. सु. टीएमसी रघुनाथन और तमिझावन जैसे लेखकों के कार्यों पर संक्षिप्त चर्चा की गई। श्री समयवेल ने 'जीन पॉल सार्त्र के विचार और आधुनिक साहित्य' पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने दर्शन और मार्क्सवाद के प्रमुख व्यक्तित्वों में से एक, सार्त्र की उत्तर-आधुनिकतावादी अवधारणाओं की व्याख्या की। सार्त्र के निबंध 'साहित्य क्या है' पर संक्षेप में चर्चा की गई। उन्होंने कहा, "साहित्य के बिना कोई जीवन नहीं है, जीवन और साहित्य सह-अस्तित्व में हैं।" द्वितीय सत्र में डॉ. सु. वेणुगोपाल ने अध्यक्षता की और 'साहित्य पर का.ना.सु. के विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। का. ना. सू., के लिए, समय का पालन करना किसी भी साहित्यिक रचना के लिए बुनियादी बात थी। उनका मानना था कि लेखक का विशिष्ट व्यक्तित्व होना चाहिए। वह जितने प्रख्यात लेखक थे, उतने ही उत्सुक पाठक भी थे। का. ना. सु के साहित्य पर विचार एवं अभिव्यक्ति की चर्चा करते हुए, डॉ. सु. वेणुगोपाल ने उल्लेख किया कि तमिऴ साहित्य में अच्छे और रचनात्मक तत्त्वों के विकास में उनका योगदान बहुत बड़ा है। इसके बाद, श्री एम. मणिमारन ने 'साहित्य क्या है? पर मेरे विचार' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य एक व्यापक शब्द है और इसके अर्थ पर सबका अपना-अपना नज़रिया है। उन्होंने कहा कि व्यापक दृष्टिकोण से साहित्य एक-दूसरे को समझने का मार्ग प्रशस्त करता है और सभ्यता को विकसित करता है। श्री शाहीबकिरन ने 'कला-साहित्य और उनकी शैलियाँ' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने एम.वी. वेंकटराम के 'कथुगळ' उपन्यास के पात्र महालिंगम पर चर्चा की। उनके आलेख में इस बात पर बल दिया गया कि मानवतावाद का भारतीय विचार इस भूमि में उत्पादित सभी कार्यों में व्याप्त है। अंत में, श्री नितिन तिरुवरसु ने 'साहित्य : एक नज़र' पर आलेख प्रस्तुत किया। आधुनिकतावाद में लेखकों के बीच प्रयोग, नए रूपों और अभिव्यक्तियों के साथ शामिल थे। *अवांट-गार्डे* आंदोलन ने कविता की दिशा बदल दी और नई कविता के जन्म का मार्ग प्रशस्त किया, जो पद्य रूप में लिखी गई है। उन्होंने कहा, साहित्य स्थान और समय से परे है और लेखक के जीवनकाल के बाद भी पाठकों को नित नए अनुभव देता है। डॉ. ए. मुथइयन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कॉलेज के छात्र और शिक्षक शामिल हुए।

उर्दू

साहिर लुधियानवी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर परिसंवाद

12 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

स्वागत वक्तव्य देते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभाकक्ष, रवींद्र भवन, नई दिल्ली में 'साहिर लुधियानवी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उर्दू के प्रतिष्ठित कवि, आलोचक एवं उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक शीन काफ़ निज़ाम ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहिर ऐसे शायर हैं, जो युद्ध का विरोध करते हैं। वे मायूसी के नहीं उदासी के शायर हैं। वे लड़ते हैं, हार नहीं मानते। उन्होंने यह भी कहा कि साहिर अमन एवं मोहब्बत के पैरोकार हैं। फ़ैज़ और साहिर की तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि साहिर कविता में किसी परदे से काम नहीं लेते जबकि फ़ैज़ राज़ की बातें करते हैं। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए उर्दू के प्रतिष्ठित कवि एवं अनुवादक प्रोफ़ेसर भूपिंदर अज़ीज़ परिहार ने कहा कि कविता साहिर की घुट्टी में थी। वे आरंभ से ही प्रगतिशील विचार के थे। अपने बाग़ी तेवर की वजह से कॉलेज में भी काफ़ी प्रसिद्ध हो गए थे। अपने इस विशेष वक्तव्य में प्रो. परिहार ने कहा कि साहिर नई दुनिया का ख़्वाब देखा करते थे। साहिर कभी किसी गुट में शामिल नहीं हुए। उन्होंने भलाई और भक्ति के गीत गाए। ज़ुल्म और लूट के ख़िलाफ़ हमेशा अपनी आवाज़ बुलंद की। डॉ. सादिक़ा नवाब सहर ने बीज-वक्तव्य देते हुए साहिर के प्रगतिशील विचारों में भक्ति की तलाश करते हुए उनके फ़िल्मी गीतों पर अपनी बात रखी। उन्होंने अपने वक्तव्य से साबित किया कि पुरानी परंपराओं और भक्ति के सहारे उन्होंने अपने गीतों में तसव्वुफ़ और भक्ति भावना का भरपूर उपयोग किया।

कार्यक्रम के आरंभ में सभी का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने कहा कि साहिर का रंग बिल्कुल अलग था और वे आम आदमी के शायर थे। शमीम तारिक़ ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि साहिर आत्मनिरीक्षण में माहिर थे और उनका ख़्वाब एक बेहतर दुनिया बनाने का था। इस सत्र में प्रो. कौसर मज़हरी और ख़ालिद अशरफ़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शहज़ाद अंजुम ने की जबकि शरद दत्त, हक़्क़ानी अल-क़ासमी और डॉ. आलिया ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में दिल्ली और आस-पास के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों ने शिरकत की, जिनमें खालिद अल्वी, चंद्रभान ख़याल, आज़िम कोहली, फ़रियाद आज़र, अहमद अल्वी, जानकी प्रसाद शर्मा, फ़रहत उस्मानी, नारंग साक़ी, अबू ज़हीर रब्बानी, असद रज़ा, शकील सिद्दीकी के साथ बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने भी भाग लिया।

उन्मेष 2022 की झलकियाँ

उन्मेष 2022 की झलकियाँ

साहित्योत्सव 2023 की झलकियाँ

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह की झलकियाँ

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान अर्पण समारोह की झलकियाँ

पुस्तकायन 2022 की झलकियाँ

पुस्तकायन 2022 की झलकियाँ

साहित्य अकादेमी में गणमान्य अतिथियों का आगमन

पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल
श्री राम नाईक

महामहिम श्री डेविड पुइग, राजदूत, भारत में
डोमिनिकन गणराज्य के दूतावास

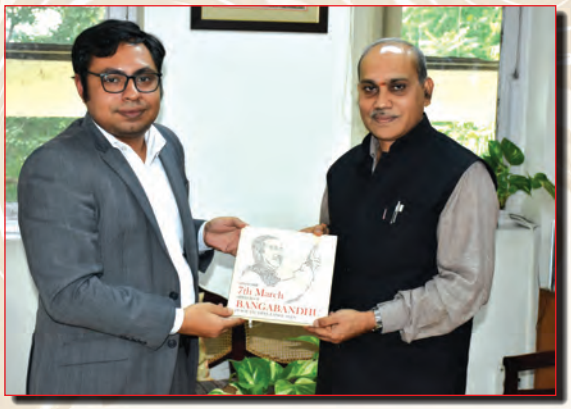

डॉ. ज़कारिया बिन अमजद

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली के
अध्यक्ष श्री रामबहादुर राय

भारत में बांग्लादेश के उच्चायुक्त महामहिम श्री मुहम्मद इमरान

इस्लामिक गणराज्य ईरान के राष्ट्रपति के सांस्कृतिक सहायक
डॉ. मुहम्मद रज़ा बहमानी

वर्ष 2022-2023 में साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची

अस्मिता

मणिपुरी लेखिकाओं के साथ
22 अप्रैल 2022, इंफ़ाल

संताली लेखिकाओं के साथ
29 अप्रैल 2022, जमशेदपुर, झारखंड

असमिया लेखिकाओं के साथ
3 जून 2022, गोलाघाट

मणिपुरी लेखिकाओं के साथ
26 जून 2022, जिरिबम, मणिपुर

संताली लेखिकाओं के साथ
7 अगस्त 2022, डिब्रूगढ़

कश्मीरी लेखिकाओं के साथ
24 सितंबर 2022, पालपोरा, कश्मीर

कश्मीरी लेखिकाओं के साथ
15 अक्तूबर 2022, अनंतनाग, कश्मीर

विश्व पुस्तक मेला - 2023
2 मार्च 2023, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

आविष्कार

शिल्पा डी. परब के साथ आविष्कार कार्यक्रम
26 जून 2022, गोवा

पुरस्कार एवं महत्तर सदस्यताएँ

प्रख्यात पंजाबी लेखक तथा विद्वान डॉ. तेजवंत गिल को महत्तर सदस्यता प्रदत्त
22 अप्रैल 2022, चंडीगढ़

बाङ्ला लेखक श्री शीर्षेंदु मुखोपाध्याय को महत्तर सदस्यता प्रदत्त
25 जून 2022, कोलकाता

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह
30 जुलाई 2022, कोलकाता

मलयाळम् लेखिका डॉ. एम. लीलावती को महत्तर सदस्यता प्रदत्त
29 सितंबर 2022, एर्नाकुलम, कोच्चि

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2021 अर्पण समारोह
30 सितंबर 2022, त्रिशूर, केरल

साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह
14 नवंबर 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात लेखक तथा विद्वान श्री प्रफुल्ल मोहांती को साहित्य अकादेमी मानद महत्तर सदस्यता प्रदत्त
15 नवंबर 2022, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह
27 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

मराठी लेखक डॉ. भालचंद्र नेमाडे को महत्तर सदस्यता प्रदत्त
26 फ़रवरी 2023, मुंबई

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह
25-26 मार्च 2023, पणजी, गोवा

बाल साहिती

बोडो लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
30 जुलाई 2022, बसुगाँव, असम

बाङ्ला लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
31 जुलाई 2022, कोलकाता

हिंदी लेखकों के साथ बाल साहिती कार्यक्रम
4 मार्च 2023, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

पुस्तक चर्चा

करुमाई नीरा कन्नन पर पुस्तक चर्चा
28 अप्रैल 2022, चेन्नै

कनामिहिर मेडु पर पुस्तक चर्चा
19 मई 2022, चेन्नै

भीलारगलिन भारतम पर पुस्तक चर्चा
16 जून 2022, चेन्नै

उल्लपरिमानंगळ पर पुस्तक चर्चा
07 जुलाई 2022, चेन्नै

आनियुम मात्रा कथागाळुम पर पुस्तक चर्चा
11 अगस्त 2022, चेन्नै

ओरु पिनांथुकियिन वरालात्रु कुडिप्पुगळ पर पुस्तक चर्चा
15 सितंबर 2022, चेन्नै

तमिषिल रायिल कथिगळ पर पुस्तक चर्चा
20 अक्तूबर 2022, चेन्नै

इलाइवर्गालिन पुधुक्कविथिगळ पर पुस्तक चर्चा
10 नवंबर 2022, चेन्नै

महात्मा गाँधी आणी मराठी साहित्य पर पुस्तक चर्चा
14 नवंबर 2022, मुंबई

राजिंदर सिंह बेदियिन थेरंदुथा सिरुकथाईगळ पर पुस्तक चर्चा
08 दिसंबर 2022, चेन्नै

विनायक पर पुस्तक चर्चा
05 जनवरी 2023, चेन्नै

के.पी. अरावनारिन थेरंडुक्कापट्टा कट्टुराइगळ पर पुस्तक चर्चा
16 फ़रवरी 2023, चेन्नै

समकाला तमिष़्ह सिरुकथाईगळ पर पुस्तक चर्चा
16 मार्च 2023, चेन्नै

सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

प्रतिष्ठित स्पेनिश साहित्यकार प्रोफ़ेसर लुइस गार्सिया मोंटेरो के साथ बातचीत
7 जुलाई 2022, नई दिल्ली

बांग्लादेश के प्रतिष्ठित बाङ्ला कवियों के साथ कवि सम्मिलन कार्यक्रम
13 अक्तूबर 2022, कोलकाता

भारत-रूस लेखक सम्मिलन
1 मार्च 2023, नई दिल्ली

भारत-ईरान लेखक सम्मिलन
2 मार्च 2023, नई दिल्ली

इंडो-कज़ाक लेखक सम्मिलन
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

दलित चेतना

'सृजनात्मक साहित्यिक विचार-विमर्श' विषय पर दलित चेतना कार्यक्रम
24 अप्रैल 2022, कट्टीमूला, वायनाड

दलित चेतना (साहित्य मंच)
23 जून 2022, चेन्नै

दलित चेतना (साहित्य मंच)
8 अगस्त 2022, केंबावी, यादगिरि

दलित चेतना तथा बहुभाषी कविता-पाठ कार्यक्रम
6 नवंबर 2022, कोलकाता

वृत्तचित्र प्रदर्शन (दर्पण)

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
04-09 जुलाई 2022, आभासी मंच

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
11-15 जुलाई 2022, बेंगळूरु

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
18-22 जुलाई 2022, कोलकाता

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
25-29 जुलाई 2022, चेन्नै

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
26-30 नवंबर 2022, मुंबई

दर्पण (वृत्तचित्र प्रदर्शन)
11 दिसंबर 2022, गुवाहाटी

एक भारत श्रेष्ठ भारत शृंखला

सिंधी-मणिपुरी कवि सम्मिलन
7 अप्रैल 2022, आभासी मंच

मराठी-तेलुगु कवि सम्मिलन
6 मई 2022, आभासी मंच

गुजराती-तमिळ कवि सम्मिलन
27 मई 2022, आभासी मंच

पंजाबी-सिंधी कवि सम्मिलन
22 जून 2022, आभासी मंच

मलयाळम्-मराठी कवि सम्मिलन
24 मार्च 2023, आभासी मंच

बाङ्ला-तमिळ कविता पाठ
27 जून 2022, आभासी मंच

मराठी-तमिळ कवि सम्मिलन
28 जून 2022, आभासी मंच

मराठी-कन्नड कवि सम्मिलन
22 जुलाई 2022, आभासी मंच

कवि सम्मिलन
27 जुलाई 2022, आभासी मंच

संस्कृत-तेलुगु साहित्य मंच
03 अगस्त 2022, आभासी मंच

मैथिली-पंजाबी साहित्य मंच
04 अगस्त 2022, आभासी मंच

बाङ्ला- डोगरी साहित्य मंच
05 अगस्त 2022, आभासी मंच

कोंकणी-मैथिली कवि सम्मिलन
23 अगस्त 2022, आभासी मंच

कश्मीरी-तमिऴ कवि सम्मिलन
25 अगस्त 2022, आभासी मंच

सिंधी-मलयाळम् कवि सम्मिलन
16 सितंबर 2022, आभासी मंच

डोगरी-तमिऴ कवि सम्मिलन
27 सितंबर 2022, आभासी मंच

डोगरी-नेपाली साहित्य मंच
27 सितंबर 2022, आभासी मंच

कन्नड-मैथिली साहित्य मंच
28 सितंबर 2022, आभासी मंच

कश्मीरी - संस्कृत साहित्य मंच
29 सितंबर 2022, आभासी मंच

गुजराती-मणिपुरी साहित्य मंच
07 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

असमिया-डोगरी साहित्य मंच
26 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

मैथिली-राजस्थानी साहित्य मंच
27 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

ओडिआ-संस्कृत साहित्य मंच
28 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

बोडो-तमिऴ कवि सम्मिलन
31 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

कोंकणी-संस्कृत कवि सम्मिलन
24 नवंबर 2022, आभासी मंच

असमिया-तमिऴ कवि सम्मिलन
29 नवंबर 2022, आभासी मंच

बोडो-डोगरी साहित्य मंच
12 दिसंबर 2022, आभासी मंच

गुजराती-मैथिली साहित्य मंच
13 दिसंबर 2022, आभासी मंच

सिंधी-राजस्थानी कवि सम्मिलन
13 दिसंबर 2022, आभासी मंच

मराठी- संस्कृत साहित्य मंच
14 दिसंबर 2022, आभासी मंच

कोंकणी-तमिऴ कवि सम्मिलन
16 दिसंबर 2022, आभासी मंच

गुजराती-नेपाली कवि सम्मिलन
06 जनवरी 2023, आभासी मंच

कश्मीरी-मैथिली साहित्य मंच
16 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

संस्कृत-तमिऴ साहित्य मंच
16 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

डोगरी-नेपाली साहित्य मंच
17 जनवरी 2023, आभासी मंच

मैथिली-सिंधी साहित्य मंच
18 जनवरी 2023, आभासी मंच

पंजाबी-संस्कृत साहित्य मंच
19 जनवरी 2023, आभासी मंच

मणिपुरी-तमिऴ कवि सम्मिलन
23 जनवरी 2023, आभासी मंच

बाङ्ला-डोगरी साहित्य मंच
15 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

मैथिली-तमिऴ कवि सम्मिलन
20 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत साहित्य मंच
24 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

साहित्योत्सव 2023
(10-16 मार्च 2023)

अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 विजेताओं का मीडिया से संवाद
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

युवा साहिती : युवा भारत का उदय (अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन)
11-12 मार्च 2023, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

अस्मिता
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी तथा दक्षिणी लेखक सम्मिलन)
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

बहुभाषी कहानी-पाठ
11 मार्च 2023, नई दिल्ली

लेखक सम्मिलन
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

वैचारिकता और साहित्य पर पैनल चर्चा
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

प्रख्यात उद्योगपति एवं लेखक सुनीलकांत मुंजाल के साथ व्यक्ति और कृति कार्यक्रम
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति दीपक मिश्रा द्वारा संवत्सर व्याख्यान
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

युवा साहिती : युवा भारत का उदय
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी और उत्तरी लेखक सम्मिलन)
12 मार्च 2023, नई दिल्ली

आमने-सामने (साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 से पुरस्कृत लेखकों की प्रतिष्ठित साहित्यकारों/विद्वानों से बातचीत)
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

भाषा सम्मान अर्पण समारोह
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

अनुवाद कला : सांस्कृतिक संदर्भ में चुनौतियाँ विषय पर परिचर्चा
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

शब्द-संसार और मेरी कला पर परिचर्चा
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

शिक्षा और सृजनात्मकता पर परिचर्चा
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

आदिवासी लेखक सम्मिलन
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : ब्रज की होली, श्यामा ब्रज लोककला मंच द्वारा
13 मार्च 2023, नई दिल्ली

अखिल भारतीय कवि सम्मिलन : एक पृथ्वी - एक परिवार-एक भविष्य
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

नाट्य लेखन पर परिचर्चा
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

आदिवासी लेखक सम्मिलन
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

लेखक से भेंट : प्रख्यात मैथिली एवं हिंदी लेखिका उषा किरण खान के साथ
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

राष्ट्रीय संगोष्ठी : महाकाव्यों की स्मृतियाँ, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : कव्वाली, निज़ामी ब्रदर्स द्वारा
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

मीडिया, न्यू मीडिया और साहित्य पर परिचर्चा
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पश्चिमी लेखक सम्मिलन)
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

कथासंधि : प्रख्यात उर्दू कथाकार अब्दुस समद के साथ
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखक सम्मिलन
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : डिजिटल युग में प्रकाशन
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : सिनेमा और साहित्य
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : भारत में आदिवासी समुदायों के महाकाव्य
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

सांस्कृतिक कार्यक्रम : साहित्य एवं अभिनय : पाठ से प्रस्तुति, जयंत कस्तूर द्वारा
15 मार्च 2023, नई दिल्ली

आओ कहानी बुनें (बच्चों के लिए कार्यक्रम)
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : विदेशों में भारतीय साहित्य
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : साहित्य और महिला सशक्तिकरण
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : मातृभाषा का महत्त्व
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

परिचर्चा : संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

पूर्वोत्तरी (उत्तर-पूर्वी एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन)
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

व्यक्ति और कृति : कैलाश सत्यार्थी, प्रख्यात समाज सुधारक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता के साथ
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

राष्ट्रीय संगोष्ठी (जारी...)
16 मार्च 2023, नई दिल्ली

ग्रामालोक

ग्राम छन्नी जस्सू, जम्मू-कश्मीर डोगरी कवियों के साथ
11 अप्रैल 2022

ग्राम इंफ़ाल, मणिपुरी लेखकों के साथ
29 अप्रैल 2022

ग्राम एवं ज़िला थौबल, मणिपुरी लेखकों के साथ
30 अप्रैल 2022

ग्राम पाराथोड, मलयाळम् लेखकों के साथ
8 मई 2022

ग्राम भामला, जम्मू-कश्मीर, डोगरी लेखकों के साथ
28 मई 2022

ग्राम नेमाला, कटक, ओड़िआ लेखकों के साथ
09 जून 2022

ग्राम कंकुरिका, असम, असमिया लेखकों के साथ
19 जून 2022

ग्राम रायगड़ा, ओड़िशा, ओड़िआ लेखकों के साथ
19 जून 2022

ग्राम फणीभंडार, ज़िला विश्वनाथ, असम
19 जून 2022

ग्राम पोरोमपत, इंफ़ाल पूर्व, मणिपुरी लेखकों के साथ
21 जून 2022

ग्राम बक्सा, असम, बोडो लेखकों के साथ
25 जून 2022

ग्राम दिबोंग ग्राम पंचायत, जिरीबाम, मणिपुरी लेखकों के साथ
27 जून 2022

ग्राम फुबाला, मणिपुर, मणिपुरी लेखकों के साथ
10 जुलाई 2022

ग्राम डोरी दाघेर, जम्मू-कश्मीर, डोगरी लेखकों के साथ
10 जुलाई 2022

ग्राम गेलापुखुरी, ज़िला विश्वनाथ, असम
16 जुलाई 2022

ग्राम पैरागॉन थिएटर, मणिपुर, मणिपुरी लेखकों के साथ
23 जुलाई 2022

ग्राम तंगमर्ग, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
24 जुलाई 2022

ग्राम चिरांग, असम, बोडो लेखकों के साथ
30 जुलाई 2022

ग्राम सारपद, कटक, ओड़िआ लेखकों के साथ
07 अगस्त 2022

ग्राम नागसंकर, ज़िला विश्वनाथ, असम
20 अगस्त 2022

ग्राम एवं ज़िला पाक्योंग, सिक्किम, नेपाली लेखकों के साथ
27 अगस्त 2022

ग्राम चामुपारा, असम, बोडो लेखकों के साथ
29 अगस्त 2022

ग्राम नक्तिदेउइल, ओड़िशा, ओड़िआ लेखकों के साथ
11 सितंबर 2022

ग्राम बुरिगंग, असम, नेपाली लेखकों के साथ
18 सितंबर 2022

ग्राम कोटिला, बाल साहित्य कार्यक्रम के साथ
21 सितंबर 2022

ग्राम बिष्णुपुर, ज़िला मणिपुरी, मणिपुरी लेखकों के साथ
24 सितंबर 2022

ग्राम क्योंझर, ओड़िशा, ओड़िआ लेखकों के साथ
16 अक्तूबर 2022

ग्राम बिष्णुपुर, बांकुरा, बाङ्ला लेखकों के साथ
18 अक्तूबर 2022

ग्राम बावली जी.पी., पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ
04 नवंबर 2022

ग्राम फोहर, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
28 नवंबर 2022

ग्राम वेसू, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
30 नवंबर 2022

ग्राम बिजबेहरा, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
03 दिसंबर 2022

ग्राम डाब, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
05 दिसंबर 2022

ग्राम ओलाविप लेकसाइड, कविता-पाठ कार्यक्रम के साथ
25 दिसंबर 2022

ग्राम बीदर, लोक साहित्य कार्यक्रम के साथ
30 दिसंबर 2022

ग्राम छपरा, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला लेखकों के साथ
26 दिसंबर 2022

ग्राम बांदीपोरा, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
03 जनवरी 2023

ग्राम संबुल, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
04 जनवरी 2023

ग्राम हंदवाड़ा, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
06 जनवरी 2023

ग्राम पालपोरा, कश्मीर, कश्मीरी लेखकों के साथ
07 जनवरी 2023

ग्राम सीतारामपुर, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला कवियों के साथ
08 जनवरी 2023

ग्राम सीडगोरा, झारखंड, मैथिली कविता-पाठ कार्यक्रम के साथ
15 जनवरी 2023

ग्राम मणिपुर, मणिपुरी लेखकों के साथ
21 जनवरी 2023

ग्राम बीदर, कर्नाटक, लोक साहित्य-संस्कृति-व्याख्यान कार्यक्रम के साथ
25 जनवरी 2023

ग्राम साउथ 24 परगना, पश्चिम बंगाल, बाङ्ला कवियों के साथ
05 फ़रवरी 2023

कथाकार अनुवादक

'कथाकार अनुवादक' कार्यक्रम
15 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

कथासंधि

प्रख्यात बाङ्ला लेखक श्री रंजन बंद्योपाध्याय
27 अप्रैल 2022, कोलकाता

प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री अचला नागर
18 मई 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात ओड़िआ लेखक सुश्री देवव्रत मदनराय
29 मई 2022, भुवनेश्वर

प्रख्यात संताली लेखक श्री सोमई किस्कू
10 जुलाई 2022, घाटशिला

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री प्रदीप सौरभ
20 जुलाई 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री उषा किरण ख़ान
08 अगस्त 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री सूर्यबाला
26 अगस्त 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी लेखक श्री प्रज्ञा दया पवार
07 अक्तूबर 2022, मुंबई

प्रख्यात डोगरी लेखक डॉ. अशोक कुमार खजूरिया
8 अक्तूबर 2022, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात डोगरी लेखक श्री अशोक दत्ता
09 नवंबर 2022, रेहरी, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात डोगरी लेखिका सुश्री सुनीता भदवाल
09 नवंबर 2022, रेहरी, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात हिंदी लेखिका सुश्री कुसुम अंसल
27 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री कैलाश शादाब
22 जनवरी 2023, नागपुर

प्रख्यात मराठी लेखक श्री विवेक कुडू
17 मार्च 2023, मुंबई

कविसंधि

प्रख्यात मराठी कवि श्री नीलकंठ कदम
29 अप्रैल 2022, मुंबई

प्रख्यात मराठी कवि श्री रवींद्र डी. लाखे
13 मई 2022, मुंबई

प्रख्यात संताली कवि श्री जगन्नाथ सोरेन
22 मई 2022, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री सुश्री प्रसन्ना पटसानी
28 मई 2022, भुवनेश्वर

प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री सुश्री अपर्णा मोहंती
12 जून 2022, भुवनेश्वर

प्रख्यात ओड़िआ कवि श्री मनोरमा बिस्वाल महापात्रा
13 जुलाई 2022, बालासोर, ओड़िशा

प्रख्यात मराठी कवि श्री मनोज पाठक
26 अगस्त 2022, मुंबई

प्रख्यात डोगरी कवि कर्नल राज मनावरी
08 अक्तूबर 2022, जौरियाँ, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात मणिपुरी कवि श्री इरुंगबम देवेन
23 अक्तूबर 2022, इंफ़ाल

प्रख्यात डोगरी कवि श्री बिशन दास घरिया
28 अक्तूबर 2022, अघर जित्तो कटरा, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात ओड़िआ कवि श्री प्रह्लाद सत्यथी
30 अक्तूबर 2022, बलांगीर

प्रख्यात ओड़िआ कवयित्री सुश्री रंजीता नायक
11 नवंबर 2022, कटक

प्रख्यात ओड़िआ कवि श्री सदाशिव दास
11 दिसंबर 2022, कटक

प्रख्यात डोगरी कवि श्री मो. रफ़ीक़ 'रफ़ीक़'
11 दिसंबर 2022, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात कोंकणी कवि श्री आर.एस. भास्कर
16 दिसंबर 2022, गोवा

प्रख्यात हिंदी कवि श्री हेमंत कुकरेती
21 दिसंबर 2022

प्रख्यात असमिया कवि श्री कृष्ण बिक्रम राणा
24 दिसंबर 2022, तिनसुकिया, असम

प्रख्यात मराठी कवयित्री सुश्री सुमति लांडे
18 जनवरी 2023, मुंबई

प्रख्यात सिंधी कवि श्री कन्हैयालाल मोटवानी 'मांडो'
01 फ़रवरी 2023, भोपाल

साहित्य मंच

साहित्य मंच के अंतर्गत कश्मीरी कविता
18 अप्रैल 2022, अनंतनाग, कश्मीर

अंग्रेज़ी में साहित्य मंच
19 अप्रैल 2022, दिल्ली

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
23 अप्रैल 2022, बेंगळूरु

रायलसीमा उपन्यास में हालिया रुझानों पर साहित्य मंच
28 अप्रैल 2022, कुप्पम

साहित्य मंच : युवा साहिती - कविता की उत्पत्ति
29 अप्रैल 2022, पी.जी.हलाकट्टी सभागार

महाकवि भारती पर साहित्य मंच
29 अप्रैल 2022, देवकोट्टई

गुलाम मोहम्मद अजिर पर साहित्य मंच
08 मई 2022, बारामूला, कश्मीर

उच्च श्रेणी का साहित्य और संस्कृति पर साहित्य मंच
08 मई 2022, नादुमट्टम

साहित्यिक वाद-विवाद, पढ़ना-लिखना और अनुभव पर साहित्य मंच
15 मई 2022, कुरुन्थोडी, वातकरा

साहित्य मंच : कश्मीरी कविता-पाठ
19 मई 2022, मरकज़-ए-नूर, श्रीनगर

साहित्य मंच : संतालों के डोंग गीत तथा उनका साहित्यिक महत्त्व
22 मई 2022, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

साहित्य मंच : कविता और कहानी वाचन सत्र तथा परिचर्चा
22 मई 2022, नेय्यंट्टिकारा तालुक

साहित्य मंच : सैयद रसूल पोम्पोर
25 मई 2022, अनंतनाग, कश्मीर

अक्षरलोक पर साहित्य मंच
29 मई 2022, केरल

साहित्य मंच : आज की सामाजिक पृष्ठभूमि में तमिऴ साहित्य
31 मई 2022, आभासी मंच

कश्मीरी शास्त्रीय मर्सिया/नौहा पर साहित्य मंच
04 जून 2022, गुंड हस्सी भट, श्रीनगर

प्रख्यात बाङ्ला लेखकों के साथ साहित्य मंच
7 जून 2022, कोलकाता

श्रीरामचंद्र भांजा पर साहित्य मंच
11 जून 2022, कटक

साहित्य मंच : साहित्यिक विमर्श, सोशल मीडिया पठन-पाठन
12 जून 2022, केरल

कश्मीरी कवियों के साथ साहित्य मंच
18 जून 2022, शोपियां, कश्मीर

अब्दुर्रहमान आज़ाद पर साहित्य मंच
23 जून 2022, पुलवामा, कश्मीर

साहित्य मंच : बोडो कथा तथा नारीवाद
25 जून 2022, बक्सा, असम

साहित्य मंच : साहित्यिक व्याख्यान, पठन-पाठन एवं अनुभव कार्यक्रम
26 जून 2022, वायनाड, केरल

साहित्य मंच : समकालीन मणिपुरी साहित्य में एम. के. बिनोदिनी का लेखन
26 जून 2022, मैचोऊ तरेत शांगलेन, इंफ़ाल

साहित्य मंच के अंतर्गत युवा साहिती कार्यक्रम
26 जून 2022, तिरुवनंतपुरम

मणिपुरी कथा लेखकों के साथ साहित्य मंच
27 जून 2022, इंफ़ाल

प्रख्यात उर्दू लेखक के साथ साहित्य मंच
29 जून 2022, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

साहित्य मंच : मलयाळम् साहित्य और केरल पुनर्जागरण पर चर्चा
9 जुलाई 2022, चनाप्पारा, कडक्कल

साहित्य मंच के अंतर्गत कवि सम्मिलन
10 जुलाई 2022, कूट्टमविला, तिरुवनंतपुरम

धीरेंद्रनाथ बस्के के जीवन और कार्यों पर साहित्य मंच
10 जुलाई 2022, खड़गपुर

साहित्य मंच : बाङ्ला लेखकों द्वारा कहानी-पाठ
14 जुलाई 2022, कोलकाता

साहित्य मंच : प्रवासी साहित्य : विकास की अवधारणा और आयाम
15 जुलाई 2022, नई दिल्ली

पंचसखा परंपरा और भीमा भोई पर साहित्य मंच
22 जुलाई 2022, भुवनेश्वर

जीबनानंद आचार्य पर साहित्य मंच
22 जुलाई 2022, कटक

मणिपुरी कथा साहित्यकारों के साथ साहित्य मंच
24 जुलाई 2022, इंफ़ाल

साहित्य मंच के अंतर्गत महिला काव्य गोष्ठी
24 जुलाई 2022, बेंगळूरु

आत्मकथाओं पर साहित्य मंच
28 जुलाई 2022, पट्टाभिराम, चेन्नै

प्रेमचंद जयंती के अवसर पर साहित्य मंच
31 जुलाई 2022, नई दिल्ली

कहानी-पाठ और चर्चा विषय पर साहित्य मंच
31 जुलाई 2022, तिरुवनंतपुरम

साहित्य मंच : मणिपुरी प्रदर्शन कलाओं में एम. के. बिनोदिनी का योगदान
07 अगस्त 2022, इंफ़ाल

'चांडालभिषुकी' की 100वीं वर्षगांठ के अवसर पर साहित्य मंच
10 अगस्त 2022, कोझीकोड

साहित्य मंच के अंतर्गत संस्कृत कविता-पाठ
12 अगस्त 2022, आभासी मंच

उत्तर ओड़िशा की लोक भाषाओं पर साहित्य मंच
15 अगस्त 2022, ओड़िशा

जी. राजेश्वर शर्मा के जीवन और कार्यों पर साहित्य मंच
20 अगस्त 2022, अगरतला

समकालीन कन्नड कहानियों पर साहित्य मंच
28 अगस्त 2022, सिंदागी, ज़िला बीजापुर

साहित्य मंच : कन्नड कवि सम्मिलन
29 अगस्त 2022, कन्नाल्ली, यादगिरि

साहित्य मंच : बोडो साहित्य में नारीवाद
29 अगस्त 2022, उदलगुड़ी, असम

गुलाम मोहम्मद शाद पर साहित्य मंच
05 सितंबर 2022, आभासी मंच

शिक्षक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
05 सितंबर 2022, आभासी मंच

विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर साहित्य मंच
08 सितंबर 2022, कोलकाता

कन्नड-ओडालाला ओंडु ओलानोटा पर साहित्य मंच
09 सितंबर 2022, जयनगर, बेंगलुरु

अज़ीज़ हाजिनी पर साहित्य मंच
11 सितंबर 2022, श्रीनगर, कश्मीर

साहित्य मंच : मलयाळम् उपन्यासों में अंतरिक्ष
15 सितंबर 2022, चालकुडी

साहित्य मंच : कुमारन आशान की चांडाल भिक्षुकी में इतिहास और सौंदर्यशास्त्र
16 सितंबर 2022, मुवात्तुपुझा, केरल

अनुथमा शतवार्षिकी पर साहित्य मंच
16 सितंबर 2022, नुंगमबक्कम, चेन्नै

साहित्य मंच : मलयाळम् साहित्य में यात्रा वृत्तांत लेखन
19 सितंबर 2022, कोझिकोड

साहित्य मंच : नाटक-साहित्य और अनुभव
21 सितंबर 2022, कोलाप्पा, कन्नूर

साहित्य मंच : विश्व अनुवाद दिवस के अवसर पर अनुवाद का अनुभव
30 सितंबर 2022, कोलकाता

साहित्य मंच के अंतर्गत कश्मीरी कविता-पाठ
02 अक्तूबर 2022, कनिहामा, कश्मीर

साहित्य मंच : ए. माधवैया
18 अक्तूबर 2022, तांबरम, चेन्नै

साहित्य मंच के अंतर्गत कश्मीरी कविता-पाठ
18 अक्तूबर 2022, डेलिना, कश्मीर

साहित्य मंच : ओमानथिंकल किदावो, नल्ला कोमला थमारा पूवो पर साहित्यिक विमर्श
18 अक्तूबर 2022, त्रिवेंद्रम

उपन्यास ओदलाला ओन्दु अनुसंधान पर साहित्य मंच
28 अक्तूबर 2022, हगरीबोम्मनहल्ली, विजयनगर

प्रमोद त्रिपाठी पर साहित्य मंच
29 अक्तूबर 2022, संबलपुर

साहित्य मंच : समकालीन कन्नड कहानियों में महिलाओं का चित्रण
02 नवंबर 2022, बागलकोट

साहित्य मंच : के.जे. बेबी के कार्यों में वायनाड के सांस्कृतिक परिदृश्य
03 नवंबर 2022, मनंथवाडी

साहित्य मंच : लंकेश कृत नाटकों पर विशेष व्याख्यान
03 नवंबर 2022, बेंगळूरु

उदयराज सिंह पर साहित्य मंच
4 नवंबर 2022, नई दिल्ली

साहित्य मंच : बोडो साहित्य में पर्यावरण
5 नवंबर 2022, कोकराझार

साहित्य मंच : तेलुगु साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का लेखन
06 नवंबर 2022, कडप्पा, आंध्रप्रदेश

अच्युतानंद दास पर साहित्य मंच
11 नवंबर 2022, कटक

पारिस्थितिकी और मलयाळम् साहित्य विषय पर साहित्य मंच
19 नवंबर 2022, कोचीन

तमिळ उपन्यासों में समकालीन प्रवृत्तियों पर साहित्य मंच
15 नवंबर 2022, उदुमलपेट

हकीम गुलाम हसन शाहबाज़ पर साहित्य मंच
18 नवंबर 2022, बीरवाह, कश्मीर

महिला, साहित्य और समाज पर साहित्य मंच
20 नवंबर 2022, कोझीकोड

ललिता निबंध पर साहित्य मंच
20 नवंबर 2022, टिटिलागढ़, बलांगीर

साहित्य मंच : मलयाळम् साहित्य में महिलाओं का प्रतिनिधित्व
21 नवंबर 2022, कोचीन

साहित्य मंच के अंतर्गत बाङ्ला कविता-पाठ
27 नवंबर 2022, पुरुलिया

तंजाई क्षेत्र के साहित्यिक कार्यों पर साहित्य मंच
02 दिसंबर 2022, त्रिची

साहित्य मंच के अंतर्गत इज़राइली कवियों द्वारा कविता-पाठ
2 दिसंबर 2022, दिल्ली

अक्षरा श्लोक - ओरु पाकल 1001 श्लोकंगळ पर साहित्य मंच
04 दिसंबर 2022, तिरुवनंतपुरम

साहित्य मंच के अंतर्गत कविता-पाठ
07 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

साहित्य मंच के अंतर्गत कवि सम्मिलन
09 दिसंबर 2022, राजाकुमारी, केरल

श्री बीरेन के जीवन और कार्यों पर साहित्य मंच
17 दिसंबर 2022, नेहू शिलांग

अंग्रेज़ी लेखकों के साथ साहित्य मंच
23 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

हवाईबम रणबीर सिंह के जीवन और कार्यों पर साहित्य मंच
24 दिसंबर 2022, इंफ़ाल

साहित्य मंच
25 दिसंबर 2022, इंफ़ाल

साहित्य मंच के अंतर्गत कविता-पाठ कार्यक्रम
28 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

मूल भाषा तथा मलयाळम् साहित्य विषय पर साहित्य मंच
15 दिसंबर 2022, पैय्यानूर

साहित्य मंच के अंतर्गत कवि सम्मिलन
15 दिसंबर 2022, बीदर

सरोजा राममूर्ति की शतवार्षिकी पर साहित्य मंच
15 दिसंबर 2022, चेन्नै

साहित्य मंच : दलित साहित्य विचार
17 दिसंबर 2022, चिकमंगलूर

पांडिया क्षेत्र के साहित्यिक कार्यों पर साहित्य मंच
20 जनवरी 2023, मदुरै

तमिळ प्रवासी उपन्यासों पर साहित्य मंच
03 फ़रवरी 2023, वीरापंडी

साहित्य मंच के अंतर्गत कवि सम्मिलन
10 जनवरी 2023, बीदर, कर्नाटक

मणिपुरी साहित्य पर साहित्य मंच
15 जनवरी 2023, होजाई, असम

बाङ्ला कवियों के साथ साहित्य मंच
15 फ़रवरी 2023, कोलकाता

बाङ्ला साहित्य में लोक तत्वों पर साहित्य मंच
23 फ़रवरी 2023, कोलकाता

लेखक से भेंट

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री फणी मोहंती
15 अप्रैल 2022, भुवनेश्वर, ओडिशा

प्रख्यात कन्नड लेखक श्री सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी
14 मई 2022, हावेरी

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री अर्जुन चावला
20 मई 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात गुजराती लेखक श्री सतीश व्यास
27 मई 2022, अहमदाबाद

प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री गोविन्द मिश्र
7 जून 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात हिन्दी साहित्यकार श्री रामदरश मिश्र
9 जून 2022, नई दिल्ली

प्रख्यात मराठी लेखक श्री विठ्ठल वाघ
25 जून 2022, अकोला, महाराष्ट्र

प्रख्यात असमिया लेखक श्री छबीलाल उपाध्याय
3 जुलाई 2022, सोनितपुर, असम

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री विभूति पटनायक
23 जुलाई 2022, भुवनेश्वर

प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक श्री अमीश त्रिपाठी
13 अक्तूबर 2022, दिल्ली

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री गौरहरि दास
12 नवंबर 2022, भुवनेश्वर

प्रख्यात डोगरी लेखक श्री मोहन सिंह
07 दिसंबर 2022, जम्मू, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री के. पी. रामानुन्नी
23 दिसंबर 2022, कोझिकोड

प्रख्यात गुजराती लेखक डॉ. कुमारपाल देसाई
26 जनवरी 2023, भुज

प्रख्यात तमिऴ लेखक श्री पुवियारासु
04 मार्च 2023, कोयम्बटूर

प्रख्यात तमिऴ लेखिका श्रीमती जी. तिलकवती
27 मार्च 2023, नुंगमबक्कम, चेन्नै

विविध कार्यक्रम

पठन लेखन अनुभव पर व्याख्यान
14 अप्रैल 2022, मुथलकोडम, थोडुपुझा, इडुक्की

कविता-कहानी पाठ और परिचर्चा
14 अप्रैल 2022, कांचियार

स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम
16–30 अप्रैल 2022, चेन्नै

विश्व पुस्तक दिवस
23 अप्रैल 2022, चेन्नै

स्वच्छता के महत्त्व पर व्याख्यान
29 अप्रैल 2022, नई दिल्ली

डॉ. श्रीधर पवार द्वारा स्वच्छता, पर्यावरण और साहित्य पर व्याख्यान
29 अप्रैल 2022, मुंबई

ओयांताइ कृति का पुस्तक विमोचन
31 मई 2022, नई दिल्ली

योग दिवस
21 जून 2022, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस
21 जून 2022, चेन्नै

प्रो. गोपीचंद नारंग के निधन पर शोक सभा
24 जून 2022, नई दिल्ली

"कश्मीरी में बाल साहित्य लेखन" पर त्रि-दिवसीय उन्मुखीकरण सह कार्यशाला
25-27 जून 2022, पहलगाम, कश्मीर

जदुमणि बेश्रा के निधन पर शोक सभा
29 जून 2022, आभासी मंच

आलोचक के साथ एक शाम : श्री भगवान सिंह
17 अगस्त 2022, नई दिल्ली

हिन्दी सप्ताह
14 सितंबर 2022, कोलकाता

हिन्दी सप्ताह
14 से 21 सितंबर 2022, बेंगळूरु

हिंदी सप्ताह
14 से 21 सितंबर 2022, नई दिल्ली

हिंदी सप्ताह
21 सितंबर 2022, कोलकाता

हिंदी सप्ताह
21 सितंबर 2022, चेन्नै

फर लक फर लाम पर आधारित दक्षिण पूर्व एशिया में *रामायण खंड II* की पुस्तक का विमोचन
29 सितंबर 2022, नई दिल्ली

सुनील कुमार शर्मा द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर व्याख्यान
01 नवंबर 2022, कोलकाता

सतर्कता जागरूकता पर व्याख्यान
02 नवंबर 2022, चेन्नै

सतर्कता जागरूकता सप्ताह
04 नवंबर 2022, नई दिल्ली

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
11 नवंबर 2022

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
12 नवंबर 2022

कहानी-कविता लेखन तथा कार्टून ड्राइंग कार्यशाला
13 नवंबर 2022

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह
14 नवंबर 2022, कोलकाता

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
15 नवंबर 2022

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
16 नवंबर 2022

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
17 नवंबर 2022

अपने प्रिय लेखक से भेंट, चर्चा, रचना-पाठ तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ
18 नवंबर 2022

पूर्वी क्षेत्रीय काव्योत्सव
19 नवंबर 2022, झारखंड

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह
14–20 नवंबर 2022, चेन्नै

संविधान दिवस शपथ ग्रहण समारोह
26 नवंबर 2022, कोलकाता

कालांजलि - कथा वाचन कार्यक्रम
10-11 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

दिल्ली अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सव
16-30 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

संत-साहित्य उत्सव : नरसिंह मेहता
31 दिसंबर 2022 और 1 जनवरी 2023, जूनागढ़

साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य प्रोफ़ेसर रहमान राही के निधन पर शोक सभा
13 जनवरी 2023, आभासी मंच

पर्यावरण और तमिऴ साहित्य पर व्याख्यान
10 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

एक शाम समीक्षक, डॉ. नितिन वडगामा के साथ
15 फ़रवरी 2023, धारी, गुजरात

साहित्य में राष्ट्रीय चेतना पर चर्चा
27 फ़रवरी 2023, नई दिल्ली

स्वतंत्रता संग्राम में साहित्यकारों के योगदान पर चर्चा
1 मार्च 2023, नई दिल्ली

आब्रित्तिलोक के सहयोग से कविता उत्सव
9 मार्च 2023, जोरासांको, कोलकाता

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस
08 मार्च 2023, आभासी मंच

विश्व कविता दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय काव्योत्सव
21 मार्च 2023, नई दिल्ली

भाषा सम्मेलन

बंजारा भाषा सम्मेलन
10-11 सितंबर 2022, हैदराबाद, तेलंगाना

मुलाक़ात

असमिया लेखकों के साथ
13 जून 2022, माजुली

युवा बोडो लेखकों के साथ
29 सितंबर 2022, गोसाईगाँव बी.एड. कॉलेज

मणिपुरी लेखकों के साथ
23 अक्तूबर 2022, इंफ़ाल

शेख राज़ी के साथ
11 नवंबर 2022, बिजबेहरा, कश्मीर

बहुभाषी कवि/लेखक सम्मिलन

बहुभाषी कवि सम्मिलन
10 मई 2022, कोलकाता

बहुभाषी कवि सम्मिलन
16 सितंबर 2022, असम

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
4 नवंबर 2022, अगरतला, त्रिपुरा

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
10-11 दिसंबर 2022, पोर्टब्लेयर

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
17 दिसंबर 2022, नेहू, शिलांग

बहुभाषी रचना-पाठ
29 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन
05 जनवरी 2023, गुवाहाटी, असम

बहुभाषी कविता-पाठ
21 फ़रवरी 2023, आभासी मंच

बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 फ़रवरी 2023, नई दिल्ली

बहुभाषी लेखक सम्मिलन
28 फ़रवरी 2023, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

बहुभाषी कवि सम्मिलन
21 मार्च 2023, आभासी मंच

नारी चेतना

मैथिली लेखकों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
12 अप्रैल 2022, आभासी मंच

डोगरी लेखकों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
22 अप्रैल 2022, कठुआ, जम्मू-कश्मीर

महिला कवयित्रियों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
23 अप्रैल 2022, तिरुवनंतपुरम

प्रख्यात संताली लेखिकाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
21 मई 2022, बारीपदा, ओड़िशा

बोडो महिलाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
25 जून 2022, बक्सा, असम

संताली महिलाओं के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
10 जुलाई 2022, घाटशिला

बोडो महिला व्यक्तित्वों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
5 नवंबर 2022, कोकराझार

मलयाळम् लेखकों के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
4 नवंबर 2022, कोझींजमपारा, पलक्कड़

महिला कवि सम्मिलन के साथ नारी चेतना कार्यक्रम
12 दिसंबर 2022, अथानी बेलगावी

नारी चेतना कार्यक्रम के अंतर्गत कविता-पाठ
20 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

महिला साहित्य पर नारी चेतना कार्यक्रम
24 दिसंबर 2022, बीरुर तालुक, चिक्कमगलुरु

नारी चेतना कार्यक्रम के अंतर्गत कविता-पाठ
8 मार्च 2023, कोलकाता

नारी चेतना कार्यक्रम के अंतर्गत कविता-पाठ
8 मार्च 2023, मुंबई

नारी चेतना कार्यक्रम के अंतर्गत बहुभाषी कविता-पाठ
14 मार्च 2023, नई दिल्ली

व्यक्ति और कृति

श्री नागेरा सिंह जम्वाल के साथ व्यक्ति और कृति कार्यक्रम
19 नवंबर 2022, कटरा, जम्मू-कश्मीर

कवि सम्मिलन

गुजराती कवि सम्मिलन
19 अप्रैल 2022

सिंधी कवि सम्मिलन
21 अप्रैल 2022

दक्षिण भारतीय कवि सम्मिलन
19 जनवरी 2023, हैदराबाद, तेलंगाना

संस्कृत कवि सम्मिलन
10 फ़रवरी 2023 तिरुपति, आंध्र प्रदेश

हिन्दी कवि सम्मिलन
3 मार्च 2023, नई दिल्ली

प्रवासी मंच

प्रख्यात ओड़िआ लेखिका सुनंदा मिश्रा पांडा के साथ प्रवासी मंच
16 अप्रैल 2022, कटक, ओड़िशा

दिव्या माथुर के साथ प्रवासी मंच
26 अप्रैल 2022, नई दिल्ली

गौतम दत्त के साथ प्रवासी मंच
24 नवंबर 2022, नई दिल्ली

संवाद

श्री डॉ. तेजवंत सिंह गिल के साथ संवाद कार्यक्रम
27 अप्रैल 2022, चंडीगढ़

श्री शीर्षेन्दु मुखोपाध्याय के साथ संवाद कार्यक्रम
25 जून 2022, कोलकाता

डॉ. एम. लीलावती के साथ संवाद कार्यक्रम
29 सितंबर 2022, कोच्चि

डॉ. भालचंद्र नेमाड़े के साथ संवाद कार्यक्रम
26 फ़रवरी 2023, मुंबई

संगोष्ठियाँ (जन्मशतवार्षिकी)

गोलक बिहारी ढाल की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
16 अप्रैल 2022, कटक, ओड़िशा

कीरत बबानी की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
3 जून 2022, मुंबई

गंगाधर रथ की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
11 जून 2022, कटक

शंकर रमानी की जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
24-25 जून 2022, गोवा

बिमल कर की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
26 जून 2022, कोलकाता

नारायण श्याम की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
22 जुलाई 2022, भोपाल

सी.के. मूसद की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
22 जुलाई 2022, नेम्मारा, पलक्कड़

सुरेंद्र मोहंती की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
23 जुलाई 2022, भुवनेश्वर

पंडित गोविंद झा तथा अमरनाथ झा की जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
8-19 अगस्त 2022, दरभंगा, बिहार

अकिलन की जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
03-04 नवंबर 2022, नुंगमबक्कम, चेन्नै

भंजकिशोर पटनायक की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
12 नवंबर 2022, कटक

जयकांत मिश्र की जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
26-27 नवंबर 2022, प्रयागराज

टी.के.सी. वादुथला की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
16 दिसंबर 2022, पलक्कड़, केरल

महाकवि ओलप्पामन्ना की जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
14 और 15 जनवरी 2023, पलक्कड़, केरल

रमापदा चौधरी की जन्मशतवार्षिकी पर संगोष्ठी
21 जनवरी 2023, कोलकाता

भाई वीर सिंह की 150वीं जन्मशतवार्षिकी पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
1-2 मार्च 2023, चंडीगढ़

संगोष्ठी

मणिपुरी साहित्य में हास्य और व्यंग्य पर संगोष्ठी
24 अप्रैल 2022, इंफ़ाल

स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
12 मई 2022, थुनचन परम्बु, तिरुर

स्वतंत्रता संग्राम-मैथिली साहित्य : संस्कृति और विचारधारा पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
13-14 मई 2022, मधेपुरा, बिहार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत साहित्य के योगदान पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
16-17 मई 2022, नलबाड़ी, असम

गोपबंधु और राष्ट्रवादी साहित्य के उद्भव पर संगोष्ठी
27 मई 2022, भुवनेश्वर

रवींद्रनाथ, ओड़िशा और ओड़िआ साहित्य पर संगोष्ठी
29 मई 2022, भुवनेश्वर

'नवदोत्तर मराठी नाटक : आशय आणी स्वरूप' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
1-2 जुलाई 2022, श्रीरामपुर, अहमदनगर

'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर रामायण और भागवत गीता के प्रभाव' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
8-9 जुलाई 2022, जयपुर, राजस्थान

'मध्यकालीन गुजराती साहित्यिक संशोधन आणे संपदान' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
25-26 जुलाई 2022, अहमदाबाद

'भारतीय स्वातंत्रता आंदोलन आणी मराठी साहित्य' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
30-31 जुलाई 2022, पैठण, महाराष्ट्र

गुजराती महिला लेखन : सृजन प्रक्रिया और साहित्य विशेष' विषय पर संगोष्ठी
3 अगस्त 2022, अहमदाबाद

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती साहित्य का योगदान' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
6-7 अगस्त 2022, सनोसरा, भावनगर

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सिंधी साहित्य का योगदान' विषय पर संगोष्ठी
8 अगस्त 2022, उल्हासनगर, महाराष्ट्र

'मलयाळम् उपन्यास में कोझीकोडेन देशांगळ' विषय पर संगोष्ठी
10 अगस्त 2022, देवगिरी

'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड साहित्य का योगदान' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
12-13 अगस्त 2022, बेंगळूरु

'फ़कीरमोहनका साहित्यरे समकालीन इतिहास' विषय पर संगोष्ठी
13 अगस्त 2022, बालासोर

तमिऴ साहित्य के विशेष संदर्भ में भारतीय स्वतंत्रता के 75वें वर्ष पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
22–23 अगस्त 2022, पोलाची

रेव. जॉर्ज मथान का योगदान और मलयाळम् भाषा के आधुनिकीकरण पर संगोष्ठी
26 अगस्त 2022, पनमना, कोल्लम

संस्कृति और नायकों पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
24-25 सितंबर 2022, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

'बाङ्ला साहित्य तथा भारत का स्वतंत्रता संग्राम' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
15-16 अक्तूबर 2022, कोलकाता

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और बोडो साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी
14 नवंबर 2022, ढेकियाजुली, असम

20वीं और 21वीं सदी के डोगरी उपन्यास की आलोचनात्मक समीक्षा और मूल्यांकन पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
18-19 नवंबर 2022, कटरा, जम्मू-कश्मीर

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में संताली साहित्य के योगदान पर संगोष्ठी
20 नवंबर 2022, जमशेदपुर

मैथिली साहित्य की समृद्धि में लोक गीतों और लोक महाकाव्यों के योगदान पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
20-21 नवंबर 2022, जमशेदपुर, झारखंड

'बहु और परा संस्कृतिवाद : पंजाबी साहित्य' विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
5-6 दिसंबर 2022, अमृतसर

बोडो साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक तत्वों की खोज पर संगोष्ठी
19 दिसंबर 2022, काजलगाँव, असम

महाराष्ट्रतिल आदिवासी लोक-साहित्य पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
16-17 फ़रवरी 2023, तलासरी, महाराष्ट्र

'वर्तमान समय में उर्दू साहित्य की रचनात्मक प्रवृत्ति एवं मानक' विषय पर द्वि-दिवसीय संगोष्ठी
28 फ़रवरी - 1 मार्च 2023 कोलकाता, पश्चिम बंगाल

परिसंवाद (जन्मशतवार्षिकी)

हरनाम दास सहराई की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
07 अप्रैल 2022, आभासी मंच

डॉ. अम्बेडकर जयंती के अवसर पर आयोजित 'डॉ. अम्बेडकर : भारतीय मेधा के प्रतिमान' पर परिसंवाद
14 अप्रैल 2022, आभासी मंच

कमल लोचन मोहंती की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
15 अप्रैल 2022, भुवनेश्वर, ओड़िशा

एम. के. बिनोदिनी देवी के जीवन और कार्यों पर जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद
18 मई 2022, इंफ़ाल

अकबर इलाहाबादी की 175वीं जयंती पर परिसंवाद
29 जून 2022, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

रचाकोंडा विश्वनाथ शास्त्री की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
24 जुलाई 2022, विशाखापत्तनम

भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के डिजाइनर पिंगली वेंकय्या की 146 वीं जयंती के अवसर पर भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के एकीकृत साहित्यिक चित्रण पर परिसंवाद
02 अगस्त 2022, विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश

अज़हा वल्लियप्पा की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
20 अगस्त 2022, कोयम्बटूर

अनिसेट्टी सुब्बा राव की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
30 अगस्त 2022, गुंटूर, ए.पी.

रा रा (राचमालु रामचंद्र रेड्डी) की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
24 नवंबर 2022, कडपा

'वामनदादा कर्डक जन्मशतवार्षिकी : व्यक्तित्व और कृतित्व' पर परिसंवाद
10 दिसंबर 2022, मुंबई

मुक्त छंद के पितामह श्री कुंदुर्ती अंजनेयुलु की जन्मशतवार्षिकी पर परिसंवाद
11 दिसंबर 2022, हैदराबाद

महर्षि अरबिंदो घोष की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित 'महर्षि अरबिंदो घोष का गुजराती साहित्य पर प्रभाव' विषयक परिसंवाद
11 फ़रवरी 2023, गाँधीनगर

परिसंवाद

मुसाहिबीन-ए-साहिर : कुछ यादें कुछ बातें पर परिसंवाद
1 अप्रैल 2022, मलेरकोटला, पंजाब

तेलुगु रंगमंच और साहित्य पर परिसंवाद
16 अप्रैल 2022, तेनाली, आंध्र प्रदेश

असमिया साहित्य के विकास में लेखिकाओं का योगदान पर परिसंवाद
17 अप्रैल 2022, गुवाहाटी, असम

बोडो साहित्य के बोडो महिला लेखन में नारीवाद पर परिसंवाद
18 अप्रैल 2022, कोकराझार, असम

पर्यावरण और साहित्य पर परिसंवाद
20 अप्रैल 2022, नई दिल्ली

परिसंवाद : खोंगजोम युद्ध तथा शहीदों को काव्यात्मक श्रद्धांजलि
23 अप्रैल 2022, इंफ़ाल

परिसंवाद : मेरे जीवन पर पुस्तकों का प्रभाव
23 अप्रैल 2022, नई दिल्ली

संताली साहित्य में उपन्यास लेखन के रुझान पर परिसंवाद
29 अप्रैल 2022, जमशेदपुर, झारखंड

परिसंवाद : समकालीन असमिया साहित्य : एक समीक्षात्मक परिचर्चा
30 अप्रैल 2022, माजुली, असम

परिसंवाद : मो. सेबाश्तियांव रोदोल्फ दाल्गाद : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
7 मई 2022, गोवा

संताली भाषा, लिपि और साहित्य आंदोलन पर परिसंवाद
21 मई 2022, बारीपदा, ओड़िशा

संताली साहित्य पर भारतीय साहित्य का प्रभाव पर परिसंवाद
22 मई 2022, झारग्राम, पश्चिम बंगाल

अली मोहम्मद शहबाज पर परिसंवाद
26 मई 2022, कुपवाड़ा, कश्मीर

डोगरी साहित्य में प्रगतिशील, धर्मी और कूटनीतिक स्वर पर परिसंवाद
27 मई 2022, पौनी, जम्मू-कश्मीर

ओडिशा में महिला शिक्षा : मधुसूदन दास का मौलिक योगदान पर परिसंवाद
28 मई 2022, भुवनेश्वर

परिसंवाद : 1980 के बाद के विशेष संदर्भ के साथ असमिया रचनात्मक साहित्य में सबाल्टर्न इतिहास पर संवाद
3 जून 2022, गोलाघाट

परिसंवाद : स्वतंत्रता के बाद का बाल साहित्य
12 जून 2022, भुवनेश्वर

महाकाव्य तथा किंवदंती आधारित आधुनिक भारतीय साहित्य पर परिसंवाद
17 जून 2022, नलबाड़ी, असम

तेलंगाना प्राचीन काव्यालु पर परिसंवाद
1 जुलाई 2022, तेलंगाना

संताली भाषा और साहित्य के विकास में मिशनरियों की भूमिका पर परिसंवाद
10 जुलाई 2022, घाटशिला

संताली साहित्य में अनुवाद और प्रतिलेखन पर परिसंवाद
10 जुलाई 2022, खड़गपुर

इक्कीसवीं सदी में बाङ्ला कहानियों पर परिसंवाद
14 जुलाई 2022, कोलकाता

डोगरी में बाल साहित्य - वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की संभावनाएँ पर परिसंवाद
22 जुलाई 2022, बसोहली, जम्मू-कश्मीर

हमारे कौमी रहनुमा और उर्दू ज़बान व अदब पर परिसंवाद
23 जुलाई 2022, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

राय रामानंद पर परिसंवाद
24 जुलाई 2022, भुवनेश्वर

उर्दू शायरी में हिंदुस्तानी सक़ाफ़त पर परिसंवाद
28 जुलाई 2022, रामपुर, उत्तर प्रदेश

परिसंवाद : महिलाएँ और वर्तमान परिदृश्य (साहित्य और समाज)
28 जुलाई 2022, कोलार

डॉ. की. राम नागराज तथा डॉ. डी.आर. नागराज के जीवन और लेखन पर परिसंवाद
02 अगस्त 2022, जयनगर, बेंगळूरु

भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में संताली भाषा और साहित्य का विकास पर परिसंवाद
07 अगस्त 2022, डिब्रूगढ़

असमिया गद्य लेखन तकनीक पर परिसंवाद
08 अगस्त 2022, उत्तरी लखीमपुर, असम

मीडिया और अदब पर परिसंवाद
20 अगस्त 2022, कोलकाता

सिंधी साहित्य में श्री वासदेव मोही का योगदान पर परिसंवाद
27 अगस्त 2022, आभासी मंच

माधवराव सप्रे और उनका युग पर परिसंवाद
29 अगस्त 2022, भोपाल

राजम कृष्णन - तमिळ साहित्य के प्रवर्तक पर परिसंवाद
06 सितंबर 2022, वंडालूर, चेन्नै

फ़िक्र तोसवी : जीवन और कार्य पर परिसंवाद
12 सितंबर 2022, पंचकूला, हरियाणा

मलयाळम् उपन्यास के अयन पर परिसंवाद
13 सितंबर 2022, तिरुवनंतपुरम

परिसंवाद : गुजराती में आत्मकथाएँ : महिला लेखिकाओं के विशेष संदर्भ में
15 सितंबर 2022, भुज

मैथिली कथा साहित्य में पर्यावरणीय सरोकारों पर परिसंवाद
18 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

मैथिली काव्य में पर्यावरणीय सरोकारों पर परिसंवाद
28 अक्तूबर 2022, आभासी मंच

परिसंवाद : 21वीं सदी का डोगरी साहित्य - गुणवत्ता और मात्रा
28 अक्तूबर 2022, अघार जित्तो कटरा, रियासी,जम्मू-कश्मीर

ओड़िआ साहित्यरे बिष्ठपनारा चित्र पर परिसंवाद
29 अक्तूबर 2022, संबलपुर

साहित्य और संस्कृति पर परिसंवाद
30 अक्तूबर 2022, बलांगीर

अवतार कृष्ण रहबर पर परिसंवाद
31 अक्तूबर 2022, नई दिल्ली

परिसंवाद : जदीद लिसानियात : उर्दू अदब के हवाले से
05 नवंबर 2022, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

गणकबि बैष्णब पाणी पर परिसंवाद
11 नवंबर 2022, कटक

मलयाळम् साहित्य में आत्मकथा/जीवनी पर परिसंवाद
11 नवंबर 2022, अलप्पुझा

नंजिल नाडु तथा आधुनिक तमिऴ साहित्य पर परिसंवाद
23 नवंबर 2022, मार्थंडम

परिसंवाद : मणिपुरी महिला उपन्यासकारों का समीक्षात्मक मूल्यांकन : सौंदर्यशास्त्र तथा दृष्टिकोण
25 नवंबर 2022, सिलचर, असम

संस्कृत में बाल साहित्य पर परिसंवाद
25 नवंबर 2022, सोनीपत, हरियाणा

जीवनी साहित्य पर परिसंवाद
26 नवंबर 2022, सिलचर, असम

बराक घाटी की 20वीं सदी की बाङ्ला कविता पर परिसंवाद
27 नवंबर 2022, सिलचर, असम

उर्दू अफ़साना : तजज़िया और तंक़ीद पर परिसंवाद
30 नवंबर 2022, हैदराबाद

परिसंवाद : जुनूबी हिंद में उर्दू अफसाना-निगारी : 1960 के बाद
08 दिसंबर 2022, कडपा, आंध्र प्रदेश

लोकगीत और मलयाळम् साहित्य पर परिसंवाद
08 दिसंबर 2022, कान्हागढ़, कासरगढ़

परिसंवाद : साहिर लुधियानवी : व्यक्तित्व और कृतित्व
12 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

परिसंवाद : साहित्य क्या है?
13 दिसंबर 2022, तिरुपत्तूर

मैथिली उपन्यास में पर्यावरण पर परिसंवाद
15 दिसंबर 2022, आभासी मंच

कोंकणी में भक्ति साहित्य पर परिसंवाद
16 दिसंबर 2022, गोवा

मलयाळम् कहानी, इतिहास, वृत्तांत तथा कल्पना पर परिसंवाद
20 दिसंबर 2022, एडट, कन्नूर

सिंधी साहित्य में लेखराज किशनचंद अज़ीज़ का योगदान पर परिसंवाद
26 दिसंबर 2022, आभासी मंच

मैथिली लोक साहित्य और संस्कृति में पर्यावरण पर परिसंवाद
11 जनवरी 2023, आभासी मंच

परिसंवाद : साहित्यिक अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार
18 जनवरी 2023, नई दिल्ली

ज्योतीश्वर, महाकवि विद्यापति, मनबोध, कवीश्वर चंदा झा एवं जीवन झा पर पुनर्पाठ परिसंवाद
24 जनवरी 2023, आभासी मंच

परिसंवाद : भारतीय सिंधु सभा सांस्कृतिक मंच के साथ सिंधी युवा लेखन
22 जनवरी 2023, नागपुर

'संस्कृतसाहित्ये भारतीयन्यायपरम्परा' पर परिसंवाद
25 जनवरी 2023, आभासी मंच

'धर्म: - संस्कृतसाहित्यम्' पर परिसंवाद
09 फ़रवरी 2023, तिरुपति, आंध्र प्रदेश।

मेरे झरोखे से

कमल कुमार ब्रह्म
18 अप्रैल 2022, कोकराझार, असम

गुहीराम हेब्राह्मिन
29 अप्रैल 2022, जमशेदपुर, झारखंड

प्रख्यात हिंदी लेखक श्री प्रताप सहगल ने नरेंद्र मोहन के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
02 अगस्त 2022, नई दिल्ली

नाज़ी मुनव्वर
18 जून 2022, शोपियाँ, कश्मीर

गुलाम रसूल जोश
07 सितंबर 2022, पाखरपोरा, बडगाम, कश्मीर

निशात अंसारी
18 अक्तूबर 2022, डेलिना, बारामूला, कश्मीर

प्रख्यात ओड़िआ लेखक श्री भागीरथी मिश्र ने डॉ. श्रीनिवास उद्गाता के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
30 अक्तूबर 2022, बलांगीर

प्रख्यात सिंधी लेखिका डॉ. संध्या कुंदनाणी ने (स्वर्गीय) श्री हिरो शेवकाणी के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
18 नवंबर 2022, मुंबई

प्रख्यात सिंधी लेखक श्री नितिन रिंधे ने स्वर्गीय श्री जयंत पवार के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
25 नवंबर 2022, मुंबई

प्रख्यात डोगरी लेखक श्री कृष्ण सिंह कृष्ण ने श्री रोमल सिंह बडवाल के साहित्यिक योगदान पर चर्चा की।
11 दिसंबर 2022, जम्मू-कश्मीर

प्रख्यात नेपाली लेखक श्री युद्धबीर राणा ने हरिभक्त कटुवाल के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
24 दिसंबर 2022, तिनसुकिया, असम

प्रख्यात मलयाळम् लेखक श्री गोकुलदास प्रभु ने (स्वर्गीय) प्रोफ़ेसर आर.के. राव. के जीवन और कार्यों पर चर्चा की।
29 जनवरी 2023, एर्नाकुलम

अनुवाद कार्यशाला

त्रि-दिवसीय राजस्थानी-पंजाबी-राजस्थानी अनुवाद कार्यशाला
30 अप्रैल, 1-2 मई 2022, अमृतसर

त्रि-दिवसीय अनुवाद कार्यशाला : पंजाबी में मराठी, गुजराती तथा सिंधी कहानियों के अनुवाद
3-5 सितंबर 2022, नई दिल्ली

द्वि-दिवसीय तेलुगु-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला
1-2 नवंबर 2022, नई दिल्ली

उन्मेष

उद्घाटन सत्र
16 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला

"साहित्य और स्त्री सशक्तिकरण" पर परिचर्चा
16 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

"सिनेमा और साहित्य" पर परिचर्चा
16 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

"पारिस्थितिकीय-विमर्श" पर परिचर्चा
16 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

जुगलबंदी : पंजाबी और हिंदी कवियों की
16 जून 2022, टॉउन हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मेरे लिए साहित्य के मायने?
16 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : मेरे लिए कविता के मायने? एवं रचना-पाठ
16 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : "भारतीय कालजयी कृतियाँ और विश्व साहित्य"
16 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : उगते सूरज की भूमि से : पूर्वोत्तर का साहित्य
16 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

आदिवासी साहित्य की वर्तमान साहित्यिक प्रवृत्तियों पर परिचर्चा एवं रचना-पाठ
16 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

दर्पण : वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
16 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ पर परिचर्चा एवं रचना-पाठ
16 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : "साहित्य और सिनेमा"
16 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मातृभाषा का महत्त्व
16 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
16 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

धरा गीत : आदिवासी भाषाओं से रचना-पाठ
16 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : आदिवासी लेखकों के समक्ष चुनौतियाँ एवं रचना-पाठ
17 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता पाठ
17 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : "अनुवाद के माध्यम से संस्कृतियों का समन्वयीकरण"
17 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

एल.जी.बी.टी.क्यू. लेखकों द्वारा रचना-पाठ
17 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

ग़ैर-मान्यता प्राप्त भाषाओं में वाचिक महाकाव्य
17 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

अस्मिता : लेखिका सम्मिलन
17 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : विश्व की कालजयी कृतियाँ एवं भारतीय लेखन
17 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

युवा भारत का उदय : युवा साहिती
17 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के लोकगीत
17 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परछाईं और हक़ीकत : एक सेल्युलाइड यात्रा पर दीप्ति नवल के साथ रत्नोत्तमा सेनगुप्ता की बातचीत
17 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : एल.जी.बी.टी.क्यू. : मेरा प्रथम लेखकीय अनुभव एवं रचना-पाठ
17 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

फ़िल्मी गीतों में साहित्यिक सौंदर्यशास्त्र : गुलज़ार के साथ विशाल भारद्वाज की बातचीत
17 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कहानी-पाठ
17 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

आस्था का गायन : भारत में भक्ति साहित्य
17 जून 2022, टॉउन हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : विरासत का उत्सव : भारतीय लोकसाहित्य की गाथा
17 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन
17 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

प्रवासी भारतीय: साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ
17 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मीडिया, साहित्य और स्वाधीनता आंदोलन
17 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
17 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पुस्तकों की भूमिका
17 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कहानी-पाठ
17 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?
18 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

कविता का भविष्य एवं रचना-पाठ
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मेरे लिए स्वतंत्रता के मायने?
18 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : विश्वस्तरीय कालजयी कृतियाँ और भारतीय पाठक
18 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

युवा लेखकों द्वारा रचना-पाठ
18 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारतीय भाषाओं में महिला लेखन
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारत में काल्पनिक एवं विज्ञान कथा
18 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?
18 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

युवा लेखकों द्वारा रचना-पाठ
18 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारतीय भाषाओं में महिला लेखन
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कविता-पाठ
18 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारत में काल्पनिक एवं विज्ञान कथा
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?
18 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

मुलाक़ात : युवा लेखक सम्मिलन
18 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

आस्था का गायन : भारत में भक्ति साहित्य
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : अनुवाद के माध्यम से सीमाओं का अतिक्रमण
18 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : मेरे लिए कविता के मायने? एवं रचना-पाठ
18 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

उत्तर-पूर्वी एवं उत्तरी साहित्य में उभरते रुझान
18 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

दर्पण : वृत्तचित्रों का प्रदर्शन
18 जून 2022, सभाकक्ष, शिमला, हिमाचल प्रदेश

नई फ़सल : युवा साहिती
18 जून 2022, मुख्य सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

विदेशी भाषाओं में भारतीय प्रकाशन
18 जून 2022, वायसराय सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

बहुभाषी कहानी-पाठ
18 जून 2022, ललित कला गैलरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश

परिचर्चा : भारतीय भाषाओं में प्रकाशन
18 जून 2022, टैवर्न हॉल, शिमला, हिमाचल प्रदेश

धरा गीत : आदिवासी भाषाओं से रचना-पाठ
18 जून 2022, टॉउन हॉल सभागार, शिमला, हिमाचल प्रदेश

लेखक सम्मिलन

उत्तर-पूर्व और दक्षिणी लेखक सम्मिलन
04 अप्रैल 2022, एर्नाकुलम, कोच्चि

लेखक सम्मिलन
31 जुलाई 2022, कोलकाता

अखिल भारतीय आदिवासी लेखक सम्मिलन
9-10 अगस्त 2022, कोलकाता

पश्चिमी लेखक सम्मिलन

13 अगस्त 2022, भावनगर

महिला लेखिका सम्मिलन

14 अगस्त 2022, बालासोर

द्वि-दिवसीय पूर्वी क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन

17-18 सितंबर 2022, कोरिया गणराज्य

लेखक सम्मिलन

28 अक्तूबर 2022, नई दिल्ली

मणिपुरी लेखक सम्मिलन

13 नवंबर 2022, होजई, असम

अखिल भारतीय युवा लेखक सम्मिलन

12 जनवरी 2023, कोलकाता

आदिवासी लेखक सम्मिलन

26 फ़रवरी 2023, नई दिल्ली

महिला लेखिका सम्मिलन

7 मार्च 2023, नई दिल्ली

हिंदी लेखक सम्मिलन

25-26 मार्च 2023, झांसी

अखिल भारतीय बहुभाषी दलित लेखक सम्मिलन

20-21 फ़रवरी 2023, नई दिल्ली

युवा साहिती

राजस्थानी लेखकों के साथ युवा लेखक सम्मिलन

23-24 अप्रैल 2022, श्रीगंगानगर

संताली लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

21 मई 2022, बारीपदा, ओड़िशा

असमिया लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

3 जून 2022, गोलाघाट

मणिपुरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

20 अगस्त 2022, अगरतला

डोगरी लेखकों के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

22 जुलाई 2022, बसोहली, कठुआ, जम्मू-कश्मीर

पूर्वी क्षेत्रीय युवा लेखक सम्मिलन

22-23 अक्तूबर 2022, दार्जिलिंग

युवा कवि सम्मिलन

24 दिसंबर 2022, तिनसुकिया, असम

युवा साहिती

26 दिसंबर 2022, नई दिल्ली

बहुभाषी कविता-पाठ के साथ युवा साहिती कार्यक्रम

4 मार्च 2023, प्रगति मैदान, नई दिल्ली

वर्ष 2022-2023 में आयोजित कार्यकारी मंडल, सामान्य परिषद, वित्त समिति तथा क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

कार्यकारी मंडल

दिनांक	स्थान
24 जून 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
24 अगस्त 2022	आभासी मंच
22 दिसंबर 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
29 मार्च 2023	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

सामान्य परिषद

दिनांक	स्थान
24 जून 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
21 दिसंबर 2022	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
11 मार्च 2023	साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

वित्त समिति

दिनांक	स्थान
21 जून 2022	आभासी मंच
14 दिसंबर 2022	आभासी मंच

एन.ई.सी.ओ.एल. परामर्श मंडल	**18 जुलाई 2022**	**क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता**

क्षेत्रीय मंडलों की बैठकें

मंडल	दिनांक	स्थान
पूर्वी क्षेत्रीय मंडल	30 जुलाई 2022	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता
दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल	27 सितंबर 2022	क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

पुस्तक मेलों एवं पुस्तक प्रदर्शनियों की सूची आयोजन एवं सहभागिता : 2022-2023

प्रधान कार्यालय

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	नेहा बंसल की पुस्तक 'हर स्टोरी' के विमोचन के अवसर पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी में आयोजित एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	06 अप्रैल 2022
2.	लिट-फेस्ट के अवसर पर विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ़ प्रोफ़ेशनल स्टडीज़, दिल्ली में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	12 से13 अप्रैल 2022 तक
3.	विज्ञान भवन, दिल्ली में आयोजित एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	07 मई 2022
4.	अंतरराष्ट्रीय साहित्य महोत्सव, शिमला सह पुस्तक मेले में भाग लिया।	16 से 18 जून 2022 तक
5.	श्री सुखमनी प्रबंधन संस्थान, द्वारका में आयोजित एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	08 अगस्त 2022
6.	मेघदूत, संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	28 से 29 अगस्त 2022 तक
7.	'हिंदी भाषा समिति' के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के तृतीय तल स्थित सभाकक्ष में एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	29 अगस्त 2022
8.	नेशनल बुक ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा आयोजित 'गोमती पुस्तक मेले' में भाग लिया।	29 अक्तूबर से 6 नवंबर 2022 तक
9.	शुरुआत समिति, हरियाणा द्वारा शिबली नेशनल कॉलेज में आयोजित '23वें आजमगढ़ पुस्तक मेले' में भाग लिया।	07 से 13 सितंबर 2022 तक
10.	विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा में आयोजित दरभंगा पुस्तक मेले में भाग लिया।	07 से 09 नवंबर 2022 तक
11.	विश्व रंग 2022 द्वारा आर.एन.टी.यू., भोपाल में आयोजित भोपाल पुस्तक मेले में भाग लिया।	14 से 20 नवंबर 2022 तक
12.	साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन परिसर, नई दिल्ली में आयोजित पुस्तकायन पुस्तक मेले में भाग लिया।	11 से 18 नवंबर 2022 तक

13.	सेंट स्टीफंस कॉलेज, दिल्ली में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	22 से 23 नवंबर 2022 तक
14.	गाँधी मैदान, पटना में आयोजित पटना पुस्तक मेले में भाग लिया।	02 से 13 दिसंबर 2022 तक
15.	मेजर ध्यानचंद स्टेडियम, दिल्ली में रेख़्ता फ़ाउंडेशन द्वारा आयोजित त्रि-दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	02 से 04 दिसंबर 2022 तक
16.	डाकरूम-राजघाट में आयोजित एक दिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	04 दिसंबर 2022
17.	संस्कृति मंत्रालय द्वारा दिल्ली-हाट (झरोखा) में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	02 से 15 दिसंबर 2022 तक
18.	उर्दू पुस्तक महोत्सव के अवसर पर ग़ालिब इंस्टीट्यूट, दिल्ली में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	16 से 18 दिसंबर 2022 तक
19.	प्रगति मैदान, नई दिल्ली में एफ़. आई. पी. द्वारा आयोजित दिल्ली पुस्तक मेले में भाग लिया।	22 से 26 दिसंबर 2022 तक
20.	देवघर पुस्तक मेला, देवघर में भाग लिया।	12 से 23 जनवरी 2023 तक
21.	भीलवाड़ा महोत्सव, भीलवाड़ा में आयोजित त्रिदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	12 से 14 जनवरी 2023 तक
22.	मध्य प्रदेश जनजातीय संग्रहालय, भोपाल द्वारा आयोजित लोकरंग महोत्सव सह पुस्तक मेले में भाग लिया।	26 से 30 जनवरी 2023 तक
23.	दिल्ली के आईपी कॉलेज फ़ॉर वुमेन में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	09 से 10 फ़रवरी 2023 तक
24.	जालौर महोत्सव सह पुस्तक मेले, राजस्थान में भाग लिया।	15 से 19 फ़रवरी 2023 तक
25.	संगीत नाटक अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	14 से 17 फ़रवरी 2023 तक
26.	प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला 2023 में भाग लिया।	25 फ़रवरी से 05 मार्च 2023 तक
27.	'राजभाषा उत्सव' के अवसर पर आईएनए, दिल्ली हाट, नई दिल्ली में आयोजित द्विदिवसीय पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	01 से 02 मार्च 2023 तक
28.	साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित साहित्योत्सव सह पुस्तक मेले में भाग लिया।	11 से 16 मार्च 2023

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	कन्नड पुस्तक प्राधिकरण (कर्नाटक सरकार की एक इकाई) द्वारा धारवाड़ में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	08 से 13 अप्रैल 2022
2.	विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर मेसर्स बुक ब्रह्मा, बेंगळूरु द्वारा कन्नड साहित्य परिषद, बेंगळूरु की पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	23 अप्रैल 2022
3.	तेलंगाना स्थापना दिवस के अवसर पर तेलंगाना साहित्य अकादमी द्वारा आयोजित खम्मम पुस्तक प्रदर्शनी 2022 में भाग लिया।	02 से 08 जून 2022 तक
4.	बी.ई.एस. कॉलेज, जयनगर, बेंगळूरु द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	02 अगस्त 2022
5.	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कन्नड साहित्य का योगदान विषयक संगोष्ठी के दौरान पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया। स्थान : जैन विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ़ साइंसेज़, जे.सी. रोड, बेंगळूरु।	12-13 अगस्त 2022 तक
6.	एम.एल.ए. कॉलेज, मल्लेश्वरम, बेंगळूरु द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी में भाग लिया।	17 से 18 अगस्त 2022 तक
7.	विजयवाड़ा में आयोजित 33वें विजयवाड़ा पुस्तक महोत्सव में भाग लिया।	09 से 19 फ़रवरी 2023 तक

उप-क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	कोच्चि पुस्तक मेला, कोच्चि	01.04.2022 से 10.04.2022 तक
2.	तिरुवल्लुर पुस्तक मेला, तिरुवल्लुर	01.04.2022 से 11.04.2022 तक
3.	तिरुपुर पुस्तक मेला, तिरुपुर	14.04.2022 से 24.04.2022 तक
4.	तिरूर पुस्तक मेला, तिरूर	11.05.2022 से 14.05.2022 तक
5.	नागपट्टिनम पुस्तक मेला, नागपट्टिनम	24.06.2022 से 04.07.2022 तक
6.	धर्मपुरी पुस्तक मेला, धर्मपुरी	24.06.2022 से 04.07.2022 तक
7.	तंजावुर पुस्तक मेला, तंजावुर	15.07.2022 से 25.07.2022 तक
8.	कोयंबटूर पुस्तक मेला, कोयंबटूर	22.07.2022 से 31.07.2022 तक
9.	पुदुकोट्टई पुस्तक मेला, पुदुकोट्टई	29.07.2022 से 07.08.2022 तक
10.	इरोड पुस्तक मेला, इरोड	05.08.2022 से 16.08.2022 तक
11.	करूर पुस्तक मेला, करूर	19.08.2022 से 29.08.2022 तक

12.	त्रिची पुस्तक मेला, त्रिची	17.09.2022 से 25.09.2022 तक
13.	मदुरै पुस्तक मेला, मदुरै	23.09.2022 से 03.10.2022 तक
14.	डिंडीगुल पुस्तक मेला, डिंडीगुल	06.10.2022 से 16.10.2022 तक
15.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह, चेन्नै	14.11.2022 से 20.11.2022 तक
16.	त्रिस्सूर पुस्तक महोत्सव, त्रिस्सूर	02.12.2022 से 11.12.2022 तक
17.	पुदुचेरी पुस्तक मेला, पुदुचेरी	16.12.2022 से 25.12.2022 तक
18.	काँचीपुरम पुस्तक मेला, काँचीपुरम	23.12.2022 से 02.01.2023 तक
19.	चेन्नै पुस्तक मेला, चेन्नै	06.01.2023 से 22.01.2023 तक
20.	शिवगंगई पुस्तक मेला, शिवगंगई	27.01.2023 से 06.02.2023 तक
21.	तिरुप्पुर पुस्तक मेला, तिरुप्पुर	27.01.2023 से 05.02.2023 तक
22.	रामनाथपुरम पुस्तक मेला, रामनाथपुरम	09.02.2023 से 19.02.2023 तक
23.	थुंचन महोत्सव पुस्तक मेला, तिरूर	16.02.2023 से 19.02.2023 तक
24.	तिरूनेलवेली पुस्तक मेला, तिरूनेलवेली	25.02.2023 से 07.03.2023 तक

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	26वाँ दार्जिलिंग ज़िला पुस्तक मेला 2022	28 मार्च से 01 अप्रैल 2022
2.	विवेकानंद महिला कॉलेज में पुस्तक प्रदर्शनी	8 से 9 अप्रैल 2022 तक
3.	जमशेदपुर पुस्तक प्रदर्शनी	29 अप्रैल 01 मई 2022
4.	बारीपदा पुस्तक प्रदर्शनी, ओड़िशा	21 मई 2022
5.	झारग्राम पुस्तक प्रदर्शनी, पश्चिम बंगाल	22 मई 2022
6.	झारग्राम पुस्तक मेला (मैसर्स गौरव बुक एजेंसी की ओर से)	08 से 15 मई 2022
7.	द्विदिवसीय कार्यक्रमों के साथ क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	25 से 26 मई 2022 तक
8.	ई.ज़ेड.सी.सी., कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	10 से 12 जून 2022 तक
9.	घाटशिला और खड़गपुर में कार्यक्रमों के साथ पुस्तक प्रदर्शनी	09 से 10 जुलाई 2022 तक
10.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	14 जुलाई 2022
11.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	31 जुलाई 2022
12.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	09 से 10 अगस्त 2022 तक
13.	नंदन, कोलकाता में बुक बाज़ार	02 से 11 सितंबर 2022 तक
14.	श्री शिक्षायतन कॉलेज में पुस्तक प्रदर्शनी	08 से 09 सितंबर 2022 तक

15.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	17 से 18 सितंबर 2022 तक
16.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	30 सितंबर 2022
17.	क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में पुस्तक प्रदर्शनी	15 से 16 अक्तूबर 2022 तक
18.	अन्य कार्यक्रमों के साथ दार्जिलिंग में पुस्तक प्रदर्शनी	22 से 23 अक्तूबर 2022 तक
19.	दशेर बोइमेला, कॉलेज स्ट्रीट	04 से 13 नवंबर 2022 तक
20.	जमशेदपुर पुस्तक मेला 2022	11 से 20 नवंबर 2022 तक
21.	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह महोत्सव 2022	14 से 20 नवंबर 2022 तक
22.	चौथा उत्तर बंगाल पुस्तक मेला 2022	02 से 11 दिसंबर 2022 तक
23.	चौथा ओड़िशा राज्य पुस्तक महोत्सव 2022	09 से 18 दिसंबर 2022 तक
24.	कल्याणी पुस्तक मेला 2022 (मैसर्स गौरव बुक एजेंसी की ओर से)	09 से 18 दिसंबर 2022 तक
25.	पनिहाटी पुस्तक मेला 2022 (मैसर्स गौरव बुक एजेंसी की ओर से)	20 से 31 दिसंबर 2022 तक
26.	गुवाहाटी में असम पुस्तक मेला 2022-23	9 दिसंबर 2022 से 10 जनवरी 2023 तक
27.	46वाँ अंतरराष्ट्रीय कोलकाता पुस्तक मेला 2023	30 जनवरी से 12 फ़रवरी 2023
28.	27वाँ दार्जिलिंग ज़िला पुस्तक मेला 2023	14 से 17 फ़रवरी 2023 तक
29.	37वाँ कलिम्पोंग ज़िला पुस्तक मेला 2023	18 से 21 फ़रवरी 2023 तक
30.	अगरतला पुस्तक मेला 2023	24 मार्च से 5 अप्रैल 2023
31.	इंफ़ाल में पुस्तक प्रदर्शनी	22 से 24 अप्रैल 2022 तक
32.	जे.एन. डांस एकेडमी में पुस्तक प्रदर्शनी	17 से 18 मई 2022 तक
33.	इंफ़ाल पुस्तक मेला 2023	15 से 24 जनवरी 2023 तक
34.	संस्कृति भवन में पुस्तक प्रदर्शनी	15 अप्रैल 2022
35.	रेवनशॉ विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	16 अप्रैल 2022
36.	के.आई.एस.एस. यूनिवर्सिटी में पुस्तक प्रदर्शनी	27 से 28 मई 2022 तक
37.	गीतांजलि सदन में पुस्तक प्रदर्शनी	28 से 29 मई 2022 तक
38.	शताब्दी भवन में पुस्तक प्रदर्शनी	11 जून 2022
39.	बुद्ध मंदिर में पुस्तक प्रदर्शनी	12 जून 2022
40.	गीता गोविंद सदन में पुस्तक प्रदर्शनी	23 जुलाई 2022
41.	लोहिया भवन में पुस्तक प्रदर्शनी	24 जुलाई 2022
42.	रेवनशॉ विश्वविद्यालय में पुस्तक प्रदर्शनी	11 नवंबर 2022
43.	शताब्दी भवन में पुस्तक प्रदर्शनी	12 नवंबर 2022

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई

क्र.सं.	पुस्तक प्रदर्शनी/पुस्तक मेले का विवरण	तिथि
1.	उदगीर, महाराष्ट्र में आयोजित '95वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	22 से 24 अप्रैल 2022 तक
2.	पणजी, गोवा में आयोजित 'शंकर रमानी पर जन्मशताब्दी संगोष्ठी' के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	24 से 25 जून 2022 तक
3.	श्रीरामपुर, ज़िला-अहमदनगर, महाराष्ट्र में 'नवोद्दातरी मराठी नाटक : आशा आणी रूप' पर आयोजित कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	01 से 02 जुलाई 2022 तक
4.	अहमदाबाद, गुजरात में 'मध्यकालीन गुजराती साहित्यिक संशोधन एवं संपदान' पर आयोजित संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	25 से 26 जुलाई 2022 तक
5.	पैठण, ज़िला-औरंगाबाद, महाराष्ट्र में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में मराठी साहित्य का योगदान' पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	30 से 31 जुलाई 2022 तक
6.	मुंबई, महाराष्ट्र में 'दर्पण - फ़िल्म स्क्रीनिंग' के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	01 से 05 अगस्त 2022 तक
7.	सनोसरा, ज़िला-भावनगर, गुजरात में 'भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गुजराती साहित्य का योगदान' पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	06 से 07 अगस्त 2022 तक
8.	सूरत, गुजरात में 'दूसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	14 से 15 सितंबर 2022 तक
9.	ठाणे, महाराष्ट्र में 'राजभाषा पखवाड़ा' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	21 से 22 सितंबर 2022 तक
10.	दादर, मुंबई, महाराष्ट्र में 'राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	14 से 20 नवंबर 2022 तक
11.	दादर, मुंबई, महाराष्ट्र में 'मुंबई 'ग्रंथ महोत्सव-2022' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	16 से 17 नवंबर 2022 तक
12.	महाराष्ट्र के रत्नागिरी ज़िले में 'ग्रंथ महोत्सव' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	03 से 04 दिसंबर 2022 तक

13.	दादर, मुंबई, महाराष्ट्र में 'ग्रंथ महोत्सव' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	06-08 दिसंबर 2022
14.	बांद्रा, मुंबई, महाराष्ट्र में 'ग्रंथ महोत्सव-2022' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	10-11 दिसंबर 2022
15.	जूनागढ़, गुजरात में 'संत साहित्य उत्सव : नरसिंह मेहता' विषय पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	31 दिसंबर 2022 से 01 जनवरी 2023 तक
16.	वर्ली, मुंबई, महाराष्ट्र में 'अंतरराष्ट्रीय मराठी स्नेहसम्मेलन' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	04 से 06 जनवरी 2023 तक
17.	सतारा, महाराष्ट्र में 'ग्रंथमहोत्सव' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	13 से 16 जनवरी 2023 तक
18.	मंत्रालय, मुंबई, महाराष्ट्र में 'मराठी भाषा संवर्धन पंधरवाड़ा' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	23 से 25 जनवरी 2023 तक
19.	वर्धा, महाराष्ट्र में '96वाँ अखिल भारतीय मराठी साहित्य सम्मेलन' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	03 से 05 फ़रवरी 2023 तक
20.	मडगाँव, गोवा में 'गोवा पुस्तक मेला' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	09 से 13 फ़रवरी 2023 तक
21.	तलासरी, ज़िला- पालघर, महाराष्ट्र में 'महाराष्ट्र का आदिवासी लोक-साहित्य' विषय पर संगोष्ठी के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	16 से 17 फ़रवरी 2023 तक
22.	पणजी, गोवा में 'साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह' कार्यक्रम के साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन।	25 से 26 मार्च 2023 तक

1 अप्रैल 2022 से 31 मार्च 2023 तक प्रकाशित पुस्तकें

असमिया

एहेजर एनीशर साधु
(अंग्रेज़ी बाल साहित्य *वन थाउज़ेंड नाइट एंड वन*)
ले. रिचर्ड बर्टन
अनु. कीर्तिनाथ हजारिका
पृ. 362, रु. 150/-
7वाँ पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2641-8

असमिया शिशु-साहित्यर निर्बाचिता चुटिगल्प
(चयनित असमिया बाल कहानी-संकलन)
संकलन एवं संपादन : सांतनु तामुली
पृ. 336, रु. 220/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-5019-2

निर्बाचिता असमिया शिशु-नट
(चयनित असमिया बाल नाटक-संकलन)
संकलक एवं संपादन : सांतनु तामुली
पृ. 272, रु. 240/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-39-9

संपर्क (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कविता-संग्रह *रिलेशनशिप*)
ले. जयंत महापात्र, अनु. अनुभव तुलसी
पृ. 64, रु. 60/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4093-3

राजा (बाङ्ला नाटक)
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अनु. महेंद्र बोरा
पृ. 108, रु. 70/-
5वाँ पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4800-7

बाङ्ला

पारिजात (पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. नासिरा शर्माअनु. ननी शूर
पृ. 504, रु. 460/-
ISBN : 978-93-5548-056-9

पृथ्वीबीर असुख
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. जोगेश दास, अनु. मुक्ति चौधरी
पृ. 176, रु. 110/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3021-7

निकोबारी लोककथा
(अंग्रेज़ी - लोक साहित्य)
ले. रॉबिन रॉयचौधरी
अनु. रॉबिन रॉयचौधरी
पृ., 102, रु. 80/-
चौथा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2440-7

वामन फिरलो ना
(मराठी किशोर विज्ञान साहित्य *वामन परत ना आला*)
ले. जयंत वी. नर्लीकर,अनु. सुब्रत बसु
पृ. 132, रु. 70/-
5वाँ पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2107-9

रमन ओ राजा
(अंग्रेज़ी किशोर कहानी-संग्रह *रमन एंड द किंग*)
ले. कमला लक्ष्मण, अनु. अनिर्बान राय
पृ. 64, रु. 50/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2309-7

अब्बू ख़ान छगल
(उर्दू किशोर कहानी-संग्रह *अब्बू ख़ान की बकरी*)
ले. ज़ाकिर हुसैन
अनु. पुष्पिता मुखोपाध्याय
पृ. 94, रु. 100/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4722-2

गल्पो शोनो
(हिंदी किशोर कहानी-संग्रह *सुनो कहानी*)
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. अभिजीत चट्टोपाध्याय
पृ. 68, रु. 100/-
चौथा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1543-6

अन्तरिक्षे बिस्फोरन
(मराठी किशोर विज्ञान-साहित्य *अन्तरालतील स्फोट*)
ले. जयंत वी. नार्लीकर
अनु. मानवेंद्र बंद्योपाध्याय
पृ. 104, रु. 110/-
5वाँ पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2004-1

चंडीमंगल (बाङ्ला गौरवग्रंथ)
संपा. सुकुमार सेन
पृ. 464, रु. 600/-
8वाँ पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-2588-6

गल्पो शोनो
(किशोर कहानी-संग्रह *सुनो कहानी*)
विष्णु प्रभाकर ले.
अनु. अभिजीत चट्टोपाध्याय
पृ. 68, रु. 100/-
5वाँ पुनर्मुद्रण : 2023
(लेकिन इसे चौथे पुनर्मुद्रण के रूप में रखा गया है क्योंकि यह विशेष असम ऑर्डर के लिए था)
ISBN : 978-81-260-1543-6

निकोबारी लोककथा
(अंग्रेज़ी - लोक साहित्य)
ले. राबिन रॉयचौधरी
अनु. राबिन रॉयचौधरी
पृ. 102, रु. 80/-
5वाँ पुनर्मुद्रण : 2023
(लेकिन इसे चौथे पुनर्मुद्रण के रूप में रखा गया है क्योंकि यह विशेष असम ऑर्डर के लिए था)
ISBN : 978-81-260-2440-7

असीरबादेर रंग
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. अरुण शर्मा
अनु. देबरंजन धर
पृ. 224, रु. 100/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2310-3

बोडो

सिनैथिग्वी बेगेंग
(नवोदय योजना के अंतर्गत बोडो कविता-संग्रह)
ले. बरनाली बगलारी
पृ.64, रु. 120/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87567-08-5

ग्वज्वन डेरा
(नवोदय योजना के अंतर्गत बोडो कहानी-संग्रह)
ले. कबिता रामचियारी
पृ. 64, रु. 120/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-33-7

अब्वोनी हारा
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास *काकादेउतर हर*)
ले. नवकांत बरुआ
अनु. बिरुपक्ष गिरि बसुमतारी
पृ. 100, रु. 130/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4716-1

नो ग्विजयी ज्यूमानी सोलो
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास *अघारी आत्मा कहिनी*)
ले. सईद अब्दुल मलिक
अनु. अंजलि दैमारी
पृ. 128, रु. 110/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3200-6

ग्वदान असोमिया सुंगदा सोलो जोथाई
(असमिया कहानी-संकलन *आधुनिक असमिया गल्प संग्रह*)
ले. त्रैलोक्य नाथ गोस्वामी
अनु. विभिन्न अनुवादक
पृ. 360, रु. 180/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3014-9

खानथाई बिहुंग
(बोडो कविता-संकलन)
संक. एवं संपा. अनिल कुमार बर'
पृ. 216, रु.140/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2808-5

आगान
(आधुनिक बोडो कविता संकलन)
संक. एवं संपा. अंजलि दैमारी तथा प्रणब ज्योति नार्ज़ारी
पृ. 144, रु. 100/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3104-7

बर्लुंगबुथुर सेर सेर
(पुरस्कृत नेपाली उपन्यास *ब्रह्मपुत्रक छेउ छाऊ*)
ले. लीलबहादुर क्षेत्री
अनु. कामेश्वर बर'
पृ. 212, रु. 265/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2727-9

सोलो बिदंग (बोडो कहानी-संग्रह)
संक. एवं संपा. मंगलसिंग हाजोवारी
पृ. 368, रु. 180/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3015-6

बिगराइमुगा
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *क्रांतिका*)
ले. प्रफुल्ल राय, अनु. नबीन ब्रह्म
पृ. 176, रु. 210/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-5364-3

पद्मा दैमानी डिंगारी
(बाङ्ला उपन्यास *पद्मनादिर माझी*)
ले. मणिक बंद्योपाध्याय
अनु. गोविंदा बसुमतारी
पृ. 160, रु. 170/-
दूसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87567-29-0

बिफा-फिसा (पुरस्कृत असमिया उपन्यास *पिता-पुत्र*)
ले. होमेन बोर्गहेन, अनु. इंदिरा बर'
पृ. 336, रु. 265/-
तीसरा पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3202-0

डोगरी

गुआचे दे खोलें दीयां थंक्डियां घंटियाँ
(उर्दू कविता-संग्रह *गुमशुदा दायर की गूंजती घंटियाँ*)
ले. शीन काफ़ निज़ाम
अनु. शिव देव सुशील
पृ.116, रु.200/-, पेपरबैक
ISBN : 978-93-5548-195-5

सुरेंद्र सिंह मन्हास (विनिबंध)
ले. रतन दोशी
पृ.76, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-380-5

तत्ती तवी दा सच
(पुरस्कृत पंजाबी नाटक *तत्ती तवी दा सच*)
ले. आतमजीत, अनु. यशपाल निर्मल
पृ.94, रु.140/-, पेपरबैक
ISBN : 978-93-5548-226-6

मधुपुर दे मिसादे चेते
(पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह *मधुपुर बहादुर*)
ले. शीलभद्र, अनु. नरसिंग दास
पृ.112, रु.100/-, पेपरबैक
ISBN : 978-93-5548-390-4

नेहरी गली
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह *ओ अंधगली*)
ले. अखिल मोहन पटनायक
अनु. कृष्ण शर्मा
पृ.182, रु.180/-, पेपरबैक
ISBN : 978-93-5548-487-1

अंग्रेज़ी

एज़ आई व्यू माइसैल्फ
(के.एम. जॉर्ज कृत मलयाळम् आत्मकथा *एन्ने नजन कनुम्बोल*)
अंग्रेज़ी अनु. जैन्सी जेम्स
पृ. 292, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-069-9

माई लव, माई एंडलेस ब्लिस
(तमिऴ उपन्यास)
ले. टी. जानकीरमन
अंग्रेज़ी अनु. उमा शंकरी
पृ. 296, रु. 380/-
ISBN : 978-93-5548-077-4

द राम स्टोरी
(*ऑरिजिन्स एंड ग्रोथ*)
ले. पद्म भूषण कामिल्ल बुल्के
अंग्रेज़ी अनु. प्रदीप भट्टाचार्य
पृ. 1024, रु. 1000/-
ISBN : 978-93-5548-110-8

व्हेन रवेंस स्पीक एंड होर्सेस फ्लाई
(ओड़िशा की लोककथाएँ)
अंग्रेज़ी में पुनर्पाठ : मोना लिसा जेना
पृ. 232, रु. 225/-
ISBN : 978-93-5548-108-5

द सागा ऑफ़ दी कैक्टस लैंड
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास *कल्लिककट्टु इतिहासम*)
ले. वैरामुथु
अंग्रेज़ी अनु. गीता सुब्रह्मण्यन
पृ. 312, रु. 350/-
ISBN : 978-93-5548-002-6

मोहल्ला
(पुरस्कृत राजस्थानी उपन्यास *गवाड़*)
ले. मधु आचार्य 'आशावादी'
अंग्रेज़ी अनु. सीमा जैन
पृ. 108, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-250-1

ए फॉरगौटन कल्चर
(पुरस्कृत नेपाली निबंध *बिरसियाको संस्कृति*)
ले. एम.एम. गुरुंग
अंग्रेज़ी अनु. बिबचन काफले
पृ. 80, रु. 140/-
ISBN : 978-93-5548-124-5

ए लिटरेरी ओडिसी : सेलेक्टेड राइटिंग ऑफ़ गोपीचंद नारंग
संपा. सुरिंदर देयोल
पृ. 342, रु. 450/-
ISBN : 978-93-5548-072-9

अनंत पटनायक (ओड़िआ विनिबंध)
ले. बिजॉय कुमार शतपथी
अंग्रेज़ी अनु. आभास कुमार बोराल
पृ. 84, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-007-1

पंखा पोएम्स : टू स्टिर द स्टिल एयर
लेखन एवं संकलन : जतिन दास
पृ. 168, रु. 225/-
ISBN : 978-93-5548-116-0

आदित्य बिक्रम गुमानसिंह चामलिंग (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. टेरेंस मुखिया
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-281-5

रामायण इन साउथ ईस्ट एशिया, वॉल्यूम II (लाओस और कंबोडिया)
ले. सत्यव्रत शास्त्री
पृ. 150, रु. 450/-
ISBN : 978-93-5548-006-4

फ्लेक्स ऑफ़ टाइम
(नवोदय शृंखला के अंतर्गत अंग्रेज़ी कविता-संग्रह)
ले. प्रबल बसाक
पृ. 80, रु.130/-
ISBN : 978-93-5548-401-7

वाइब्रेंट वॉइसेज़
(21वीं सदी की महिला कवयित्रियों का संकलन)
संपा. सीमा जैन
पृ. 280, रु. 300/-
ISBN : 978-93-5548-389-8

द एंटी-रोमांटिक
(बसंत कुमार सत्पथी की चुनिंदा कहानियाँ)
अनु. जगन्नाथ दास
पृ. 159, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-382-9

द सेंटीएंट गॉड
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह *चलंती ठाकुर*)
ले. सांतनु कुमार आचार्य
अनु. मधुमिता चंदा
पृ. 96, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-344-7

मोहि-उ-द्दीन हाजिनी
(कश्मीरी विनिबंध)
ले. निशात अंसारी
अनु. अमीन फ़ैयाज़
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-375-1

मेटेओर'स ऑफ़ पेन
(पुरस्कृत असमिया कविता-संग्रह)
ले. अंबिकागिरी रायचौधुरी
अनु. प्रदीप आचार्य
पृ. 76, रु. 100/-
ISBN : 978-93-5548-420-8

द वर्ल्ड इस द नेक्स्ट विलेज
(पुरस्कृत नेपाली यात्रा-वृत्तांत *बिस्व यूटा पल्लो गाँव*)
ले. सोलन कार्तिक
अनु. एब्रोना ली पंडी एडेन
पृ. 176, रु. 160/-
ISBN : 978-93-5548-403-1

ए लाइफ़ अपरूटिड : ए बंगाली दलित रेफ्युजी रिमेम्बर्स
(बाङ्ला आत्मकथा *शिकारछेंरह जिबोन*)
ले. जतिन बाला
अनु. जयदीप सारंगी और मंदाकिनी भट्टाचार्य
पृ. 312, रु. 230/-
ISBN : 978-93-5548-404-8

द हर्मिट एंड तरंगिनी
(पुरस्कृत बाङ्ला नाटक *तपस्वी ओ तरंगिनी*)
ले. बुद्धदेव बसु
अनु. तानिया चक्रवर्ती
पृ. 128, रु. 125/-
ISBN : 978-93-5548-413-0

द बेस्ट स्टोरीज़ ऑफ़ महापात्र नीलमणि साहू
(ओड़िआ कहानी-संग्रह *महापात्र नीलमणि साहुन का स्मरणीय गल्प*)
ओड़िआ में संकलित : गुरुप्रसाद महापात्र
अनु. मोना लिसा जेना
पृ. 275, रु. 320/-
ISBN : 978-93-5548-412-3

राजकहिनी : दी प्रिंसली टेल्स ऑफ़ राजस्थान
ले. अवनींद्रनाथ टैगोर
अनु. विभिन्न अनुवादक
अनु. एवं संप. संगीता सान्याल और बुलु मुखोपाध्याय
पृ. 212, रु. 260/-
ISBN : 978-93-5548-360-7

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 : नाला सोपारा
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. चित्रा मुद्गल, अनु. मधु श्रीवास्तव
पृ. 216, रु. 270/-
ISBN : 978-93-5548-398-0

होमलैंड (गुजराती उपन्यास *मालक*)
ले. दलपत चौहान
अनु. नीलुफर भरूचा
पृ. 180, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-362-1

टू लेटर्स
(पुरस्कृत मैथिली उपन्यास *दू पत्र*)
ले. उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'
अनु. सत्येन्द्र कुमार झा
पृ. 88, रु. 130/-
ISBN : 978-93-5548-361-4

इट इस गेटिंग लेट एंड अदर स्टोरीज़
(पुरस्कृत मणिपुरी कहानी-संग्रह *नुमिट्टी असुम थेंगजिलाकली*)
ले. युमलेम्बन इबोम्चा
अनु. ओइनम आनंद
पृ. 153, रु. 215/-
ISBN : 978-93-5548-402-4

बिमल कर
(बाङ्ला लेखक पर अंग्रेज़ी में विनिबंध)
ले. देबरति बंद्योपाध्याय
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-236-5

कविराजमार्ग एंड द कन्नड वर्ल्ड
(अंग्रेज़ी)
(पुरस्कृत कन्नड निबंध-संग्रह)
ले. के.वी. सुयबन्ना
अनु. कृष्णमूर्ति चंदर
पृ.168, रु.185/-
ISBN : 978-93-5548-057-6

अक्कामहादेवी
ले. गुरुलिंगा कापसे
अनु. गणेश यू.एच.
पृ.84, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-163-4

बसवराज कट्टीमनी
(अंग्रेज़ी - विनिबंध)
ले. मालती पट्टनशेट्टी
अनु. मल्लिकार्जुन पाटिल
पृ.104, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-131-3

द कॉस्मिक एक्सप्लोज़न (मराठी बाल कहानियाँ *अंतरालतील स्फोट*)
ले. जयंत वी. नार्लिकर
अनु. सुजाता गोडबोले
पृ. 96, रु. 30/-, दूसरा पुनर्मुद्रण लेकिन असम के विशेष ऑर्डर के लिए इसे प्रथम पुनर्मुद्रण रखा गया है।
(मूल-1, पुनर्मुद्रण-1)
ISBN : 81-7201-424-4

प्रतीची
प्रधान संपादक सितांशु यश्शचंद्र
पृ. 284, रु.300/-
ISBN : 978-93-88468-62-6
(पुनर्मुद्रण)

निरंजन भगत
ले. शैलेश पारेख
पृ. 120, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-498-7

ए नाइट इन द वुड
ले. लीलावती भागवत
अनु. डी. आर. भागवत
पृ.40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-532-9

टीनी वीनी बैलून
संपा. डैश बेनहुर
पृ.48, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-90866-70-0

फैसिनेटिंग स्टोरीज़
संपा. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. अशोक देव चौधरी
पृ.252, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-260-1482-8

इंडियन शॉर्ट स्टोरीज़
संपा. ई. वी. रामकृष्णन
पृ.536, रु.300/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1091-2

द लेजेंड ऑफ़ प्लैनेट सरप्राइज़
ले. ताजिमा सिंजी
अनु. टी.एम. हॉफमैन
पृ.70, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4813-7

मिस्टरी ऑफ़ मिसिंग कैप
ले. मनोज दास
पृ.228, रु.165/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-886-3

गुरदयाल सिंह (अंग्रेज़ी विनिबंध)
ले. परमजीत सिंह रमाना
पृ.112, रु. 50/-
प्रथम संस्करण : 2023
ISBN : 978-93-5548-479-6

गुजरां नो अरेलो (डूंगरी भीली कथा)
संपा. भगवानदास पटेल
अनु. नील शाह
पृ.48, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-451-2
(पेपरबैक)

इमोशन, एक्सप्रेशन एंड एस्थेटिक्स
संपा. ईप्शिता चंदा
पृ. 168, रु.140/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-15-3

रूट टू ओरल लिटरेचर
संपा. अन्विता अब्बी
पृ. 162, रु.225/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-88468-02-2

लिटरेचर एंड अदर आर्ट्स
संपा. इप्शिता चंदा
पृ. 104, रु.110/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-16-0

जयंत महापात्र : ए रीडर
संपा. दुर्गा प्रसाद पांडा
पृ. 486, रु.360/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87567-66-5

द एंजेल ऑफ़ डेथ
ले. एम. मुलकोया
अनु. वसंती शंकरनारायणन
पृ. 76, रु.100/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89195-58-3

मॉडर्न इंग्लिश पोयट्री बाय यंग इंडियनस
संपा. सुदीप सेन
पृ. 256, रु.300/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89195-64-4

ए बाउंडलेस मोमेंट
ले. पारमिता सत्पथी
अनु. स्नेहप्रभा दास
पृ. 252, रु.200/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-88468-65-7

ग्रैटिट्यूड फ़ॉर लिविंग
(फाउंडेशन डे लेक्चर)
ले. सीताकांत महापात्र
पृ. 24, रु.25/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87567-48-1

द लाइ ऑफ़ द लैंड
संपा. गौतम कर्माकर
पृ. 296, रु.260/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89778-09-0

वन लास्ट प्लेज
ले. काशीनाथ सिंह
अनु. पूर्बी पनवार
पृ. 148, रु.130/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89195-04-0

नो ब्रिज ओवर द ट्रबल्ड वाटर
ले. मोहम्मद कामरान
पृ. 184, रु.150/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89467-38-3

द फ्लाइंग डॉल
ले. कलवी गोपालकृष्णन
अनु. इंदिरा अनंतकृष्णन
पृ. 72, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1297-8

गौड़ी'स ओशन
ले. टी.एम. हॉफमैन
पृ. 100, रु.100/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4620-1

पर्व
ले. एस.एल. भैरप्पा
पृ. 964, रु.750/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-93-90310-07-4

कंटेम्परारी इंडियन शार्ट स्टोरीज़-1
संपा. भाभानी भट्टाचार्य
पृ. 160, रु.150/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4690-4

कंटेम्परारी इंडियन शार्ट स्टोरीज़-2
संपा. भाभानी भट्टाचार्य
पृ. 240, रु.200/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4691-1

भारतीय नाट्यशास्त्र
ले. कपिला वात्सायन
पृ. 228, रु.200/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-1808-9

रिफ्लेक्शन एंड वेरिएशन ऑन द महाभारत
संपा. टी.आर.एस. शर्मा
पृ. 116, रु.400/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-2671-5

द कम्प्लीट वर्क ऑफ़ कालीदास-1
अनु. चंद्र राजन
पृ. 410, रु.600/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-7201-824-5

मंटो माई लव
ले. हरीश नारंग
पृ. 116, रु.220/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4752-9

गुजराती

भारतीय बाल कथाओ-I
हिंदी संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
अनु. श्रद्धा त्रिवेदी
पृ. 120, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-329-4

भारतीय बाल कथाओ-II
हिंदी संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
अनु. श्रद्धा त्रिवेदी
पृ. 128, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-330-0

भारतीय बाल कथाओ-III
हिंदी संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
अनु. श्रद्धा त्रिवेदी
पृ. 108, रु.135/-
ISBN : 978-93-5548-335-5

भारतीय बाल कथाओ-IV
हिंदी संपादक : हरिकृष्ण देवसरे
अनु. श्रद्धा त्रिवेदी
पृ. 136, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-336-2

निर्जन मंदिरनों घंटरव
ले. शीन काफ़ निज़ाम
अनु. जयन्त परमार
पृ. 112, रु.175/-
ISBN : 978-93-91494-12-4

मुंशी
ले. विनोद अध्वर्यु
पृ. 64, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-75-9
(पुनर्मुद्रण)

मानव गाँधी
ले. शरद कुमार मोहंती
अनु. हरेश ढोलकिया
पृ. 744, रु.600/-
ISBN : 978-93-5548-399-7

गुजराती काव्यविवेचनमन सृजनप्रक्रियानी विचारना
(1858-2010)
संक. जयेश भोगयाता
पृ. 300, रु.430/-
ISBN : 978-93-5548-429-1

हिंदी

रवीन्द्रनाथ का बाल साहित्य, भाग - I
(बाङ्ला में चुनिंदा बाल रचनाएँ)
संकलन एवं संपादन : लीला मजूमदार और क्षितिज रॉय
हिंदी अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 152, रु. 100/-, 19वाँ पुनर्मुद्रण
ISBN : 978-81-260-0009-8

लक्ष्मणराव सरदेसाई
(एक भारत, श्रेष्ठ भारत परियोजना)
ले. प्रकाश थाली
हिंदी अनु. रितु भनोट
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-418-5

राजा राधिका रमण सिंह रचना-संचयन
संक. एवं संपा. बी.एस. मंगल मूर्ति
पृ. 332, रु.340/-
ISBN : 978-93-5548-434-5

देवेन्द्र सत्यार्थी रचना-संचयन
संकलन एवं संपादन : प्रकाश मनु
पृ. 403, रु. 400/-
ISBN : 978-93-5548-447-5

अन्ना भाऊ साठे
ले. बजरंग कोरडे
हिंदी अनु. आर.के. वर्मा
पृ. 96, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-440-6

अपना मार्ग (पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह *तनमार्गम*)
ले. अबूरी छायादेवी
हिंदी अनु. परनंदी निर्मला
पृ. 244, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-222-8

अनाहत परंपरा
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह)
ले. गायत्री सराफ
हिंदी अनु. सुजाता शिवेन
पृ. 360, रु.360/-
ISBN : 978-93-5548-4444-4

कृष्णदत्त पालीवाल रचना संचयन
ले. एवं संपा. रीतारानी पालीवाल
पृ. 303, रु.330/-
ISBN : 978-93-5548-436-9

महापात्र नीलमणि साहू की स्मरणीय कहानियाँ
संपा. गुरुप्रसाद महापात्र
हिंदी अनु. सुजाता शिवेन
पृ. 251, रु.260/-
ISBN : 978-93-5548-443-7

केदारनाथ सिंह
ले. हरिमोहन शर्मा
पृ. 100, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-446-8

अग्निकलश
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. गुरबचन सिंह भुल्लर
हिंदी अनु. रमेश कपूर
पृ. 164, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-011-8

कोने का सूरज
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह)
ले. मोहनजीत
हिंदी अनु. सुभाष नीरव
पृ. 209, रु.230/-
ISBN : 978-93-5548-442-0

कबीर (बाङ्ला गौरवग्रंथ)
ले. के. मोहन सेन
हिंदी अनु. रंजीत साहा
पृ. 244, रु.270/-
ISBN : 978-93-5548-441-3

प्रतिनिधि कश्मीरी कहानियाँ
संपा. अजीज़ हाजिनी
हिंदी अनु. बीना बुडकी
पृ.108, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4742-0

11 तुर्की कहानियाँ
ले. मस्त राम कपूर
पृ.112, रु.125/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2433-9

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-1
संपा. दिविक रमेश
पृ.112, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-91494-72-8

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-2
संपा. दिविक रमेश
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-91494-80-3

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-3
संपा. दिविक रमेश
पृ.112, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-91494-95-7

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-4
संपा. दिविक रमेश
पृ.112, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-91494-01-8

जंगल की एक रात
ले. लीलावती भगवत
अनु. अरुंधति देवस्थले
पृ.112, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0228-3

पक्या और उसका गैंग
ले. गंगाधर गाडगिल
हिंदी अनु. माधवी देशपांडे
पृ.40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2544-2

पक्या और उसका गैंग
ले. 'काल्वी' गोपालकृष्णन
अनु. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-576-3

बिल्ली हाउसबोट पार
ले. अनिता देसाई, अनु. विमला मोहन
पृ.40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-492-6

बुलबुल की किताब
ले. उपेन्द्रकिशोर राय चौधरी
अनु. स्वप्न दत्त
पृ.112, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-481-0

जापान की कथाएँ
ले. साइजी माकिनाउ
पृ.76, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1218-3

सुनो कहानी
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ.56, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-092-8

भारतीय बाल कहानियाँ-1
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2676-0

भारतीय बाल कहानियाँ-2
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2676-7

भारतीय बाल कहानियाँ-3
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2678-4

भारतीय बाल कहानियाँ-4
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2640-8

सूरज और मोर
संपा. वेबस्टार डेविस जिरवा
हिंदी अनु. अल्मा सुहिलया
पृ.56, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1818-5

होनहार बच्चे
ले. गंगाधर गाडगिल
हिंदी अनु. माधवी देशपांडे
पृ.40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2594-7

बाल सुधा सागर
ले. शंकरदेव ढकाल
हिंदी अनु. उदय ठाकुर
पृ.80, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-5548-255-6

अंतरिक्ष में विस्फ़ोट
ले. जयन्त विष्णु नार्लीकर
हिंदी अनु. सुरेखा पणंदीकर
पृ.76, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-423-0

सुभद्रा कुमारी चौहान (हिंदी विनिबंध)
ले. सुधा चौहान
पृ.76, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2737-8

रघुवीर सहाय (हिंदी विनिबंध)
ले. पंकज चतुर्वेदी
पृ.100, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4315-6

बच्चों ने दबोचा चोर
ले. गंगाधर गाडगिल
हिंदी अनु. एच.एस. शाणे
पृ.100, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-522-0

मास्टर दीनदयाल
ले. परशुराम शुक्ल
पृ.128, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4014-8

धमाल पंपाल के जूते
ले. प्रकाश मनु
पृ.152, रु.125/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-91017-04-0

फ़ौजी लड़कियाँ तथा अन्य कहानियाँ
ले. चिनुआ अचेबे
पृ.152, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-171-0

फुलवाड़ी (भाग-10)
ले. विजयदान देथा
हिंदी अनु. कैलाश कबीर
पृ.228, रु.150/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2049-2

बापू कथा चौदस
ले. मधुकर उपाध्याय
पृ.112, रु.125/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-950217-0-3

बंटी के सूरज दादा
ले. पुष्पा अंताणी
हिंदी अनु. रजनीकांत एस. शाह
पृ.76, रु.75/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-5548-100-9

सत्तर बाल कहानियाँ
ले. जनार्दन हेगड़े
हिंदी अनु. मीरा द्विवेदी
पृ.76, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-5548-105-4

ताश का देश
ले. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
हिंदी अनु. रंजीत साहा
पृ.76, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0317-4

राजकुमार का सपना
ले. कुलबीर सिंह सूरी
अनु. जसबीर कौर
पृ. 60, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-102-3
पेपरबैक

लू लू का आविष्कार
ले. दिविक रमेश
पृ. 60, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-012-5
पेपरबैक

जंगल में मंगल
ले. ओम गोस्वामी
अनु. यशपाल निर्मल
पृ. 60, रु.75/-
ISBN : 978-93-5548-101-6
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-5
संपा. दिविक रमेश
पृ. 128, रु.100/-
ISBN : 978-93-91494-09-4
पेपरबैक

प्रतिनिधि बाल कविता संचयन-6
संपा. दिविक रमेश
पृ. 128, रु.100/-
ISBN : 978-93-91494-17-9
पेपरबैक

सत्तर बाल कहानियाँ
ले. जनार्दन हेगड़े
अनु. मीरा द्विवेदी
पृ. 116, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-105-4
पेपरबैक

वनदेवी
ले. कलवी गोपालकृष्णन
अनु. हरेकृष्ण देवसरे
पृ. 56, रु.75/-
ISBN : 978-7201-576-3
पेपरबैक

देव (विनिबंध)
ले. जयप्रकाश
पृ. 108, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-88468-53-4

आदिवासी कहानी संचयन
संपा. रमणिका गुप्ता
पृ. 400, रु.300/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-940300-1-0

योगवासिष्ठ और भारतीय परम्पराएँ
संपा. राधावल्लभ त्रिपाठी
रु.200/-
ISBN : 978-81-940300-5-8

नंददास (विनिबंध)
ले. व्यासमणि त्रिपाठी
पृ. 76, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-97-9

बालकृष्ण भट्ट : रचना-संचयन
संपा. गंगा सहाय मीणा
पृ. 392, रु.300/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-98-6

मोहना-ओ-मोहना
ले. के. शिवा रेड्डी
अनु. शांता सुंदरी
पृ. 120, रु.120/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-87989-53-5

शिवपूजन सहाय रचना-संचयन
संपा. मंगलमूर्ति
पृ. 488, रु.475/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-89195-09-5

किशोर कहानियाँ
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
पृ. 160, रु.100/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0747-9

जंगल कथा
ले. ओरासियो किरोगा
अनु. प्रीति पंत
पृ. 68, रु.100/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2555-8

उल्लंघन
ले. प्रतिभा राय
अनु. राजेंद्र प्रसाद
पृ.264, रु.220/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2857-3

फीजी का सृजनात्मक साहित्य
संपा. विमलेशकांति वर्मा
पृ. 296, रु.260/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4001-8

कमला प्रसाद मिश्र काव्य-संचयन
संपा. सुरेश ऋतुपर्ण
पृ. 356, रु.300/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-950217-6-5

लघु कथा संग्रह
संपा. जयमंत मिश्र
पृ. 236, रु.165/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-944-0

फणीश्वर नाथ रेणु (विनिबंध)
ले. सुरेंद्र चौधरी
पृ. 76, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2632-6

रामवृक्ष बेनीपुरी (विनिबंध)
ले. रामबचन राय
पृ. 108, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-974-7

रामधारी सिंह दिनकर (विनिबंध)
ले. विजेंद्रनारायण सिंह
पृ. 112, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2142-0

नागार्जुन (विनिबंध)
ले. खगेंद्र ठाकुर
पृ. 128, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-86771-57-5

भूषण (विनिबंध)
ले. राजमल बोरा
पृ. 112, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-1900-7

कबीर (विनिबंध)
ले. प्रभाकर माचवे
पृ. 112, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2426-1

त्रिलोचन (विनिबंध)
ले. रेवती रमण
पृ. 112, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-3188-7

निर्मल वर्मा (विनिबंध)
ले. कृष्णदत्त पालीवाल
पृ. 116, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2616-6

तेलुगु की प्रतिनिधि कहानियाँ
संक. जे.एल रेड्डी
पृ. 424, रु.330/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-86771-96-4

योगायोग
ले. इलाचंद्र जोशी
पृ. 116, रु.200/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0889-6

अनुवाद के सिद्धांत और समाधान
ले. रामचन्द्र रेड्डी
अनु. जे.एल रेड्डी
पृ. 116, रु.170/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0511-6

भोजपुरी
ले. नागेंद्र प्रसाद सिंह
पृ. 116, रु.110/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-5179-3

अज्ञेय पत्रावली
संपा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 196, रु.370/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-3092-7

ग़ालिब (विनिबंध)
ले. मो. मुजीब
पृ. 116, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-0424-9

मोहन राकेश (विनिबंध)
ले. प्रतिभा अग्रवाल
पृ. 116, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-2607-4

मुक्तिबोध (विनिबंध)
ले. नंदकिशोर नवल
पृ. 102, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-0018-0

रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विनिबंध)
ले. शिशिर कुमार घोष
पृ. 116, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-0232-0

रसखान (विनिबंध)
ले. श्याम सुंदर व्यास
पृ. 124, रु.50/-, पुनर्मुद्रण : 2023
ISBN : 978-81-260-0518-5

कन्नड

के.एस. निसार अहमद (विनिबंध)
ले. एम.एस.रघुनाथ
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-288-4

डी. आर. नागराज (विनिबंध)
ले. नटराज हुलियार
पृ. 148, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-115

ए. एन. मूर्तिराव (विनिबंध)
ले. बसवराज डोनूर
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-054-5

एम.एम. कलबुर्गी (विनिबंध)
ले. रामकृष्ण मराठे
पृ.156, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-122-1

हेना होरुववना वृत्तन्था
(पुरस्कृत कृति *क्रॉनिकल्स ऑफ़ ए कॉर्प्स बियरर*)
ले. साइरस मिस्त्री
अनु. बी.आर.जयरामराजे उर्स
पृ. 244, रु. 240/-
ISBN : 978-93-5548-410-9

कग्गट्टलकला - भारतदल्ली ब्रिटिश साम्राज्य (पुरस्कृत अंग्रेज़ी कृति *एन एरा ऑफ़ डार्कनेस – द ब्रिटिश एम्पायर इन इंडिया*)
ले. शशि थरूर, अनु. एस.बी. रंगनाथ
पृ. 340, रु. 320/-
ISBN : 978-93-5548-065-1

श्यामा माधव
(पुरस्कृत मलयाळम् कविता-संग्रह *श्यामा माधवम्*)
ले. प्रभा वर्मा] अनु. अशोक कुमार
पृ. 192, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-089-7

ज्वालेगळु मट्टू मानव
(पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह *मंताळु मनावुडु*)
ले. सी. नारायण रेड्डी
अनु. मार्कंदपुरम श्रीनिवास
पृ.96, रु.130/-
ISBN :978-93-5545-298-3

अथाला (पुरस्कृत कोंकणी कहानी-संग्रह *अथांग*)
ले. जयंती नाइक] अनु. दिनेश नायक
पृ. 240, रु. 245/-
ISBN : 978-93-5548-283-9

कक्के हू नेरालल्ली नानू
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी कहानी-संग्रह *लैबर्नम फ़ॉर माई हैड*)
ले. तेम्सुला आओ, अनु. सी. वस्त्राड
पृ.120, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-289

अनुभविगउ हलिडा कथगळु (कन्नड)
मनीषियों द्वारा कही गई कहानियाँ, ले.मनोज दास
अंग्रेज़ी अनुवाद : एम.एस. रघुनाथ
पृ.332, रु.310/-
ISBN : 978-93-5548-150-4

मक्कलिग्गी अनुवाद : ओन्दु कैपिडी
(बच्चों के लिए अनूदित पुस्तिका)
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. ए.वी. नवादा
पृ.136, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-311-9

कश्मीरी

ख़ासी क़ाबीलाए ची लुकाए कथाए
(खासी-कश्मीरी अनुवाद कार्यशाला के दौरान अनूदित पांडुलिपि)
संपा. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
पृ. 174, रु. 220/-
प्रथम संस्करण : 12/2022
ISBN : 978-93-5548-201-3

अछूत (पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *अनटचेबल*)
ले. मुल्कराज आनंद
अंग्रेज़ी से कश्मीरी अनु. मोहम्मद इक़बाल नाज़की
पृ.: 191, रु. 240/-
प्रथम संस्करण : 12/2022
ISBN : 978-93-5548-292-1

काशरैन नोआहन हुंद इंतिखाब
(कश्मीरी नउहा का संकलन)
संक. सैयद अख़्तर हुसैन
पृ.: 232, रु.280/-
पहला संस्करण : 12/2022
ISBN : 978-93-5548-180-1

एयस पारोव नोव नोव
(कार्यशाला के दौरान रचित बाल साहित्य)
संपा. ग़ुलाम नबी अताश
पृ.: 85, रु. 100/-
प्रथम संस्करण : 02/2023
ISBN : 978-93-5548-503-8

गुलाम नबी गौहर (विनिबंध)
ले. अब्दुल खालिक शम्स
पृ.: 106, रु. 50/-
प्रथम संस्करण : 02/2023
ISBN : 978-93-5548-505-2

ख्वाजा गुलाम-उल सैय्यदैन
(विनिबंध)
ले. रेयाज़ अहमद
उर्दू से कश्मीरी अनु. : बशीर भदरवाही
पृ.: 139, रु. 50/-
प्रथम संस्करण : 02/2023
ISBN : 978-93-5548-506-9

काशीर क़सीदा
(एंथोलॉजी ऑफ़ कश्मीरी ओडेस)
संक. एवं संपा. ग़ुलाम नबी अताश
पृ. 250, रु. 280/-
प्रथम संस्करण : 02/2023
ISBN : 978-93-5548-504-5

अकवोहिमी सादी हौंद कोशुर अफ़साना
(21वीं सदी का कश्मीरी कहानी संकलन)
संक. एवं संपा. गौरी शंकर रैना
पृ.: 233, रु. 260/-
प्रथम संस्करण : 03/2023
ISBN : 978-93-5548-171-9

अहमद बटवारी
(कश्मीरी संगोष्ठी आलेख)
संपा. मंशूर बनिहाली
पृ.: 95, रु. 110/-
प्रथम संस्करण : 03/2023
ISBN : 978-93-5548-507-6

जंगली नार
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. अनिता देसाई
अंग्रेज़ी से कश्मीरी अनु. फ़ारूक़ फ़ैयाज़
पृ. 196, रु. 220/-
प्रथम संस्करण : 03/2023
ISBN : 978-93-5548-508-3

कोशूर ड्रामा : रिवायत ते तजुरबा
(कश्मीरी संगोष्ठी के दौरान प्रस्तुत किए गए आलेख)
संपा. रेयाज़-उल हसन
पृ. 149, रु. 170/-
प्रथम संस्करण : 03/2023
ISBN : 978-93-5548-142-9

कोंकणी

फतिचे सत्य
ले. यशपाल
अनु. माया अनिल खरंगटे
पृ. 708, रु.600/-
ISBN : 978-93-91494-13-1

कुवेम्पु (विनिबंध)
ले. प्रभु शंकर
अनु. रमेश लाड
पृ. 120, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-050-7

नेपाली लोककथा (खंड II)
ले. प्रकाश उपाध्याय
अनु. किरण म्हाम्ब्रे
पृ.100, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-408-6

कृष्णमूर्ति पुराणिक
ले. एस.एम. कृष्ण राव
अनु. अलका सिनाई असोल्देकर
पृ. 168, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-397-3

कोंकणी लोकगीतां
(कोंकणी लोक गीतों का संकलन)
संक. पांडुरंग फलदेसाई
पृ. 312, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-394-2

सर्जिकल स्ट्राइक
(नवोदय योजना के अंतर्गत कविता-संग्रह)
ले. आकाश भालचंद्र गाँवकर
पृ. 140, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-426-0

मैथिली

हमार जीवनी
(तमिऴ आत्मकथा *एन चरित्तिरम*)
ले. यू.वी. स्वामीनाथ अय्यर
अनु. प्रेम मोहन मिश्र
पृ. 500, रु. 700/-
ISBN : 978-93-5548-314-0
(पेपरबैक)

उड़ी जो रे सुग्गा
(पुरस्कृत राजस्थानी उपन्यास *उड़ जा रे सुआ*)
ले. शांति भारद्वाज 'राकेश'
अनु. रमन कुमार सिंह
पृ. 108, रु. 160/-
ISBN : 978-93-5548-257-0
(पेपरबैक)

हंस एंडरसनक कथा (खंड-1)
(बाल कहानी-संग्रह)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
अनु. नारायण झा
पृ.256, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-025-5
(पेपरबैक)

कहलानी सूफ़ी
(मलयाळम् कालजयी उपन्यास *सूफ़ी परंज कथा*)
ले. के.पी. रामानुन्नी,
अनु. रूपम झा
पृ.116, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-369-0
(पेपरबैक)

पब्बी
(पुरस्कृत पंजाबी कविता-संग्रह *पब्बी*)
ले. प्रभजोत कौर, अनु. पंकज पराशर
पृ.70, रु.115/-
ISBN : 978-93-5548-377-5
(पेपरबैक)

हंस एंडरसनक कथा (खंड-2)
(बाल कहानी-संग्रह)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
अनु. नारायण झा
पृ.236, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-039-2
(पेपरबैक)

त्रसादिक तार में
(जापानी कविता-संकलन)
अनु. कुमार मनीष अरविंद
पृ.304, रु.350/-
ISBN : 978-93-5548-327-0
(पेपरबैक)

एक गाछ : दू चिदाई (पुरस्कृत मराठी आत्मकथा *एक ज़द आणि डॉन पक्षी*)
ले. विश्राम बेडेकर
अनु. विष्णु कांत मिश्र
पृ. 360, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-203-7
(पेपरबैक)

भोरुका बसतक प्रतीक्षा (पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह *बाद-ए-सबा का इंतज़ार*)
ले. सैयद मुहम्मद अशरफ़, अनु. संजीव
पृ.186, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-274-7
(पेपरबैक)

नागफनी बोनक इतिहास
(पुरस्कृत तमिळ उपन्यास *कल्लिकट्टू इथिकासम*)
ले. आर. वैरामुथु
अनु. अजीत मिश्र
पृ.240, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-211-2
(पेपरबैक)

देवलसा पार : आकाश
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास *सत पगलान आकाशमन*)
ले. कुन्दनिका कपाड़िया
अनु. सत्येन्द्र कुमार झा
पृ.368, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-386-7
(पेपरबैक)

पाब्लो नेरुदा कविता संचयन
ले. पाब्लो नेरुदा
अनु. नारायण झा
पृ.346, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-187-0
(पेपरबैक)

आँखी हृदयक हरियाल सपना
(पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह *आँख हिनये रा हरियाल सपना*)
ले. आईदान सिंह भाटी
अनु. इंद्र कांत झा
पृ.132, रु.180/-
ISBN : 978-93-5548-261-7
(पेपरबैक)

शृंखल (पुरस्कृत असमिया कहानी-संग्रह)
ले. भवेंद्रनाथ शईकिया
अनु. शिशिर कुमार मिश्र
पृ.176, रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-233-4
(पेपरबैक)

शब्दांत (पुरस्कृत पंजाबी कविता)
ले. देव
अनु. प्रेम मोहन मिश्र
पृ.324, रु.500/-
ISBN : 978-93-5548-217-4
(पेपरबैक)

महात्मा गाँधी : मिथिला ओ मैथिली
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. प्रेम मोहन मिश्र
पृ.172, रु.230/-
ISBN : 978-93-5548-437-6
(पेपरबैक)

मार्कंडेय प्रवासी (प्रख्यात मैथिली लेखक पर विनिबंध)
ले. रामानंद झा 'रमन'
पृ.128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-262-4
(पेपरबैक)

इक्षुगंधा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. चंद्र मोहन झा 'पड़वा'
पृ.64, रु.100/-
ISBN : 978-93-5548-227-3
(पेपरबैक)

हरे कृष्ण झा
(प्रख्यात हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. पंकज पराशर
पृ.80, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-256-3
(पेपरबैक)

कथा कुंज
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह *आखायनवल्लरी*)
ले. देवर्षि कलानाथ
अनु. जयनारायण यादव
पृ.208, रु.270/-
ISBN : 978-93-5548-450-5
(पेपरबैक)

नील अंबर, कारी मेघ
(पुरस्कृत डोगरी कहानी-संग्रह)
ले. नरेंद्र खजूरिया,अनु. फूलो पासवान
पृ.128, रु.220/-
ISBN : 978-93-5548-448-2
(पेपरबैक)

शंकरदेव
(मध्यकालीन संत पर विनिबंध)
ले. पोना महंत, अनु. नारायण झा
पृ.228, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-433-8
(पेपरबैक)

स्वर्ण कमल (पुरस्कृत तेलुगु कहानी-संग्रह *स्वर्ण कमलालु*)
ले. आई. सरस्वती देवी
अनु. स्वर्णिमा झा
पृ.696, रु.680/-
ISBN : 978-93-5548-391-1
(पेपरबैक)

फायर एरिया (पुरस्कृत उर्दू उपन्यास)
ले. इलियास अहमद गाद्दी
अनु. नारायण झा
पृ.316, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-353-9
(पेपरबैक)

वैश्विक परिवेश में मैथिली भाषा एवं साहित्य (संगोष्ठी आलेख)
संपा. प्रेम मोहन मिश्र
पृ.138, रु.140/-
ISBN : 978-93-5548-492-5
(पेपरबैक)

पड़ोसिया
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *अयलकर*)
ले. पी. केशव देव,
अनु. बिजयेंद्र झा
पृ.316, रु.320/-
ISBN : 978-93-5548-435-2
(पेपरबैक)

गुजरातीक श्रेष्ठ एकांकी
(गुजराती एकांकी पाली *गुजरातीना एकांकी*)
ले. गुलाबदास ब्रोकर
अनु. सबिता झा 'सोनी'
पृ.280, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-473-4
(पेपरबैक)

मलयाळम्

कुरुनीकंगल
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. गिरिराज किशोर
अनु. पी. माधवन पिल्लई
पृ. 560, रु. 830/-
ISBN : 978-93-5548-205-1

पुथुस्सेरी रामचन्द्रन
ले. नादुवट्टम गोपालकृष्णन
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-355-3

चित्रशालाबंगाल
(पुरस्कृत कोंकणी कृति *पिसोलिम*)
ले. मनोहर राय सरदेसाई
अनु. शरतचंद्र शेनॉय
पृ. 40, रु. 75/-
ISBN : 978-93-5548-414-7

पूर्णचन्द्रान्ते रात्रिम मत्तु कथाकाळुम
(पुरस्कृत पंजाबी कृति *इक छिट चानन दी*)
ले. करतार सिंह दुग्गल
अनु. राधिका सी. नायर
पृ. 288, रु. 270/-
ISBN : 978-93-5548-417-8

पुका
(पुरस्कृत उर्दू कहानी-संग्रह *धुआँ*)
ले. गुलज़ार
अनु. बी.एफ.एच.आर. बिजली
पृ.212, रु.225/-
ISBN :978-93-5548-027-9

थकाझियुडे चेरुकाथकळ
(तकाषी शिवशंकर पिल्लई का कहानी-संकलन)
संक. के.एस. रविकुमार
पृ.400, रु.360/-
ISBN : 978-93-5548-364-5

मणिपुरी

शून्य

मराठी

चि.वि. जोशी (विनिबंध)
ले. स्वाति सुहास कर्वे
पृ. 116, रु.50/-
ISBN : 978-93-91017-34-7

आगिचा हास्य (पुरस्कृत हिंदी कविता-संग्रह *आग की हँसी*)
ले. रामदरश मिश्र
अनु. दिलीप भाऊराव पाटिल
पृ. 104, रु. 150/-
ISBN : 978-93-91494-244-0

कोरकू लोकगीत
संपा. काशीनाथ बरहाटे
पृ. 176, रु.225/-
ISBN : 978-93-5548-265-5

अनेक (पुरस्कृत गुजराती कविता-संग्रह)
ले. कमल वोरा
अनु. वर्जेश सोलंकी
पृ. 132, रु.175/-
ISBN : 978-93-5548-152-8

महात्मा गाँधी अणी मराठी साहित्य
संपा. प्रमोद मुनघाटे
पृ. 216, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-387-4

कथा मरुभूमिचि (पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. वैरामुथु
तमिऴ से मराठी अनु. श्रीप्रकाश अधिकारी
पृ. 286, रु.275/-
ISBN : 978-93-5548-393-5

बी. रघुनाथ (विनिबंध)
ले. रामचन्द्र कालुंखे
पृ. 106, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-174-0

भोगदंड
(पुरस्कृत कोंकणी उपन्यास का अनुवाद)
ले. हेमा नाइक, अनु. गीता गवास
पृ. 280, रु.280/-
ISBN : 978-93-5548-407-9

पू.ला. देशपांडे
(मराठी लेखक पर विनिबंध)
ले. मुकुंद टकसाले
पृ. 112, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-456-7

चित्रलिपि
(पुरस्कृत कोंकणी कविता-संग्रह का अनुवाद)
ले. परेश कामत, अनु. गीतेश शिंदे
पृ. 88, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-452-9

पंडिता रमाबाई (विनिबंध)
ले. अनुपमा उजगारे
पृ. 104, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-2968-6
(पुनर्मुद्रण)

नेपाली

भारतीय नेपाली साहित्यम उत्तरोपनिवेशिक लेखन
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. कबिता लामा
पृ. 164, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-157-3

इक्षुगंधा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. शिवप्रसाद पोखरेल
पृ. 67, रु. 100/-
ISBN : 978-93-5548-161-0

कथा रत्नाकर
(पुरस्कृत असमिया उपन्यास)
ले. ध्रुवज्योति बोरा
अनु. चंद्रमणि उपाध्याय
पृ. 371, रु.450/-
ISBN : 978-93-5548-162-7

पूर्वोत्तर नेपाली निबंध संचयन
(पूर्वोत्तर नेपाली निबंध-संकलन)
संपा. ज्ञान बहादुर छेत्री
पृ. 359, रु.450/-
ISBN :978-93-5548-170-2

रामकृष्ण शर्मा रचना संचयन
संपा. इंद्रबहादुर छेत्री
अनु. शिशुपाल शर्मा
पृ. 240, रु.300/-
ISBN : 978-93-5548-177-1

नव-नीता
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यासनबा-नीता)
ले. नबनीता देव सेन
अनु. शिशुपाल शर्मा
पृ.703, रु.870/-
ISBN : 978-93-5548-078-1

भारतीय नेपाली नियात्रा साहित्यको साया वर्ष
संपा. जीवन नामदुंग
पृ.88, रु.125/-
ISBN : 978-93-5548-151-1

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड I)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
अनु. सुदर्शन प्रधान 'आंबटे'
पृ.91, रु.125/-
ISBN : 978-93-5548-186-3

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड II)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ.100, रु.135/-
ISBN : 978-93-5548-193-1

भारतीय बाल कहानियाँ (खंड III)
संपा. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 92, रु.125/-
ISBN : 978-93-5548-194-8

आदित्य बिक्रम गुमानसिंह चामलिंग (विनिबंध)
ले. टेरेंस मुखिया
पृ.119, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-281-5

अनुभव (पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास)
ले. दिब्येंदु पालित
अनु. युवराज काफले
पृ.116, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-431-4

लक्ष्मण श्रीमल (विनिबंध)
ले. राजू प्रधान हिमांशु
पृ.106, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-367-6

गुरुभक्त धीताल (विनिबंध)
ले. डंबरमणि प्रधान
पृ.92, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-374-4

मत्स्येन्द्र प्रधान (विनिबंध)
ले. नरेशचन्द्र खाती
पृ.107, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-368-3

प्रेम थापा (विनिबंध)
ले. पूर्ण गुरुंग 'निरुपम'
पृ.92, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-113-9

महानंदा पौड्याल रचना संचयन
संपा. नवीन पौडयाल
पृ.238, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-457-4

हैमनदास राय किरात (विनिबंध)
ले. टी. बी. चंद्र सुब्बा
पृ.95, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-459-8

नागेंद्रमणि प्रधान (विनिबंध)
ले. संगीता प्रधान
पृ.95, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-464-2

दिव्य अपकार (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *दैवथिंते विक्रुतिकळ*)
ले. एम. मुकुंदन, अनु. जॉर्ज थाडाथिल
पृ.238, रु.415/-
ISBN : 978-93-5548-460-4

सानुभाई शर्मा (विनिबंध)
ले. अनिता निरौला
पृ.95, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-461-1

नागफनी वैंको इतिहास (पुरस्कृत तमिळ उपन्यास)
ले. वैरामुथु, अनु. शरद कुमार छेत्री
पृ. 248, रु. 350/-
ISBN : 978-93-5548-462-8

पूर्वोत्तर भारतको नेपाली साहित्यको इतिहास
ले. खेमराज नेपाल
पृ.476, रु.500/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-90866-16-8

भारतीय नेपाली ग़ज़ल
ले. मिलन बंतावा
पृ.476, रु.420/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-5548-266-2

ओड़िआ

आधुनिका (ओड़िआ पत्रिका)
संक. एवं संपा. : अमरेश पटनायक
पृ. 384, रु. 300/-
ISBN : 978-93-5548-037-8

ओड़िआ शिशु किशोर धागा धमाली
(बच्चों तथा किशोरों के लिए लोकप्रिय ओड़िआ कहावतों और पहेलियों का संकलन)
संकलन एवं संपादक : गोविंदचंद्र चंद
पृ. 216, रु. 210/-, दूसरा पुनर्मुद्रण (किंतु इसे प्रथम पुनर्मुद्रण के रूप में रखा गया है क्योंकि यह विशेषरूप से ओडिशा ऑर्डर के लिए था।)
ISBN : 978-81-260-5312-4

नूरा
(कोशली - संबलपुरी कविता-संग्रह)
ले. सुजीत कुमार सतपथी
पृ.113, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-328-7
(पेपरबैक)

पंजाबी

पारिजात
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. नासिरा शर्मा
अनु. वनीता
पृ.593, रु. 670/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-092-7

भीलां दा भारत
(भील लोक महाकाव्य)
संक. भगवानदास पटेल
अनु. सतप्रीत सिंह जस्सल
पृ.228, रु. 400/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-294-5

धुंदलियाँ लकीरां
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास द *शैडो लाइन्स*)
ले. अमिताव घोष
अनु. (स्व.) राजिंदरजीत कौर ढींडसा
पृ.360, रु. 480/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-343-0

कुट्राल कुरिंजी
(पुरस्कृत तमिऴ उपन्यास)
ले. के. मणिशेखरन
अनु. जसवन्त दीद
पृ.259, रु. 320/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-114-6

पागी
(पुरस्कृत राजस्थानी कविता-संग्रह)
ले. चन्द्रप्रकाश देवल, अनु. प्रिया सूफी
पृ.80, रु. 150/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-315-7

गुरशरण सिंह (विनिबंध)
ले. जसपाल कौर देयोल
पृ.100, रु. 50/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-301-0

गुआंडी
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास *अयालक्कर*)
ले. पी. केशव देव, अनु. मंजीत इंदिरा
पृ.338, रु. 540/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-300-3

कांता अते होर कहानियाँ
(पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह *कांता ओ अन्यान्य गल्प*)
ले. गौरहरि दास
अनु. फूलचंद मानव
पृ. 178, रु. 230/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-103-0

पंजाबी लोकधारा : प्रासंगिकता अते परिपेख (संगोष्ठी आलेख)
संक. एवं संपा. मनमोहन
पृ.192, प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-423-9

ख़ुर्दबीन हेठ पिया अम्बर
(नवोदय योजना)
ले. बलविंदर चाहल
पृ.104, रु.170/-
प्रथम संस्करण : 2022
ISBN : 978-93-5548-104-7

प्राप्ति (पुरस्कृत ओड़िआ कहानी-संग्रह *प्राप्ति*)
ले. परमिता सत्पथी
अनु. सतनाम सिंह जस्सल
पृ. 268, रु. 430/-
प्रथम संस्करण : 2023
ISBN : 978-93-5548-480-2

परवाज़ कबूतरों की
ले. रस्किन बॉन्ड
अनु. इकबाल दीप
पृ.32, रु.40/-, पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0303-7

सुनो कहानी
ले. विष्णु प्रभाकर
अनु. रवेल सिंह
पृ. 40, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2864-1

राजस्थानी

लूना (पुरस्कृत पंजाबी पद्य नाटक)
ले. शिव कुमार बटालवी
अनु. हरि मोहन सारस्वत 'रूँख'
पृ. 171, 220/- रु.
ISBN : 978-93-5548-254-9

महाभारत रूपक
(राजस्थानी गौरवग्रंथ)
ले. सांवल दान आशिया
हिंदी टिप्पणियों के साथ लेखन एवं संपादन : चंद्र प्रकाश देवल
पृ. 532, रु. 650/-
ISBN : 978-93-5548-117-7

राजस्थानी कहानी परम्परा री दीठ अर आधुनिकता री ओलखां
(संगोष्ठी आलेख)
संपा. मधु आचार्य 'आशावादी'
पृ. 120, रु. 170/-
ISBN : 978-93-5548-185-6

राजस्थानी साहित्य में गाँधी
(परिसंवाद आलेख)
संपा. मधु आचार्य 'आशावादी'
पृ. 112, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-210-5

इक्षुगंधा
(पुरस्कृत संस्कृत कहानी-संग्रह)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. शारदा कृष्णा
पृ. 60, रु. 100/-
ISBN : 978-93-5548-178-8

हमीरजी रत्तू (विनिबंध)
ले. सोहन दान चारण
पृ.64, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-352-2

पदबिंब
(पुरस्कृत कश्मीरी निबंध-संग्रह)
ले. मोहम्मद ज़मां आज़ुर्दा
अनु. कमल रंगा
पृ.110, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-084-2

चाननी रात रो अंधारो
(पुरस्कृत पंजाबी कहानी-संग्रह)
ले. करतार सिंह दुग्गल
अनु. रवि पुरोहित
पृ.267, रु.330/-
ISBN : 978-93-5548-202-0

गमयोरा देवरा री गरनावती घंटियाँ
(पुरस्कृत उर्दू कविताएँ)
ले. शीन काफ़ निज़ाम
अनु. चन्द्रप्रकाश देवल
पृ.115, रु.150/-
ISBN : 978-93-5548-209-9

बदनामी री छिया
(पुरस्कृत डोगरी कहानी-संग्रह)
ले. रामनाथ शास्त्री, अनु. रीना मीनारिया
पृ. 68, रु. 100/-
ISBN : 978-93-5548-470-3

धन्वरली घाटी
(पुरस्कृत गुजराती उपन्यास)
ले. विनेश अंतानी
अनु. कृष्णकुमार 'आशू'
पृ. 214, रु. 300/-
ISBN : 978-93-5548-376-8

ताजरबो
(पुरस्कृत बाङ्ला उपन्यास *अनुभव*)
ले. दिव्येंदु पालित
अनु. गौरीशंकर प्रजापत
पृ. 135, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-430-7

रेत सगेई हेत
(राजस्थानी कविताएँ)
संपा. मधु आचार्य 'आशावादी'
पृ. 256, रु. 350/-
ISBN : 978-93-5548-477-2

विकलांग श्रद्धा रो दौर
(पुरस्कृत हिंदी व्यंग्य)
ले. हरिशंकर परसाई
अनु. बुलाकी शर्मा
पृ. 136, रु. 200/-
ISBN : 978-93-5548-482-6

रेवतदान चारण री तलवी कवितावां
संपा. सोहन डी. चारण
पृ.148, रु.200/-
ISBN : 978-93-5548-484-0

रवीन्द्रनाथ रो बाल साहित्य (भाग-1)
संपा. लीला मजूमदार एवं क्षितीश राय
अनु. बुलाकी शर्मा
पृ.228, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4688-1

रवीन्द्रनाथ रो बाल साहित्य (भाग-2)
संपा. लीला मजूमदार एवं क्षितीश राय
अनु. बुलाकी शर्मा
पृ.228, रु.100/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4690-04

कन्हैयालाल सइतिया
ले. घनश्याम नाथ कच्छावा
पृ.112, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-93-90310-25-8

राजस्थानी व्रत कथावा
संपा. अर्जुन सिंह शेखावत
पृ.352, रु.225/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0623-6

राजस्थानी शक्ति काव्य
संपा. भंवर सिंह सामौर
पृ.476, रु.525/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-0625-0

संस्कृत

तिरुमलाम्बा (विनिबंध)
ले. पी. शशिरेखा
पृ. 92, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-322-5
(पेपरबैक)

संस्कृतकथासहस्री (खण्ड-1)
(वैदिक युग से 10वीं शताब्दी तक की संस्कृत कथाओं का संकलन)
संक. एवं संपा. नारायण दास
पृ. 268, रु. 400/-
ISBN : 978-93-5548-337-9
(पेपरबैक)

पंडित कृष्णमाधव झा (विनिबंध)
ले. उदयनाथ झा 'अशोक'
पृ.128, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-219-8
(पेपरबैक)

वारिपर्णी (चयनित संस्कृत ग़ज़लें)
ले. अभिराज राजेंद्र मिश्र
अनु. एस. रंगनाथ
पृ.312, रु.450/-
ISBN : 978-93-5548-321-8
(पेपरबैक)

लघु कथा संग्रह
संपा. जयमंत मिश्र
पृ.236, रु.165/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-7201-944-0

हरिराम आचार्य (विनिबंध)
ले. भावना आचार्य
पृ.76, रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-179-5
(पेपरबैक)

स्वामी विवेकानंद
संपा. एन. सदनबोस
पृ.108, रु.50/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4532-7

क्षणद्राशीर पंचालिका
ले. अवनीन्द्रनाथ ठाकुर
अनु. कल्पिका मुखोपाध्याय
पृ.40, रु.25/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-2257-1

पितामहापौत्रयोग लघुकथा संग्रहः
ले. लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ
अनु. नलिनी देवी मिश्रा
पृ.136, रु.125/- पुनर्मुद्रण : 2022
ISBN : 978-81-260-4276-0

संताली

उमिन जिलिंग संज सुंज
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *दैट लॉन्ग साइलेंस*)
ले. शशि देशपांडे
अनु. माधब चंद्र हाँसदा
पृ.166, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-341-6

ओक्टो बंग जपित अचोयाया
(पुरस्कृत तेलुगु कविता-संग्रह *कलान्नी निद्रा पोनिव्वनु*)
ले. एन. गोपी, अनु. दमयंती बेश्रा
पृ. 92, रु.160/-
ISBN : 978-93-5548-137-5

मनमी बोंगा
(बाङ्ला उपन्यास *गणदेवता*)
ले. ताराशंकर बंद्योपाध्याय
अनु. बादल हेम्ब्रम
पृ.368, रु.600/-
ISBN : 978-93-5548-251-8

प्रजा (ओड़िआ उपन्यास)
ले. गोपीनाथ मोहांती
अनु. नाकु हाँसदा
पृ. 344, रु.450/-
ISBN : 978-93-5548-243-3

सिंधी

साहित्य जा कुझु अंद्रूनी मौज़ूआत्ती हवाला
(संवत्सर व्याख्यान शृंखला 'साहित्य के कुछ अन्तर्विषयक संदर्भ')
ले. कुँवर नारायण
अनु. खिमन मुलाणी
पृ. 48, रु.110/-
ISBN : 978-93-5548-405-5

हिया राजधानी
(पुरस्कृत उर्दू कश्मीरी कृति *ये राजधानी* का अनुवाद)
ले. हरिकृष्ण कौल
अनु. एम.वी. भीमाणी
पृ. 108, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-388-1

ख्वाब जो दर बंद आ
(पुरस्कृत उर्दू कृति *ख्वाब का दर बंद है* का अनुवाद)
ले. शहरयार, अनु. लक्ष्मण दुबे
पृ. 128, रु.190/-
ISBN : 978-93-5548-406-2

इत्थे ना उते
(हिन्दी कविता-संग्रह *कहीं नहीं वहीं*)
ले. अशोक वाजपेजी
अनु. खिमन मुलाणी
पृ. 156, रु.225/-
ISBN : 978-93-5548-400-0

केत्रा पाकिस्तान
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास *कितने पाकिस्तान*)
ले. कमलेश्वर, अनु. प्रेम प्रकाश
पृ. 430, रु.475/-
ISBN : 978-93-5548-351-5

हम वक़्त हिंदी कविता
(समकालीन हिंदी कविता संकलन)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
अनु. कमला गोकलाणी, मोहन हिमथाणी, रश्मी रमाणी एवं विम्मी सदरंगाणी
पृ. 344, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-359-1

हवा में दस्तख़त
(हिन्दी कविता-संग्रह *हवा में हस्ताक्षर*)
ले. कैलाश वाजपेई
अनु. सिन्धु भागिया मिश्र
पृ. 130, रु.250/-
ISBN : 978-93-5548-358-4

बन्नी जो लोक रंग
(बन्नी लोक साहित्य का संकलन)
संपा. कलाधर मुतवा
पृ. 136, रु.225/-
ISBN : 978-93-5548-350-8

तमिऴ

आराचार
(पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. के.आर. मीरा
अनु. एम. सेंथिलकुमार
पृ. 784, रु. 750/-
ISBN : 978-93-5548-296-9

रेत्तामलाई श्रीनिवासन (विनिबंध)
ले. जे. बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-076-7

इंक़लाब (विनिबंध)
ले. जमालन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-026-2

एम.एल. थंगा प्पाविन थर्नथेडुक्का प्पाट्टा पाक्कळ
चयन एवं संकलन : पुधुवई युगभारती
पृ. 320, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-279-2

के.पी. अरावनरेन थर्न्थेदुथा कट्टुराइगळ
चयन एवं संकलन : पुधुवई युगभारती
पृ. 336, रु. 345/-
ISBN : 978-93-5548-087-3

थिरुमंगई आज़वार (विनिबंध)
ले. पद्मा श्रीनिवासन
अनुवाद ए. पांडुरंगन
पृ.144, रु.50/-
ISBN : 978-93-91494-81-0

बलवंत सिंह थेरनथेदुथा सिरुकाथाइगळ
चयन एवं संकलन : गोपीचंद नारंग
अनुवाद : पट्टू एम. भूपति
(जय रतन के अंग्रेज़ी अनुवाद से)
पृ.320, रु.525/-
ISBN : 978-93-5548-308-9

कनाविल थोलेन्धवन
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास *कुकोल्ड*)
ले. किरण नागरकर
अनुवाद : अक्कलुर रवि
पृ.800, रु.1100/-
ISBN :978-93-5548-014-9

थान वरलारू : ओर इलक्किया वादिवम (परिसंवाद आलेख)
संक. तमिष़वन (एस. कार्लोस)
पृ.160, रु.400/-
ISBN : 978-93-5548-268-6

भारती तमिष़
(दुर्लभ पुस्तक श्रृंखला)
संक. एम.पा. पेरियासामी थूरन
संपा. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ.512, रु. 610/-
ISBN :978-93-5548-323-2

तमिष़ सिरुकथाइगळ
(जीवंत तमिऴ संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली कहानियों का संकलन)
संक. भारतीबालन
पृ.448, रु.540/-
ISBN :978-93-5548-392-8

समकाला तमिष़ सिरुकथाइगळ
(2000-2020 का तमिऴ कहानी-संकलन)
संक. भारतीबालन
पृ.512, रु.610/-
ISBN : 978-93-5548-383-6

कोवई ज्ञानी (विनिबंध)
ले. जे. मंजुलादेवी
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-471-0

सुंदरा शनमुगनर (विनिबंध)
ले. एस. वेलमुरुगन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-269-3

एम.वी. वेंकटराम (विनिबंध)
ले. रविसुब्रह्मण्यन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-474-1

वाज़क्कई पाधाई
(पुरस्कृत मलयाळम् आत्मकथा)
ले. गोविंदा पिशारोडी चेरुकट
अनु. निर्मल्या
पृ. 816, रु. 1,130/-
ISBN : 978-93-5548-466-6

कुज़हनधाई कविगनर अज़हा. वल्लियप्पा पादळ थोगुप्पु
(वल्लियप्पा कृत बाल-गीत संग्रह)
चयन एवं संकलन : देवी नचियप्पन
पृ. 224, रु. 315/-
ISBN : 978-93-5548-465-9

को. केसवन (विनिबंध)
ले. वी. अरासु
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-494-9

महाकवि भारतियार (दुर्लभ पुस्तक श्रृंखला)
ले. वी. रामास्वामी
भूमिका के साथ संपादित : वी. अरासु
पृ. 176, रु. 250/-
ISBN : 978-93-5548-519-9

आचार्यम् एन्नुम गिरागम
(जापानी बाल पुस्तक)
ले. ताजिमा शिंजी
अनु. वेंकट स्वामीनाथन
पृ. 128, रु. 125/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-371-3

किलिगलिन ग्रामम (बाल पुस्तक)
ले. सिप्पी पल्लिपुरम
अनु. को. मा. कोथंडम
पृ.102, रु. 150/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-373-7

गोट्या (बाल पुस्तक)
ले. एन.डी. ताम्हणकर
सुरेखा पनंदिकर कृत अंग्रेज़ी संस्करण से अनु. एन. सुब्रह्मण्यम
पृ. 96, रु. 95/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-378-2

ओरु थिरुदनाई पिदिक्का
(बाल पुस्तक)
ले. गंगाधर गाडगिल
अनु. आई. आनंदन
पृ. 72, रु. 95/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-370-6

चंद्र मलाई (बाल पुस्तक)
ले. बिभूतिभूषण बंद्योपाध्याय
अनु. सु. कृष्णमूर्ति
पृ. 192, रु. 165/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-372-0

तमिष़ कट्टुराई कलंजियम
चयन एवं संकलन : आर. मोहन
पृ. 272, रु. 215/- (तीसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-010-1

रवीन्द्रर कुज़हंधाई इलाक्कियम
(रवींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं का संचयन)
संक. लीला मजूमदार एवं क्षितिस रॉय
अनु. टी.एन. सेनापति एवं
एम.पी. पेरियासामी थूरन
पृ. 250, रु. 150/- (चौथा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-379-9

वेदालम केतकाधा केलविगळ
(मलयाळम् उपन्यास)
ले. सुनील, अनु. टी. विष्णुकुमारन
पृ. 128, रु. 125/- (तीसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-3354-6

एस. राधाकृष्णन (विनिबंध)
ले. एवं अनु. प्रेमा नंदकुमार
पृ. 128, रु. 50/- (सातवाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-287-7

ना. वानामामलाई (विनिबंध)
ले. एस. थोथाथरी
पृ. 112, रु. 50/- (पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-340-9

वी.ओ. चिदांबरनर (विनिबंध)
ले. एम.आर. अरासु
पृ. 128, रु. 50/- (छठा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-1713-9

अज़हा वल्लियप्पा (विनिबंध)
ले. पूवन्नन
पृ. 96, रु. 50/- (तीसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-053-8

थोलकप्पियर (विनिबंध)
ले. तमिष़्न्नल
पृ. 112, रु. 50/- (सातवाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-0056-2

सिरुवर कधाई कलंजीयम्
(बाल कहानी-संकलन)
चयन एवं संकलन : आर. कामरासु एवं सी. सेतुपति
पृ. 240, रु. 160/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-5298-1

दिव्य प्रबंधम
चयन एवं संक. : एम.पी. श्रीनिवासन
पृ. 240, रु. 200/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-295-2

थी. का. शिवशंकरन (विनिबंध)
ले. आर. कामरासु
पृ. 128, रु. 50/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-89467-67-3

बाबासाहेब अंबेडकर (विनिबंध)
ले. के. राघवेंद्र राव
अनु. अरु. मरुथादुरई
पृ.112, रु. 50/- (पाँचवाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-0828-8

पेरियार ई.वे.रा. (विनिबंध)
ले. अरु. अज़हाप्पन
पृ. 128, रु. 50/- (8वाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-2204-4

चेम्मीन (पुरस्कृत मलयाळम् उपन्यास)
ले. तकाषी़ शिवशंकर पिल्लई
अनु. सुंदर रामासामी
पृ. 320, रु. 365/- (14वाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-395-9

नाट्टूप्पुरा कधाइ कलांजियम्
(तमिलनाडु की लोक कथाओं का संकलन)
चयन एवं संक. के. राजनारायणन, षंमुगासुंदरम, कज़ानियुरन तथा भारतदेवी
पृ.1040, रु.1150/-
ISBN : 978-93-5548-396-6
(तीसरा पुनर्मुद्रण)

भारतीयार (विनिबंध)
अनुवाद : प्रेमा नंदकुमार
पृ. 112, रु. 50/- (छठा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-2472-0

भारतीदासन (विनिबंध)
ले. मुरुगु सुंदरम
पृ. 112, रु. 50/- (चौथा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-2363-5

तमिष़् इलाक्किया वराळारू
(तमिऴ साहित्य का इतिहास)
संक. मु. वरदरासन
पृ. 456, रु. 450/- (35वाँ पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-521-2

सुजाता (विनिबंध)
ले. ईरा. मुरुगन
पृ. 128, रु. 50/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-89778-65-6

पट्टुकोट्टई कल्याणसुंदरम (विनिबंध)
ले. अरन्थाई नारायणन
पृ. 96, रु. 50/- (तीसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-81-260-0578-5

ओरु पिनांथूक्कियिन वरळात्रु कुरिप्पुगळ
(पुरस्कृत अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. साइरस मिस्त्री, अनु. मलान
पृ. 264, रु. 315/- (दूसरा पुनर्मुद्रण)
ISBN : 978-93-5548-478-9

तेलुगु

तारिगोंडा वेंगमाम्बा (विनिबंध)
ले. मुक्तेवी भारती
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-297-6

गुंटुरु शेषेंद्र शर्मा
ले. आर. वी. एस. सुंदरम
पृ. 124 , रु.50/-
ISBN : 978-93-5548-035-4
(पुनर्मुद्रण)

मखदूम मोहिउद्दीन
ले. सैय्यद जफ़र
अनु. अम्मांगी वेणुगोपाल
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-339-3

के.वी. रमण रेड्डी
ले. वकुलाभ्रमणम रामकृष्ण
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-130-6

राष्ट्रकवि कुवेंम्पु
ले. प्रभु शेखर
अनु. राजेश्वरी दिवाकरला
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN : 978-93-5548-411-6

पर्व
(एस.एल. भैरप्पा कृत कन्नड उपन्यास)
अनु. जी. लक्ष्मीनारायण
पृ. 788, रु.600/- (पुनर्मुद्रण)
ISBN :81-260-1556-एक्स

तेरु (पुरस्कृत कन्नड उपन्यास)
ले. राघवेंद्र पाटिल
अनु. के. आशा ज्योति
पृ. 124, रु. 150/-
ISBN : 978-93-5548-123-8

अग्नेयम (मलयाळम् उपन्यास)
ले. पी. वत्सला
अनु. वी.आर. गणपति
पृ. 400, रु. 350/-
ISBN : 978-93-5548-338-6

बहुमथी (पुरस्कृत तमिऴ कहानी-संग्रह *अनबालिप्पू*)
ले. जी. अलगिरीस्वामी
अनु. गौरी किरुबनेंदन
पृ. 164, रु. 190/-
ISBN : 978-93-5548-416-1

उर्दू

शौक नीमवी (विनिबंध)
ले. अहमद सगीर
पृ. 84, रु.50/- पुनर्मुद्रण 2022
ISBN : 978-93-5548-299-0

ज्ञान चंद जैन (विनिबंध)
ले. शमीम तारिक
पृ.75, रु.50/- पुनर्मुद्रण 12/2022
ISBN : 978-93-5548-278-5

कलीम अजीज़ (विनिबंध)
ले. हामिद अली खान
पृ. 87, रु. 50/- पुनर्मुद्रण 12/2022
ISBN : 978-93-5548-277-0

सलाम मछलीशहरी
(विनिबंध)
ले. आफ़ताब अहमद अफ़ाक़ी
पृ. 112, रु. 50/- पुनर्मुद्रण 12/2022
ISBN : 978-93-5548-276-1

मख़मूर सईदी (विनिबंध)
ले. क़ासिम अख्तर
पृ.: 96, रु. 50/- पुनर्मुद्रण 12/2022
ISBN : 978-93-5548-284-6

अख्तरुल ईमान (विनिबंध)
ले. ग़ुलाम रिज़वी गर्दिश
अनुवाद : नौशाद आलम
पृ. 119, रु. 50/- पुनर्मुद्रण 2022
ISBN : 978-93-5548-270-9

अमृता प्रीतम
ले. सुतिंदर सिंह नूर
अनु. मोहम्मद कासिम अंसारी
पृ. 111, रु. 50/- पुनर्मुद्रण 2022
ISBN : 978-93-5548-286-0

मुख़्तसर संस्कृत कहानियाँ
ले. जयमंत मिश्र
अनु. मोहम्मद खलील
पृ. 137, रु. 175/- पुनर्मुद्रण 2022
ISBN : 978-93-5548-285-3

आइना खाने
(पुरस्कृत कश्मीरी समालोचना)
ले. अज़ीज़ हाजिनी
अनु. शाकिर शफ़ी
पृ. 216, रु. 240/- पुनर्मुद्रण 2023
ISBN : 978-93-5548-022-4

धर्म जुद्ध (पुरस्कृत राजस्थानी नाटक)
ले. अर्जुन देव चरण
अनु. पुरुषोत्तम यक़ीन
पृ. 160, रु. 180/- पुनर्मुद्रण 2023
ISBN : 978-93-5548-306-5

पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा
(पुरस्कृत हिंदी उपन्यास)
ले. चित्रा मुद्गल
अनु. अहसान अय्यूबी
पृ. 234, रु. 270/- पुनर्मुद्रण 2023
ISBN : 978-93-91017-39-2

वार्षिक लेखा

2022-2023

वार्षिक लेखा 2022-2023

तुलनपत्र

आय एवं व्यय लेखा

वित्तीय विवरण का अनुसूची निर्माण

प्राप्ति और भुगतान लेखा

सामान्य भविष्य निधि का तुलन-पत्र

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति एवं भुगतान लेखा

सामान्य भविष्य निधि का आय एवं व्यय लेखा

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भुत ब्याज की अनुसूची

लेखा पर टिप्पणियाँ

लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

साहित्य अकादेमी
तुलन–पत्र विवरण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
संग्रह निधि और दायित्व			
संग्रह निधि	1	(60,533,470)	(42,329,360)
आरक्षित और अधिशेष	2	-	-
नियत/अक्षय निधि	3	69,426,590	445,213,817
सुरक्षित ऋण और उधार	4	-	-
असुरक्षित ऋण और उधार	5	-	-
अस्थगित जमा दायित्व	6	88,112,532	95,437,945
चालू दायित्व और उपबंध	7	231,931,880	183,588,707
योग		**728,937,532**	**681,911,109**
परिसंपत्तियाँ			
स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	201,348,136	109,851,044
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	9	88,826,215	97,868,746
नियत	10	-	-
चालू परिसंपत्ति, ऋण, अग्रिम आदि	11	438,763,181	474,191,319
विविध व्यय (एक सीमा एक अवलेखित या समायोजित)			
योग		**728,937,532**	**681,911,109**
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

	ह./–	ह./–	अवकाश पर	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 9 जून 2023	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

आय और व्यय लेखा : 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुसूचियाँ	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
आय			
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय	12	882,247	566,673
अनुदान/इमदाद राशि से प्राप्त आय	13	418,553,666	393,396,267
शुल्क/अंशदान प्राप्त	14	181,300	144,719
निवेश से प्राप्त आय	15	-	-
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त आय	16	142,618,843	14,138,095
प्राप्त आय	17	2,761,231	1,986,841
अन्य आय	18	1,345,842	2,576,305
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में उतार/चढ़ाव	19	30,113,282	4,112,672
योग (ए)		**596,456,411**	**416,921,572**
व्यय			
स्थापना व्यय	20	163,515,740	169,977,202
अन्य प्रशासनिक व्यय इत्यादि	21	112,076,150	89,733,355
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	22	62,574,323	111,918,964
अनुदान, इमदाद आदि पर व्यय	23	317,625	135,449
वित्तीय प्रभार	24	-	-
योग (बी)		**338,483,838**	**371,764,970**
आय पर व्यय का आधिक्य (ए–बी)		257,972,573	45,156,602
पूर्व अवधि मदें	25	-	-
अतिरिक्त साधारण मदें–सेवानिवृत्ति/मूल्यह्रास	26	694,014	(3,102,000)
कुल योग अधिशेष के कारण/(घाटा) पूँजी निधि में अग्रेनीत		258,666,587	42,054,602
महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ	27		
प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ	28		

हमारे समक्ष प्रस्तुत पुस्तकों और वाउचरों के आधार पर संकलित।

	ह./–	ह./–	अवकाश पर	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 9 जून 2023	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण, यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–1

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
संग्रह निधि			
	वर्ष के आरंभ में शेष	10,000,000	10,000,000
जमा	संग्रह निधि में योगदान	-	-
जमा	संग्रह निवेश पर प्राप्त कुल ब्याज	1,208,683	654,975
घटा	वर्ष के दौरान राजस्व निधि में स्थानांतरित	(1,208,683)	(654,975)
	अधिशेष/घाटा समाप्त करना	10,000,000	10,000,000
	योग (ए)	**10,000,000**	**10,000,000**
आय और व्यय लेखा			
	वर्ष के आरंभ में शेष	(52,329,360)	(94,383,962)
जमा	संग्रह/पूंजीगत निधि से स्थानांतरित शेष	-	-
	कुल आय/व्यय का शेष स्थानांतरित	(18,204,110)	42,054,602
	आय और व्यय लेखा से	-	-
	एन.ई. से योजना में अस्थायी स्थानांतरण की छूट		-
	योग (बी)	(70,533,470)	(52,329,360)
	वर्ष के अंत में शेष (ए+बी)	**(60,533,470)**	**(42,329,360)**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–2

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
आरक्षित और अधिशेष		
1. आरक्षित पूँजी		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
2. आरक्षित पुनर्मूल्यांकन		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
3. विशेष आरक्षित		
पिछले लेखा के अनुसार	-	-
जमा : वर्ष के दौरान जमा राशि	-	-
घटा : वर्ष के दौरान कटौतियाँ	-	-
योग	-	-
4. सामान्य आरक्षित		
आदिशेष	-	-
जमा : वर्ष के दौरान आय की अधिकता / (घाटा)	-	-
सामान्य रिज़र्व बंद		
संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
जमा : पूर्व अवधि समायोजन	-	-
घटा : संग्रह निधि से स्थानांतरित	-	-
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–3

(राशि रुपये में)

विवरण	निधि–वार विच्छेद	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
नियत/अक्षय निधियाँ			
(ए) निधियों का आदि शेष		445,213,817	454,203,178
(बी) निधियों में बढ़ोतरी			
i दान/अनुदान			
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्ति		6,841,524	1,559,080
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय		3,536,679	3,562,275
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**			
बैंक ब्याज		147,859	103,707
प्रकाशनों/वीडियो फ़िल्में/कागज़		-	-
पुस्तकालय एवं भेंट की गई पुस्तकें		160,615	217,347
अन्य जमा/समायोजन		33,148,833	5,710,548
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज		21,668,049	21,104,965
एन.पी.एस. अंशदान		-	-
योग (बी)		65,503,559	32,257,922
योग (ए+बी)		**510,717,376**	**486,461,100**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए			
i **पूँजी व्यय**			
स्थायी परिसंपत्ति		-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि		-	
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन		-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास		6,163,771	7,375,953
अन्य		-	-
एनएसडीएल को भुगतान		-	-
अंतिम निकासी		15,656,450	18,460,733
पूर्ण एवं अंतिम सामायोजन		12,773,258	8,709,064
योग		**34,593,479**	**34,545,750**
ii **राजस्व खर्च**			
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि		-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण		-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज		6,697,299	6,701,533
अन्य प्रशासनिक व्यय		-	-
योग		6,697,307	6,701,533
योग (सी)		**41,290,786**	**41,247,283**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)		**469,426,590**	**445,213,817**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2023
नियत/अक्षय निधि		**चालू वर्ष**		
(ए) निधियों का आदि शेष	**207,953,784**	**136,671,157**	**100,588,876**	**445,213,817**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	-
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	6,841,524	-	-	**6,841,524**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	-	-
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-	3,536,679	**3,536,679**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बैंक ब्याज	-	-		
प्रकाशन/वीडियो/फ़िल्में/कागज़	-		147,859	**147,859**
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	160,615	-	-	**160,615**
अन्य जमा	-	30,113,282	3,035,551	**33,148,833**
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज	-	-	21,668,049	**21,668,049**
एन.पी.एस. अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	-
योग (बी)	**7,002,139**	**30,113,282**	**28,388,138**	**65,503,559**
योग (ए+बी)	**214,955,923**	**166,784,439**	**128,977,014**	**510,717,376**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	-
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	-
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	-	-	15,656,450	**15,656,450**
अन्य जमा/समायोजन				
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	-
अंतिम निकासी	-	-	12,773,258	**12,773,258**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	-	-
योग	**6,163,771**	**-**	**28,429,708**	**34,593,479**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	-
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	-	-	-
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	**6,697,307**	**6,697,307**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**6,697,307**	**6,697,307**
योग (सी)	**6,163,771**	**-**	**35,127,015**	**41,290,786**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**208,792,152**	**166,784,439**	**93,849,999**	**469,426,590**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

विवरण		निधि–वार विच्छेद		योग
	स्थायी परिसंपत्ति निधि	प्रकाशन निधि	सा.भ.नि.	31 मार्च 2023
	चालू वर्ष			
(ए) निधियों का आदि शेष	**213,553,310**	**132,558,485**	**108,091,383**	**454,203,178**
(बी) निधियों में बढ़ोतरी				
i **दान/अनुदान**	-	-	-	**1,559,080**
अनुदान पूंजीकृत–स्थायी परिसंपत्तियाँ	1,559,080	-	-	**-**
अनुदान पूंजीकृत–पूंजीगत कार्य प्रगति पर	-	-	3,562,275	**3,562,275**
ii खातों में निवेश की गई निधियों से प्राप्त आय	-	-		**103,707**
iii **अन्य बढ़ोतरियाँ**				
बैंक ब्याज	-	-	103,707	**217,347**
प्रकाशन/वीडियो/फ़िल्में/कागज़	217,347		1,597,876	**5,710,548**
पुस्तकालय/भेंट की गई पुस्तकें	-	-		**21,104,965**
अन्य जमा/समायोजन	-	4,112,672	21,104,965	**-**
सा.भ.नि. अंशदान और ब्याज	-	-	-	**-**
एन.पी.एस. अंशदान एवं ब्याज	-	-	-	**-**
योग (बी)	**1,776,427**	**4,112,672**	**26,368,823**	**32,257,922**
योग (ए+बी)	**215,329,737**	**136,671,157**	**134,460,206**	**486,461,100**
(सी) निधियों के इस्तेमाल/व्यय के उद्देश्यों के लिए				
i **पूंजी व्यय**				
स्थायी परिसंपत्तियाँ	-	-	-	**-**
कार (सकल) की बिक्री में हानि	-	-	-	**-**
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन	-	-	-	**-**
वर्ष के दौरान मूल्यह्रास	7,375,953	-	-	**7,375,953**
अन्य जमा				
एनएसडीएल को भुगतान	-	-	-	**-**
अंतिम निकासी	-	-	18,460,733	**18,460,733**
पूर्ण एवं अंतिम समायोजन	-	-	8,709,064	**8,709,064**
योग	**7,375,953**	**-**	**27,169,797**	**34,545,750**
ii **राजस्व खर्च**				
वेतन, मजदूरी और भत्ते इत्यादि	-	-	-	**-**
वर्ष के दौरान कटौतियाँ/समायोजन/स्थानांतरण	-	-	-	**-**
सा.भ.नि. अंशदानकर्ताओं को ब्याज	-	-	6,701,533	**6,701,533**
अन्य प्रशासनिक व्यय	-	-	-	**-**
योग	**-**	**-**	**6,701,533**	**6,701,533**
योग (सी)	**7,375,953**	**-**	**33,871,330**	**41,247,283**
वर्ष के अंत में कुल शेष (ए+बी–सी)	**207,953,784**	**136,671,157**	**100,588,876**	**445,213,817**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–4

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 **वित्तीय संस्थाएँ**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
4 **बैंक**		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
(ग) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
(घ) ब्याज प्रोद्भूत और देय	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–5

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
सुरक्षित ऋण और उधार		
1 केंद्र सरकार	-	-
2 राज्य सरकार (उल्लेख करें)	-	-
3 वित्तीय संस्थाएँ	-	-
4 बैंक :		
(क) आवधिक ऋण	-	-
(ख) अन्य ऋण (उल्लेख करें)	-	-
5 अन्य संस्थाएँ और अभिकरण	-	-
6 डिबेंचर और बॉण्ड्स	-	-
7 आवधिक जमा	-	-
8 अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	-	-

अनुसूची–6

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
आस्थगित जमा दायित्व :		
(क) पूँजीगत उपस्करों तथा अन्य परिसंपत्तियों के बंधकीकरण द्वारा सुरक्षित स्वीकृतियाँ	-	-
(ख) उपदान के प्रावधान	53,194,007	58,769,598.00
(ग) अवकाश भुनाने के प्रावधान	34,918,525	36,668,347.00
(घ) अन्य	-	-
योग	**88,112,532**	**95,437,945**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची– 7

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
चालू दायित्व और उपबंध		
(ए) चालू दायित्व		
1 स्वीकृति		
प्रतिभूति जमा (द्वारा)		
पुस्तकालय के सदस्य	11,828,842	11,431,892
अन्य	526,291	516,291
2 विभिन्न लेनदार		
(क) रॉयल्टी	-	-
(ख) अन्य	19,391,537	1,933,349
(ग) गतावधि चेक व्युत्क्रमण	200,409	191,133
3 प्राप्त अग्रिम		
(क) ग्राहकों से अग्रिम	70,222,231	59,308,067
4 प्रोद्भूत ब्याज पर देय नहीं :		
(क) सुरक्षित ऋण / उधार	-	-
(ख) असुरक्षित ऋण / उधार	-	-
5 कानूनी दायित्व :		
(क) अतिशोध्य	-	-
(ख) अन्य	77,619	655,931
6 अन्य चालू दायित्व :		
(क) सा.भ.नि. लेखा	312,871	311,088
(ख) देय पेंशन	466,598	785,021
(ग) देय वेतन	723,917	-
(घ) अन्य कॉण्ट्रा भुगतान	-	-
7 अव्ययित अनुदान शेष	102,500,779	79,349,972
योग (ए)	**206,251,094**	**154,482,744**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–7

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
चालू दायित्व और उपबंध		
(बी) प्रावधान		
1. कर लगाने के लिए	-	-
2. प्रोद्भूत रॉयल्टी के लिए	3,351,984	3,563,531
3. अधिवर्षिता / पेंशन	2,100,000	2,100,000
4. संचित अवकाश भुनाना	247,695	247,695
5. व्यापार वारंटी / दावे	-	-
6. अन्य देय लेखापरीक्षा शुल्क	200,000	225,470
7. अन्य–व्यावसायिक शुल्क देय	100,820	41,300
8. उपदान के प्रावदान	12,665,185	14,677,874
9. अवकाश भुनाने के प्रावधान	6,730,702	7,965,693
10. पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	284,400	284,400
योग (बी)	**25,680,786**	**29,105,963**
योग (ए+बी)	**231,931,880**	**183,588,707**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण		कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
		मूल्यह्रास की दर %	वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
ए.	**स्थायी परिसंपत्ति**												
1	भूमि	-	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
2	भवन	10%	46,250,559	-	-	-	46,250,559	32,917,036	1,333,353	-	13,333,523	1,333,353	12,000,170
3	सयंत्र और तंत्र	15%	159,285	-	-	-	159,285	68,349	13,640	-	13,640	77,296	90,936
4	वाहन	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,840,383	85,916	-	85,916	486,856	572,772
5	फ़र्नीचर और जुड़नार	15%	42,681,751	674,957	470,043	-	43,826,751	33,715,407	1,036,254	-	1,036,254	9,075,090	8,966,344
6	कार्यालय उपकरण	15%	30,769,625	386,624	1,824,285	-	32,980,534	27,154,185	737,132	-	737,132	5,089,217	3,615,440
7	कंप्यूटर/परिधीय	40%	22,121,830	1,212,152	1,748,670	-	25,082,652	20,303,097	1,562,088	-	1,562,088	3,217,467	1,818,733
8	विद्युतीय प्रस्थान	10%	865,138	29,155	36,847	-	931,140	752,429	16,029	-	16,029	162,682	112,709
9	पुस्तकालय में पुस्तकें	40%	42,737,274	1,398,557	282,608	-	44,418,439	40,828,738	1,379,359	-	1,379,359	2,210,342	1,908,536
10	पुस्तकालय पुस्तकें–भेंट स्वरूप	0%	688,052	-	160,615	-	848,667	-	-	-	-	848,667	688,052
	योग		**197,382,553**	**3,701,445**	**4,523,068**	**-**	**205,607,066**	**157,579,624**	**6,163,771**	**-**	**6,163,771**	**41,863,671**	**39,802,929**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर/ पूंजीगत अग्रिम**		70,048,115	89,436,350	-	-	159,484,465	-	-	-	-	159,484,465	70,048,115
	कुल योग		**70,048,115**	**89,436,350**	**-**	**-**	**159,484,465**	**-**	**-**	**-**	**-**	**159,484,465**	**70,048,115**
	योग (ए+बी)		**267,430,668**	**93,137,795**	**4,523,068**	**-**	**365,091,531**	**157,579,624**	**6,163,771**	**-**	**6,163,771**	**201,348,136**	**109,851,044**
	गत वर्ष												
	स्थायी परिसंपत्तियाँ		198,708,126	236,802	1,544,925	3,107,300	197,382,553	150,203,671	7,377,013	1,060	7,375,953	39,802,929	48,504,455
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		165,048,855	-	-	95,000,740	70,048,115	-	-	-	-	70,048,115	165,048,855
	गत वर्ष का कुल योग		**363,756,981**	**236,802**	**1,544,925**	**98,108,040**	**267,430,668**	**150,203,671**	**7,377,013**	**1,060**	**7,375,953**	**109,851,044**	**213,553,310**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

जारी–अनुसूची–8

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	मूल्यह्रास दर %	कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
			वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
	1 भूमि												
	फ्रीहोल्ड	0%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे पर दिया	0%	8,695,884	-	-	-	8,695,884	-	-	-	-	8,695,884	8,695,884
	कुल योग (1)		**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**-**	**-**	**-**	**-**	**8,695,884**	**8,695,884**
	2 भवन												
	फ्रीहोल्ड भूमि पर	10%	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	पट्टे की भूमि पर	10%	10,025,384	-	-	-	10,025,384	5,427,678	459,771	-	5,887,449	4,137,935	4,597,706
	स्वामित्व फ़्लैट्स/परिसर	10%	36,225,175	-	-	-	36,225,175	27,489,358	873,582	-	28,362,940	7,862,235	8,735,817
	कुल योग (2)		**46,250,559**	**-**	**-**	**-**	**46,250,559**	**32,917,036**	**1,333,353**	**-**	**34,250,389**	**12,000,170**	**13,333,523**
	3 संयंत्र मशीनरी और उपकरण		-										
	तकनीकी उपकरण	15%	159,285	-	-	-	159,285	68,349	13,640	-	81,989	77,296	90,936
	कुल योग (3)		**159,285**	**-**	**-**	**-**	**159,285**	**68,349**	**13,640**	**-**	**81,989**	**77,296**	**90,936**
	4 वाहन		-										
	मोटर, कार/स्कूटर	15%	2,413,155	-	-	-	2,413,155	1,840,383	85,916	-	1,926,299	486,856	572,772
	कुल योग (4)		**2,413,155**	**-**	**-**	**-**	**2,413,155**	**1,840,383**	**85,916**	**-**	**1,926,299**	**486,856**	**572,772**
	5 फर्नीचर, जुड़नार												
	फ़र्नीचर	10%	35,424,229	20,750	36,150	-	35,481,129	27,086,820	837,623	-	27,924,443	7,556,686	8,337,409
	स्थायी कैबिनेट्स, अलमारियाँ आदि	10%	133,309	228,371	399,973	-	761,653	34,018	52,765	-	86,783	674,870	99,291
	वोल्टेज स्टेबलाइजर्स, यूपीएस सिस्टम	15%	57,849	18,655	-	-	76,504	23,270	7,985	-	31,255	45,249	34,579
	जल वितरक	15%	39,667	12,593	-	-	52,260	16,582	5,352	-	21,934	30,326	23,085
	जल शोधक	15%	24,298	-	-	-	24,298	9,376	2,238	-	11,614	12,684	14,922
	एयर कूलर	15%	35,872	-	-	-	35,872	13,843	3,304	-	17,147	18,725	22,029
	एयर कंडीशनर	15%	6,966,527	394,588	33,920	-	7,395,035	6,531,498	126,987	-	6,658,485	736,550	435,029
	कुल योग (5)		**42,681,751**	**674,957**	**470,043**	**-**	**43,826,751**	**33,715,407**	**1,036,254**	**-**	**34,751,661**	**9,075,090**	**8,966,344**
	6 कार्यालय उपकरण					-							
	कार्यालय उपकरण	15%	30,244,515	345,261	82,152	-	30,671,928	26,966,786	549,610	-	27,516,396	3,155,532	3,277,729
	फैक्स मशीन, स्कैनर	15%	25,263	-	-	-	25,263	10,390	2,231	-	12,621	12,642	14,873
	उपस्थिति मशीन	15%	194,848	9,971	-	-	204,819	64,048	21,116	-	85,164	119,655	130,800
	फ़ोटो कॉपियर	15%	175,000	-	-	-	175,000	58,045	17,543	-	75,588	99,412	116,955
	सीसीटीवी कैमरे	15%	109,999	-	-	-	109,999	46,738	9,489	-	56,227	53,772	63,261
	मोबाइल फ़ोन	15%	20,000	-	-	-	20,000	8,178	1,773	-	9,951	10,049	11,822
	कूलर	15%	-	31,392	-	-	31,392	-	4,709	-	4,709	26,683	-
	हार्ड डिस्क	15%	-	-	24,994	-	24,994	-	1,875	-	1,875	23,119	-
	नाद प्रभू कंपेगोड़ा मैट्रो स्टेशन पर किताब घर	15%	-	-	1,646,100	-	1,646,100	-	123,458	-	123,458	1,522,642	-
	वैक्यूम क्लीनर	15%	-	71,039	-	71,039	-	5,328	-	5,328	65,711	-	
	कुल योग (6)		**30,769,625**	**386,624**	**1,824,285**	**-**	**32,980,534**	**27,154,185**	**737,132**	**-**	**27,891,317**	**5,089,217**	**3,615,440**

साहित्य अकादेमी

जारी– अनुसूची–8

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

(राशि रुपये में)

क्र. सं.	विवरण		कुल ब्लॉक					मूल्यह्रास				कुल ब्लॉक	
		मूल्यह्रास की दर %	वर्ष के प्रारंभ में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से अधिक	वर्ष के दौरान परिवर्तन (180 दिन से कम	वर्ष के दौरान कटौतियाँ/ स्थानांतरित	वर्ष के अंत में कुल लागत/ मूल्यांकन	वर्ष के प्रारंभ में	वर्ष के दौरान परिवर्धन	वर्ष के दौरान कटौतियाँ	वर्ष के अंत तक कुल योग	चालू वर्ष के के अंत तक का कुल योग	पिछले वर्ष के अंत तक का कुल योग
7	**कंप्यूटर/परिधीय**												
	कंप्यूटर एवं कंप्यूटर परिधीय	40%	21,617,380	1,197,852	1,748,670	-	24,563,902	19,874,920	1,525,859	-	21,400,779	3,163,123	1,742,460
	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर	40%	504,450	14,300	-	-	518,750	428,177	36,229	-	464,406	54,344	76,273
	कुल योग (7)		**22,121,830**	**1,212,152**	**1,748,670**	**-**	**25,082,652**	**20,303,097**	**1,562,088**	**-**	**21,865,185**	**3,217,467**	**1,818,733**
8	**विद्युतीय अधिष्ठान**												
	विद्युतीय अधिष्ठान	10%	865,138	29,155	36,847	-	931,140	752,429	16,029	-	768,458	162,682	112,709
	कुल योग (8)		**865,138**	**29,155**	**36,847**	**-**	**931,140**	**752,429**	**16,029**	**-**	**768,458**	**162,682**	**112,709**
9	**पुस्तकालय पुस्तकें**						-						
	पुस्तकालय पुस्तकें	40%	688,052	-	160,615	-	848,667	-	-	-	-	848,667	688,052
	कुल योग (9)		**42,737,274**	**1,398,557**	**282,608**	**-**	**44,418,439**	**40,828,738**	**1,379,359**	**-**	**42,208,097**	**2,210,342**	**1,908,536**
10	पुस्तकालय पुस्तकें/उपहार	0%	470,705	-	217,347	-	688,052	-	-	-	-	688,052	470,705
	कुल योग (10)		**688,052**	**-**	**160,615**	**-**	**848,667**	**-**	**-**	**-**	**-**	**848,667**	**688,052**
	कुल योग		**197,382,553**	**3,701,445**	**4,523,068**	**-**	**205,607,066**	**157,579,624**	**6,163,771**	**-**	**163,743,395**	**41,863,671**	**39,802,929**
बी.	**पूंजीगत कार्य प्रगति पर**												
	पूंजीगत अग्रिम		-				-						
	अन्य		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	मॉडयूलर वर्कस्टेशन		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	ए.सी. प्लांट पुस्तकालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	प्रोर्टबल शौचालय		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	किताब घर एवं चार दीवारी निर्माण आदि बेंगळूरु		2,416,105	-	-	-	2,416,105	-	-	-	-	2,416,105	2,416,105
	सिविल कार्य (कोलकाता)		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	डक्टेबल ए.सी.		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	द्वारका स्थित भवन निर्माण		67,632,010	49,275,975	-	-	116,907,985	-	-	-	-	116,907,985	67,632,010
	बेंगळूरु स्थित भवन निर्माण		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	दिल्ली जल बोर्ड की पानी की लाइन का स्थानांतरण		-	40,160,375	-	-	40,160,375	-	-	-	-	40,160,375	-
	दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन का स्थानांतरण		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	गैस आधारित स्प्रिंकलर सिस्टम		-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
	कुल योग		**70,048,115**	**89,436,350**	**-**	**-**	**159,484,465**	**-**	**-**	**-**	**-**	**159,484,465**	**70,048,115**
	चालू वर्ष का योग		**267,430,668**	**93,137,795**	**4,523,068**	**-**	**365,091,531**	**157,579,624**	**6,163,771**	**-**	**163,743,395**	**201,348,136**	**109,851,044**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–9

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023			31 मार्च 2022		
नियत/अक्षय निधियों से निवेश	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से			-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ			-	-	-	-
3 शेयर			-	-	-	-
4 डिबेंचर और बॉण्ड्स			-	-	-	-
5 समानुषंगी और संयुक्त उद्यम			-	-	-	-
6 **अन्य**			-	-	-	-
– आवधिक जमा–संग्रह निधि/सा.भ.नि.	10,000,000	78,647,543	88,647,543	10,000,000	87,699,070	97,699,070
– आई.डी.बी.आई. फ्लैक्सी बॉण्ड	-	-	-	-	-	-
– आवधिक जमा–नई पेंशन योजना	-	178,672	178,672	-	169,676	169,676
योग	**10,000,000**	**78,826,215**	**88,826,215**	**10,000,000**	**87,868,746**	**97,868,746**

अनुसूची–10

विवरण	31 मार्च 2023			31 मार्च 2022		
निवेश–अन्य	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**	**राजस्व**	**सा.भ.नि./एन.पी.एस.**	**योग**
1 सरकारी प्रतिभूतियों से	-	-	-	-	-	-
2 अन्य स्वीकृत प्रतिभूतियाँ	-	-	-	-	-	-
3 शेयर	-	-	-	-	-	-
4 डिबेंचर तथा बॉण्ड्स	-	-	-	-	-	-
5 समानुषंगी तथा संयुक्त उद्यम	-	-	-	-	-	-
6 अन्य	-	-	-	-	-	-
योग	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–11ए

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023			31 मार्च 2022		
चालू परिसंपत्तियाँ, ऋण, अग्रिम आदि	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(ए) चालू परिसंपत्तियाँ						
1 वस्तुसूची						
(क) स्टोर एंड स्पेयर्स	-	-	-	-	-	-
(ख) लूज टूल्स	-	-	-	-	-	-
(ग) प्रकाशन एवं कागज का स्टॉक	-					
तैयार माल	-	-	-	-	-	-
अकादेमी प्रकाशन	133,176,358	-	133,176,358	131,056,393	-	131,056,393
अपरोक्ष प्रकाशन	113,995	-	113,995	115,405	-	115,405
वीडियो फ़िल्में एवं सी.डी.	722,650	-	722,650	728,100	-	728,100
कार्य प्रगति पर	-	-	-	-	-	-
कच्चा माल	-	-	-	-	-	-
काग़ज़ : अपने पास	21,809,155	-	21,809,155	1,641,810	-	1,641,810
काग़ज़ : मुद्रणलयों में	10,962,281	-	10,962,281	3,129,449	-	3,129,449
2 विविध लेनदार						
(क) छः माह की अवधि से अधिक बकाया ऋण	7,597,122	-	7,597,122	8,312,236	-	8,312,236
(ख) अन्य	6,959,228	-	6,959,228	2,523,487	-	2,523,487
3 हाथ में शेष धन या बकाया राशि						
(जिसमें चेक/ड्राफ्ट रसीदी टिकट और अग्रदाय शामिल है)	568,670	-	568,670	636,289	-	636,289
4 बैंक में शेष धन						
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	101,932,109	11,137,676	113,069,784	78,713,683	7,112,225	85,825,908
(ख) ग़ैर–अनुसूचित बैंकों के साथ :						
–चालू खातों पर	-	-	-	-	-	-
–जमा खातों पर	-	-	-	-	-	-
–बचत खातों पर	-	-	-	-	-	-
5 डाकघर बकाया राशि	-	-	-	-	-	-
बचत खातों में						
योग (ए)	**283,841,567**	**11,137,676**	**294,979,243**	**226,856,852**	**7,112,225**	**233,969,077**

साहित्य अकादेमी

तुलन–पत्र के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण यथातिथि 31 मार्च 2023

अनुसूची–11बी

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023			31 मार्च 2022		
ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ आदि (जारी)	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग	राजस्व	सा.भ.नि./एन.पी.एस.	योग
(बी) ऋण, अग्रिम तथा अन्य परिसंपत्तियाँ						
1 **ऋण**						
(क) स्टॉफ	506,835	-	506,835	798,435	-	798,435
(ख) अन्य व्यक्ति/संस्था, जो समान गतिविधियों/कार्यों में संलिप्त हैं	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**–सा.भ.नि. अग्रिम	-	3,100,894	3,100,894	-	2,421,874	2,421,874
2 **अग्रिम और अन्य राशियों जिन्हें नकदी अथवा सदृश्य अथवा उसके समतुल्य मूल्य के लिए वसूला जाना है**						
(क) पूंजी खातों पर	-	-	-	-	-	-
(ख) पूर्व भुगतान	-	-	-	-	-	-
(ग) **अन्य**						
स्रोतों से कर कटौती	204,157	96,464	300,621	20,954	1,783	22,737
प्रतिभूति जमा	4,704,228	-	4,704,228	4,712,643	-	4,712,643
पूर्व भुगतान खर्चे	486,718	-	486,718	43,306	-	43,306
संयुक्त सेवाएँ वसूली योग्य	2,952,310	-	2,952,310	1,497,698	-	1,497,698
अन्य वसूली योग्य	-	-	-		-	-
–कर्मचारियों को अग्रिम	41,755	-	41,755	134,212	-	134,212
–बाहरी पार्टी को अग्रिम	5,123,973	-	5,123,973	6,839,666	-	6,839,666
–पूंजीगत अग्रिम	125,546,290	-	125,546,290	217,482,640	-	217,482,640
3 **प्रोद्भूत आय**						
(क) नियत/अक्षय निधियों से निवेश पर	331,564	688,750	1,020,314	3,084,783	3,184,248	6,269,031
(ख) निवेशों पर–अन्य	-	-	-	-	-	-
(ग) ऋणों तथा अग्रिमों पर	-	-	-	-	-	-
4 **प्राप्त करने योग्य दावे**						
(क) वसूली योग्य–सा.भ.नि.	-	-	-	-	-	-
योग (बी)	**139,897,830**	**3,886,108**	**143,783,938**	**234,614,337**	**5,607,905**	**240,222,242**
(योग) (ए+बी)	**423,739,397**	**15,023,784**	**438,763,181**	**461,471,189**	**12,720,130**	**474,191,319**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–12

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय		
1. **बिक्री से प्राप्त आय**		
(क) सभागार रखरखाव प्राप्ति	395,000	100,847
(ख) फ़ोटोकॉपी शुल्क	22,020	13,633
(ग) भारतीय साहित्य पर ऑनलाइन सामग्री की बिक्री (जे.एस.टी.ओ.आर.)	465,227	452,193
योग	**882,247**	**566,673**

अनुसूची–13

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
अनुदान/इमदाद (अटल अनुदान और प्राप्त इमदाद)		
1. भारत सरकार–संस्कृति मंत्रालय द्वारा	132,311,849	193,200,000
–अकादेमी सेल–राजस्व वेतन	224,309,900	165,062,000
–अकादेमी सेल–राजस्व सामान्य	-	-
–अकादेमी सेल–राजस्व एन.ई.	29,351,721	78,370,000
–अकादेमी सेल–पूंजीगत परिसंपत्तियों का सृजन	-	-
–अकादेमी सेल–टीएसपी राजस्व सामान्य	477,697	253,000
–अकादेमी सेल–स्वच्छता कार्य योजना	-	985,000
–विशेष सेल–शंघाई उन्मेष	55,736,436	-
–अकादेमी सेल–पुस्तायन	6,358,394	-
–अकादेमी सेल–शंघाई	-	-
–कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.सी.ओ.)	-	-
–विशेष सेल–सुभाषचन्द्र बोस	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–स्पेन	-	-
–विशेष सेल–भारत महोत्सव–नेपाल	-	-
–विशेष सेल–रामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी	-	-
2 राज्य सरकार	-	-
3 सरकारी अभिकरण	-	-
4 संस्थाएँ/कल्याणकारी निकाय	-	-
5 अंतरराष्ट्रीय संगठन	-	-
6 अन्य		
जमा : वर्ष के प्रारंभ में अव्ययित शेष	79,349,972	37,420,319
घटा : वर्ष के अंत में अव्ययित शेष	(102,500,778)	(79,349,972)
घटा : वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों पर ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	(6,841,524)	(1,559,080)
घटा : वर्ष के दौरान पूंजीगत कार्य की प्रगति/अग्रिम में ख़र्च की गई पूंजीकृत अनुदान राशि	-	-
घटा : संस्कृति मंत्रालय को अनुदान वापस	-	-
योग	**418,553,666**	**393,396,267**

साहित्य अकादेमी

अनुसूची–14

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
शुल्क / अंशदान		
1. प्रवेश शुल्क	-	-
2. वार्षिक शुल्क / अंशदान	-	-
3. संगोष्ठी / कार्यक्रम शुल्क	-	-
4. परामर्श शुल्क	-	-
5. **अन्य**		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क	181,300	144,719
बुक क्लब सदस्यता शुल्क	-	-
योग	**181,300**	**144,719**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–15

(राशि रुपये में)

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2022	31 मार्च 2021
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
बैंक की एफ.डी.आर. निवेश से प्राप्त ब्याज राशियाँ	3,684,538	3,665,982
घटा : सा.भ.नि. पूंजी में स्थानांतरित	(3,684,538)	(3,665,982)
योग	-	-

विवरण	अक्षय निधि से निवेश	
	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
निवेश से प्राप्त आय		
1. **ब्याज**		
(क) सरकारी प्रतिभूतियों पर	-	-
(ख) अन्य बॉण्ड / डिबेंचर	-	-
2. **लाभांश**		
(क) शेयरों पर	-	-
(ख) म्युचुअल फ़ंड प्रतिभूतियों पर	-	-
3. **किराए**	-	-
4. **अन्य**		
घटा : आर्टिस्ट वेलफेयर पूंजी में स्थानांतरित		
योग	-	-
योग	-	-

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–16

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
रॉयल्टी, प्रकाशनों इत्यादि से प्राप्त आय		
1 रॉयल्टी से प्राप्त आय	10,259	-
2 अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय	142,608,584	14,138,095
योग	**142,618,843**	**14,138,095**

अनुसूची–17

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
प्राप्त ब्याज		
1 **सशर्त जमा**		
(क) अनुसूचित बैंकों के साथ	866,920	421,905
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) संस्थाओं के साथ	-	-
(घ) अन्य–संग्रह निधि	1,208,683	654,975
2 **बचत खातों पर**		
(क) अनुसूचित बैंक के साथ	444,650	661,056
(ख) गैर–अनुसूचित बैंकों के साथ	-	-
(ग) डाक घर के बचत खाते	-	-
(घ) अन्य	-	-
3 **ऋणों पर**		
(क) कर्मचारी / स्टॉफ़	240,978	248,905
(ख) अन्य	-	-
4 **ऋणदाताओं पर ब्याज तथा अन्य प्राप्तियाँ**		
(क) सा.भ.नि. / सी.पी.एफ. पर ब्याज	-	-
(ख) आयकर रिफंड पर ब्याज	-	-
योग	**2,761,231**	**1,986,841**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–18

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
अन्य आय		
1 **परिसंपत्तियों की बिक्री/निपटान से प्राप्त आय**		
(क) निजी परिसंपत्तियाँ		-
(ख) परिसंपत्तियाँ जो कि अनुदान अथवा निःशुल्क प्राप्त हुई	-	-
(ग) ग़ैर उपभोज्य सामग्री (स्थायी परिसंपत्ति) की बिक्री	-	-
(घ) पुस्तकालय की खोई हुई पुस्तकों के मूल्य की वसूली	180	8,417
2 निर्यात को प्रोत्साहन	-	-
3 विविध सेवाओं के लिए शुल्क	-	-
4 **विविध आय**		
(क) अन्य विविध प्राप्तियाँ	951,712	2,214,388
(ख) कर्मचारियों का सी.जी.एच.एस. अंशदान	393,950	353,500
(ग) कर्मचारियों का एन.पी.एस. ग़ैर वापसी योग्य अंशदान	-	-
(घ) सरदार पटेल अनुवाद प्राप्ति	-	-
(ङ) अतिरिक्त प्रावधान लिखित वापस	-	628,453
(च) नेपाल में भारत उत्सव	-	-
योग	**1,345,842**	**2,576,305**

अनुसूची–19

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
पूर्ण हुए कार्यों तथा किए जा रहे कार्यों के स्टॉक में (उतार/चढ़ाव)		
(ए) अंत शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	134,013,003	131,899,898
–कच्चा माल (कागज़)	32,771,436	4,771,259
(बी) आदि शेष माल		
–तैयार सामान (पुस्तकें)	131,899,898	122,625,860
–कच्चा माल (कागज़)	4,771,259	9,932,625
कुल (उतार)/चढ़ाव (ए–बी)	**30,113,282**	**4,112,672**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–20

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
स्थापना व्यय			
(क)	वेतन, मज़दूरी और भत्ते	131,775,131	120,472,841
(ख)	नई पेंशन योजना हेतु योगदान	6,187,376	7,201,154
(ग)	कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर हुए ख़र्च तथा आवाधिक लाभ	21,510,117	39,501,267
(घ)	**अन्य**		
	–चिकित्सा सुविधाएँ	2,563,144	2,467,124
	–अवकाश यात्रा सुविधा	1,479,972	334,816
	योग	**163,515,740**	**169,977,202**

अनुसूची– 21

(राशि रुपये में)

विवरण	31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
अन्य प्रशासनिक व्यय		
(क) लेखा परीक्षा एवं लेखा शुल्क	255,615	75,000
(ख) मुद्रण एवं लेखन सामग्री	1,189,108	1,041,223
(ग) दूरभाष एवं डाक–व्यय	3,054,603	2,689,871
(घ) पेंशन	56,363,674	49,598,084
(ङ) अन्य आकस्मिक व्यय	378,873	435,861
(च) वाहन अनुरक्षण	225,523	200,059
(छ) किराया, परिकर एवं कर	41,488,551	29,140,165
(ज) अन्य संयुक्त सेवाएँ	2,739,905	635,026
(झ) कानूनी शुल्क	2,518,504	2,795,420
(ञ) यात्रा ख़र्च	565,273	432,209
(ट) व्यवसायिक शुल्क	260,970	281,341
(ठ) सा.भ.नि. ब्याज प्राप्ति में कमी	3,035,551	2,409,096
योग	**112,076,150**	**89,733,355**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

(राशि रुपये में)

विवरण		31 मार्च 2023	31 मार्च 2022
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
(क)	मूल वेतन	72,486,567	70,628,700
(ख)	ग्रेड पे	-	-
(ग)	महँगाई भत्ता	28,955,144	21,100,263
(घ)	मकान किराया	19,534,771	18,563,166
(ङ)	यात्रा भत्ता	8,410,739	7,429,317
(च)	बच्चों का शिक्षा भत्ता	1,250,500	1,219,161
(छ)	व्यक्तिगत वेतन	106,500	7,700
(ज)	वर्दी भत्ता	175,000	185,000
(झ)	परिलब्धियाँ	236,940	-
(ञ)	नकद भत्ता	16,800	16,800
(ट)	स्टाफ़ वेतन एवं भत्ते–कार्यालय का सुधार	-	41,600
(ठ)	वेतन बकाया	602,170	1,281,134
	कुल योग	**131,775,131**	**120,472,841**
पेंशन			
(क)	पेंशन	55,882,152	34,581,409
(ख)	पेंशनभोगियों को महँगाई भत्ता	470,544	11,187,150
(ग)	पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता	-	813,667
(घ)	अतिरिक्त पेंशन	-	1,151,567
(ङ)	पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा	10,978	1,864,291
	कुल योग	**56,363,674**	**49,598,084**
कर्मचारी की सेवानिवृत्ति लाभ पर व्यय			
(क)	उपदान	5,680,047	19,303,361
(ख)	पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन	11,021,204	8,875,277
(ग)	अवकाश नकदीकरण	4,147,507	10,880,619
(घ)	अर्धवेतन अवकाश	661,359	442,010
	कुल योग	**21,510,117**	**39,501,267**
किराया, परिकर एवं कर			
(क)	वार्षिक रखरखाव अनुबंध	1,167,222	1,487,787
(ख)	बिजली/पानी शुल्क	9,854,815	2,783,030
(ग)	किराया	30,466,514	24,869,348
	कुल योग	**41,488,551**	**29,140,165**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–22

(राशि रुपये में)

विवरण		चालू वर्ष (2022–2023)				गत वर्ष (2021–2022)			
	गतिविधियों का संवर्द्धन एवं प्रसार	**सामान्य**	**एन.ई.**	**टी.एस.पी.**	**योग**	**सामान्य**	**एन.ई.**	**टी.एस.पी.**	**योग**
ए	**अकादेमी सेल**								
01	बाल साहित्य पुरस्कार	6,101,694	680,660	156,909	**6,939,263**	3,906,675	390,266	106,138	**4,403,079**
02	राजभाषा कार्यक्रम	490,948	-	-	**490,948**	293,660	-	-	**293,660**
03	भाषाओं का विकास	-	-	5,100,025	**5,100,025**	-	-	3,177,488	**3,177,488**
04	फ़ैलोशिप	828,639	-	-	**828,639**	526,798	-	-	**526,798**
05	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम	24,753,766	3,122,046	894,558	**28,770,370**	18,377,002	1,181,548	1,335,040	**20,893,590**
06	आधुनिकीकरण एवं सुधार	22,144,894	-	-	**22,144,894**	10,310,334	-	-	**10,310,334**
07	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि	11,051,384	146,502	-	**11,197,886**	5,431,077	105,989	-	**5,537,066**
08	प्रकाशन योजनाएँ	143,018,481	602,298	98,163	**143,718,942**	25,072,529	339,861	327,815	**25,740,205**
09	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना	50,530	-	-	**50,530**	18,889	-	-	**18,889**
10	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ	34,672,312	2,476,776	838,342	**37,987,430**	18,610,157	992,920	463,593	**20,066,670**
11	अनुवाद योजनाएँ	11,937,485	1,571,400	435,012	**13,943,897**	9,959,385	716,810	163,494	**10,839,689**
12	पुस्तकालय और सूचना सेवाओं में सुधार	478,380	-	-	**478,380**	1,138,987	-	-	**1,138,987**
13	युवा पुरस्कार	4,271,913	279,592	159,231	**4,710,736**	7,032,020	712,129	190,444	**7,934,593**
14	टैगोर नेशनल फैलोशिप	470,968	-	-	**470,968**	117,607	-	-	**117,607**
15	योग	30,789	-	-	**30,789**	4,091	-	-	**4,091**
16	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी	7,000	-	-	**7,000**	-	-	80,365	**80,365**
17	शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गेनाइजेशन (एस.ओ.एस.)	-	-	-	-	30,336	-	-	**30,336**
18	अंतरराष्ट्रीय साहित्योत्सव	-	-	-	-	64,934	-	-	**64,934**
19	अकादेमियाँ सेल–उन्मेष	55,671,502			**55,671,502**				
20	अकादेमियाँ सेल–पुस्तकयान	6,366,154			**6,366,154**				
	कुल योग	**322,346,839**	**8,879,274**	**7,682,240**	**338,908,353**	**100,894,481**	**4,439,523**	**5,844,377**	**111,178,381**
बी	**एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना**								
19	एस.ए.पी.–स्वच्छता कार्य योजना	536,667	-	-	**536,667**	506,663	-	-	**506,663**
बी.	**विशेष सेल**		-	-	-				
01	भारत महोत्सव–इज़राइल	-	-	-	-	-	-	-	-
02	भारत महोत्सव–स्पेन	-	-	-	-	-	-	-	-
03	भारत महोत्सव–थाइलैण्ड	-	-	-	-	-	-	-	-
04	भारत महोत्सव–नेपाल								
05	नेताजी सुभाषचंद्र बोस	-			-	233,920			**233,920**
	कुल योग	**322,883,506**	**8,879,274**	**7,682,240**	**339,445,020**	**101,635,064**	**4,439,523**	**5,844,377**	**111,918,964**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–23

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
अनुदान, इमदाद आदि पर ब्याज		
(क) संस्थाओं/संगठनों को दिए गए अनुदान		
(ख) संस्थाओं/संगठनों को दी गई इमदाद		
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता	317,625	135,449
–राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता के लिए एन.ई.	-	-
(ग) विभिन्न परियोजनाओं/योजनाओं के अंतर्गत भुगतान	-	-
योग	**317,625**	**135,449**

अनुसूची–24

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
वित्त शुल्क		
(क) स्थायी ऋण पर	-	-
(ख) अन्य ऋणों पर (बैंक शुल्क सम्मिलित)	-	-
(ग) अन्य (उल्लेख करें)	-	-
योग	**-**	**-**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–25

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
पूर्व अवधि मदें		
पूर्व अवधि आय	-	-
घटा :		
पूर्व अवधि व्यय	-	-
योग	**-**	**-**

अनुसूची–26

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण मदें		
पूर्व अवधि मूल्यह्रास	(1,222,374.00)	3,102,000
अन्य असाधारण मदें	528,360.00	-
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (गैर–वित्त पोषित)	-	-
(क) सेवानिवृत्ति उपदान के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण के लिए प्रावधान	-	-
योग	**(694,014)**	**3,102,000**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए आय और व्यय के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

अनुसूची–25

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
पूर्व अवधि मदें		
पूर्व अवधि आय	-	-
घटा :		
पूर्व अवधि व्यय	-	-
योग	**-**	**-**

अनुसूची–26

(राशि रुपये में)

विवरण	चालू वर्ष	गत वर्ष
असाधारण मदें		
पूर्व अवधि मूल्यह्रास	(1,222,374.00)	3,102,000
अन्य असाधारण मदें	528,360.00	-
सेवानिवृत्ति लाभों के लिए प्रावधान (गैर–वित्त पोषित)	-	-
(क) सेवानिवृत्ति उपदान के लिए प्रावधान	-	-
(ख) सेवानिवृत्ति अवकाश नकदीकरण के लिए प्रावधान	-	-
योग	**(694,014)**	**3,102,000**

साहित्य अकादेमी

31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

प्राप्तियाँ	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2022–23	गत वर्ष 2021–22	भुगतान	अनुलग्नक	चालू वर्ष 2022–2023	गत वर्ष 2021–22
				7. वित्त शुल्क ब्याज		-	-
6. उधार ली गई राशि		-	-	**8. अन्य भुगतान**			
				(क) स्टाफ को अग्रिम राशि	**14**	-	-
				(ख) प्रतिभूति जमा राशि दी	**15**	4,785	25,000
				(ग) अन्य (वसूली योग्य)	**16**	3,648,783	125,844,637
7. कोई अन्य प्राप्तियाँ							
(क) स्टॉफ द्वारा चुकाए गए ऋण	**6**	291,600	455,550	**9. सामान्य आरक्षित**		515,160	
(ख) लौटाने योग्य जमा राशि	**7**	406,950	351,200	**10. समापन शेष**		568,670	636,289
(ग) कोट्टा प्राप्तियाँ और भुगतान	**8**	-	-	(क) हाथ में रोकड़			
(घ) अन्य भुगतान योग्य	**9**	18,308,880	63,571,337	(चेक/ड्राफ्ट और टिकटों सहित)			
(ङ) अन्य लघु अवधि जमा परिपक्वता		48,000,000	189,100,000	(ख) बैंक बैलेंस			
(च) दिल्ली बीएसईएस विद्युत आपूर्ति लाइन की शिफ्टिंग		-	-	चालू खातों में			
				जमा खातों में			
				बचत खातों में			
						101,932,109	78,713,683
योग		**775,116,884**	**747,218,219**	**योग**		**775,116,884**	**747,218,219**

	ह./–	ह./–	अवकाश पर	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 9 जून 2023	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
ब्याज प्राप्त	1		
संग्रह निधि पर ब्याज		880,909	--
कुल योग		**880,909**	**-**
सावधि जमा पर ब्याज		281,047	1,076,880
बैंक बचत खाते पर ब्याज		977,846	661,056
कुल योग		**1,258,893**	**1,737,936**
अग्रिम पर ब्याज		240,978	248,905
आयकर वापसी पर ब्याज		-	-
कुल योग		**240,978**	**248,905**
योग		**2,380,780**	**1,986,841**
माल और सेवाओं की बिक्री से प्राप्त व्यय	2		
बिक्री/सेवाओं से प्राप्त आय			
सभागार रखरखाव प्राप्ति		395,000	100,847
फ़ोटोकॉपी शुल्क		22,020	13,633
इंडियन लिटरेचर (जेएसटीओआर)		465,227	452,193
ऑनलाइन साहित्य सामग्री की बिक्री से प्राप्ति		-	-
योग		**882,247**	**566,673**
शुल्क और सदस्यता से प्राप्त आय	3		
पुस्तकालय सदस्यता शुल्क व्यय		181,300	143,019
बुक क्लब सदस्यता		-	-
योग		**181,300**	**143,019**
रॉयल्टी, प्रकाशन इत्यादि से प्राप्त व्यय	4		
रॉयल्टी से प्राप्त व्यय		10,259	-
अकादेमी प्रकाशनों से प्राप्त आय		138,761,804	14,121,825
योग		**138,772,063**	**14,121,825**
विविध प्राप्तियाँ	5		
खोई पुस्तक पर पुस्तकालय द्वारा वसूली		180	8,317
विविध प्राप्तियाँ		951,712	2,254,638
पूर्व अवधि प्राप्तियाँ		-	-
सीजीएचएस में कर्मचारी योगदान की वसूली		393,950	353,500
एनपीएस खाते में गैर प्रतिदेय राशि का नियोक्ता द्वारा दिया गया योगदान		-	-
नेपाल में भारत उत्सव (प्राप्तियाँ)		-	-
योग		**1,345,842**	**2,616,455**

अनुलग्नक

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टाफ कंप्यूटर अग्रिम		-	3,500
स्टाफ वाहन अग्रिम		-	3,600
त्यौहार अग्रिम		-	112,400
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		291,600	336,050
योग्य		**291,600**	**455,550**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	7		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		467,950	398,600
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(71,000)	(47,400)
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		1,959,469	-
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		(1,949,469)	
योग		**406,950**	**351,200**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान	8		
टीडीएस/आयकर			
प्राप्ति		-	12,587,973
भुगतान		-	(12,587,973)
कुल योग		-	-
जीएसटी			
प्राप्ति		660,732	-
भुगतान		(660,732)	-
कुल योग		-	-
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
एन.पी.एस.			
प्राप्ति		-	17,158,007
भुगतान		-	(17,158,007)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि.			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
स्टाफ द्वारा चुकाए गए ऋण	6		
स्टाफ कम्प्यूटर अग्रिम		-	3,500
स्टाफ वाहन अग्रिम		-	3,600
त्यौहार अग्रिम		-	112,400
स्टाफ को गृह निर्माण अग्रिम		291,600	336,050
योग्य		**291,600**	**455,550**
प्रतिदेय जमा राशियाँ	7		
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता से प्राप्त		467,950	398,600
वर्ष के दौरान पुस्तकालय सदस्यता को प्रतिदेय		(71,000)	(47,400)
वर्ष के दौरान प्राप्त बयान राशि		1,959,469	-
वर्ष के दौरान प्रतिदेय बयाना राशि		(1,949,469)	
योग		**406,950**	**351,200**
कॉट्रा (बैंक) प्राप्ति और भुगतान	8		
टीडीएस / आयकर			
प्राप्ति		-	12,587,973
भुगतान		-	(12,587,973)
कुल योग		**-**	**-**
जीएसटी			
प्राप्ति		660,732	-
भुगतान		(660,732)	-
कुल योग		-	-
जीएसटी (टीडीएस)			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-
एन.पी.एस.			
प्राप्ति		-	17,158,007
भुगतान		-	(17,158,007)
कुल योग		-	-
सा.भ.नि.			
प्राप्ति		-	-
भुगतान		-	-
कुल योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
अर्जित ब्याज			
वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा			
निपटाये गए		3,084,783	-
वर्ष के दौरान छोड़े गए		3,084,783	-
वसूली योग्य कर			
वसूली योग्य आयकर		341,529	-
वर्ष के दौरान आयकर की वापसी		341,529	
कुल योग		-	-
विविध लेनदार			
वर्ष के दौरान देय			-
वर्ष के दौरान निपटाये गए			-
कुल योग			-
अन्य चालू दायित्व			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
कुल योग		-	341,529
अन्य वर्तमान देनदारियाँ			
वर्ष के दौरान देय		-	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
योग		-	-
अस्थायी स्थानांतरण			
वर्ष के दौरान देय		142,126,960	-
वर्ष के दौरान निपटाये गए		(142,125,177)	-
योग		**1,783**	-
कुल योग		**18,308,880**	**63,571,337**
स्थापना व्यय	10		
स्टाफ वेतन और भत्ते			
वेतन, मजदूरी और भत्ते			
मूल वेतन		72,486,567	70,628,700
महँगाई भत्ता		28,258,653	20,566,699
मकान किराया भत्ता		19,534,771	18,563,166
यात्रा भत्ता		8,350,949	7,385,423
बच्चों का शिक्षा भत्ता		1,250,500	1,219,161
व्यक्तिगत वेतन		106,500	7,700
वर्दी भत्ता		175,000	185,000
परिलब्धियाँ		236,940	-
नकद भत्ता		16,800	16,800
स्टाफ वेतन और भत्ते–कार्यालय का सुधार		-	41,600
एन.पी.एस. को अंशदान		6,142,052	7,170,474
वेतन बकाया		602,170	1,240,427

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति और सेवांत हितलाभ पर व्यय			
उपदान		13,268,327	9,202,993
पारिवारिक पेंशन सहित पेंशन		11,021,204	8,875,277
अर्धवेतन अवकाश		661,359	442,010
अवकाश नकदीकरण		7,132,320	3,744,703
अवकाश चिकित्सा सुविधाएँ		2,561,384	2,467,124
अवकाश यात्रा रियायत		1,479,972	334,816
योग		**173,285,468**	**152,092,073**
प्रशासनिक व्यय	11		
लेखा परीक्षा तथा लेखा शुल्क		281,085	-
प्रकाशन एवं लेखन सामग्री		1,156,671	1,041,223
टेलीफ़ोन तथा डाक शुल्क		2,987,227	2,975,185
अन्य आकस्मिक व्यय		374,393	435,798
वाहनों का रखरखाव		225,523	200,059
पेंशन			
पेंशन		55,882,152	34,509,409
पेंशनभोगियों के लिए महंगाई भत्ता		-	10,831,751
पेंशनभोगियों को चिकित्सा भत्ता		-	805,667
अतिरिक्त पेंशन		-	1,151,567
पेंशनभोगियों को चिकित्सा सुविधा		-	1,888,291
किराया, दरें और कर			
वार्षिक रखरखाव अनुबंध		985,447	1,408,911
बिजली/पानी का शुल्क		9,836,497	2,764,090
किराया		30,466,514	24,430,057
अन्य संयुक्त सेवाएँ		2,547,764	862,674
कानूनी शुल्क		2,518,504	2,795,420
यात्रा खर्चे		558,112	432,209
व्यावसायिक शुल्क		201,450	240,041
स.भ.नि. ब्याज आय की कमी		3,035,551	2,409,096
योग		**111,056,890**	**89,181,448**
संवर्धन एवं प्रचार–प्रसार की गतिविधियाँ	12		
सामान्य			
01 बाल साहित्य पुरस्कार		6,067,653	4,056,675
02 बनारस स्कूल परियोजना		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
03	राजभाषा कार्यक्रम		435,995	293,660
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फ़ेलोशिप		634,534	526,798
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		24,012,308	18,342,826
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		21,405,591	10,081,710
08	बिक्री संवर्द्धन (विज्ञापन) इत्यादि		10,935,292	5,361,467
09	प्रकाशन योजनाएँ		98,837,404	23,506,005
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजना		50,530	18,889
11	लेखकों को दी जानेवाली सेवाएँ		34,007,920	18,610,157
12	अनुवाद योजनाएँ		11,775,387	9,669,207
13	पुस्तकालय तथा सूचना सेवाओं में सुधार		470,132	1,131,465
14	युवा पुरस्कार		4,225,906	7,032,020
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर राष्ट्रीय फैलोशिप		470,968	117,607
18	योग		30,789	4,091
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		7,000	-
20	अंतरराष्ट्रीय साहित्य उत्सव		-	64,934
21	शंघाई कॉरपोरेशन ऑर्गनिज़ेशन (एस.सी.ओ.)		-	30,336
	कुल योग		**213,367,409**	**98,847,847**
	राज्य अकादेमियों तथा अन्य संस्थाओं को सहायता			
	राज्य अकादेमियों को सहायता		317,625	135,449
	राज्य अकादेमियों को सहायता तथा अन्य संस्थानों के लिए एन.ई.		-	-
	कुल योग		**317,625**	**135,449**
	एन.ई.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		651,677	390,266
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		-	-
05	फैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		3,083,204	1,170,978
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञापन) इत्यादि का संवर्द्धन		146,502	105,989
09	प्रकाशन योजनाएँ		577,923	412,849
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन योजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		2,468,776	992,920

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
12	अनुवाद योजनाएँ		1,544,188	716,810
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		279,592	712,129
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फ़ैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**8,751,862**	**4,501,941**
	टी.एस.पी.			
01	बाल साहित्य पुरस्कार		156,909	106,138
02	बनारस विद्यालय परियोजना		-	-
03	राजभाषा महोत्सव		-	-
04	भाषाओं का विकास		5,073,711	3,177,488
05	फ़ैलोशिप		-	-
06	साहित्यिक समारोह एवं कार्यक्रम		894,558	1,335,040
07	आधुनिकीकरण एवं सुधार		-	-
08	बिक्री (विज्ञान) इत्यादि का संवर्द्धन		-	-
09	प्रकाशन योजनाएँ		98,163	325,815
10	क्षेत्रीय साहित्यिक अध्ययन परियोजनाएँ		-	-
11	लेखकों को सेवाएँ		834,342	463,593
12	अनुवाद योजनाएँ		431,112	163,494
13	पुस्तकालयों का उन्नयन		-	-
14	युवा पुरस्कार		157,231	190,444
15	इनसाइक्लोपीडिया ऑफ़ इंडियन पोएटिक		-	-
16	भारतीय अनुवाद		-	-
17	टैगोर नेशनल फ़ैलोशिप		-	-
18	योग		-	-
19	महात्मा गाँधी की 150वीं जन्मशतवार्षिकी		-	80,365
20	रवींद्रनाथ ठाकुर की 150वीं जन्मशतवार्षिकी तथा कॉफी टेबल पुस्तक का प्रकाशन		-	-
21	सरदार पटेल अनुवाद परियोजना		-	-
	कुल योग		**7,646,026**	**5,842,377**
	एस.ए.पी.			
	स्वच्छता कार्य योजना		506,415	506,663
	कुल योग		**506,415**	**506,663**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	उन्मेष			
	उन्मेष		55,671,502	-
	कुल योग		**55,671,502**	**-**
	पुस्तकयान			
	पुस्तकयान		6,366,154	
	कुल योग		**6,366,154**	**-**
	विशेष सेल–नेताजी सुभाषचंद्र बोस			
	नेताजी सुभाषचंद्र बोस		-	233,920
	कुल योग		**-**	**233,920**
	विशेष सेल–भारत महोत्सव			
	भारत महोत्सव–इज़राइल		-	-
	भारत महोत्सव–स्पेन		-	-
	भारत महोत्सव–थाईलैंड		-	-
	भारत महोत्सव–नेपाल		-	-
	कुल योग		**-**	-
	विशेष सेल–श्रीरामानुजाचार्य की जन्मशतवार्षिकी			
	श्रीरामानुजाचार्य की 1000वीं जन्मशतवार्षिकी		-	-
	कुल योग		**292,626,993**	**110,068,197**
	स्थायी परिसंपत्तियों की खरीद	13		
	भूमि		-	-
	भवन		-	-
	सयंत्र और तंत्र		-	-
	वाहन		-	-
	फर्नीचर और जुड़नार		1,145,000	-
	कार्यालय उपकरण		2,196,158	187,496
	कंप्यूटर/परिधीय		2,960,822	1,270,944
	विद्युतीय संस्थापन	-	59,860	-
	पुस्तकालय की पुस्तकें		464,934	98,452
	योग		**6,826,774**	**1,556,892**
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर व्यय			
	पूंजीगत कार्य प्रगति पर		-	-
	कुल योग		**6,826,774**	**1,556,892**
	कार्य प्रगति पर व्यय			
	कार्य प्रगति पर व्यय		-	-
	कुल योग		**6,826,774**	**1,556,892**

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	स्टॉफ़ (परिसंपत्तियों) को प्रदत्त ऋण	14		
	स्टॉफ़ कंप्यूटर अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ वाहन अग्रिम		-	-
	स्टॉफ़ भवन निर्माण अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	वसूली योग्य प्रतिभूति जमा	15		
	प्राप्ति योग्य प्रतिभूति जमा			
	वर्ष के दौरान जमा राशि		47,585	570,000
	वर्ष के दौरान जमा राशि प्रतिदाय		42,800	545,000
	योग		**4,785**	**25,000**
	अन्य प्राप्ति योग्य	16		
	देनदारों द्वारा दिए गए अग्रिम			
	वर्ष के दौरान प्राप्त भुगतान		-	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए अग्रिम		-	-
	योग		-	-
	बाहरी पार्टी को दिया गया अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	7,692,503
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(5,982,402)
	योग		-	**1,710,101**
	अग्रिम पूंजी			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	132,398,005
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(9,916,105)
	योग		-	**122,481,900**
	अकादेमी कार्यक्रम तथा गतिविधियों के लिए कर्मचारियों को अग्रिम			
	वर्ष के दौरान दिए गए अग्रिम		-	7,673,278
	वर्ष के दौरान स्वीकृत तथा निपटाये गए		-	(7,522,871)
	योग		-	**150,407**
	अस्थायी स्थानांतरण			
	भुगतान		-	(195,806,214)
	प्राप्ति		-	195,806,214
	योग		-	-
	ब्याज प्रोद्भूत			
	वर्ष के दौरान देय		-	-
	वर्ष के दौरान दिए गए		-	-
	योग		-	-

साहित्य अकादेमी

अनुलग्नक के भाग के रूप में 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए प्राप्ति और भुगतान लेखा

(राशि रुपये में)

	विवरण	अनुलग्नक	चालू वर्ष	गत वर्ष
	वसूली योग्य कर			
	वसूली योग्य आयकर		10,851	-
	वर्ष के दौरान प्रतिदाय आयकर		(2,689)	-
	योग		**8,162**	**-**
	विविध लेनदार			
	वर्ष के दौरान देय		6,715,610	-
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(5,563,152)	-
	योग		**1,152,458**	**-**
	अन्य चालू दायित्व			
	वर्ष के दौरान देय		164,626,147	132,824,268
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		(163,752,184)	(133,011,890)
	योग		**873,963**	**(187,622)**
	टी.डी.एस./आयकर			
	प्राप्ति		-	-
	भुगतान		-	-
	योग		-	-
	जी.एस.टी.			
	प्राप्ति			-
	भुगतान		17,705,561	-
	योग		**(17,705,492)**	**-**
	जी.एस.टी. (टी.डी.एस.)			
	प्राप्ति		660,732	1,121,339
	भुगतान		(660,732)	(935,589)
	योग		-	**185,750**
	सा.भ.नि.			
	प्राप्ति		(2,103,538)	(385,989)
	भुगतान		2,110,624	576,734
	योग		**7,086**	**190,745**
	एन.पी.एस.			
	प्राप्ति		11,538,809	17,158,007
	भुगतान		(11,445,504)	(17,158,007)
	योग		**93,305**	-
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य		1,070,327	1,270,050
	संयुक्त सेवा वसूली योग्य			
	पूर्वदत्त व्यय			
	वर्ष के दौरान जारी		443,413	43,306
	वर्ष के दौरान निपटाये गए		-	-
	कुल योग		**443,413**	**43,306**
	योग		**3,648,783**	**125,844,637**

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का तुलन–पत्र : यथातिथि 31–03–2023

2021–2022	दायित्व	2022–2023		2021–2022	परिसम्पत्तियाँ	2022–2023	
	सा. भ. नि. खाता				**निवेश (लागत पर)**		
109,536,875	01–04–2022 को शेष	103,472,043			**आवधिक जमा एवं बॉण्ड** (निम्नांकित बैंकों के साथ)		
	वर्ष के दौरान परिवर्धन :			160,163	केनरा बैंक, नई दिल्ली–नई पेंशन योजना	178,672	
14,403,432	कर्मचारियों का सा.भ.नि. में अंशदान	14,970,750		37,074,962	केनरा बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	23,223,252	
-	अन्य परिवर्धन	-		50,624,108	यूको बैंक, नई दिल्ली–सा.भ.नि.	55,424,391	
6,701,533	ग्राहकों के खाते में ब्याज जमा	6,697,299		87,868,746			
278,826,215							
21,104,965		21,668,049					
	वर्ष के दौरान कटौती :				**~~निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–सा.भ.नि.~~**		
16,441,000	अंतिम निकासी	15,554,500		5,030,397	01–04–2022 को शेष	5,030,397	
2,019,733	अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	101,950		3,183,125	जमा : वर्ष के दौरान प्रोदभूत ब्याज	680,295	
8,709,064	पूर्ण और अंतिम भुगतान	12,773,258		5,030,397	घटा : परिपक्वता पर प्राप्त ब्याज	5,030,397	
27,169,797	28,429,708			3,183,125			680,295
			96,710,384		**निवेशों पर प्रोदभूत ब्याज–एन.पी.एस**		
				10,787	01–04–2022 को शेष	1,123	
	नई पेंशन योजना			1,123	जमा : 2022–23 के दौरान प्रोदभूत ब्याज	8,455	
103,472,043	01–04–2022 को शेष	152,384		10,787	घटा : परिपक्वता पर ब्याज	1,123	
152,384	**वर्ष के दौरान परिवर्धन :**			1,123			8,455
-	अकादेमी का नई पेंशन योजना में अंशदान	-					
-	कर्मचारियों का नई पेंशन योजना में अंशदान	-			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	एन.पी.एस. आवधिक पर अर्जित / प्राप्त ब्याज	-		5,254,870	01–04–2022 को शेष	2,421,874	
-		-		3,094,160	जमा : वर्ष के दौरान स्वीकृत	2,165,000	
	वर्ष के दौरान कटौती :			-	घटा : अग्रिमों का अंतिम निकासी में परिवर्तन	101,950	
-	01–04–2022 को पी.एफ.आर.डी.ए. में शेष	-		3,591,145	घटा : वर्ष के दौरान वसूल की गई राशि	1,384,030	
-	घटा : राशि पी.एफ.आर.डी.ए. में स्थानांतरित	-		2,421,874			3,100,894
		-					
	परिवर्धन			1,783	**अन्य अग्रिम–टी.डी.एस.**		
-	जमा : साहित्य अकादेमी के लिए वापसी योग्य अंशदान	-			01–04–2022 को शेष	1,783	
-	जमा : साहित्य अकादेमी के कर्मचारियों को वापसी योग्य अंशदान	-		1,783	घटा : वर्ष के दौरान स्रोत पर टैक्स कटौती	(1,783)	
-		-			जमा : साहित्य अकादेमी से प्राप्ति योग्य राशि	1,783	
					जमा : वर्ष के दौरान स्रोत पर कर कटौती	94,681	96,464
152,384		-	152,384				
	ब्याज (अनुपयुक्त) लेखा				**बैंक शेष**		
(1,597,876)	01–04–2022 का शेष	(3,035,551)		7,112,225	एस.बी. खाता सं. 01100 / 401527 एसबीआई, नई दिल्ली	-	
1,597,876	जमा : अंशदान में अधिशेष स्थानांतरण	3,035,551		7,112,225	एस.बी. खाता सं. 3264, केनरा बैंक, नई दिल्ली	11,137,676	
3,035,551	घटा : आय पर व्यय का आधिक्य	3,012,769					
(3,035,551)			(3,012,769)				11,137,676
100,588,876	**योग**		93,849,999	100,588,876	**योग**		93,849,999

स्थान : नई दिल्ली
दिनांक : 10 जून 2022

ह./–
(कुलदीप चंद्र)
प्रवर लिपिक

ह./–
(बाबुराजन एस.)
उपसचिव, लेखा

अवकाश पर
(संजय कुमार)
उपसचिव, प्रशासन

ह./–
(के. श्रीनिवासराव)
सचिव

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2022 से 31–03–2023

2021–2022	प्राप्तियाँ	2022–2023		2021–2022	भुगतान	2022–2023	
	आदि बैंक शेष				**सा.भ.नि. खाता**		
8,144,836	केनरा बैंक	7,112,226		16,441,000	अंतिम निकासी	15,554,500	
104,655	स्टेट बैंक ऑफ इंडिया	-	**7,112,226**	-	अग्रिम का अंतिम निकासी में परिवर्तन	-	
8,249,491				8,709,064	पूर्ण एवं अंतिम निबटान	12,773,258	**28,327,758**
				25,150,064			
	सा.भ.नि. लेखा						
14,403,432	कर्मचारियों का अंशदान	17,966,301			**राष्ट्रीय पेंशन योजना**		
-	सा.भ.नि. से अग्रिमों का भुगतान	-		-	एन.पी.एस. में निवेश	-	
-	उपभोक्ताओं का ब्याज जमा	-	**17,966,301**	-	कर्मचारी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
14,403,432				-	अकादेमी को एन.पी.एस. का प्रतिदाय	-	
	ग्राहकों को अग्रिम						
2,248,200	वर्ष के दौरान ग्राहकों को पुनः दी गई अग्रिम राशि	1,384,030			**ग्राहकों को अग्रिम**		
-	कर्मचारी अंशदान	-		1,435,000	वर्ष के दौरान ग्राहकों को दी गई अग्रिम राशि	2,167,337	
-	आवधिक जमा पर ब्याज	-	**1,384,030**	-	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	-	**2,167,337**
2,248,200				**1,435,000**			
	प्राप्त ब्याज				**निवेश**		
376,371	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–केनरा बैंक	166,922		127	वर्ष के दौरान सा.भ.नि. खाते में किए गए निवेश	-	
-	सा.भ.नि. के निवेश पर ब्याज–यूको बैंक	-		127	सा.भ.नि. निवेश पर प्राप्त ब्याज	-	
103,707	बैंक बचत खातों पर ब्याज	120,914		-	वर्ष के दौरान एन.पी.एस. में निवेश	-	-
-	आई.डी.बी.आई. फलैक्सी बॉण्ड	-	**287,836**	-			
480,078					**साहित्य अकादेमी से वसूली योग राशि**		
	निवेश			-	स्रोत पर काटा गया कर	-	-
5,907,120	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–सा.भ.नि.	14,842,386		-			
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–एन.पी.एस.	-					
-	वर्ष के दौरान निकाली गई निवेश राशि–आई.डी.बी.आई.	-					
-	फलैक्सी बॉण्ड	-	**14,842,386**		**अन्य व्यय**		
5,907,120				-	सा.भ.नि. ग्राहक को दिया गया आकलित ब्याज		
				-	बैंक शुल्क	**9**	**9**
	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित			-			
2,409,096	साहित्य अकादेमी में स्थानांतरित	40,000	**40,000**				
2,409,096					**बैंक अंत शेष**		
				7,112,226	केनरा बैंक	11,137,675	
				-			**11,137,675**
				7,112,226			
33,697,417	**योग**		**41,632,779**	**33,697,417**	**योग**		**41,632,779**

	ह./–	ह./–	अवकाश पर	ह./–
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 9 जून 2023	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि का प्राप्ति और भुगतान लेखा : यथातिथि 01–04–2022 से 31–03–2023

2021–2022	प्राप्तियाँ	2022–2023		2021–2022	भुगतान	2022–2023	
					निवेश पर ब्याज		
6,701,533	सा.भ.नि. के ग्राहकों को ब्याज दिया गया	6,697,299		3,562,275	निवेश पर प्राप्त ब्याज	3,536,679	
-	बैंक शुल्क	8		103,707	बचत खाते पर प्राप्त ब्याज	147,859	
-	अन्य कटौतियाँ	-		-	अन्य अधिशेष	-	
6,701,533			**6,697,307**	**3,665,982**			**3,684,538**
					आय पर व्यय का आधिक्य		
				3,035,551	घाटे को स्थानांतरित किया	3,012,769	
							3,012,769
6,701,533	**योग**		**6,697,307**	**6,701,533**	**योग**		**6,697,307**

	ह./–	**ह./–**	**अवकाश पर**	**ह./–**
स्थान : नई दिल्ली	**(कुलदीप चंद्र)**	**(बाबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
दिनांक : 9 जून 2023	*प्रवर लिपिक*	*उपसचिव, लेखा*	*उपसचिव, प्रशासन*	*सचिव*

साहित्य अकादेमी

सामान्य भविष्य निधि खाता निवेश और प्रोद्भूत ब्याज की अनुसूची : यथातिथि 31 मार्च 2023

निवेश									ब्याज		
क्र. सं.	एफ़.डी.संख्या	क्रय तिथि	परिपक्वता तिथि	ब्याज दर%	31-03-2023 को ब्याज का अंकित मूल्य	परिपक्वता मूल्य	प्राप्ति योग्य सकल ब्याज	31-03-2022 तक प्रोद्भूत	2022-2023 के दौरान प्रोद्भूत	प्रोद्भूत ब्याज पर टी.डी.एस. कटौती	31-03-2023 को कुल प्रोद्भूत ब्याज
	नई पेंशन योजना केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/51	2/9/2022	2/9/2024	6.8%	178,672	200,277	21,605	-	9,099	644	8,455
	योग 1		**178,672**	**200,277**	**21,605**	**-**	**-**		**9,099**	**644**	**8,455**
	सा.भ.नि. की राशि यूको बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 18250310055601	12/30/2020	03/04/2022	5.00%	-	16,501,501	301,134	-	301,134	-	301,134
3	एफ.डी.आर. सं. 18250310055618	12/30/2020	03/04/2022	5.00%	-	1,980,386	36,140	-	36,140	-	36,140
5	एफ.डी.आर. सं. 18250310055625	12/26/2020	6/30/2023	5.00%	-	16,488,267	308,417	-	308,417	-	308,417
2	एफ.डी.आर. सं. 18250310055632	12/26/2020	6/30/2023	5.00%	-	1,978,867	37,015	-	37,015	-	37,015
4	एफ.डी.आर. सं. 18250310055649	12/28/2020	3/31/2022	5.00%	-	16,495,652	305,545	-	305,545	-	305,545
6	एफ.डी.आर. सं. 18250310055656	12/28/2020	3/31/2022	5.00%	-	1,979,718	36,670	-	36,670	-	36,670
7	एफ.डी.आर. सं. 18250310115923	10/19/2022	10/19/2024	7.20%	30,000,000	34,602,181	4,602,181	-	983,323	-	983,323
8	एफ.डी.आर. सं. 18250310115930	10/19/2022	10/19/2024	7.20%	25,424,391	29,324,646	3,900,255	-	833,346	-	833,346
	योग 2				**55,424,391**	**119,351,218**	**9,527,357**	**-**	**2,841,590**	**-**	**2,841,590**
	सा.भ.नि. की राशि केनरा बैंक, नई दिल्ली में आवधिक जमा										
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/61	2/2/2021	10/19/2022	5.00%	-	11,619,444	-1,804	-	-1,804	-	-1,804
	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/62	2/2/2021	10/19/2022	5.00%	-	11,619,444	-3,587	-	-3,587	-	-3,587
1	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/63	2/2/2021	10/19/2022	5.25%	-	11,619,444	-3,587	-	-3,587	-	-3,587
2	एफ.डी.आर. सं. 2417401000282/75	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
3	एफ.डी.आर. सं. 2417303000243/8	5/26/2022	12/24/2022	4.50%	-	3,267,157	135609.00	-	135,609	-	135,609
6	एफ.डी.आर. सं. 140062446634/1	10/19/2022	3/2/2023	7.00%	-	11,816,449	129126.00	-	149,613	20,487	129,126
7	एफ.डी.आर. सं. 140062447153/1	10/19/2022	8/15/2024	7.00%	11,611,576	13,179,397	1567821.00	-	204,873	36,775	168,098
8	एफ.डी.आर. सं. 140062447420/1	10/19/2022	8/15/2024	7.00%	11,611,576	13,179,397	1567821.00	-	204,873	36,775	168,098
	योग 3			**-**	**23,223,152**	**76,300,732**	**3,391,399**	**-**	**685,990**	**94,037**	**591,953**
	कुल योग (1+2+3)			**-**	**78,826,215**	**195,852,227**	**12,940,361**	**-**	**3,536,679**	**94,681**	**3,441,998**

31-03-2023 को समाप्त वर्ष के लिए
वित्तीय लेखा के भाग के रूप में अनुसूची निर्माण

भूमिका

भारत की 'नेशनल एकेडेमी ऑफ़ लेटर्स' साहित्य अकादेमी साहित्यिक संवाद, प्रकाशन और उसका देशभर में प्रसार करने वाली केंद्रीय संस्था है तथा सिर्फ़ यही ऐसी संस्था है, जोकि भारत की चौबीस भाषाओं, जिसमें अंग्रेज़ी भी सम्मिलित है, में साहित्यिक क्रिया-कलापों का पोषण करती है। इसका विधिवत् उद्घाटन भारत सरकार द्वारा 12 मार्च 1954 को किया गया था। भारत सरकार के जिस प्रस्ताव में अकादेमी का यह विधान निरूपित किया गया था, उसमें अकादेमी की यह परिभाषा दी गई है—भारतीय साहित्य के सक्रिय विकास के लिए कार्य करने वाली एक राष्ट्रीय संस्था, जिसका उद्देश्य उच्च साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक मानदंड स्थापित करना, भारतीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियों को समन्वित करना एवं उनका पोषण करना तथा उनके माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता का उन्नयन करना होगा। हालांकि अकादेमी की स्थापना सरकार द्वारा की गई है, फिर भी यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में कार्य करती है। संस्था पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत इस संस्था का 1955-56 का पंजीकरण सं. 927 दिनांक 7 जनवरी 1956 को किया गया।

साहित्य अकादेमी का प्रधान कार्यालय रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। इसके अतिरिक्त अकादेमी के कोलकाता, बेंगळूरु, मुंबई में तीन क्षेत्रीय कार्यालय तथा चेन्नै में एक उप-कार्यालय है।

अनुसूची-27- महत्त्वपूर्ण लेखा नीतियाँ

1. लेखा परपिाटी

वित्तीय विवरण ऐतिहासिक मूल्य परिपाटी तथा लेखा की प्रोद्भवन पद्धति के आधार पर तैयार किए गए हैं।

2. वस्तुसूची मूल्यांकन

(2.1) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनके मुद्रित मूल्य की 40 प्रतिशत राशि पर किया गया है।

(2.2) पुस्तकों के स्टॉक का मूल्यांकन उनकी न्यूनतम लागत तथा कुल विश्वसनीय मूल्य पर किया गया है। लागत उनके तौल के औसत मूल्य या लागत पर आधरित है।

3. स्थायी परिसंपत्तियाँ

(3.1) स्थायी परिसंपत्तियाँ अर्जन की लागत पर आधारित हैं, जिसमें आवक भाड़ा, कर और परिकर तथा अर्जन से संबंधित आनुषंगिक एवं प्रत्यक्ष व्यय भी सम्मिलित हैं। निर्माण से संबंधित परियोजनाओं के संदर्भ में, पूर्व प्रचालन व्यय (जिनमें परियोजनाओं के पूर्ण होने पर दिए गए ऋणों पर ब्याज शामिल है), पूँजी परिसंपत्तियों के मूल्य का भाग हैं।

(3.2) गैर-अनुवीक्षण अनुदानों (संग्रह निधि के अलावा) द्वारा प्राप्त स्थायी परिसंपत्तियों की पूंजी का मूल्य निर्धारण तदनुरूप जमा आरक्षित पूँजी पर आधारित है।

4. मूल्यह्रास

(4.1) मूल्यहास को आयकर के 1961 के अधिनियम में विनिर्दिष्ट लिखित मूल्यों/दरों के अनुरूप किया गया है, इसमें पुस्तकालय की पुस्तकों पर छूट है, जिन पर मूल्यह्रास की दर 10 प्रतिशत है।

(4.2) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों की बढ़ोतरी के संदर्भ में, मूल्यह्रास को परिसंपत्तियों की ब्लॉक पद्धति के आधार पर विचारा गया।

(4.3) वर्ष के दौरान स्थायी परिसंपत्तियों को कटौतियों के संदर्भ में, मूल्यह्रास को दर्शाए जाने की आवश्यता नहीं।

5. विविध व्यय

आस्थगित राजस्व व्यय को उस वर्ष से 5 वर्षों की अवधि में बट्टे खाते में डाल दिया गया है, जिस वर्ष से व्यय आरंभ किया गया था।

6. बिक्री के लिए लेखा

बिक्री में उत्पाद शुल्क और बिक्री का कुल लाभ, रियायत तथा व्यापार छूट शामिल हैं।

7. सरकारी अनुदान/इमदाद

(7.1) वह सरकारी अनुदान जो कि संगठन की प्रवृत्ति (या प्रकृति) के हैं, जिन पर पूँजी लागत द्वारा परियोजनाओं को चलाया जाता है उन्हें पूँजी राजस्व माना गया है।

(7.2) विशिष्ट स्थायी परिसंपत्तियों पर दिए गए अनुदान के संदर्भ में, उन्हें उनसे संबंधित परिसंपत्तियों में लागत पर कटौती में दर्शाया गया है।

(7.3) सरकारी अनुदानों/इमदादों को लेखा उगाही के आधार पर किया गया है।

8. विदेशी मुद्रा संचालन

(8.1) विदेशी मुद्रा में किया गया संव्यवहार, जिस तिथि पर लेन-देन दिया गया है, उस तिथि की विनिमय दर पर तय किया गया है।

(8.2) चालू परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा ऋण तथा चालू दायित्वों को वर्ष के अंत तक चलनेवाली विनिमय दरों में परिवर्तित किया गया है तथा यदि विदेशी मुद्रा दायित्व स्थायी परिसंपत्तियों से संबंधित हैं तो उन्हें प्राप्त लाभ/हानि में स्थायी परिसंपत्तियों की लागत में समायोजित किया गया है और अन्य मामलों में उन्हें राजस्व माना गया है।

9. पट्टा

पट्टों के किराए पट्टों की शर्तों के आधार पर ख़र्च किए गए हैं।

10. सेवा-निवृत्ति लाभ

(10.1) किसी कर्मचारी की मृत्यु सेवा-निवृत्ति पर देय उपदान के प्रति देयता प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर प्रदान की जाती है।

(10.2) प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में किए गए बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर कर्मचारियों को संचित अवकाशों के लाभों को भुनाने का भी प्रावधान है।

अनुसूची-28—प्रासंगिक दायित्व और लेखा पर टिप्पणियाँ

1. प्रासंगिक दायित्व

(1.1) संगठन (अथवा व्यक्ति) के विरुद्ध किए गए दावों को ऋणों की पावती के रूप में नहीं दर्शाया गया है— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.2) निम्नांकित विवादास्पद माँगे :
आयकर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
बिक्री कर - रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)
नगरपालिका कर- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)

(1.3) संगठन द्वारा पार्टियों को दिए गए आदेशों का अनुपालन न किए जाने के विरुद्ध दावे- रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य)।

2. पूँजीगत प्रतिबद्धताएँ

पूँजी लेखा में उन अनुबंधों का अनुमानित मूल्य जो निष्पादित किए जाने हैं तथा जो (कुल अग्रिम) शून्य है (गत वर्ष रु. शून्य), को उपलब्ध नहीं कराया गया है।

3. पट्टा दायित्व

भविष्य में प्लॉट और यंत्रों की वित्तीय पट्टे पर की जानेवाली देख-रेख पर व्यय की जानेवाली राशि— रु. शून्य (गत वर्ष रु. शून्य) उपलब्ध नहीं कराई गई है।

4. 31-3-2023 को अक्षय निधि/उद्दिष्ट पूँजियों के निवेश का समाधान निम्न प्रकार किया गया :

निधि का नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ	निधियों के नाम	अनुसूची सं.	राशियाँ
संग्रह निधि	1	1,00,00,000	तदनुसार निवेश	9	1,00,00,000
स्थायी परिसंपत्ति निधि	3	20,87,92,152	स्थायी परिसंपत्तियाँ	8	20,13,48,136
प्रकाशन निधि	3	16,67,84,439	स्टॉक प्रकाशन	11ए	16,67,84,439
सा.भ.नि./एन.पी.एस.	3	9,38,49,999	आवधिक जमा	9	7,88,26,215
असाधारण मूल्यह्रास		12,22,374	बैंक शेष	11ए	1,11,37,676
अग्रिम पूँजी	11बी		निवेश पर प्रोद्भूत ब्याज	11बी	6,88,750
			सा.भ.नि. अग्रिम	11बी	31,00,894
			अग्रिम पूँजी	11बी	86,66,391
			अन्य अग्रिम	11बी	96,464
योग		**48,06,48,964**			**48,06,48,965**

5. चालू परिसंपत्तियाँ

संगठन का मानना है कि सामान्य व्यापार के संदर्भ में चालू परिसंपत्तियों, ऋणों और अग्रिमों से उतना ही उगाही योग्य पैसा है, जितना कि तुलन-पत्र के कुल योग में दर्शाया गया है।

6. सेवानिवृत्ति लाभ

भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेड संस्थान द्वारा जारी 'कर्मचारी लाभ पर लेखा मानक-15 का अनुपालन न करने के संबंध में सीएजी लेखा परीक्षा अवलोकन का अनुपालन करने के संबंध में अकादेमी ने वित्त वर्ष 2018-19 से उनके अनुरूप सेवानिवृति देयता की मान्यता की दिशा में अपनी नीति में परिवर्तन किया है।

तदनुसार उसने इसके अंतर्गत दिए गए विवरणों के अनुसार बीमांकिक मूल्यांकन के आधार पर अवकाश नकदीकरण के प्रति अपनी सेवानिवृत्ति लाभ देयता को मान्यता दी है। 31 मार्च 2023 को समाप्त वित्त वर्ष के लिए बीमांकक मूल्यांकन के प्रासंगिक सार को पुन: प्रस्तुत किया गया है।

ग्रेच्युटी प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
ब्याज लागत	51,41,323	44,34,297
वर्तमान सेवा लागत	30,08,512	32,19,781
विगत सेवा लागत	-	-
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	(92,02,993)
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	(24,69,788)	1,16,49,283
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	56,58,047	1,93,03,361

3.4 : वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	1,26,65,185	1,46,77,874
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	5,31,94,077	5,87,69,598
कुल देयता	6,58,59,192	7,34,47,472

3-7 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	7,34,47,472	6,33,47,104
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	56,80,047	1,93,03,361
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(1,32,68,327)	(92,02,993)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित इतिशेष	6,58,59,192	7,34,47,472

अवकाश नकदीकरण प्रचालन

2.3 : लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
ब्याज लागत	31,24,383	26,24,869
वर्तमान सेवा लागत	24,74,550	24,65,547
योजना परिसंपत्ति पर अपेक्षित लाभ	-	-
अवधि के दौरान मान्यता प्राप्त कुल बीमांकित लाभ/हानि	(14,51,426)	61,35,544
लाभ और हानि के विवरण में मान्यता प्राप्त व्यय	41,47,507	1,12,25,960

3.4 वर्तमान देयता (*कंपनी अधिनियम, 2013 की अनुसूची III के अनुसार अगले वर्ष भुगतान अपेक्षित) :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
वर्तमान देयता (अल्प अवधि)*	67,30,702	79,65,693
ग़ैर वर्तमान देयता (दीर्घ अवधि)	3,49,18,525	3,66,68,347
कुल देयता	4,16,49,227	4,46,34,040

3.6 : तुलनपत्र में देयता का समाधान :

अवधि	01-04-2022 से 31-03-2023 तक	01-4-2021 से 31-03-2022 तक
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति) परिभाषित	4,46,34,040	3,74,98,124
लाभ और हानि में पहचाने जाने वाले व्यय	41,47,507	1,12,25,960
लाभ प्रदत्त (यदि कोई)	(71,32,320)	(40,90,044)
सकल लाभ को देयता/(परिसंपत्ति)परिभाषित इतिशेष	4,16,49227	4,46,34,040

7. कराधान

अकादेमी को अपने कार्यक्रम और गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित किया जाता है। आयकर अधिनियम 1961 के अनुच्छेद 12ए के तदनुसार, अकादेमी की आय को कर से छूट दी गई है। आयकर अधिनियम 1961 के अंतर्गत कर योग्य आय न होने को ध्यान में रखते हुए आयकर का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

8. विदेशी मुद्रा संव्यवहार

(8.1) आयात के मूल्य की सी.आई.एफ. के आधार पर गणना : शून्य
तैयार सामान, कच्चा माल एवं अवयव (परागमन सहित)

	तथा पूँजीगत सामान की ख़रीद	
	भंडार, अतिरिक्त और उपभोज्य	
(8.2)	विदेशी मुद्रा में व्यय :	
(क)	विदेशों में पुस्तक मेलों तथा अन्य साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन—	
	राजस्व योजना के अंतर्गत	शून्य
(ख)	वित्तीय संस्थाओं/बैंकों को विदेशी मुद्रा में भेजी गई रकम और ब्याज भुगतान	शून्य
(ग)	उन्मेष और यू.ए.आई. भुगतान	₹ 97,376/-
(घ)	अन्य व्यय : कानूनी तथा व्यावसायिक व्यय	शून्य
	विविध व्यय	शून्य
	माल भाड़ा	शून्य
	यात्रा व्यय	शून्य
(8.3)	अर्जन :	
	एफ़.ओ.बी. के आधार पर निर्यात मूल्य	शून्य

9. अनुदान उपयोग

अकादेमी संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा पूर्णत: वित्त पोषित है। इसके अतिरिक्त, यह अपने प्रकाशन और बैंक ब्याज आदि की बिक्री के माध्यम से कुछ राजस्व भी उत्पन्न करती है। 31 मार्च 2023 को प्राप्त वर्ष के लिए प्राप्ति एवं भुगतान खाते के आधार पर अकादेमी द्वारा प्राप्त अनुदानों/वित्तीय सहायता की संक्षिप्त स्थिति इस प्रकार है :

विवरण	**राजस्व वेतन**	**राजस्व सामान्य**	**राजस्व सी.सी.ए.**	**राजस्व एन.ई.**	**टी.एस.पी**	**एस.ए.पी.**	**उन्मेष**	**पुस्तकायन**	**योग**
	1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**6**	**8**	**(1 से 8)**
01/04/2021 को अव्ययित आदिशेष	4,11,07,927	3,82,42,045	-	-	-	-	-	-	7,93,49,972
संस्कृति मंत्रालय से प्राप्त अनुदान	16,50,00,000	22,43,16,000	3,00,00,000	-	-	5,00,000	5,82,56,250	71,25,000	48,51,97,250
संस्कृति मंत्रालय को अनुदान अभ्यर्पित/ प्रतिदाय/वापस लौटाया	(3,26,88,151)	(6,100)	(6,48,279)			(22,303)	(25,19,814)	(7,66,606)	(3,66,51,253)
अन्य प्राप्तियाँ	-	15,62,00,230	-	87,51,862	76,46,026	28,718	-	7,760	17,26,34,596
योग ए	**17,34,19,776**	**41,87,52,175**	**2,93,51,721**	**87,51,862,**	**76,46,026**	**5,06,415**	**5,57,36,436**	**63,66,154**	**70,05,30,565**
व्यय	17,32,85,468	32,47,41,924	68,26,774	87,51,862	76,46,026	5,06,415	5,56,71,502	63,66,154	58,37,96,125
अन्य भुगतान	-	41,68,728	1,00,00,00	-	-	-	64,934	-	1,42,33,662
योग बी.	**17,32,85,468**	**32,89,10,652**	**1,68,26,774**	**87,51,862**	**76,46,026**	**5,06,415**	**5,57,36,436**	**63,66,154**	**59,80,29,787**
31/03/2022 को अव्ययित अंत शेष	**1,34,308**	**8,98,41,523**	**1,25,24,947**	**-**	**-**	**-**	**-**	**-**	**10,25,00,779**

10. गत वर्ष के तदनुरूप आँकड़ों को जहाँ भी आवश्यक हो पुनर्वर्गीकृत/पुनर्व्यवस्थित किया गया है, जिससे उन्हें चालू वर्ष के आँकड़ों के साथ तुलनीय बनाया जा सके।

11. अनुसूची 1 से 28 जिसमें, प्राप्ति और भुगतान, सा.भ.नि., तुलनपत्र, सा.भ.नि. प्राप्ति और भुगतान, 31.03.2023 को समाप्त वर्ष के तुलन-पत्र के संलग्नक एवं अभिन्न अंग हैं तथा आय और व्यय लेखा भी इसी तिथि को समाप्त वर्ष का संलग्नक एवं अभिन्न अंग है।

12. विगत वित्त वर्ष 2021-22 में, तुलनपत्र में मान्यता प्राप्त इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं और पुस्तकालय पुस्तकों पर मूल्यह्रास की गणना 12,22,374 रुपये से अधिक पाई गई थी, जिसके परिणामस्वरूप व्यय का अपव्यय हुआ तथा अचल संपत्तियों का न्यून व्यय हुआ। इस मद पर विचार किया गया तथा विगत वर्ष से संबंधित इलैक्ट्रॉनिक वस्तुओं तथा पुस्तकालय पुस्तकों के मूल्यह्रास में कमी आई है और इसे अतिरिक्त साधारण मदों (अनुसूची 26) के अंतर्गत प्रस्तुत किया गया है।

13. वित्त वर्ष 2021-22 के लिए अपने एसएआर में सी एंड एजी के अनुसार, अनुसूची -2 (आरक्षित और अधिशेष) के अधिशेष/घाटे को अनुसूची-1 (संग्रह/पूँजी निधि) में स्थानांतरित किया जाना चाहिए। तदनुसार ऐसी राशि को अनुसूची (संग्रह/पूँजी निधि) में स्थानांतरित कर दिया गया है।

ह/-	ह/-	अवकाश पर	ह/-
(कुलदीप चंद्र)	**(बबुराजन एस.)**	**(कृष्णा आर. किम्बहुने)**	**(के. श्रीनिवासराव)**
प्रवर लिपिक	**उपसचिव**	**उपसचिव**	**सचिव**

दिनांक : 09.06.2023
स्थान : नई दिल्ली

नियंत्रक-महालेखापरीक्षक द्वारा 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए साहित्य अकादेमी के लेखाओं पर पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

1. हमने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के 31 मार्च 2023 के संलग्न तुलन-पत्र तथा समाप्ति वर्ष के आय एवं व्यय/प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की लेखापरीक्षा नियंत्रक-महालेखापरीक्षक (कर्त्तव्य, शक्तियों एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अंतर्गत कर ली है। वर्ष 2023-24 तक की अवधि के लिए लेखापरीक्षा सौंपी गई थी। वित्तीय विवरणों में अकादेमी के तीन क्षेत्रीय कार्यालयों तथा दो बिक्री कार्यालयों के लेखे भी शामिल हैं। इन वित्तीय विवरणों को तैयार करने की ज़िम्मेदारी अकादेमी के प्रबंधन की है। हमारी ज़िम्मेदारी लेखापरीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर विचार व्यक्त करने की है।

2. इस पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की टिप्पणियाँ केवल उत्तम लेखा पद्धतियों, लेखा मानकों प्रकटीकरण नियमों आदि के वर्गीकरण, अनुपालन के संबंध में हैं। वित्तीय लेन-देन के लेखापरीक्षा की टिप्पणियाँ नियमों, विनियमों, कानून एवं कार्यान्वयन पहलुओं, यदि कोई है, का उल्लेख निरीक्षण प्रतिवेदन/नियंत्रक-महालेखापरीक्षक के लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में पृथक् रूप से किया गया है।

3. हमने लेखापरीक्षा सामान्यत: भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षण मानकों और लागू नियमों के अनुरूप की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि लेखापरीक्षा इस प्रकार आयोजित तथा निष्पादित की जाए कि वित्तीय विवरण तथ्यों की गलतबयानी से मुक्त हों। वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा वित्तीय विवरणों में दी गई राशियों तथा तथ्यों के समर्थन में प्रस्तुत साक्ष्यों के आधार पर की जाती है। लेखापरीक्षा में लेखा संबंधी नियामों तथा प्रबंधन की महत्त्वपूर्ण सूचनाओं के साथ-साथ वित्तीय विवरणों की प्रस्तुति का पूर्ण मूल्यांकन भी शामिल है। हमें विश्वास है कि हमारी लेखापरीक्षा हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।

4. अपनी लेखापरीक्षा के आधार पर हम सूचित करते हैं कि :

   (i) हमारी सर्वोत्तम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार हमने अपनी लेखापरीक्षा के उद्देश्य से आवश्यक सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं।

   (ii) इस प्रतिवेदन से संबंधित तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता/प्राप्ति एवं भुगतान खाता को वित्त मंत्रालय द्वारा स्वीकृत प्रारूप के अनुरूप तैयार किया गया है।

   (iii) हमारे विचार से लेखापरीक्षा के दौरान लेखा पुस्तकों की जाँच करने पर प्रतीत होता है कि साहित्य अकादेमी में लेखा पुस्तकों तथा अन्य संबंधित दस्तावेज़ों को समुचित ढंग से रखा जा रहा है।

   (iv) आगे हम यह सूचित करते हैं कि—

ए. तुलनपत्र

ए.1 साहित्य अकादेमी ने सा.भ.नि. के तुलनपत्र, आय एवं व्यय खाता तथा रसीदें और भुगतान खाते सहित पृथक-पृथक खाते तैयार किए हैं। किंतु अकादेमी ने सा.भ.नि. तुलनपत्र के मूल्य का विलय अकादेमी के मुख्य तुलनपत्र में कर दिया है। यद्यपि, सा.भ.नि. ग्राहकों का पैसा है, इसका लेखाजोखा अलग से रखा जाना चाहिए तथा इसका विलय अकादेमी के

मुख्य खातों के साथ नहीं किया जाना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप निर्धारित निधियों के साथ-साथ संपत्तियों को भी रु. 9.38 करोड़ से अधिक बताया गया है।

बी. सामान्य

बी.1 साहित्य अकादेमी, द्वारका, दिल्ली को आवंटित भूमि के संबंध में अकादेमी ने डी.डी.ए. को दिसंबर 2010 से वार्षिक किराए का न तो भुगतान किया गया है और न ही इसके लिए कोई प्रावधान बनाया गया है।

बी.2 31 मार्च 2023 तक रु. 75.97 लाख की राशि विविध देनदारों द्वारा दी जानी बकाया है। यह राशि 1987-88 से 2022-23 की अवधि से संबंधित है। यद्यपि, अकादेमी इन लंबे समय से लंबित देनदारों की वसूली के लिए प्रयास कर रही है, किंतु इसकी वसूली अकादेमी द्वारा अभी की जानी है। लंबे समय से लंबित देनदारों की समीक्षा की जानी चाहिए तथा यदि संदिग्ध हो तो आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए। इसे गत वर्ष की रिपोर्ट में भी इंगित किया गया था किंतु अकादेमी द्वारा कोई सुधारात्मक कार्रवाई नहीं की गई।

सी. सहायता अनुदान :

वर्ष 2022-23 के लिए प्राप्त सहायता अनुदान तथा उसके उपयोग का विवरण निम्न प्रकार है :

(रुपए करोड़ में)

वर्ष के दौरान प्राप्त सहायता अनुदान	48.52
गत वर्ष का अव्ययित शेष	7.93
वर्ष के दौरान आंतरिक प्राप्तियाँ	17.26
निधि अध्यर्पित	(3.66)
कुल उपलब्ध निधि	**70.05**
वर्ष के दौरान ख़र्च	59.80
अव्ययित शेष	10.25

इस प्रकार, वित्तीय वर्ष के अंत में साहित्य अकादेमी के पास 10.25 करोड़ रुपये का अव्ययित शेष है।

डी. प्रबंधन पत्र

लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उनके बारे में साहित्य अकादेमी को प्रबंधन पत्र के माध्यम से प्रभावी कार्रवाई के लिए अलग से बताया गया है।

(v) पूर्ववर्ती अनुच्छेदों में व्यक्त हमारे विचारों के संदर्भ में हम यह कहना चाहते हैं कि जिस तुलनपत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा का उपयोग इस प्रतिवेदन के लिए किया गया है, वे लेखा बहियों के साथ अनुबंधित हैं।

(vi) हमारे विचार और हमारी सर्वोततम सूचना तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरणों के अनुसार, वित्तीय विवरण में दी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाओं तथा अनुलग्नक में दिए गए अन्य तथ्यों के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि यह रपट भारत में स्वीकृत लेखापरीक्षा मानकों और नियमों के अनुरूप है।

(क) यह साहित्य अकादेमी के 31 मार्च 2023 तक के कार्यकलापों के तुलनपत्र से संबंधित है; तथा

(ख) उसी तिथि को समाप्त वर्ष के अधिशेष के आय एवं व्यय लेखा से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

ह./-

(राजीव कुमार पाण्डेय)

महानिदेशक लेखापरीक्षा

(केन्द्रीय व्यय), नई दिल्ली

स्थान : नई दिल्ली

दिनांक : 15 सितंबर 2023

"प्रस्तुत प्रतिवेदन मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखित पृथक् लेखापरीक्षा प्रतिवेदन का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है तो अंग्रेज़ी में लिखित प्रतिवेदन मान्य होगा।"

अनुलग्नक

1. आंतरिक लेखापरीक्षा व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी का आंतरिक लेखापरीक्षा चार्टर्ड-अकाउंटेंट फर्म द्वारा मार्च 2023 तक किया गया है।

2. आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था की पर्याप्तता

अकादेमी की आंतरिक नियंत्रण व्यवस्था को निम्नलिखित के कारण सुदृढ़ करने की आवश्यकता है—

(i) स्थायी परिसंपत्ति रजिस्टर का रख-रखाव उचित प्रकार से नहीं किया गया है।

(ii) लेखा परीक्षा की आपत्तियों पर प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि लेखापरीक्षा पैरा नं. 22 अब तक बकाया है।

(iii) वर्ष के दौरान माल सूची तथा अन्य स्थायी परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन नहीं किया गया।

3. स्थायी परिसंपत्तियों के प्रयत्क्ष सत्यापन की व्यवस्था

भूमि, भवन तथा वाहन का मार्च 2023 तक का प्रत्यक्ष सत्यापन किया गया है। अन्य परिसंपत्तियों जैसे फ़र्नीचर एवं स्थावर सामग्री तथा कंप्यूटर एवं सहायक उपकरणों का प्रत्यक्ष सत्यापन 2014 की अवधि तक का किया गया है।

4. सामान सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की व्यवस्था

लेखन-सामग्री तथा अन्य उपभोग्य वस्तुओं का प्रत्यक्ष सत्यापन केवल मार्च 2021 तक ही किया गया है।

5. देय राशि के भुगतान में नियमितता

लेखा के अनुसार 31 मार्च 2023 तक छह माह की अवधि से अधिक वाला कोई भुगतान नहीं था।

शब्द ही एकमात्र रत्न है जो मेरे पास है
शब्द ही एकमात्र वस्त्र है जिन्हें मैं पहनता हूँ
शब्द ही एकमात्र आहार है जो मुझे जीवित रखता है
शब्द ही एकमात्र धन है जिसे मैं लोगों में बाँटता हूँ

–संत तुकाराम